हार्वर्ड प्रोफेसर स्टीवन पिंकर, वेस्ट प्वाइंट प्रोफेसर रॉबर्ट मैक्डॉनल्ड,
द वाशिंगटन पोस्ट के राडले बाल्को व अन्य लोगों के योगदान के साथ

अमन, प्रेम व आज़ादी

संपादन
टॉम जी. पामर

अमन, प्रेम व आज़ादी - टॉम जी. पामर

❧ "शांति चाहने वाले लोगों को चाहिए कि वे युद्ध को बढ़ावा देने वाली संस्थाओं एवं कार्यपद्धतियों के बारे में सवाल उठाएं; साथ ही उन्हें अधिक से अधिक लोगों को यह समझाना होगा कि हिंसा से वे बुलंद लक्ष्य कभी हासिल नहीं होते, जिनकी युद्ध–समर्थकों ने घोषणा की होती है। यह पुस्तक इन दोनों मुद्दों पर एक उत्कृष्ट शुरुआत है, यह बताती है कि शांति की चाहत एक प्रशंसनीय विचार है, किंतु प्रमाण तथा कठोर विवेक बुद्धि के अभाव में यह एक विचार मात्र रह जाती है।"

जेफ्री माइरोन
लेखक, *ड्रग वॉर क्राइम्सः दि कॉन्सिक्वेन्सेज़ ऑफ प्रोहिबिशन*
तथा *लिबर्टेरियानिज़्म, फ्रॉम ए टू ज़ेड*
अर्थशास्त्र विभाग, हार्वर्ड विश्वविद्यालय

❧ "अपने देश के लिए मरना एक गौरव और अभिमान की बात है– इस पुराने झूठ का यहाँ सटीक जवाब दिया गया है। इराक में छोटे–छोटे बच्चों पर बम गिराना कोई गौरव की बात नहीं है, उन्हीं बच्चों के पिताओं द्वारा सड़क पर बिछाई बारूदी सुरंग के विस्फोट में मरना भी कोई अभिमान की बात नहीं है, न ही इस बात में कोई गौरव या अभिमान है कि युद्ध को किसी प्रकार की अपमार्जक, उदात्त या स्फूर्तिदायक घटना बताया जाए। युद्धों का महिमामंडन करने वाले जोसेफ डी मैस्त्र से लेकर डेविड ब्रूक्स तक सभी उदारवाद के विरोधकों का युद्ध भड़काने वाला सच्चा रूप यहाँ उजागर किया गया है। टॉम पामर का उत्कृष्ट संपादन तथा लेखन युद्ध उकसाने वालों के हथियार, उनकी सैन्य–सेवा या ज़हरीले वचनों के बिना, सभी प्रकार के व्यापार तथा व्यापारियों के लिए शांतिपूर्ण लेन–देन का पक्ष मज़बूती से रखता है।"

डीयरड्रे एन. मॅकक्लॉस्की
लेखिका, *बूर्ज़ुआ डिग्निटी*
विख्यात प्राध्यापिका, अर्थशास्त्र, इतिहास, अंग्रेज़ी एवं संचार, इलिनॉयज़ विश्व. विद्यालय, शिकागो
प्राध्यापिका, अर्थशास्त्रीय इतिहास, गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय, स्वीडन

❧ "यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, जो शांति के आदर्श तथा उसे प्राप्त करने तथा बरकरार रखने के व्यावहारिक विचारों को सफलतापूर्वक जोड़ती है। *अमन, प्रेम व आज़ादी* उन सभी के द्वारा पढ़ी जानी चाहिए, जो युद्ध के ख़िलाफ हैं, चाहे उनका राजनैतिक मत कुछ भी हो।"

डेविड बोज़
लेखक, *दि लिबर्टेरियन माइंड*
कार्यकारी उपाध्यक्ष, कैटो इंस्टीट्यूट

❧ "दार्शनिक तथा अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ ने लिखा है कि समाज की समृद्धि एवं प्रगति के लिए तीन बातों के अलावा और कुछ नहीं चाहिए होताः 'शांति, आसान कर और एक सुचारू न्याय व्यवस्था'। *अमन, प्रेम व आज़ादी* निबंधों का एक दिलचस्प संग्रह है, जो यह बताता है कि उपरोक्त तीन बातों में शांति सर्वोपरि क्यों है और इसकी अनुपस्थिति में कर कैसे बढ़ते हैं और न्याय व्यवस्था को ख़तरा होता है। लेखक अपनी इस बात के समर्थन में ठोस तर्क तथा सबूत देता है कि एक युद्धप्रिय राज्य कभी भी स्वतंत्र राज्य नहीं रह सकता।"

लॉरेन्स एच. व्हाइट
लेखक, *दि क्लैश ऑफ इकनॉमिक आइडियाज़*
अर्थशास्त्र विभाग, जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय

❧ "शांति और युद्ध की जटिल प्रक्रियाओं को समझाने के लिए *अमन, प्रेम व आज़ादी* में अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, दर्शन शास्त्र, मनोविज्ञान तथा अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञ इकट्ठा हुए हैं। संपादक तथा लेखक के रूप में टॉम पामर ने एक ऐसी पुस्तक रची है, जो वास्तव में अद्वितीय है और अपने उद्देश्य को पाने में पूरी तरह से कामयाब हुई है। इसे परिश्रमपूर्वक तथा स्पष्टता से लिखा गया है और इसे अधिक से अधिक वाचकों तक पहुँचना चाहिए। यदि इस पुस्तक की शिक्षाएं पिछली सदी में समझ ली गई होतीं तो दुनिया को इतनी हिंसा, रक्तपात, कष्ट और मुसीबतें नहीं झेलनी पड़ती।"

पास्कल सेलिन
लेखक, *लिब्रलिज़्म*
अर्थशास्त्र विभाग, पेरिस विश्वविद्यालय–डॉफिन

❧ "समाजशास्त्री चार्ल्स टिली का कथन है कि 'युद्ध ने राज्य को जन्म दिया और राज्य ने युद्ध को'। यह उम्दा संग्रह इन शब्दों में छिपी बुद्धिमता को सामने लाता है और समझाता है कि क्यों किसी भी आज़ादी–पसंद व्यक्ति को राज्य द्वारा विनाशकारी शक्तियों को प्रयोग आत्मरक्षा के अलावा किसी भी अन्य उद्देश्य से करने का विरोध करना चाहिए।"

पीटर कुरिल्ड–क्लिटगार्ड
राजनीति शास्त्र विभाग
कोपेनहेगन विश्वविद्यालय

अमन, प्रेम व आज़ादी

युद्ध अटल नहीं होता

यह पुस्तक एटलस नेटवर्क के संचालक मंडल के सदस्य एवं वैश्विक आज़ादी आंदोलन के एक जनक जॉन ब्लंडेल को समर्पित है। जॉन शांति के लिए व्यापार की आज़ादी के महत्व को भली–भाँति समझते थे और विभिन्न पदों, जैसे लंदन स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ इकनॉमिक अफेयर्स के सामान्य निर्देषक, जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन स्टडीज़ तथा एटलस नेटवर्क के अध्यक्ष तथा संचालक मंडल के सदस्य आदि पद पर रहते हुए वे सदैव मुक्त व्यापार के पक्षधर बने रहे। इस पुस्तक के संपादक जॉन द्वारा कई दशकों की मदद, प्रोत्साहन, समर्थन तथा मित्रता के लिए उनके ऋणी हैं। अमन, प्रेम व आज़ादी का अस्तित्व में आना उनके बिना संभव नहीं था।

अमन, प्रेम व आज़ादी

युद्ध अटल नहीं होता

संपादक टॉम जी. पामर

AtlasNetwork.org

StudentsForLiberty.org

CCS.in

प्रकाशक स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी तथा एटलस नेटवर्क

स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी व एटलस नेटवर्क की साझेदारी में सेंटर फॉर सिविल सोसायटी द्वारा प्रकाशित

कॉपीराइट © 2014 टॉम जी. पामर,
एटलस इकनॉमिक रिसर्च फाउंडेशन
तथा स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी

"युद्धों में कमी तथा मानव प्रकृति की धारणा", स्टीवन पिंकर।

कॉपीराइट © 2013 जॉन वाइली एंड सन्स, इन्क. ब्लैकवेल पब्लिशिंग लिमिटेड की अनुमति द्वारा पुनर्मुद्रित

टॉम जी. पामर द्वारा संपादित

मुख्य पृष्ठ की रूपरेखा रॉबिन पैटरसन

इस पुस्तक की तैयारी में सहयोग के लिए संपादक न केवल लेखकों तथा कॉपीराइट धारकों का, बल्कि एटलस नेटवर्क तथा स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी के अनगिनत सक्रिय सदस्यों का भी आभारी है। दुनिया–भर में आज़ादी तथा शांति के प्रति उनका समर्पण संगठित हिंसा के शिकार लोगों के प्रति एक महान सेवा तथा मेरे लिए एक प्रेरणा है।

जानकारी तथा अन्य अनुरोधों के लिए कृपया लिखें:

सेंटर फॉर सिविल सोसायटी
ए – 69, हौजखास, नई दिल्ली – 110016
फोन: 91 11 26537456
ईमेल – ccs@ccs.in
वेबसाइट – www.ccs.in
प्रकाशित : जनवरी 2015

ISBN: 978-81-87984-22-1

17 16 15 14 5 4 3 2 1

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना ***10***

1. शांति एक विकल्प है *(टॉम जी. पामर)* 13
   युद्ध एक संगठित मानव हिंसा है 14
   युद्ध कब तर्कसंगत होता है? 16
   युद्ध राज्य की सेहत होता है 20
   कौन ज़िम्मेदार है? 22
   आज़ादी और शांति 24
2. युद्धों में कमी तथा
   मानव प्रकृति की धारणा *(स्टीवन पिंकर)* 26
   युद्धों में कमी मानव प्रकृति की
   वास्तविक धारणा के साथ
   सुसंगत होने के चार कारण 28
   1. इससे भी विचित्र हुआ है 28
   2. मानव प्रकृति के एकाधिक घटक होते हैं 29
   3. मानव प्रकृति के वैकल्पिक घटक 31
   4. मानव संज्ञान एक खुली उत्पादक प्रणाली है 33
   उपसंहार 35
   उद्धरण 35
3. शांति का अर्थशास्त्र: अमीर पड़ोसी होना
   क्यों अच्छी ख़बर है *(इमानुएल मार्टिन)* 37
   कामयाब और नाकामयाब लोग 37
   उत्पादकों–ग्राहकों की दुनिया 39
   "से का नियम" और पारस्परिक फायदा 40
   से के नियम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लागू करना 42
   नकारात्मक राशि खेल के रूप में व्यापार बाधाएं ("संरक्षणवाद") 43
   समृद्धि के लिए शांति 45
4. 4 शांति के पुजारी व्यापारी के साथ बातचीत – क्रिस रुफर
   (टॉम जी. पामर) 47

5. मुक्त व्यापार शांति (एरिक गार्तज़्के)....58
रूपांतरण....59
शंकालु थॉमस....61
शांति का मकसद....63
शांति का "अदृश्य हाथ"....67
6. साम्राज्य और युद्ध की राजनैतिक अर्थव्यवस्था *(टॉम जी. पामर)*....70
अच्छी ख़बरः हिंसा कम हो रही है....71
क्या सभ्यताओं या देशों के बीच युद्ध आवश्यक है?....72
क्या व्यापारिक साम्राज्यवाद एक अच्छा समाधान है?....75
तेल (या अन्य संसाधन) संबंधी युद्ध के बारे में....80
आर्थिक भ्रांतियां और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध....83
जब माल सीमा पार नहीं कर सकता, तो सेनाएं करेंगी....84
एक प्राचीन ज्ञान....86
फैसला कौन करता है?....86
7. अमेरिकी जागृति की युद्ध के प्रति सचेतता *(रॉबर्ट एम. एस. मैक्डोनाल्ड)*....89
8. आज के समय में युद्ध का घटता महत्व एक नीतिगत हथियार *(जस्टिन लोगन)*....98
महाशक्तियों के युद्धों का उत्थान और पतन....99
समकालीन युद्ध....100
प्रसाररोधी / निवारक युद्ध....100
प्रभाव तथा विध्वसनीयता के लिए युद्ध....101
उपसंहार....103
9. पुलिस कार्य का सैन्यीकरण *(रिडली बाल्को)*....105
10. शांति का सिद्धांत और संघर्ष का सिद्धांत *(टॉम जी. पामर)*....109
सहयोग का सिद्धांत....112
संघर्ष का सिद्धांत....114
1914 के विचार....125
युद्ध अटल नहीं होते....129
11. युद्ध की कला *(साराह स्क्वायर)*....131
12. युद्ध की प्रार्थना *(मार्क ट्वेन)*....137
13. मीठा और गर्व भरा एहसास *(विल्फ्रेड ओवेन)*....141
14. बूढ़े और जवान आदमी की नीति कथा *(विल्फ्रेड ओवेन)*....143
15. शांति की शुरुआत आपसे होती है *(कैथी राइसेनवित्ज़)*....144

सीखें....145
विस्तार करें....146
संगठित करें....147
परिवर्तन लाएंः शांति चुनें....149
अधिक पढ़ने के लिए सुझाव....150
संपादक के विषय में: टॉम जी. पामर....152
टिप्पणियां

प्रस्तावना

"लोगों को नफ़रत सीखनी चाहिए और यदि वे नफ़रत करना सीख सकें, तो उन्हें प्यार करना भी सिखाया जा सकता है, क्योंकि मानव हृदय में नफ़रत की अपेक्षा, प्यार अधिक स्वाभाविक रूप से आ सकता है।"

– नेल्सन मंडेला

युद्ध लोगों को नफ़रत करना सिखाता है। अपने दुश्मनों से नफ़रत करो। अपने पड़ोसियों से नफ़रत करो। उनसे नफ़रत करो, जो हमसे अलग हैं। शांति लोगों को प्यार सिखाती है। दुश्मनों को दोस्तों में बदलने का मौक़ा देती है। संघर्ष की जगह सहयोग आ सकता है। प्यार और दोस्ती नफ़रत की जगह ले सकते हैं।

शांति कैसे आती है? जवाब है: आज़ादी से। आज़ादी को किससे ख़तरा होता है? जवाब है: युद्ध से।

इस पुस्तक में शामिल लेख शांति के पक्ष में सबूत और तर्क पेश करते हैं। लेखक शांति को न केवल एक नैतिक आदर्श या एक वांछित लक्ष्य के रूप में, बल्कि एक पूर्णतः व्यावहारिक उद्देश्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं। शांति के समर्थक अक्सर शांति का नारा देने एवं युद्ध की निंदा करने को ही पर्याप्त मान लेते हैं। वे इस पर विचार नहीं करते कि कौन–सी संस्थाएं शांति को बढ़ावा देकर युद्ध को हतोत्साहित करती हैं। वे शांति के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा मनोवैज्ञानिक पहलुओं की विवेचना नहीं करते। वे किसी युद्ध के कारणों को खोजे बिना और उन कारणों का हल खोजे बिना, केवल उस युद्ध का विरोध करते हैं। शांति कोई अव्यावहारिक काल्पनिकता नहीं है, न ही यह कोई ऐसी चीज़ है, जिसके लिए समृद्धि, प्रगति या आज़ादी की बलि देनी पड़े। सच तो यह है कि शांति, आज़ादी, समृद्धि और प्रगति एक साथ चलते हैं।

इस पुस्तक के निबंध बुद्धि को चेतना देते हैं। वे ठोस इतिहास, आर्थिक वास्तव, अनुभवसिद्ध मनोविज्ञान, राजनीति शास्त्र और अकाट्य तर्कों पर, साथ ही कला और सौंदर्यपूर्ण कल्पना पर आधारित हैं। यदि हृदय तो शांति की कल्पना समझानी हो, तो यह काम बुद्धि के ज़रिए ही होना चाहिए।

अमन, प्रेम व आज़ादी में लेखकों ने मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इतिहास, कानून, समाजशास्त्र, नैतिक तत्वज्ञान आदि विषयों के साथ–साथ कविता,

साहित्य और सौंदर्य शास्त्र का भी सहारा लिया है। ये सभी युद्ध और शांति की बेहतर समझ पाने में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हैं। पुस्तक का प्रत्येक लेख स्वतंत्र रूप से भी पढ़ा जा सकता है। उन्हें किसी क्रम में पढ़ा जा सकता है। इनमें से कुछ विद्वत्तापूर्ण हैं, तो कुछ गंभीर होने के साथ–साथ टिप्पणियों पर निर्भर नहीं हैं। इनका उद्देश्य है एक विस्तृत श्रेणी के पाठकों के सामने आज़ादी और शांति के गहन आंतरिक सम्बन्धों को सामने लाते हुए उन्हें महत्वपूर्ण मुद्दों से अवगत कराना। (यहां प्रेम के बजाय शांति और आज़ादी पर अधिक लिखा गया है, जिसका सरल–सा कारण है: शांति और आज़ादी ऐसी बातें हैं जिन्हें पाने के लिए एक संगठित प्रयास किया जा सकता है, जबकि प्रेम एक ऐसी चीज़ है, जिसे प्रत्येक मानव हृदय को अपने ढंग से खोजना और पाना होता है इसलिए निबंध युद्ध और शांति से संबंधित संस्थाओं तथा विचारधाराओं पर केन्द्रित हैं, इस उम्मीद में कि शांति को चुना जाएगा, नफ़रत को टाला जाएगा और प्रेम को संभव बनाया जा सकेगा।)

अमन, प्रेम व आज़ादी एटलस नेटवर्क और *स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी* द्वारा सह–प्रकाशित की गई है। दोनों संस्थाओं की व्याप्ति वैश्विक है और उनकी सहयोगी संस्थाएं एवं परियोजनाएं सभी महाद्वीपों पर फैली हैं। वे किसी भी सरकार से संबंधित नहीं हैं। वे वैश्विक मूल्यों के समर्थक हैं। वे शांति, एक समान आज़ादी और कानून के समक्ष समान न्याय के अलावा किसी अन्य कार्यक्रम को बढ़ावा नहीं देते। वे ऐसी संस्थाओं की स्थापना तथा मदद करते हैं, जो शांति, आज़ादी और न्याय के लिए प्रयत्न करती हैं, जिसमें सरकारों पर संवैधानिक मर्यादाएं, अभिव्यक्ति तथा धर्म की स्वतंत्रता, कानूनी रूप से प्राप्त संपदा की सुरक्षा, शांतिपूर्ण आचरण के लिए कानून द्वारा सहनशीलता, मुक्त व्यापार और मुक्त बाज़ार शामिल हैं। इस पुस्तक के निबंध दर्शाते हैं कि ये विचार – "पारम्परिक उदारवाद" के विचार – कैसे इकट्ठे आते हैं एक–दूसरे के पूरक हैं। अमन, प्रेम व आज़ादी में शामिल निबंध उदारवादी विद्वानों का नज़रिया तथा उनके विचारों के ज़रिए शांति के अध्ययन में अपना योगदान देते हैं। यह स्वैच्छिक मानव सहयोग को सुरक्षित रखने की परम्परा का एक हिस्सा है।[2]

इस परम्परा की जड़ें मानव इतिहास में गहरे तक बैठी हैं। यह चीनी विद्वान लाओत्से के लेखन में प्रकट होती है, महान धर्म गुरुओं के लेखन में सामने आती है और क्रूरता तथा शक्ति के विरोध में वाक्पटुता तथा तर्क को बढ़ावा देने वाले महान वकील, दार्शनिक तथा राजनेता मार्कस ट्यूलियस सिसरो के लेखन में भी मौजूद है, जैसा कि उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *ऑन ड्यूटीज़* वे लिखते हैं: –

सभी व्यक्तियों का एक उद्देश्य होना चाहिए, वह यह कि प्रत्येक का तथा एकत्र

रूप से सभी का फायदा एक समान हो। यदि कोई उसे केवल अपने तक सीमित रखता है, तो सभी मानवी अंतर्क्रियाएं समाप्त हो जाएंगी। यही नहीं, यदि प्रकृति ने निर्धारित किया है कि इंसान को दूसरे के हित का ध्यान रखना होगा, केवल इसलिए कि वह दूसरा भी एक इंसान है, चाहे वह कोई भी हो, तो उसी प्रकृति के नियमानुसार यह भी आवश्यक होता है, सभी का फायदा एक समान हो। ऐसे में हम सभी प्रकृति के एक ही नियम से बंधे हैं; और यदि यह सच है, तो प्रकृति के नियम के विरुद्ध जाकर हम दूसरे के प्रति कोई ग़लत बर्ताव नहीं कर सकते।[3]

यह पुस्तक हिंसा को टालने के बारे में है। यह शक्ति के एक शांतिपूर्ण विकल्प के बारे में है। यह स्वैच्छिक सहयोग के बारे में है। यह हर जगह शांति एवं आज़ादी के लिए कार्यकर्ताओं को समर्पित है। मैं आशा करता हूँ कि आज का युवा शांति तथा आज़ादी के माहौल में वृद्ध हो और वह इस दुनिया को अधिक शांतिपूर्ण, अधिक न्यायपूर्ण और अधिक स्वतंत्र बनाने में मदद करे। यह उद्देश्य मन में रखने वालों के लिए यह पुस्तक मददगार साबित होगी।

टॉम जी. पामर

नैरोबी, केन्या

1

शांति एक विकल्प है

टॉम जी. पामर

युद्ध की प्रकृति क्या होती है? क्या यह मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है? क्या यह तर्कसंगत है, और यदि है, तो किन परिस्थितियों में? युद्ध का नैतिकता और आज़ादी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

"वैश्विक एवं चिरंतन शांति ख़तरनाक है, यह ऐसी घटनाओं की सूची में आती है, जो केवल दूरदर्शी दार्शनिकों या इसके भद्र समर्थकों की कल्पना के अलावा अन्यत्र अस्तित्व में हो ही नहीं सकती। तथापि, यह भी सच है कि युद्ध में भी उतनी ही मूर्खताएं तथा बुराइयां निहित होती हैं, और हमें विवेक बुद्धि की प्रगति से आशा रखनी चाहिए; और यदि आशा रखनी हो, तो हमें सभी प्रयास भी करने चाहिए।"

– जेम्स मेडीसन[4]

युद्ध अपने आप नहीं होते। वे तूफ़ान या उल्कापात की श्रेणी में नहीं आते, महज इसलिए नहीं कि वे इनसे कहीं अधिक विनाशकारी होते हैं। इनमें एक बड़ा अंतर यह है कि तूफान और उल्कापात मानव के विचारों और कार्यों से पैदा नहीं होते, जबकि युद्ध का यही कारण होता है। ऐसी विचारधाराएं होती हैं, जो युद्ध भड़काती हैं। ऐसी नीतियां होती हैं, जो युद्ध की ओर ले जाती हैं। इन्हीं विचारधाराओं तथा नीतियों की समीक्षा तथा तुलना की जा सकती है, उन पर तर्कपूर्ण चर्चा हो सकती है। आप यह सोच सकते हैं कि "सभी शांति चाहते है", लेकिन यह आपका भ्रम होगा। कई विचारधाराओं के केन्द्र में संघर्ष और हिंसा होती है। भले ही उनके समर्थक सार्वजनिक तौर पर कहें कि वे युद्ध के विरोधी और शांति के पुजारी हैं, किंतु उनकी नीतियां अंततः अपने केंद्र में स्थित संघर्ष को युद्ध की ओर ही ले जाती हैं। जैसा कि अमेरिकी जागृति की महान शख़्सियत और यूनाइटेड स्टेट्स के प्रमुख संविधान रचयिताओं में से एक, जेम्स मेडीसन ने कहा था, युद्ध में "इतनी अधिक मूर्खता और दुराचार होता है" कि हमें उसे रोकने का पूरा प्रयास करना ही चाहिए।

युद्ध के बारे में कोई क्या नया कह सकता है? मैंने गूगल सर्च इंजन में "युद्ध "शब्द डाला और मात्र 0.49 सेकेण्ड में मुझे यह परिणाम मिलाः "करीब 536,000,000

परिणाम" और यह केवल अंग्रेज़ी में। फ्रेंच भाषा में मुझे 0.23 सेकेण्ड में "करीब 36,700,000 परिणाम" मिले, जर्मन भाषा में 0.30 सेकेण्ड में "करीब 14,700,000 परिणाम" मिले, सरलीकृत चीनी भाषा में 0.38 सेकेण्ड में "करीब 55,900,000 परिणाम" तथा पारम्परिक चीनी भाषा में 0.34 सेकेण्ड में "करीब 6,360,000 परिणाम" मिले। इससे आगे और क्या कहा जा सकता है?

इस सब में कुछ नया जोड़ा जा सकता है, जो काफी महत्वपूर्ण है। इस चर्चा में अधिक तर्क जोड़ा जाना चाहिए। मेडीसन के शब्दों में, "हमें विवेक बुद्धि की प्रगति से काफी आशा रखनी चाहिए।"

युद्ध एक संगठित मानव हिंसा है

शब्दकोश में युद्ध की आम परिभाषा है कि "युद्ध विभिन्न देशों या राज्यों के बीच या किसी देश या राज्य में स्थित विभिन्न समूहों के बीच सशस्त्र संघर्ष की स्थिति है।" इसके उपयोग का उदाहरण कुछ इस प्रकार होगा: "ऑस्ट्रिया ने इटली के ख़िलाफ युद्ध छेड़ दिया" या "ऑस्ट्रिया और इटली के बीच युद्ध हुआ था"। इसे तुलनात्मक रूप से या लाक्षणिक अर्थ में भी इस्तेमाल किया जा सकता है; जैसे "उसकी अपने पड़ोसियों से जंग छिड़ी हुई थी", और "सरकार ने नशीले पदार्थों के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया", लेकिन युद्ध का प्रमुख इस्तेमाल, और इस पुस्तक में भी युद्ध का इस्तेमाल प्रमुख रूप से राष्ट्रों के बीच सशस्त्र संघर्ष को ही दर्शाता है। (हालांकि नशीले पदार्थों के खिलाफ युद्ध में भी एक बड़ा सशस्त्र संघर्ष होता है, लेकिन यह सरकार और नशीले पदार्थ बेचने और ख़रीदने वालों के बीच, तथा प्रतिस्पर्धी गिरोहों के बीच होता है, न कि दो राष्ट्रों के बीच)।

"सशस्त्र संघर्ष" से ज़ाहिर है कि जानलेवा शक्ति का प्रयोग होता है। युद्ध में लोगों की मौत होती है, लेकिन यह साधारण मौत नहीं होती। वे अन्य लोगों के हाथों मारे जाते हैं। युद्ध और सैन्य शक्ति का इस्तेमाल, दोनों में लोगों को जान से मारना शामिल होता है। पुरुश तथा महिला सैनिक इस सच्चाई को जानते हैं। राजनेता अक्सर इसे नज़रअंदाज करना चाहते हैं। संयुक्त राष्ट्र में तत्कालीन अमेरिकी राजदूत और बाद में यूएसए की सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मेडेलाइन अलब्राइट ने अमेरिका के तत्कालीन सेनाध्यक्ष समिति के अध्यक्ष जनरल कॉलिन एल. पॉवेल से पूछा था, "आप जिस लाजवाब सेना का दम भरते हैं, उसे यदि हम इस्तेमाल नहीं कर सकते, तो उसका फायदा क्या है?"

पॉवेल ने अपने संस्मरणों में लिखा है, "मुझे लगा जैसे मुझे दिल का दौरा पड़ने वाला है।" वे ग़लत नहीं थे। अलब्राइट की सैन्य शक्ति के बारे में एक अत्यंत ही आम

धारणा थी कि यह उनकी कार्य–सूची को पूरा करने का एक सरकारी औज़ार–मात्र है। पॉवेल ने उन्हें समझाया कि "अमेरिकी सैनिक कोई खिलौना नहीं है, जिसे उनके किसी वैश्विक खेल में यहां से उठाकर वहाँ रख दिया जाए" और "हमें सैन्य शक्ति का इस्तेमाल तब तक नहीं करना चाहिए जब तक हमारे सामने कोई स्पष्ट राजनैतिक लक्ष्य न हो"। एक सैनिक होने के नाते जनरल पॉवेल समझते थे कि जब सेना का "इस्तेमाल" होता है, तब खिलौने या शतरंज के मोहरे नहीं, बल्कि जीते–जागते इंसान मारे जाते हैं।[5]

मुझे याद है एक बार मैं रियर एडमिरल जीन लारोक (यूएस नेवी, सेवानिवृत्त) के साथ बैठकर सैन्य शक्ति के इस्तेमाल पर बातचीत कर रहा था। उन्होंने सीधे शब्दों में कहा (जैसा मुझे याद है): "सशस्त्र बलों का उद्देश्य होता है दुश्मन को मारना और उसकी हमें नुकसान पहुँचा सकने की क्षमता को नष्ट करना। हम दो सिरों को जोड़ने का काम नहीं करते जब तक हमें अपने टैंक उस पार न ले जाने हों। हम नहीं जानते कि 8 साल के बच्चों को पढ़ना–लिखना कैसे सिखाया जाए। हमें लोगों को कानून या लोकतंत्र के बारे में शिक्षित करना नहीं आता। हम दुश्मन को मारते हैं और उसकी नुकसान पहुँचा सकने की क्षमता को हम नष्ट करते हैं। जब आप लोग सचमुच किसी को मारना चाहते हैं और चीज़ों को नष्ट करना चाहते हैं, तभी हमें याद करें, अन्यथा नहीं।" युद्ध शुरू करने का मतलब है दूसरे इंसानों को मारना। जिन्हें यह सब देखना – और करना – पड़ता है, वे इस बारे में कभी लापरवाह ढंग से बात नहीं करते।

जिन लोगों ने युद्ध को प्रत्यक्ष देखा है, उनकी युद्ध के बारे में सोच मेडेलाइन अलब्राइट जैसे राजनीतिशास्त्र के प्राध्यापकों से काफी अलग होती है, जिन्होंने यूएस के शासकीय अधिकारी के रूप में सार्वजनिक तौर पर और काफी उत्साह से इराक पर बमबारी का समर्थन किया, जिसमें कई निरपराध नागरिक मारे गए थे। इराक युद्ध के बारे में यूनाइटेड स्टेट्स में एक सार्वजनिक मंच पर उनसे एक नागरिक ने प्रश्न पूछा। "हम सद्दाम हुसैन को इराकी लोगों के खून से रंगा संदेश नहीं भेजेंगे," उसने कहा, यदि आप सद्दाम से निपटना चाहते हैं, तो सद्दाम से निपटिए, इराकी लोगों से नहीं"। मेडेलाइन का जवाब चौंका देने वाला था:

> हम जो भी कर रहे हैं, वह इसलिए कर रहे हैं, ताकि आप रात को चैन की नींद ले सकें। हम जो कर रहे हैं, मुझे उस पर गर्व है। हमारा देश दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है तालियों के लिए विराम और हम, दुनिया के लिए एक ज़रूरी देश होने के नाते, जो कर रहे हैं, वह यह है कि हम दुनिया को भविष्य की पीढ़ियों के लिए, और नियम से चलने वाले देशों के लिए, एक सुरक्षित जगह बना रहे हैं।[6]

अलब्राइट और उनके सहकर्मियों ने "दुनिया के लिए एक ज़रूरी देश" की भूमिका निभाने तथा "दुनिया को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बनाने" के

लिए इराकी लोगों पर बमबारी और ऐसे प्रतिबंधों का समर्थन किया, जिससे कई लोगों की जानें गईं। उन्हें और उनके सहकर्मियों को इराक में घुसपैठ का मौका नहीं मिला। यह काम उनके बाद आए जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और उनकी सरकार ने किया, लेकिन उन्होंने बुश सरकार की इस विनाशकारी और महंगी ग़लती का पूरा समर्थन किया। क्या ये निर्णय न्यायसंगत थे? सच कहें तो, नहीं। उन निर्णयों के ज़रिए वे अपने पक्ष की न्यायोचितता साबित नहीं कर सके। इस बात का कोई ठोस सबूत नहीं था कि इराक "जनसंहार के हथियार" विकसित कर रहा है और ये हथियार आदेश देने के "पैंतालीस मिनटों के भीतर" तैनात किए जा सकते हैं, न ही इस बात का कोई सबूत था कि सद्दाम की सरकार अमेरिकी भूमि पर सितंबर 11, 2001 को हुए हमले में शामिल थी। शासकीय अधिकारियों ने जनता के सामने इस प्रकार के केवल दावे ही किए थे।

और इस सबकी कीमत? इराकी मामले में सही आंकड़े जुटा पाना कठिन है और यह काफी विवादित है, लेकिन इस हमले में मारे गए दसियों हज़ारों इराकी सैनिकों के अलावा हज़ारों की संख्या में अमेरिकी, ब्रिटिश और अन्य मित्र देशों के सैनिक भी हताहत हुए थे और इससे कई गुना अधिक ज़ख्मी हुए थे। 2003 से 2011 के बीच कम से कम 118,789 नागरिक हिंसा के शिकार बने थे, जिसमें से अधिकतर देश में चल रहे भयावह और नृशंस गृहयुद्ध तथा सत्ता संघर्ष में मारे गए थे, जो अमेरिकी हमले और कब्ज़े की वजह से शुरू हुआ था।[7]

और संपत्ति का नुकसान? अकेली अमेरिकी सरकार ने ही इराक और अफ़गानिस्तान के युद्धों के लिए 2000 अरब डॉलर का कर्ज़ लिया था (इन दोनों युद्धों का समय एक ही होने की वजह से इन्हें अलग करना आसान नहीं है) और इन दोनों घटनाओं की कुल लागत, आज की कीमतों में आँकी जाए तो, कम से कम 4000 अरब डॉलर आती है, लेकिन यह इससे कहीं ज़्यादा हो सकती है।[8] ब्रिटेन और अन्य देशों ने भी सामग्री संपदा का भरपूर ख़र्च उठाया और इराक की अवसंरचना का भी इस युद्ध में ख़ासा नुकसान हुआ था। क्या इतनी मौतों और विनाश के लिए इतनी जानें और संपत्ति गंवाना न्यायसंगत हो सकता है?

युद्ध कब तर्कसंगत होता है?

बहुत कम लोग मानते हैं कि युद्ध करना – लोगों को मारना – "दुनिया के लिए एक ज़रूरी देश बनने के लिए" आवश्यक है, जैसा कि अलब्राइट ने कहा था। (हालांकि कुछ लोग उनकी बात से सहमत भी होंगे), लेकिन कुछ कठिन मामलों पर नज़र डालते हैं। यदि युद्ध को "भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बनाने के लिए" किया जाए, तो क्या वह न्यायसंगत हो जाएगा? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए तथ्य ज़रूरी होंगे: "इस बात की क्या संभावना है कि आज कुछ लोगों को मार डालने से अन्य लोग भविष्य में सुरक्षित रहेंगे?" इस प्रकार की मौतें शायद हमें भविष्य में सुरक्षित रख सकेंगी, लेकिन इस मुद्दे पर युद्ध शुरू करने से युद्ध–समर्थकों को पहले इसके पक्ष में बेहद मज़बूत सबूत पेश करने होंगे। अमेरिकी सरकार और इराकी सरकार के बीच हुए युद्ध के समर्थकों के पास दूर–दूर तक ऐसा कोई सबूत नहीं था।

युद्धों की शुरुआत और उनके संचालन की न्यायपूर्णता का विश्लेशण एक लंबे समय से किया जाता रहा है। युद्ध की शुरुआत को लैटिन भाषा में jus ad bellum (युद्धारंभ की शुचिता) कहते हैं और यह युद्ध संचलन की न्यायपूर्णता से अलग होता है, जिसे jus in bello (युद्ध संचलन की शुचिता) कहा जाता है। इन दोनों को अक्सर अलग–अलग विषय माना जाता है। क्या युद्ध न्यायसंगत है, और क्या युद्ध संचालित करने में किया गया आचरण न्यायसंगत है? कई महान वकीलों तथा दार्शनिकों ने इस बात पर लंबी बहस की है कि युद्ध शुरू करने के क्या न्यायसंगत कारण हो सकते हैं, और युद्ध शुरू हो जाने पर क्या बल प्रयोग पर कोई कानूनी या नैतिक प्रतिबंध हैं, और यदि हैं, तो वे क्या हैं।

किसी शासक या राष्ट्र का सम्मान बचाने के लिए, या "दुनिया के लिए एक ज़रूरी देश बनने के लिए", या बहुमूल्य जमीन अथवा संसाधन हथियाने के लिए, या अपने हितों के बचाव में या देश के लोगों की जान की रक्षा के लिए क्या कोई युद्ध शुरू कर सकता है? और युद्ध शुरू हो जाने पर, क्या सिर्फ सशस्त्र सैनिकों को युद्ध भूमि में मारा जा सकता है, या कैद किए हुओं को मारा जा सकता है, या दुश्मन सैनिकों के परिवारों को मारा जा सकता है (बच्चों समेत, जो आगे चलकर सैनिक बन सकते हैं)? समय के साथ युद्ध के कारणों पर अधिकाधिक मर्यादाएं आती गईं और युद्ध संचालन पर नियंत्रण के लिए विभिन्न सिद्धांत, नियम और संधियां स्थापित की गईं।

एकत्र रूप से इन विषयों को "युद्ध का कानून" और "न्यायपूर्ण युद्ध का सिद्धांत" कहा जाता है।[9] हालांकि युद्ध संचालन की शुचिता लागू मानी जाती है, चाहे युद्ध न्यायसंगत माना जाए अथवा नहीं, आमतौर पर नज़रिया यही होता है कि यदि युद्ध न्यायसंगत, अर्थात् न्यायपूर्ण कारण से शुरू किया गया है तो उसके सफल संचालन के तरीके भी न्यायसंगत बन जाते हैं, फिर भले ही वे अपने आप में अवांछित या खेदजनक हों।

लेकिन जो लोग न्याय में, योग्य आचरण में आस्था रखते हैं, उनके लिए यह आम नज़रिया इस बात का संतोषजनक जवाब नहीं देता कि युद्ध शुरू करना न्यायसंगत है या नहीं। जैसाकि रॉबर्ट होम्स ने अपनी पुस्तक *ऑन वार एंड मोरालिटी* में ज़ोर देकर कहा है, "साध्य साधन को उचित नहीं ठहराता, बल्कि साधनों की अनुमेयता (जिसमें युद्ध के एक

भाग के तौर पर कत्ल और विनाश शामिल हैं) और युद्ध शुरू करने की अन्य आवश्यकताएं पूरी होना, यही साध्य को न्यायसंगत बनाते हैं"।[10] युद्ध में केवल बुरे लोग ही नहीं मारे जाते। संपार्श्विक क्षति (कोलेटरल डैमेज) के तौर पर निरपराध लोग भी मारे जाते हैं। यदि लोगों का कत्ल और उनके निर्वाह के लिए आवश्यक सामग्री का विनाश न्यायसंगत नहीं है, तो उसकी प्रक्रिया, अर्थात् युद्ध, भी न्यायसंगत नहीं हो सकता। इस प्रकार "युद्ध शुरू करने को न्यायसंगत साबित करने के लिए साधनों का चयन न्यायसंगत होना शुरू से ही अनिवार्य होता है। ये दो – युद्ध शुरू करना और चुने हुए साधन इस्तेमाल करना अलग–अलग कार्य नहीं हैं। युद्ध संचालन के साधनों को न्यायसंगत साबित किए बिना कोई भी युद्ध शुरू करने को न्यासंगत नहीं ठहरा सकता"।[11]

युद्ध पर विचार करते हुए, युद्ध के परिणाम का विचार न करते हुए केवल उसके घोषित उद्देश्य पर विचार करना नैतिक रूप से ग़ैर–ज़िम्मेदाराना होगा, चाहे वह उद्देश्य अपनी ऐतिहासिक जमीन वापस लेने का हो या सम्मान की पुष्टि का हो, विश्वसनीयता लौटाने का हो या आक्रामकता का जवाब हो, चाहे किसी अन्य कारण से हो। होम्स इसकी पुष्टि में कहते हैं, "युद्ध एक संगठित हिंसा है, यह जानबूझकर, व्यवस्थित ढंग से मृत्यु और विनाश लाता है। यही सच्चाई है, फिर इसके साधन चाहे अणु बम हो या तीर कमान"।[12]

दस साल पहले मेरा सामना इसी मुद्दे को टालने की प्रवृत्ति से तब हुआ, जब मैं युद्धग्रस्त इराक में काम कर रहा था और एक परिशद में भाग लेने कनाडा गया। परिशद की एक सहभागी ने मुझसे कहा कि सद्दाम हुसैन और बाथ पार्टी की तानाशाह और अत्याचारी सरकार का तख़्ता पलटने के लिए इराक पर हुए हमले में कनाडा ने "इच्छुकों के गठबंधन" में हिस्सा नहीं लिया, इस बात का उसे खेद है। मैंने उससे कहा कि कनाडा सरकार ने विचारपूर्वक इस हमले में हिस्सा नहीं लिया, इस बात की उसे खुशी होनी चाहिए।

चर्चा में आगे मैंने बताया कि बग़दाद में यह ख़बर फैली है कि नई इराकी पुलिस को आदेश दिए गए हैं कि यदि वे किसी को कामचलाऊ विस्फोटक सामग्री (आईईडी) लगाते हुए देखें तो तत्काल उसे गोली मार दें, और सरकार का इस बारे में दृढ़ निश्चय जताने के लिए एक बड़े सरकारी अधिकारी ने स्वयं एक कैदी को गोली मार दी। उस समय आईईडी सैनिक तथा असैनिक दोनों की मौत का एक बड़ा कारण बन रही थी। (मैं आज तक नहीं जानता कि यह ख़बर सच थी या अफवाह। मैं सिर्फ वही दोहरा रहा था जो मुझे इराकी लोगों ने बातचीत के दौरान बताया था)। वही महिला, जो कनाडा के युद्ध में शामिल न होने पर दुखी थी, यह सुनकर अचंभित

और भयाकुल हो उठी और कहने लगी कि "इस बारे में कुछ करना चाहिए"। मैंने उससे कहा कि युद्ध में शामिल होने का समर्थन करने से पहले उसे ऐसा कुछ होने की संभावना पर भी विचार करना चाहिए था। यह उन घटनाओं में से है, जो युद्ध में "होती रहती हैं"। युद्ध का समर्थन और बाद में उसी युद्ध से उत्पन्न हिंसा, रक्तपात और अराजकता पर चकित होना एक समझ की कमी को दर्शाता है।

युद्ध न केवल ऐसी अवांछित मृत्यु लाता है, जो युद्ध शुरू करने के निर्णय में अभिप्रेत नहीं थी, बल्कि यह मानव चरित्र को ही बदल देता है। न केवल सैनिक, बल्कि असैनिक लोग भी अपनी नैतिकता भूल जाते हैं। जो क्लाइन टाइम पत्रिका के एक प्रतिष्ठित पत्रकार हैं, जो राष्ट्रपति ओबामा के समर्थक हैं। ओबामा सरकार द्वारा ड्रोन हमले किए जाने के निर्णय के बचाव में उन्होंने एक टीवी शो में तल्ख़ी से कहा,

> यदि इसका दुरुपयोग किया गया, और यदि सरकार चलाने वालों में ग़लत लोग शामिल हों तो दुरुपयोग की संभावना काफी बढ़ जाती है, लेकिनः जो बात अंत में मायने रखती है, वह यह है कि – किसका 4 साल का बच्चा मारा गया? हम इस संभावना को कम कर रहे हैं कि हमारे 4 साल के बच्चे यहाँ अंधाधुंध आतंकवादी कार्रवाई में न मारे जाएं।[13]

हम यदि स्पष्ट रूप से विचलित कर देने वाला और अहंकारी पक्षपात नज़रअंदाज़ भी कर दें ("यदि सरकार चलाने वालों में ग़लत लोग शामिल हों तो दुरुपयोग की संभावना काफी बढ़ जाती है"), तो भी छोटे–छोटे बच्चों को मार डालने वाली कार्रवाई का इतना क्रूर समर्थन, लेकिन श्रीमान क्लाइन को इसका कोई खेद नहीं था। लोग "सही लोगों द्वारा" छेड़े गए युद्ध के समर्थन में अपनी नैतिकता भूल जाते हैं।

इन तथा अन्य कारणों के चलते युद्ध के ख़िलाफ एक दृढ़ धारणा बननी ही चाहिए – हमेशा और सब जगह। सबूत इकट्ठा करने की ज़िम्मेदारी उसकी है, जो युद्ध शुरू करेगा। इस ज़िम्मेदारी को पूरा न करने के अत्यंत ठोस कारण होने चाहिए। कुछ लोग कह सकते हैं कि ऐसे कारण हो ही नहीं सकते। कुछ अन्य कहेंगे कि बचाव के लिए या वास्तविक ख़तरे के निवारण के लिए किया गया युद्ध न्यायसंगत हो सकता है। चाहे जो भी हो, युद्ध शुरू करने के लिए अपरिहार्य सबूत चाहिए, साथ ही युद्ध केवल बचाव के लिए हो, कुछ लेने या "सम्मान की रक्षा" के लिए न हो। यदि कोई निश्चित नहीं है, तो सबूत की ज़िम्मेदारी का तर्क कहता है कि उसे युद्ध शुरू करने के ख़िलाफ होना चाहिए। इसमें कोई बीच का रास्ता नहीं है, कोई तटस्थता, कोई "दो राय" नहीं है। यदि मामला युद्ध का नहीं है, तो वह युद्ध के ख़िलाफ का है। केवल दो ही विकल्प हैंः युद्ध करो, या मत करो।

युद्ध राज्य की सेहत होता है

"युद्ध राज्य की सेहत होता है। वह समाज में एकता, तथा समूह भावना से रहित अल्पसंख्यक समूहों तथा व्यक्तियों में आज्ञाधारकता लाने के सरकार के प्रयासों में सहयोग आदि भावनाओं के तीव्र ज्वार उत्पन्न करता है"।
– रैंडोल्फ बोर्न[14]

युद्ध प्रत्येक मोड़ पर विधिसम्मतता को चुनौती देता है। वह कानून की सत्ता को दुर्बल बनाता है। वह सत्ता को सरकार की कार्यकारी शाख़ा में केन्द्रित कर देता है। वह सत्ता के दुरुपयोग के समर्थन में नित नए बहाने उपलब्ध कराता है। हाल ही में मिले बड़े पैमाने पर जासूसी और निगरानी के शंकास्पद उपकरणों के सबूत इस बात की पुष्टि करते हैं। इस प्रकार के निगरानी उपकरण कुछ वर्ष पहले तक केवल विज्ञान कथा में ही मिलते थे; और यह सब "आतंकवाद के ख़िलाफ युद्ध" के नाम पर खपाया जा रहा है।

युद्ध सरकार के अधिकारों को और उसकी बलपूर्वक शासन करने की क्षमता को बढ़ा देता है। प्रत्येक युद्ध के साथ नई–नई शक्तियां अर्जित की जाती हैं और फिर इन शक्तियों को हटाने के लिए काफी समय और प्रयास आवश्यक होते हैं। अन्य संकटों की तरह यह भी "वन वे" होता है, जो राज्य की शक्तियों को पहले से कहीं अधिक बढ़ा देता है, और यद्यपि युद्ध समाप्ति पर ये शक्तियां वापस ले ली जाती हैं, लेकिन स्थिति कभी भी युद्ध–पूर्व स्थिति पर नहीं लौटती। आर्थिक इतिहासकार रॉबर्ट हिग्स के मुताबिक सरकारें "संकटों" पर पनपती हैं, मुख्यतः युद्धों तथा आर्थिक मंदियों परः "संकट आने पर सरकार आर्थिक निर्णय लेने के अपने अधिकारों की व्याप्ति बढ़ा लेती है" और "संकट के गुज़र जाने पर अधिकारों का जो प्रत्यावर्तन होता है, वह हमेशा अधूरा होता है, जिससे सरकार के अधिकार संकट–पूर्व स्थिति की तुलना में अधिक बने रहते हैं"।15 युद्ध से बंधुआ मज़दूरी (अनिवार्य सैन्य सेवा के रूप में), अधिक कर, सामग्री की ज़ब्ती तथा अधिग्रहण, रेशनिंग, समाजवाद आदि का रास्ता साफ हो जाता है। "युद्ध में विजय", "दुश्मन को हराना", "देश की सुरक्षा" आदि की दुहाई देकर नई संस्थाएं, नई शक्तियां, नए कर, इन सभी को न्यायोचित बना दिया जाता है। युद्ध से समूहवाद और राज्यवाद पैदा होता है।

और युद्ध के साथ आते हैं नए कर और कर्ज़। थॉमस पेन ने नपे–तुले शब्दों में कहा है,

> सभी देशों में जनता के पैसों की बंदरबांट और उसके नाजायज़ ख़र्च में लिप्त सभी लोगों के लिए युद्ध एक खड़ी फसल की तरह है। यह अपने ही घर पर फतह पाने जैसा हैः इसका उद्देश्य होता है राजस्व में बढ़ोत्तरी और चूंकि बिना करों के राजस्व नहीं बढ़ सकता, इसलिए ख़र्च बढ़ाने का कोई बहाना चाहिए होता है। यदि कोई निष्पक्ष व्यक्ति, जिसका इसमें कोई हित संबंध न हो, इंग्लिश सरकार के इतिहास की समीक्षा करे, तो वह इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि युद्ध चलाने के लिए कर नहीं लगाए गए थे, बल्कि कर लगा सकने के लिए युद्ध छेड़े गए थे।[16]

लोगों पर करों का बोझ लादने के लिए युद्ध से बढ़कर कुछ नहीं होता। मार्गरेट लेवी के अनुसार, सरकार का इतिहास बताता है कि करों को न्यायसंगत साबित करने के लिए युद्ध "सबसे स्वीकार्य कारण" था।[17]

युद्ध के दौरान आलोचना को विश्वासघात, पराभव की मानसिकता और देशद्रोह बताया जाता है। नागरिक स्वतंत्रता छीन ली जाती है, सेन्सरशिप लागू हो जाती है, अख़बार बंद कर दिए जाते हैं और नागरिकों की जासूसी अधिकृत कर दी जाती है। साथी नागरिकों को दुश्मन बताकर उन्हें परेशान किया जाता है, कैद कर लिया जाता है, नज़रबंद कर दिया जाता है, निष्कासित कर दिया जाता है, या मार डाला जाता है।

अंततः, युद्ध ज़िम्मेदार सरकार को ख़त्म कर देता है। देशहित की आड़ में यह शासकों को उनके निजी कार्यक्रम चलाने देता है। इसके बहाने राजनेता अपनी सत्ता मज़बूत बना लेते हैं, घरेलू विफलताओं से जनता का ध्यान बंटाते हैं और मौजूदा सरकार के लिए जनता का समर्थन एकत्र कर लेते हैं। विलियम शेक्सपीयर ने अपने नाटक "हेनरी चतुर्थ, भाग 2" में युद्ध के राजनैतिक प्रभाव को नाटकीय ढंग से उभारा है, जब बूढ़ा राजा अपने बेटे को सत्ता जमाने के लिए विदेश में युद्ध के फायदे समझाता हैः

> और मेरे सभी साथियों को तुम्हें भी साथी मानना होगा,
> लेकिन उन्हें पहले शक्तिहीन बनाकर;
> जिनके निर्दयी कामों से मैंने तरक्की पाई,
> और जिनकी ताकत के दम पर मैं डर पैदा कर सका
> वे मेरा तख़्ता पलट न सकें इसलिए मैंने
> उन्हें भेज दिया दूर; एक उद्देश्य से
> कि अपनी पवित्र भूमि जीत लाओ फिर से,
> नहीं तो ख़ाली दिमाग शैतान का घर, वे
> मेरा ही राज्य हड़पने की सोचते इसलिए प्यारे हैरी,
> तुम भी उन्हें लगाए रखो विदेशी युद्ध में,
> ताकि उस झमेले में उन्हें
> पुराने दिनों की याद ही न आए।[18]

"उन्हें लगाए रखो विदेशी युद्ध में" राज्य चलाने की कला का एक नियमित हिस्सा रहा है। यह केवल पश्चिम या पूरब, उत्तर या दक्षिण, जनतंत्र या तानाशाही तक सीमित नहीं है। यह सत्ता प्राप्ति का हथियार है और यह अक्सर कारगर होता है।

कौन ज़िम्मेदार है?

संगठित मानव हिंसा की कीमत बड़े पैमाने पर ज़िंदगी, आज़ादी और समृद्धि से चुकानी पड़ती है। इसकी न्यायसंगतता कभी–कभार ही साबित की जाती है। साथ ही, युद्ध के बाद न्याय भी कभी नहीं मिलता। पराजित पक्ष को सज़ा हो सकती है, लेकिन विजेता पक्ष को उसके द्वारा पराजित पक्ष पर किए गए जुल्मों की सज़ा कभी नहीं मिलती। लंबे समय से यही रीत चली आ रही है। इतिहासकार प्लूटार्क ने रोमन सीनेट के एक दृश्य का वर्णन किया है, जिसमें रोमन दार्शनिक, संवैधानिक सरकार के महान समर्थक तथा सीनेटर कैटो इतिहास के सबसे बड़े जानलेवा लोगों में से एक, जूलियस सीज़र की उसके युद्ध में क्रूर कार्यों को लेकर सार्वजनिक निंदा करते हैं।

> सीज़र उस समय कई आक्रामक देशों से युद्धरत थे, और उन्हें ख़तरों से खेलते हुए परास्त कर रहे थे। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने युद्ध विराम के दौरान जर्मनों पर हमला किया और तीन लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया। इस पर उनके कुछ साथियों ने सीनेट में उनके सार्वजनिक अभिनंदन का प्रस्ताव रखा; लेकिन कैटो ने कहा कि सीज़र को उन्हीं लोगों के हवाले कर देना चाहिए, जिन पर उन्होंने इस प्रकार का अन्याय किया है, यही उनके पाप का प्रायश्चित होगा और इसी से हमारे राज्य का कलंक मिट सकेगा। "फिर भी", उन्होंने आगे कहा, "हमें भगवान का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि उसने इस गणतंत्र को बख़्श दिया, और सेनापति की मूर्खता और ग़लती की सज़ा उसकी सेना को नहीं दी"।[19]

कहने की ज़रूरत नहीं, कि सीज़र को न तो क़ैद किया गया न ही उन्हें उस नरसंहार से बचे हुओं के हवाले किया गया। उन बचे हुए लोगों को कोई मौक़ा नहीं दिया गया कि वे अपने परिवारजनों की हत्या के लिए सीज़र को सज़ा दे सकें, बल्कि सीज़र ने आगे चलकर अपने कारनामों का बख़ान करने के लिए गैलिक वार्स नामक किताब भी लिख डाली। उन्होंने (स्वयं को तृतीय पुरुष के रूप में रखते हुए) एक जर्मन छावनी पर अचानक छापा मारने की योजना के बारे में भी लिखा; जर्मन क़बीले के मुखिया को, जो शांति वार्ता के लिए आया था, कैद करने के बाद सीज़र ने उन लोगों पर अचानक हमला कर दिया, और जब उनके सैनिक असावधान लोगों का क़त्लेआम कर रहे थे,

> तब बाकी लोग, जिनमें बच्चे और औरतें भी थे, (क्योंकि वे अपना देश छोड़ परिवार समेत र्‌हाइन नदी पार कर आए थे) भागने लगे, जिनका पीछा करने के लिए सीज़र ने अपनी घुड़सवार सेना भेजी। जब जर्मनों ने पीछे की ओर से आवाज़ें सुनी तो (वे पलटे और) देखा कि उनके परिवारजन मारे जा रहे हैं, जिस पर उन्होंने हथियार डाल दिए, अपना झंडा फेंक दिया, छावनी से भाग खड़े हुए, और वे जब म्यूज़ और र्‌हाइन नदियों के संगम पर पहुँचे, तो बचे–खुचे लोगों ने सारी आशा छोड़ दी, क्योंकि एक बड़ी संख्या में उनके देशवासी मारे जा चुके थे, और वे पानी में कूद गए और डर, थकान और पानी के तेज़ बहाव की वजह से वहाँ उनकी मौत हो गई। इतने बड़े युद्ध के बाद, क्योंकि दुश्मनों की संख्या 430,000 थी, हमारे सैनिक छावनी में बिना जान के नुकसान के वापस लौट आए, जबकि बहुत कम सैनिक घायल हुए।[20]

आज कितने लोग जानते हैं कि जूलियस सीज़र की अगुवाई में एक ही दिन में लाखों लोगों की नृशंस हत्या कर दी गई थी? केवल संयमी दार्शनिक और सीनेटर कैटो ने सीज़र के अपराध के लिए उनकी निंदा की, और इसकी कीमत कैटो को बाद में अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पराजित पक्ष पर अपराधों के लिए मुकदमे चलाए गए, लेकिन विजेता शक्तियों के, विशेषतः सोवियत संघ के, साथ ही चीनी सरकार (कुओमिंटांग और कम्युनिस्ट), यूएसए और यूके के राजनेताओं या सैनिकों के आपराधिक आचरण पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। यूके ने ज़रूर कुछ कोर्ट मार्शल किए, लेकिन क़ैदियों की हत्या को लेकर नहीं।[21]

युद्ध संगठित मानव हिंसा होती है। युद्ध विनाशकारी होता है, रचनात्मक नहीं; वह मौत लाता है, जिंदगी नहीं; वह ग़ैर–ज़िम्मेदाराना शक्तियों का मित्र और आज़ादी का दुश्मन होता है।

हज़ारों साल पहले एक अज्ञात कवि ने पश्चिमी सभ्यता के दो साहित्य–संस्थापक कवियों, होमर और हेसियोद, के बीच एक स्पर्धा पर कविता लिखी है। होमर युद्ध की सर्वोत्कृष्ट कविता *इलियड* के रचयिता थे, जिसकी शुरुआत कुछ इस प्रकार है "ओ क्रोध की दैवी, पेलियस के पुत्र अकिलीज़ के क्रोध पर कुछ गाओ", और हेसियोद की कविता है *कार्य और दिवस*, जो हमें बताती है कि एक उत्पादक तथा सदाचारी जीवन कैसे जिया जाए। कवियों पर लिखी यह कविता अत्यंत सुंदर है; प्रत्येक कवि को अपने प्रसिद्ध काव्य की पंक्तियां पढ़ने को कहा गया है, एक कवि अपनी कविता की एक पंक्ति पढ़ेगा और

दूसरा अपनी कविता की एक पंक्ति से उसे पूरा करेगा। हेसियोद की पंक्तियां बहुत साधारण हैं, जबकि होमर की पंक्तियां असाधारण। होमर की शानदार युद्ध कविता को देखते हुए ग्रीस के निवासियों ने उसे विजेता घोषित करने की मांग की, लेकिन राजा पैनिदेस ने उन दोनों को अपनी–अपनी कविता का सर्वश्रेष्ठ हिस्सा सुनाने को कहा। हेसियोद ने इस प्रकार शुरुआत की {उसकी कविता के फसल कटाई और खेत जोतने वाले परिच्छेद से}।

"जब एटलस की पुत्रियां प्लीयाड्स अवतरित होती हैं, और वे खेत जोतना और फसल काटना शुरू करती हैं, उससे पहले..."

फिर होमर

{क़तार में खड़े सैनिकों की शानदार लड़ाई के परिच्छेद से} "ढाल से ढाल, टोपी से टोपी और आदमी से आदमी भिड़े, और उनके सर झुकते ही टोपी पर लगे रंगीन अश्वकेश मिले..."

इन दो परिच्छेदों की तुलना कर ग्रीसवासियों ने होमर की तारीफ में तालियां बजाई, क्योंकि उसकी पंक्तियां सचमुच असाधारण थीं; और मांग की कि उसे ही विजेता घोषित किया जाए, लेकिन राजा ने जीत का ताज हेसियोद को पहनाया और कहा कि युद्ध और मौत का वर्णन करने वाले के बजाय मैं उसे इनाम दूंगा, जो लोगों को शांति और कृषि के लिए प्रोत्साहित करता हो।[22]

अब समय आ गया है कि शांति, सहयोग और उद्यम, व्यापार तथा वाणिज्य, ज्ञान तथा विज्ञान, प्रेम तथा सौंदर्य, आज़ादी तथा न्याय जैसे सद्गुणों की ओर उन्मुख हुआ जाए और युद्ध, संघर्ष तथा विनाश, लूटपाट तथा ज़ब्ती; सेन्सरशिप और दमन, नफ़रत तथा भय, बल प्रयोग तथा अराजकता जैसे दुर्गुणों को पीछे छोड़ दिया जाए। आधुनिक विश्व में, जो शांति तथा बढ़ती समृद्धि का है, इनाम उसे ही मिलना चाहिए, जो इंसानों को युद्ध और मौत के बजाय शांति की ओर ले जाए।

आज़ादी और शांति

आज़ादी और शांति। उदारवादियों की यही पेशकश है। आज़ादी और शांति एक विकल्प होते हैं। उन्होंने करोड़ों लोगों को ग़रीबी और कष्ट से उबारा है और उबार रहे हैं। आज़ादी और शांति का चुनाव परिपक्व महिलाओं तथा पुरुषों के लिए एक सही चयन है। शांति प्रस्थापित कर उसे बरकरार रखने वालों में एक साहस होता है; उत्साह होता है; हिम्मत होती है; महानता और गौरव होते हैं; और इसी साहस, उत्साह, हिम्मत, महानता और गौरव का मूल्य उस क्रूर प्रतिबिंब से कहीं अधिक होता है, जो युद्ध के ज़रिए प्रस्तुत होता है। उद्यमशीलता, समृद्धि, नागरिक समाज, मैत्री, उपलब्धि, उत्पादकता, कला, ज्ञान, सौंदर्य, प्रेम, परिवार, संतुश्टि, समाधान, खुशी – ये सब शांति के समय में पाए जा सकते हैं और युद्ध में खोए जा सकते हैं।

उनके लिए जो शांति की "बोरियत" की शिकायत करते हैं, उनके लिए जो दुश्मनी, संघर्ष और हिंसा की चाहत रखते हैं, महान उदारवादी लेखक बेंजामिन कॉन्स्टंट ने कई साल पहले ही लिखा है,

> क्या हम अपने मृत शरीरों से तुम्हारी शोहरत बनाने के लिए हैं? तुममें युद्ध कौशल है, लेकिन उसका हमें क्या फायदा? तुम शांति की निष्क्रियता से ऊब गए हो। तुम्हारी बोरियत से हमें क्या लेना–देना?[23]

मानव के इतिहास इतने युद्ध और रक्तपात के बाद अब समय आ गया है कि युद्ध और मौत की चाहत रखने वालों की बजाय शांति और खुशी चाहने वालों को इनाम मिले।

2

युद्धों में कमी तथा मानव प्रकृति की धारणा

स्टीवन पिंकर

विश्वास करना कठिन हो सकता है, लेकिन युद्ध की घटनाओं में कमी आ रही है। इसका क्या सबूत है और इस उल्लेखनीय तथ्य के पीछे क्या कारण हैं? स्टीवन पिंकर हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में जॉनस्टन फैमिली प्राध्यापक हैं। वे भाषा तथा संज्ञान पर शोधकार्य करते हैं, *न्यूयॉर्क टाइम्स और न्यू रिपब्लिक जैसे प्रकाशनों के लिए लेखन कार्य करते हैं और उन्होंने आठ पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें दि लैंग्वेज इंस्टिंक्ट, हाउ द माइंड वर्क्स, वर्ड्स एंड रूल्स, दि ब्लैंक स्लेट, दि स्टफ ऑफ थॉट और नवीनतम दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवल नैचरः व्हाय वायलंस हैज़ डिक्लाइन्ड शामिल हैं।*

युद्धों में कमी होती नज़र आ रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की दो–तिहाई सदी में महाशक्तियां और विकसित देश शायद ही कभी लड़ाई के मैदान में एक–दूसरे के सामने आए हों, जोकि एक ऐतिहासिक रूप से अभूतपूर्व घटना है (होल्स्ती 1986; जर्विस 1988; लुआर्ड 1988; गॅडिस 1989; म्युलर 1989, 2004, 2009; रे 1989; होवार्ड 1991; कीगन 1993; पेन 2004; गैट 2006; ग्लेडिश 2008; समीक्षा के लिए देखें पिंकर 2011, अध्याय 5)। विशेषज्ञों की भविष्यवाणी के विपरीत यूनाइटेड स्टेट्स और सोवियत संघ ने तृतीय विश्व युद्ध नहीं छेड़ा, और 1953 के कोरियाई युद्ध के बाद से किन्ही भी बड़ी शक्तियों के बीच युद्ध नहीं हुआ है। 1945 से पहले के 600 सालों में पश्चिमी यूरोप के देश साल में दो नए युद्ध शुरू करते थे, लेकिन 1945 के बाद से उन्होंने एक भी युद्ध शुरू नहीं किया है। साथ ही दुनिया के करीब 40 सबसे अमीर देशों ने एक–दूसरे से सशस्त्र संघर्ष नहीं किया है। एक अन्य सुखद आश्चर्य यह है कि 1989 में शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात दुनिया में सभी प्रकार के युद्धों में कमी आई है (ह्यूमन सेक्युरिटी सेंटर 2005; लासिना,

ग्लेडिश तथा रुसेट 2006; ह्यूमन सेक्युरिटी सेंटर प्रोजेक्ट 2007; ग्लेडिश 2008; गोल्टस्टीन 2011; ह्यूमन सेक्युरिटी सेंटर प्रोजेक्ट 2011; समीक्षा के लिए देखें पिंकर 2011; अध्याय 6)। देशों के बीच युद्ध लगभग ख़त्म हो चुके हैं और गृहयुद्धों की संख्या, जो 60 से 90 के दशकों में बढ़ गई थी, में भी कमी आई है। देशों के बीच युद्ध और गृहयुद्धों से होने वाली मौतों की संख्या में भी भारी गिरावट आई है और यह द्वितीय विश्व युद्ध की दर 300 प्रति 1000,000 वैश्विक जनसंख्या से घटकर कोरियाई युद्ध के समय लगभग 30 पर आ गई, वियतनाम युद्ध के समय यह और घटकर 20 से कम हो गई, 1970 और 1980 के दशक में यह इकाई की संख्या में थी और इक्कीसवीं सदी में यह दर 1 से भी कम हो गई है।

हम युद्धों में कमी के सबूतों को कितनी गंभीरता से ले सकते हैं? क्या यह सांख्यिकी का कोई भाग्यवश फल है, किसी जुआरी की सफलता की तरह जो कभी भी विफलता में बदल सकती है? क्या यह युद्धों और उससे होने वाली जीवित–हानि के मापन के तरीकों से उत्पन्न हुए हैं? क्या यह किसी अनवरत चक्र में आई अस्थायी शांति हैं – तूफान से पहले की शांति, किसी बड़े भूकंप से पहले सान एंड्रियास फॉल्ट की निष्क्रियता, किसी लापरवाह चिंगारी का इंतज़ार करता शांत जंगल? इन प्रश्नों का जवाब कोई भी निश्चितता से नहीं दे सकता। इस लेख में मैं इनका जवाब मानव स्वभाव की प्रकृति के ज़रिए देने का प्रयास करूंगा।

कई निरीक्षकों को इस बात पर संदेह है कि युद्धों में कमी आ सकती है, क्योंकि उनके मुताबिक मानव स्वभाव बदला नहीं है, और हममें अब भी वही हिंसात्मक प्रवृत्ति मौजूद है, जिसके चलते इतिहास में लगातार युद्ध होते रहे। इस आंतरिक हिंसात्मक प्रवृत्ति का पर्याप्त प्रमाण भी हैः हम इसे वानरों के आचरण में मौजूद सर्वव्यापी हिंसा में देख सकते हैं, मानव समाज में सर्वत्र व्याप्त हिंसक आचरण में देख सकते हैं, जैसे हत्या, बलात्कार, घरेलू हिंसा, दंगे, लूटपाट, और झगड़े आदि। इसके अलावा, यह मानने के लिए भी पर्याप्त कारण हैं कि कुछ विशिष्ट जीन, हार्मोन, मस्तिष्क के सर्किट और परिस्थितिजन्य दबावों के चलते हमारी प्रजाति विकसित होने के दौरान हिंसा की ओर प्रवृत्त हुई (समीक्षा के लिए देखें पिंकर 2011, अध्याय 2, 8 तथा 9)। 1945 के बाद प्रौढ़त्व प्राप्त करने वाली केवल दो पीढ़ियों में ही ये दबाव समाप्त होकर पिछले कई लाख वर्षों के मानव विकास प्रभाव समाप्त हो गया हो, यह मुमकिन नहीं लगता, लेकिन इस तर्क के अनुसार, यदि हमारी युद्ध के प्रति जैविक प्रवृत्तियां समाप्त नहीं हुई हैं, तो शांति की कोई भी अवधि अस्थायी ही रहेगी। जो यह मानते हैं कि युद्धों में कमी कृत्रिम या भाग्यवश नहीं है, उन पर अक्सर अव्यावहारिक, आदर्शवादी होने का आरोप लगाया जाता है। वैसे, रूसो के कुछ अनुयायियों ने यह तर्क स्वीकार कर

लिया है और वे इस बात से इंकार करते हैं कि मानव कभी हिंसक प्रवृत्ति का था – उनका कहना है कि हम ऑक्सीटोसिन से भरे और सहानुभूति की तंत्रिकाओं से युक्त नग्न बोनोबो (जिसे हिप्पी चिम्पांजी भी कहा जाता है) हैं, और ये तंत्रिकाएं हमें प्राकृतिक रूप से शांति की ओर प्रवृत्त करती हैं।

मैं नहीं मानता कि हम हिप्पी चिम्पांजी हैं, लेकिन यह ज़रूर मानता हूँ कि युद्धों में आ रही कमी वास्तविक है। एक हॉब्सियन वास्तववादी होने के नाते मुझे यह तर्क देने का खास हक है कि युद्धों में कमी को मानव प्रकृति के व्यावहारिक पक्ष से जोड़ा जा सकता है। *दि ब्लंक स्लेट* (पिंकर 2002) में मैंने कहा है कि प्राकृतिक चयन के ज़रिये हमारे मस्तिष्क में लालच, प्रतिशोध, मर्दानगी, समूहप्रियता और आत्मवंचना तथा अन्य भावनाओं को शामिल करने की क्षमता है, जिनमें से प्रत्येक, या संयुक्त रूप से, हमारी प्रजाति को हिंसा के लिए प्रवृत्त कर सकती है। फिर भी मैं कहूंगा कि मानव प्रकृति का यह पुराना निरीक्षण इस बात से पूरी तरह सुसंगत है कि युद्धों में कमी मानव इतिहास की एक वास्तविक तथा संभवतः टिकाऊ घटना है।

युद्धों में कमी मानव प्रकृति की वास्तविक धारणा के साथ सुसंगत होने के चार कारण

1. इससे भी विचित्र हुआ है

किसी विशिष्ट प्रकार की हिंसा में कमी – या उसका लोप – होना मानव इतिहास के लिए नया नहीं है। मेरी पुस्तक दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचर (पिंकर 2011) और जेम्स पेन की पुस्तक अ हिस्टरी ऑफ फोर्स (पेन 2004) में इसके दर्जनों उदाहरण दिए गए हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

- अराजक कबीलाई समाज की युद्ध–मृत्यु दर शायद प्रथम स्थापित राज्यों के मुकाबले पाँच गुना ऊँची थी।
- हर एक प्राचीन सभ्यता में नरबलि प्रथा थी, जो अब नष्ट हो चुकी है।
- मध्य युग से लेकर बीसवीं शताब्दी तक यूरोप में हत्याओं की दर 35 गुना कम हो गई।
- अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक मानवीय क्रांति में, सभी प्रमुख पश्चिमी देशों ने अपराध की सज़ा के लिए यातना देने पर पाबंदी लगा दी।

- यूरोपियन देशों में कई प्रकार के अपराधों के लिए मृत्युदंड का प्रावधान था, जिसमें कई मामूली अपराध भी शामिल थे, जैसे बंदगोभी चुराना या शाही बग़ीचे की आलोचना करना। अठारहवीं शताब्दी की शुरुआत में मृत्युदंड का प्रावधान केवल देशद्रोह तथा अत्यंत गंभीर एवं हिंसक अपराधों के लिए सुरक्षित कर दिया गया, और बीसवीं शताब्दी में यूनाइटेड स्टेट्स के अलावा सभी पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों में इसे समाप्त कर दिया गया। यूनाइटेड स्टेट्स में भी, 50 में से 17 राज्य मृत्युदंड समाप्त कर चुके हैं, और शेष में भी प्रति व्यक्ति मृत्युदंड की दर औपनिवेशिक समय की दर के मुकाबले नगण्य है।
- गुलामी प्रथा कभी सारी दुनिया में कानूनी थी, लेकिन अठारहवीं शताब्दी में दुनिया भर में इसके उन्मूलन की लहर चली, जो 1980 में मॉरीटेनिया द्वारा गुलामी प्रथा को समाप्त करने पर ख़त्म हुई।
- मानवीय क्रांति में डायन करार देना, धार्मिक अत्याचार, द्वंद्वयुद्ध, खूनी खेल और कर्ज़दारों की जेलें भी बंद कर दी गईं।
- भीड़ द्वारा अफ्रीकी अमेरिकनों की हत्या के प्रकरण साल में 150 की दर से होते थे। बीसवीं शताब्दी के पहले भाग में यह दर शून्य पर आ गई।
- बच्चों को शारीरिक सज़ा, स्कूल और घर दोनों जगहों पर, अधिकांश पश्चिमी देशों में तेज़ी से कम हुई है और कई पश्चिमी यूरोपीय देशों में इसे ग़ैर–कानूनी घोषित कर दिया गया है।
- हत्या, बलात्कार, घरेलू हिंसा, बाल–अत्याचार और घृणा–जनित अपराधों में 1970 के दशक से भारी गिरावट आई है (कई मामलों में तो यह गिरावट 80 प्रतिशत तक है)।

हिंसा में इस दस्तावेज़ीकृत गिरावट को देखते हुए, यह बहस निरर्थक होगी कि मानव प्रकृति हिंसा की दर में बदलाव आने देती है या नहीं। स्पष्ट रूप से, ऐसा ही होता है; सवाल यह है कि यह कैसे होता है।

2. मानव प्रकृति के एकाधिक घटक होते हैं

लोग मानव प्रकृति को एक ही तत्व तक सीमित कर देते हैं और फिर बहस करते हैं कि वह तत्व क्या है। हम षैतान हैं या शरीफ, हॉब्स के अनुयायी हैं या रूसो के, बंदर हैं या देवदूत? इस प्रकार की विचारधारा में, यदि हम नियमित रूप से हिंसाचार

में लिप्त रहते हैं तो हमें एक हिंसक प्रजाति होना चाहिए, यदि हम शांति स्थापना में सक्षम हैं तो हमें शांतिवादी होना चाहिए।

लेकिन मस्तिष्क एक निहायत ही जटिल अंग है, जिसमें कई अलग–अलग शारीरिक तथा रासायनिक सर्किट्स होते हैं। अधिकांश मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मानव प्रकृति केवल एक प्रणाली न होकर कई प्रज्ञाओं, मापांकों, क्षमताओं, अंगों, प्रेरणाओं या अन्य उप–प्रणालियों का सम्मिलन होती है। इनमें से कई उप–प्रणालियां हमें हिंसा की ओर धकेल सकती हैं, लेकिन अन्य उप–प्रणालियां हमें इससे दूर ले जाती हैं।

मानव हिंसा कम से कम चार प्रकार वजहों से उत्पन्न होती है, जिनमें से प्रत्येक में अलग–अलग तंत्रिका–जैविक प्रणालियां शामिल होती हैं:

शोषण: किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिंसा का इस्तेमाल; अर्थात ऐसे इंसान को नुकसान पहुँचाना, जो किसी के रास्ते की रुकावट बन रहा हो। उदाहरण के लिए लूटमार, बलात्कार, पराजित करना, स्थानीय लोगों को विस्थापित करना या उनका नरसंहार, तथा राजनैतिक या आर्थिक प्रतिद्वंदियों की हत्या या उन्हें कैद कर लेना।

प्रभुत्व: व्यक्तियों में पदानुक्रम में ऊपर उठने की तथा प्रमुख बनने की महत्वाकांक्षा, या समूहों में कबीलाई, जातिगत, नस्ली, राष्ट्रीय या धार्मिक प्रभुत्व पाने की महत्वाकांक्षा।

प्रतिशोध: दृढ़ विश्वास कि नैतिक रूप से ग़लत कार्य करने वाले को सज़ा मिलनी ही चाहिए।

विचारधारा: साझा विचार प्रणाली, जो संपर्क से या शिक्षा से या बलपूर्वक फैलती है और जिसमें एक आदर्श दुनिया देने का वादा किया जाता है। उदाहरण में राष्ट्रवाद, फासिज़्म, कम्यूनिज़्म और युद्धप्रिय धर्म शामिल हैं। चूंकि आदर्श दुनिया एक ऐसी जगह होती है, जहाँ चिरकाल तक अच्छाई बनी रहेगी, इसलिए इसकी चाहत रखने वालों को अपने विरोधियों के ख़िलाफ मनमाना बल प्रयोग करने की छूट होती है, जैसी कि कहावत है, "अंडे को तोड़े बिना आमलेट नहीं मिल सकता"।

इन शैतान प्रवृत्तियों को काबू में रखने वाली हमारी कुछ दयालु, सभ्य प्रवृत्तियां भी हैं:

आत्मनियंत्रण: मस्तिष्क के अग्र भाग में मौजूद सर्किट्स किसी भी क्रिया के दूरगामी परिणामों का अंदाज़ा लगा सकते हैं और उस क्रिया को रोक सकते हैं।

सहानुभूति: किसी अन्य के दर्द को महसूस कर सकने की क्षमता।

नैतिकता की भावना: लोगों के साथ न्यायपूर्ण आचरण, समुदाय के प्रति निष्ठा, वैध सत्ता का आदर और शुद्धता तथा पवित्रता की सुरक्षा करने की भावना पर केन्द्रित मान्यताओं तथा वर्जनाओं की प्रणाली। नैतिकता की भावना न्यायपूर्णता के मानक लागू कर सकती है और किन्हीं नुकसानदेह क्रियाओं को अकल्पनीय बना सकती है।

(दुर्भाग्यवश, यह हिंसा का कारण भी बन सकती है, क्योंकि यह समूहप्रियता, अति–शुद्ध तावाद और निरंकुशता पर आधारित युद्धप्रिय विचारधाराओं को बुद्धिसंगत बना सकती है)।

कारण: हमें वस्तुनिष्ठ, तटस्थ विश्लेशण के लिए सक्षम बनाने वाली संज्ञान प्रक्रिया।

इसका अर्थ हुआ कि, लोग हिंसाचार करेंगे या नहीं यह उपरोक्त प्रणालियों की आपसी क्रिया पर निर्भर करता है; केवल मानव प्रकृति का होना मात्र हमारी प्रजाति को सदैव हिंसक होने का श्राप नहीं देता।

ख़ासतौर पर युद्ध शुरू करने का निर्णय हिंसा–प्रवर्तक प्रेरणाओं के किसी संयोजन से उभर सकता है। यदि यह निर्णय किसी हिंसा–विरोधी प्रेरणा द्वारा रोका नहीं गया, तो निर्णयकर्ता अपने साथियों में आक्रामक प्रेरणाओं को चेताकर और शांति प्रिय प्रेरणाओं को दबाकर एक आक्रामक गठबंधन तैयार कर सकता है। इस प्रकार युद्ध की शुरुआत कई मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के सही प्रकार से इकट्ठे होने पर और अन्य प्रतिबंधक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं से उनके बच निकलने पर निर्भर होती है। ये सभी प्रक्रियाएं कई अन्य व्यक्तियों को जोड़ने वाले सामाजिक नेटवर्कों में वितरित रहती हैं। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि इन प्रतिस्पर्धी प्रभावों की शक्तियां मानव इतिहास में एक समान रही होंगी।

3. मानव प्रकृति के वैकल्पिक घटक

मानव प्रकृति के कई घटक वैकल्पिक (वातावरण संवेदी) होते हैं, जलीय (समस्थिर) नहीं। युद्धों से छुटकारा असंभव होने की भावना अक्सर हमारी एक मानसिक छवि के कारण होती है, जिसमें हिंसा करने की प्रेरणा को एक समस्थिर शक्ति मान लिया जाता है। अधिक से अधिक, इसे मोड़ा या विचलित किया जा सकता है, लेकिन इसे हमेशा के लिए दबाया नहीं जा सकता। हमारे हिंसा के बारे में विचार करने के

तरीके में मानव प्रेरणाओं की समस्थिरता की भावना गहरे तक निहित है। इस पर मनोविश्लेषण, आचारशास्त्र तथा व्यवहारशास्त्र द्वारा वैज्ञानिक मुहर लगाई जा चुकी है (प्रेरणा न्यूनीकरण के बहाने), और यह समस्थिरता के साइबरनेटिक विचार से मेल खाती है, जिसमें एक अभिप्राय चक्र किसी भी असंतुलन को दूर कर किसी प्रणाली को स्थिर अवस्था में बनाए रखता है। यह हमारे व्यक्तिपरक अनुभव से भी मेल खाता है: कोई भी इंसान बिना खाए–पिए, सोए जी नहीं सकता और सेक्स न करना, जम्हाई रोकना, छींक या खुजलाहट रोकना या मल–मूत्र त्याग रोकना आदि बड़ी चुनौतियां होती हैं।

लेकिन यह सोचना कि सभी मानव प्रतिक्रियाएं समस्थिर होती हैं, एक बड़ी भूल होगी। कई अवसरवादी, प्रतिक्रियात्मक या वैकल्पिक होती हैं: वे वातावरणीय कारकों तथा संज्ञानात्मक तथा भावनात्मक अवस्थाओं के सम्मिलन से उत्पन्न होती हैं। ऊँचाई, सांप, बंद जगहें, गहरा पानी या मकड़ी, आदि विकास–उत्पन्न डरों पर विचार करें। चाहे कोई सांप का डर लिए पैदा हुआ हो, लेकिन यदि उसने कभी सांप देखा ही नहीं, तो वह अपनी सारी ज़िंदगी उस डर का अनुभव लिए बिना ही गुज़ार सकता है। इसके अन्य उदाहरण हैं कंपकंपी, प्यार में पड़ना या लैंगिक ईर्ष्या अनुभव करना।

इसी प्रकार हिंसा की ओर ले जाने वाली प्रेरणा का भी समस्थिर होना ज़रूरी नहीं है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि किसी को चोट पहुँचाने की इच्छा मन में ज़ोर पकड़ती है और उसे समय–समय पर पूरा करना पड़ता है। हिंसा के दौरान, जब हिंसा का लक्ष्य अपना बचाव करता है, या वह या उसके रिश्तेदार बदला लेते हैं, या वह पहले ही निवारक हमला करे, तब चोट लगने या मृत्यु होने का लक्षणीय जोखिम होता है। प्राकृतिक चयन का सिद्धांत कहता है कि अनुकूलन तब विकसित होता है, जब उसकी अनुमानित कीमत उसके अनुमानित फायदे से अधिक हो जाती है। हमें हिंसा की समस्थिर प्रवृत्ति का नहीं, बल्कि परिस्थिति के प्रति संवेदनशील प्रवृत्ति का विकासित होना अपेक्षित होना चाहिए। इनमें शामिल हो सकते हैं शिकार या शोषण, जहाँ कम जोखिम पर शोषण का मौका मिलता है; प्रभुत्व, जहाँ किसी की मर्दानगी पर महत्वपूर्ण लोगों के सामने संदेह जताया जाता है; प्रतिशोध, अपमान या चोट के लिए सज़ा देना (और आगे के लिए रोकना); उपद्रव, जहाँ किसी लंबे समय से चले आ रहे ख़तरे की कमज़ोर नस दिख जाती है। यदि ऐसा मौका नहीं आता – उदाहरण के लिए, यदि कोई एक सुव्यवस्थित, मध्यम वर्गीय ज़िंदगी जिए, जिसमें कोई धमकियां या अपमान न हो – तो हिंसात्मक प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति कभी जागेगी ही नहीं, ठीक वैसे ही जैसे सांप का डर। वातावरणीय संभावनाओं के प्रति यही संवेदनशीलता सही परिस्थितियों में राजनेताओं को युद्ध छेड़ने की इच्छा अनुभव करने से रोक सकती है।

4. मानव संज्ञान एक खुली उत्पादक प्रणाली है

हमें हिंसा से परावृत्त करने वाली मन की शक्तियों में से एक कुछ ख़ास है: संज्ञान प्रणाली, जो मानवों को सोच–विचार की क्षमता देती है। विवेक एक सम्मिलित प्रणाली है, जो एक विशाल संख्या में स्पष्ट विचार उत्पन्न कर सकती है। जिस प्रकार हम केवल कुछ हज़ार शब्द जानते हैं, लेकिन वाक्य–रचना के नियमों के ज़रिए हम उनसे करोड़ों–अरबों वाक्य बना सकते हैं, उसी प्रकार हमारी मानसिक तिजोरी में मौजूद कल्पनाओं की उससे भी अधिक संख्या को संज्ञान प्रक्रिया के ज़रिए असंख्य प्रकार के स्पष्ट विचारों में बदला जा सकता है (पिंकर 1994, 1997, 1999)। मानव के लिए संभव कल्पनाओं की इसी जगह में विश्वास, मिथक, कहानियाँ, धर्म, विचारधाराएं, अंधविश्वास और सहज तथा औपचारिक सिद्धांत मौजूद होते हैं, जिनसे हमारा चिंतन उत्पन्न होता है और फिर भाषा के ज़रिए हमारे सामाजिक नेटवर्क तक पहुँचता है, जहाँ वह और अधिक परिष्कृत होता है और अन्य विचारों के साथ मिलता है। सही सामाजिक संरचना में – साक्षरता, मुक्त बहस, व्यक्तियों तथा विचारों की स्वतंत्रता, सुसंगत तार्किकता और अनुभवसिद्ध परीक्षण योग्यता – इन्हीं विचारों के जरिए अच्छा विज्ञान, गहन गणितीय सूत्र और उपयोगी अविष्कार उत्पन्न हो सकते हैं।

जैसे हमारी प्रजाति ने अपनी संज्ञान शक्ति के बल पर महामारी और अकाल पर काबू पा लिया है, वैसे ही हम इसके इस्तेमाल से युद्ध के अभिशाप से भी छुटकारा पा सकते हैं। भले ही युद्ध से मिली लूट लुभावनी हो, लेकिन आज या कल लोगों को अवश्य समझ में आएगा कि समय के साथ आज जीतने वाला कल हारता है और आज हारने वाला कल जीतता है, इसलिए सबकी भलाई इसी में है कि किसी तरह सब लोग एक साथ हथियारों का त्याग करने पर राज़ी हो जाएं। चुनौती इसी बात की है कि अपने पड़ोसी को अपने साथ ही हथियार डालने के लिए कैसे मनाया जाए, क्योंकि एकतरफा शांति के ऐलान से समाज पर युद्धप्रिय पड़ोसियों द्वारा आक्रमण का ख़तरा बन जाता है।

यह सहज ही माना जा सकता है कि इस समस्या से निपटने के लिए भी मानवीय बुद्धि और अनुभव का इस्तेमाल किया जा रहा है, ठीक वैसे ही जैसा अकाल और बीमारी से निपटने के लिए किया गया था। मानव संज्ञान द्वारा नेताओं और आम जनता को युद्ध से परावृत्त करने के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

- सरकार द्वारा शोषण को ग़ैर–कानूनी घोषित करना, जिसमें निर्धारित सज़ा शोषण के फायदों से कहीं अधिक है। इससे शोषण के संभावित शिकार में

शोषणकर्ता के ख़िलाफ विद्रोह, आक्रामकता, या बाद में प्रतिशोध की इच्छा भी समाप्त हो जाती है।

- सरकार में लोकतांत्रिक प्रणाली तथा अन्य अंकुश, जिससे सरकार अपने नागरिकों के प्रति हिंसा रोकने से अधिक हिंसा न कर सके।
- वाणिज्य की इस प्रकार की रचना, जिसमें वस्तुओं की ख़रीद लूटपाट की तुलना में सस्ती हो, और जो मानव जीवन को मृत्यु से अधिक मूल्यवान बनाए।
- एक अंतरराष्ट्रीय समुदाय, जो लोगों में अहिंसात्मक सहयोग को बढ़ावा दे। यह सहयोग उसी तर्ज़ पर हो जैसे लोग अपने समुदायों तथा कार्यस्थलों पर करते हैं।
- विभिन्न सरकारों के संगठन, जो व्यापार को प्रोत्साहन दें, विवाद हल करें, युद्ध की स्थिति टालें, कानून के उल्लंघन पर नज़र रखें और आक्रामकता को सज़ा दें।
- *आक्रामकता* के प्रति संपूर्ण युद्ध के बजाय संयमित प्रतिक्रिया, जैसे आर्थिक प्रतिबंध, अलग–थलग करना, लाक्षणिक घोषणाएं, अहिंसात्मक प्रतिकार और समानुपातिक प्रत्याक्रमण जैसी प्रतिक्रियाएं।
- समारोह, स्मारक, सत्यशोधक आयोग तथा औपचारिक क्षमा प्रार्थना जैसी सुलह की कोशिशें, जो दुश्मनों के बीच बदले की भावना मिटाकर समझौते को मज़बूत बनाती हैं
- मानवाधिकार, वैश्विक भ्रातृत्व, अधिक सहानुभूति और युद्ध की वीभत्सता का भान आदि मानवीय विचारधाराएं, जो राष्ट्रवाद, सैन्यवाद, प्रतिशोध और आदर्शवाद का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुकाबला कर सकें।

लोगों के बीच अक्सर रहने वाले मतभेदों के युद्ध में तब्दील होने की संभावना को उपरोक्त तथा अन्य संज्ञान प्रक्रियाओं ने काफी हद तक कम कर दिया है (रुसेट तथा ओनील 2001; लांग तथा ब्रेक 2003; मुलर 2004, 2010; ग्लेडिष 2008; गोल्डस्टीन 2011; मानव सुरक्षा रिपोर्ट परियोजना 2011)। मानव चातुर्य के इनमें से कई उत्पादों का जोकि उदारवादी या कान्टवादी शांति सिद्धांतों में किया गया है, और उस ज्ञानी विचारक का उल्लेख यहां अप्रासंगिक न होगा। विवेक तथा जागृति काल के अन्य राजनैतिक विचारकों, जैसे लॉक, ह्यूम और स्पिनोज़ा की तरह कान्ट ने भी अहिंसा को बढ़ावा देने वाली परिस्थितियों तथा मानव संज्ञान की सम्मिलित प्रक्रियाओं पर सिद्धांत रखे। मेरा मानना है कि उनके द्वारा मनोविज्ञान तथा राजनीति का आपस में इस प्रकार मिलन कोई संयोग की बात नहीं थी।

उपसंहार

केवल समय ही बता सकेगा कि युद्धों में कमी मानव परिस्थिति की स्थायी अवस्था है या अस्थायी शांति है या आंकड़ों की कोई विचित्रता, लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि मैंने इसके वास्तविक होने के संदेह के स्त्रोतों में से एक को हटा दिया है: यह विचार कि मानव प्रकृति का हिंसात्मक पक्ष युद्धों में कमी को असंभव बनाता है। न केवल मानव इतिहास के क्रम में हिंसा में निश्चित गिरावट आई है, बल्कि यह गिरावट मानवता की वक्र बनावट के भावनारहित मूल्यांकन से पूरी तरह सुसंगत थी। मानव प्रकृति की संज्ञान तथा विकासात्मक मनोविज्ञान पर आधारित आधुनिक धारणा सुझाती है कि हमारी प्रजाति चाहे कितनी ही दोषपूर्ण हो, लेकिन उसमें अपनी बुरी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करने की क्षमता है। मानव प्रकृति कोई एक स्वभाव या प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह कई घटकों से युक्त एक जटिल प्रणाली है, जिसमें हिंसात्मक और उस पर नियंत्रण करने वाली, दोनों प्रवृत्तियां मौजूद हैं। साथ ही, हिंसात्मक प्रवृत्तियां कोई प्रबल, समस्थिर शक्तियां नहीं हैं, बल्कि कुछ विशिष्ट परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया देने वाली मनोभावनाएं हैं, जो समय के साथ बदल सकती हैं। हिंसा को प्रतिबंधित करने वाली एक प्रवृत्ति खुली सम्मिलित प्रणाली है, जिसमें असंख्य विचार उत्पन्न करने की क्षमता है और उन विचारों में वे विचार भी शामिल हैं जो युद्ध की संभावना को क्षीण कर सकते हैं।

उद्धरण

गैडिस, जॉन लेविस। (1989) *दि लांग अमन।* न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

गैट, ए़ज़ार। (2006) *वार इन ह्यूमन सिविलाइज़ेशन*। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ग्लेडिश, निल्स पीटर। (2008) "दि लिबरल मोमेन्ट फिफ्टीन इयर्स ऑन," *इंटरनेशनल स्टडीज़ क्वार्टरली* 52(4): 691–712।

गोल्डस्टीन, जोशुआ एस. (2011) *विनिंग द वार ऑन वार।* न्यूयॉर्क : ड्यूटन।

होल्स्ती, कलेवी जे. (1986) "दि हॉर्समेन ऑफ एपोकैलिप्स," *इंटरनेशनल स्टडीज़ क्वार्टरली* 30(4): 355–372।

होवार्ड, माइकेल (1991) *दि लेसन्स ऑफ हिस्ट्री*। न्यू हेवन, सीटी: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

ह्यूमन सेक्युरिटी सेंटर (2005) *ह्यूमन सेक्युरिटी रिपोर्ट 2005*। न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ह्यूमन सेक्युरिटी रिपोर्ट परियोजना (2007) *ह्यूमन सेक्युरिटी ब्रीफ 2007*। वैंकूवर, बीसी: एचएसआरपी।

ह्यूमन सेक्युरिटी रिपोर्ट परियोजना (2011) *ह्यूमन सेक्युरिटी रिपोर्ट 2009/2010*। न्यूयॉर्क: ह्यूमन सेक्युरिटी रिपोर्ट परियोजना।

जर्विस, रॉबर्ट। (1988) "दि पॉलिटिकल इफेक्ट्स ऑफ न्यूक्लियर वीपन्स – ए कॉमेन्ट" *इंटरनेशनल सेक्युरिटी* 13(2): 80–90।

कीगन, जॉन। (1993) *ए हिस्ट्री ऑफ वारफेयर*। न्यूयॉर्क: विन्टेज।

लसीना, बेथनी, निल्स पीटर ग्लेडिश तथा ब्रूस रुसेट। (2006) "दि डिक्लाइनिंग रिस्क ऑफ डेथ इन बैटल," *इंटरनेशनल स्टडीज क्वार्टरली* 50(3): 673–680।

लांग, विलियम जे. तथा पीटर ब्रेक। (2003) *वार एंड रीकन्सिलिएशन*। कैम्ब्रिज, एमए: एमआइटी प्रेस।

लुआर्ड, इवान। (1988) *दि ब्लेन्टेड स्वोर्ड*। न्यूयॉर्क: न्यू एम्सटर्डम बुक्स।

मुलर, जॉन। (1989) *रीट्रीट फ्रॉम डूम्सडे*। न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स।

मुलर, जॉन। (2004) *दि रेमनंट्स ऑफ वार*। इथाका, न्यूयॉर्क: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस।

मुलर, जॉन। (2009) "वार हैज़ ऑलमोस्ट सीज़्ड टु एग्ज़िट," *पॉलिटिकल साइंस क्वार्टरली* 124(2): 297–321।

मुलर, जॉन। (2010) "कैपिटलिज़्म, अमन, एंड दि हिस्टोरिकल मूवमेंट ऑफ आइडियाज़," *इंटरनेशनल इंटरएक्शन्स* 36(2): 169–184

पेन, जेम्स एल. (2004) *ए हिस्ट्री ऑफ फोर्स* । सैंडपॉइंट, आईडी: लिटन 52(4): 691–712।

पिंकर, स्टीवन। (2002) *दि ब्लैंक स्लेट*। न्यूयॉर्क: वायकिंग।

पिंकर, स्टीवन। (1994) *दि लैंग्वेज इंस्टिंक्ट*। न्यूयॉर्क: हार्परकॉलिंस।

पिंकर, स्टीवन। (1997) *हाउ द माइंड वर्क्स*। न्यूयॉर्क: नॉर्टन।

पिंकर, स्टीवन। (1999) *वर्ड्स एंड रूल्स*। न्यूयॉर्क: हार्परकॉलिंस

पिंकर, स्टीवन। (2011) *दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचर*। न्यूयॉर्क: वायकिंग

रे, जेम्स एल। (1989) "दि अबॉलिषन ऑफ स्लेवरी एंड दि ऐंड ऑफ इंटरनेशनल वार" *इंटरनेशनल ऑर्गनाइज़ेशन* 43(3): 405–439।

रुसेट, ब्रूस तथा जॉन ओनील। (2001) *ट्राइंग्युलेटिंग अमन*। न्यूयॉर्क: नॉर्टन।

3

शांति का अर्थशास्त्र: अमीर पड़ोसी होना क्यों अच्छी ख़बर है

इमानुएल मार्टिन

यदि कोई व्यक्ति कुछ पाता है, तो क्या किसी दूसरे को कुछ खोना आवश्यक होता है? किसी देश का फायदा दूसरे देश को नुकसान पहुँचाकर ही हो सकता है? क्या सतत संघर्ष ही मानव समूहों की नियति है? इमानुएल मार्टिन एक अर्थशास्त्री तथा आर्थिक अध्ययन संस्था – यूरोप के कार्यकारी निर्देशक हैं। यूरोप तथा अफ्रीका में कार्यक्रम आयोजित करने के साथ–साथ वे UnMondeLibre.org और LibreAfrique.org के संस्थापक संपादक भी रह चुके हैं। उनके लेख फ्रांस के लि सर्कल देस इकोस तथा लेस इकोस में, इटली के इल फोगलियो में, बेल्जियम के ल'इको में, मोरक्को के लिबरेशन में और दि वॉल स्ट्रीट जर्नल–यूरोप आदि प्रकाशनों में छप चुके हैं।

"युद्ध में राष्ट्र की हानि वास्तविक लागत से कहीं अधिक होती है; उन सब चीज़ों का भी नुकसान होता है, जो युद्ध के न होने पर पाई जा सकती थीं।"[24]

–जीन–बैप्टिस्ट से

कामयाब और नाकामयाब लोग

कई लोग मानते हैं कि यदि एक व्यक्ति का फायदा होना हो, दूसरे को नुकसान उठाना ही पड़ेगा। ऐसे लोग मानते हैं कि व्यक्तियों के बीच फायदे और नुकसान का कुल योग शून्य होता है, अर्थात यदि एक ओर फायदा हुआ है, तो किसी दूसरी ओर उतना ही नुकसान अवश्य होगा इसलिए ऐसा मानने वाले लोगों को जब पता चलता है कि किसी का फायदा हुआ है, तो वे तुरंत नुकसान होने वाले को तलाशने लगते

हैं। यदि समृद्धि का केवल यही एकमात्र मॉडल संभव होता, तो सामाजिक संघर्ष एक चिरस्थायी बात होती और युद्ध अवश्यंभावी होते।

सौभाग्यवश, समृद्धि के दूसरे मोड़ भी हैं, जिनमें दूसरों का समरूप नुकसान शामिल नहीं होता। आज की दुनिया इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। दुनियाभर में लोगों की आमदनी में वृद्धि हुई है। लोगों की आयु, स्वास्थ्य और संपत्ति में पहले के मुकाबले काफी बढ़ोत्तरी हुई है। केवल अधिक लोग अमीर ही नहीं हो रहे, बल्कि दुनिया की जनसंख्या का अमीर बनने का प्रतिशत भी बढ़ता जा रहा है।

यह सच है कि कुछ मामलों में किसी व्यक्ति का फायदा दूसरे के नुकसान से ही होता है। उदाहरण के लिए, कोई चोर अपने शिकार के नुकसान से ही फायदा कमाता है, लेकिन फायदा चोरी के अलावा अन्य कार्यों से भी कमाया जा सकता है, जैसे काम, अविष्कार, खोज, निवेश और विनिमय से।

सर्वकालिक महान अर्थशास्त्रियों में से एक ने स्पष्ट और सीधे समझाया है कि कैसे आपका फायदा मेरा भी फायदा हो सकता है। ऐसा करते हुए उन्होंने न केवल भौतिक समृद्धि की, बल्कि शांति की भी आर्थिक नींव को विशद कर दिया। जीन–बैप्टिस्ट से (1767–1832) को कभी–कभी "फ्रांसीसी एडम स्मिथ" भी कहा जाता है, लेकिन उन्होंने महज स्मिथ के ज्ञान का ही प्रसार नहीं किया, बल्कि उन्होंने स्मिथ के विचारों को आगे भी बढ़ाया।

स्मिथ की तरह वे भी युद्ध, उपनिवेशवाद, गुलामी और व्यापारवाद के आलोचक तथा शांति आज़ादी, मुक्ति और व्यापार की स्वतंत्रता के समर्थक थे। उन्होंने स्मिथ से आगे बढ़कर सेवाओं के मूल्य की व्याख्या (भौतिक वस्तुओं का मूल्य इसी में निहित होता है कि वे हमें क्या सेवा दे सकती हैं) की, तथा यह भी विशद किया कि सामग्री तथा सेवाओं की निर्मिती अन्य सामग्री तथा सेवाओं की मांग की स्रोत होती है। इसे कभी–कभी "से का बाज़ार नियम" भी कहते हैं। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण निरीक्षण है, न केवल स्थूल आर्थिक नीतियों के लिए, बल्कि सामाजिक सम्बन्धों के लिए सामान्य तौर पर तथा अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए ख़ासतौर पर भी। यदि लोग व्यापार करने के लिए स्वतंत्र होंगे, तो बढ़ती अमीरी दूसरे व्यापारियों के लिए हानिकारक न होकर लाभकारी ही होगी, क्योंकि एक व्यापारी की बढ़ती अमीरी का अर्थ है दूसरों की सामग्री तथा सेवाओं की मांग में बढ़ोत्तरी।

मुक्त बाज़ार के विरोधक, विशेषतः आर्थिक राष्ट्रवादी और व्यापारवादी तर्क देते

हैं कि यदि एक देश अमीर हो रहा है, तो किसी दूसरे देश का अवश्य ही नुकसान हो रहा होगा। वे दुनिया को "कुल योग शून्य" के चश्मे से देखते हैं, अर्थात प्राप्ति का कुल योग शून्य होता है; यदि एक व्यक्ति कुछ पा रहा है ("जोड़"), तो दूसरे का नुकसान ("घटाव") अवश्यंभावी है। से ने साबित किया कि यह ग़लत है और यह शांति के लिए महत्व रखता है, क्योंकि इसका मतलब है कि सारे देश मिलकर अमीर बन सकते हैं, क्योंकि स्वतंत्र व्यापार से सभी को फायदा होता है। व्यापार "धनात्मक योग" का होता है, अर्थात प्राप्तियों का कुल योग धनात्मक होता है। इसके विपरीत, संघर्ष और युद्ध कुल योग शून्य से भी बुरे हैं, जिसमें एक का लाभ दूसरे की हानि के बराबर होता है। युद्ध लगभग हमेशा ही "ऋणात्मक योग" के होते हैं, जिनमें कुल हानियों का योग प्राप्तियों से अधिक होता है, और युद्ध में आमतौर पर दोनों पक्षों का नुकसान ही होता है।

उत्पादकों–ग्राहकों की दुनिया

"राष्ट्रों को यह जान लेना सिखाया जाएगा कि उन्हें एक–दूसरे से लड़ने में कोई रुचि नहीं है; हार के कारण आने वाले संकट उन सभी को झेलने पड़ते हैं, जबकि जीत के फायदे केवल एक भ्रम होते हैं।" [25]

–जीन–बैप्टिस्ट से

से ने स्पष्ट किया कि एक विनिमय अर्थव्यवस्था में इंसानों को उत्पादक तथा उपभोक्ता, दोनों रूपों में देखा जाना चाहिए। उत्पादन करने का अर्थ है "वस्तुओं को उपयोगिता देकर उन्हें एक मूल्य देना"।[26] उद्योग की प्रगति का मापदंड है नए उत्पाद बनाना और पहले से मौजूद उत्पादों की कीमतें नीचे लाना। जब अधिक सामग्री का उत्पादन होता है, तो कीमतें कम हो जाती हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि उपभोक्ताओं के पास दूसरे उत्पाद ख़रीदने के लिए पैसा बच जाता है।

से ने स्पष्ट किया कि "उपयोगिता" निर्माण के लिए उद्यमी अत्यंत महत्वपूर्ण है। से स्वयं एक उद्यमी थे और वे "व्यवहारकुशल" व्यक्ति की भूमिका को समझते थे, एक ऐसा व्यक्ति, जो नए उपक्रमों का ज़िम्मा लेता है और कम से कम लागत पर सामग्री तथा सेवाओं का उत्पादन करने के रास्ते खोजता है (इसी को आज "कॉस्ट कटिंग" कहते हैं)। से ने उद्यमी की बाज़ार में महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट किया। उद्यमियों को अक्सर दूरदर्शी प्रतिभा के रूप में देखा जाता है, जिनमें असाधारण क्षमता और बाज़ार, तकनीक, उत्पाद रुचियां और लोगों का व्यापक ज्ञान होता है, लेकिन से का कहना था कि हम में से सबसे "आम" आदमी भी उद्यमशीलता के कार्य कर सकता है।

उद्यमशीलता को समझने का एक तरीका है कम से कम लागत पर उत्पादन का मार्ग खोजना, जिससे दुर्लभ संसाधनों को दूसरी मांगें पूरी करने में लगाया जा सकता है। फैक्टरी का कारीगर, जो कम समय में भी उतना ही उत्पादन करने का तरीका खोजता है; कोई किसान जो फसल को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि कम से कम जुताई और निराई करनी पड़े; कोई रेस्त्रां मालिक, जो इस बात पर ध्यान देता है कि लोग काम से कब छूटते हैं, ताकि उस समय भोजन तैयार रखा जा सके। ये सब इसी बात पर ध्यान दे रहे हैं कि कम लागत में अधिक उत्पादन कैसे किया जाए। विनिमय करना भी उत्पादन का ही एक प्रकार है। यह दुर्लभ वस्तुओं को तब उपलब्ध कराता है, जब वे किसी स्थान या समय पर सामान्यतः उपलब्ध नहीं होतीं और इस लेन–देन से दोनों पक्षों के मूल्य बढ़ते हैं, इसीलिए विनिमय किया जाता है।[27]

"से का नियम" और पारस्परिक फायदा

"से का बाज़ार नियम" एक ऐसी शक्तिशाली सैद्धांतिक रचना है, जो आर्थिक विकास को समझने में मदद करती है। अपनी 1803 में लिखी प्रसिद्ध *पुस्तक ट्रीटाइज़ ऑन पॉलिटिकल इकॉनमी* के *"डेबूशे"* (फ्रेंच भाषा में विक्रय स्थल या "बाज़ार") अध्याय में से वर्णन करते हैं कि "यह उत्पादन ही है, जो उत्पादों की मांग निर्मित करता है"[28] क्योंकि, जैसा कि बाद में कहा गया है, "उत्पादों का विनिमय किया जाता है"। जिस वाक्य "आपूर्ति अपनी मांग खुद बना लेती है" की श्रेय से को दिया जाता है, वह उनके निरीक्षण का एक हास्यास्पद रूप है। से जो कहना चाहते थे, हम बिल्कुल वही दुनिया में देख रहे हैं, वह यह कि से के समय से अब तक ग़रीबी घटी है, और ग़रीबों के स्वास्थ्य, साक्षरता, आयु तथा उपभोक्ता सामग्री तक पहुँच में बेहतरी आने के साथ दुनिया की औसत संपत्ति बढ़ी है और दुनिया अधिक से अधिक समृद्ध हो रही है। वे वैश्विक समृद्धि के कारण, "साझा व्यापार करने वालों में संपत्ति का बढ़ना", को समझने वालों में अग्रणी थे। आज की नीरस अर्थशास्त्रीय भाषा में यह "आर्थिक वृद्धि का अंतर्क्षेत्रीय सिद्धांत" है, जिसमें एक उत्पादक/क्षेत्र/देश की वृद्धि अन्य उत्पादकों/क्षेत्रों/देशों की वृद्धि का प्रतिनिधित्व करती है। और देखा जाए तो यह एक निहायत ही खूबसूरत परिदृश्य है।

जब व्यापारी अपने ख़ास उत्पाद अधिक मात्रा में उत्पादित करते हैं, तो वे अन्य के लिए अधिक उपयोगिता निर्मित करते हैं; यह अन्य लोग उत्पादन में विशेषज्ञता के ज़रिए और अधिक उपयोगिताएं निर्मित करते हैं, जो विनिमय की सुविधा देती है;

एक के द्वारा दूसरे से ख़रीद किए जाने के कारण प्रत्येक में अधिक "क्रय शक्ति" होती है। एक अन्य महान फ्रांसीसी अर्थशास्त्री जैक रफ के शब्दों में, प्रत्येक को उसके द्वारा दूसरों के लिए निर्मित उपयोगिता के ज़रिए अधिक "हक़" मिलते हैं। और ये हक़ प्रत्येक को दूसरों से और अधिक पाने के लिए सक्षम करते हैं।

उत्पादों के विनिमय के संदर्भ में पारस्परिक फायदे संचयी होते हैं। मैं अपने पड़ोसी के लिए अधिक उपयोगिताओं के निर्माण से अमीर बनता हूँ और मेरा पड़ोसी मेरे लिए अधिक उपयोगिताओं के निर्माण से अमीर बनता है। और चूंकि मैं अमीर होने के कारण मेरे पड़ोसी से अधिक ख़रीद सकता हूँ, तो मेरा पड़ोसी भी अधिक अमीर हो जाएगा। स्पष्ट है कि किसी छोटी या बंद अर्थव्यवस्था में श्रम विभाजन और उत्पादन की संभावनाएं सीमित होती हैं, लेकिन बड़े बाज़ारों में अधिक व्यक्तियों, व्यवसायों तथा उद्योगों के समक्ष अधिक संभावनाएं खुली होती हैं। जैसा कि से के पहले एडम स्मिथ ने स्पष्ट किया था, "श्रम का विभाजन बाज़ार की व्याप्ति तक ही सीमित होता है"।[29] से ने इसे आगे बढ़ाते हुए कहा कि "जितने अधिक उत्पादक, और जितनी अधिक उत्पादनों की विविधता होगी, उनके लिए उतने ही अधिक तत्पर, बहुसंख्य और व्यापक बाज़ार मिलेंगे"।[30]

से ने उत्पादनों के विनिमय के धनात्मक योग के खेल का वर्णन किया है। स्वैच्छिक विनिमयों में मेरे ग्राहक अमीर होते हैं, यह मेरे लिए अच्छी ख़बर है। इसके विपरीत, यदि वे ग़रीब हो गए, तो यह मेरे लिए बहुत बुरी ख़बर होगी। से के शब्दों में, "व्यापार की एक शाख़ा की सफलता खरीद के और अधिक साधन जुटाती है, और परिणामस्वरूप बाज़ार को अन्य सभी शाख़ाओं के उत्पादनों के लिए खोल देती है; लेकिन उत्पादन या व्यापार के एक मार्ग का ठहराव बाकी सभी पर प्रभाव डालता है"।[31]

से ने स्पष्ट किया कि आर्थिक विकास एक स्वयंधारी प्रणाली है, जो (आधुनिक नीरस भाषा में) वास्तविक रूप से "अंतर्जात वृद्धि" पर आधारित होती है: "बाज़ार का आकार", जो विशेषज्ञता के स्तर तथा श्रम विभाजन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, उत्पादन पर निर्भर होता है और इस प्रकार अंतर्जात होता है। अधिक उत्पादन से क्रय शक्ति बढ़ती है, जिससे बाज़ार का आकार और बढ़ता है, जिससे और अधिक उत्पादन के अवसर मिलते हैं।

विकास की प्रक्रिया स्पष्ट तौर पर सतत वृद्धि करने वाली और विकासपरक होती है, इसीलिए से के समय के फ्रांसीसी लोग फ्रांस में "चार्ल्स षष्ठम के निकम्मे राज्यकाल की तुलना में पाँच या छः गुना अधिक वस्तुओं की ख़रीद और बिक्री करते थे"।[32] श्रम विभाजन

और विशेषज्ञता उद्योगों की संख्या बढ़ाते हैं और उनकी नई शाखाएं (और शाख़ाओं की शाख़ाएं भी) निर्मित करते हैं। एक बाज़ार–आधारित अर्थव्यवस्था हमेशा निरंतर गति में रहती है।

से अपने समय के अन्य अर्थशास्त्रियों के मुक़ाबले अधिक आशावादी थे। अभावग्रस्तता से चिंतित होने के बजाय उन्होंने लोगों द्वारा उत्पादन बनाने और संपत्ति निर्मित करने पर ज़ोर दिया, और बताया कि ऐसा उत्पादन अन्य लोगों द्वारा यही करने की एक पूर्व शर्त है; उत्पादन और विनिमय धनात्मक कुल योग होते हैं। से के अनुसार, अभावग्रस्तता पर उद्यमशीलता तथा सेवा, विनिमय और अविष्कार द्वारा काबू पाया जा सकता था। इस प्रकार वे थॉमस माल्थस की तरह अभावग्रस्तता से चिंतित नहीं रहते थे और दोनों में विवाद होता था। से समृद्धि के अर्थशास्त्र के अभ्यासक थे और माल्थस द्वारा मानव भविष्य के निराशाजनक चित्रण से असहमत थे। से सही साबित हुए और माल्थस ग़लत।

से के नियम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लागू करना

चाहे देश की सीमा पार हो या सीमा के भीतर, अपने पड़ोसी को नुकसान पहुँचाना खुद को नुकसान पहुँचाने जैसा होता है: "प्रत्येक व्यक्ति सबकी समृद्धता से जुड़ा हुआ है और... उद्योग की एक शाख़ा की सफलता अन्य सभी शाख़ाओं की सफलता की ओर ले जाती है"।[33] और सच में, हम देश के भीतर लोगों को किसी दूसरे शहर की या दूसरे उद्योग की सफलता पर शिकायत करते बहुत कम पाते हैं; अधिकांश लोग इस बात को समझते हैं कि यदि फ्रांसीसी किसान सफल हो रहा है, तो यह फ्रांसीसी शहरी कारीगरों के लिए अच्छा ही होगा, और शहरी कारीगरों की सफलता किसान के लिए अच्छी साबित होगी।

शहर के लोगों द्वारा गाँव के लोगों से, और गाँव के लोगों द्वारा शहरी लोगों से वस्तु विनिमय कर फायदा कमाने का यही सच्चा स्रोत है; दोनों ही जितना ज़्यादा उत्पादन करते हैं, उतना ही अधिक और बेहतर वस्तुएं ख़रीद सकते हैं:

> किसी उपजाऊ, समृद्ध क्षेत्र के पास स्थित शहर को अमीर ग्राहक बहुतायत में मिलते हैं; इसी प्रकार एक अमीर शहर आसपास के ग्रामीण उत्पादनों को अतिरिक्त मूल्य दे सकता है। देशों को कृषि, उत्पादन और वाणिज्य के आधार पर बांटना व्यर्थ है, क्योंकि लोगों की कृषि में सफलता एक साथ उत्पादन तथा व्यापार की समृद्धि को प्रोत्साहित करती है; और उत्पादन तथा व्यापार का फलना–फूलना कृषि के लिए फायदेमंद होता है।[34]

से आगे साबित करते हैं कि देशों के बीच सम्बन्ध वैसे ही होते हैं, जैसे क्षेत्रों के बीच या शहरों और गाँवों के बीच:

> किसी देश की स्थिति उसके पड़ोसियों के संदर्भ में वैसी ही होती है, जैसे उसके किसी राज्य की अपने पड़ोसी राज्य के साथ, या उसके ग्रामीण क्षेत्र की शहरी क्षेत्र के साथ या उसे उनकी समृद्धि में रुचि होती है, क्योंकि उसे भी उस समृद्धि से फायदा होता है।[35]

यहां फिर, अमीर पड़ोसी का अर्थ है अपने उत्पाद अधिक बेच सकना और खुद भी अमीर बनना।

> वे माल्थस के साथ अपने पत्र व्यवहार में अपना मुद्दा और भी स्पष्ट करते हुए बताते हैं कि किसी व्यापारी को अन्य देशों या क्षेत्रों की अमीरी में कितनी रुचि हो सकती है:

जब मैं प्रतिपादित करता हूँ कि उत्पादन अन्य उत्पादनों के लिए रास्ता साफ करते हैं, जब उद्योगों के साधन, चाहे वे जो भी हों, देश के लिए सबसे ज़रूरी वस्तुओं पर मुक्त रूप से केन्द्रित होते हैं, और जब वे ज़रूरी वस्तुएं तत्काल एक नया ग्राहक वर्ग पैदा कर उसे आनन्द देती हैं, तो ये मेरा कहना ही सिद्ध करती हैं। केवल दो सौ वर्ष पहले की स्थिति देखें और सोचें कि कोई व्यापारी उस समय अपना कीमती सामान लेकर उस जगह जाता है, जहाँ आज न्यूयॉर्क और फिलाडेल्फिया खड़े हैं; क्या वह अपना सामान बेच पाता? यदि यह भी मान लें कि वह वहाँ एक कृषि, या उत्पादन आधारित समुदाय स्थापित करने में सफल होता है, तो भी क्या वह अपना कीमती सामान वहाँ बेच पाएगा? बेशक नहीं। उसे वह खुद ही इस्तेमाल करना पड़ा होगा। अब हम उसमें विरोधाभास क्यों देख पा रहे हैं? बिक्री का सामान उस समय की कीमतों पर बेचने के लिए फिलाडेल्फिया या न्यूयॉर्क क्यों ले जाया गया, या वहाँ उत्पादित किया गया? मुझे स्पष्ट तौर पर यही लगता है कि न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया तथा आसपास के क्षेत्र के किसान, व्यापारी और अब उत्पादक भी कुछ उत्पाद वहाँ बनाते या भेजते होंगे, जिसके ज़रिए वे अन्य जगहों से आया सामान ख़रीद सकें।[36]

नकारात्मक राशि खेल के रूप में व्यापार बाधाएं ("संरक्षणवाद")

आज की तरह पहले भी कई लोगों का कहना था कि हमें विदेशियों के साथ व्यापार की ज़रूरत नहीं और हम सब कुछ "घर पर" ही बना सकते हैं। से ने इस मानसिकता पर एक सटीक प्रहार किया है:

> शायद ऐसा कहा जाएगा कि "जो किसी नए राज्य के संदर्भ में सत्य है, वह शायद पुराने के लिए लागू न हो: अमेरिका में नए उत्पादकों और नए उपभोक्ताओं के

लिए जगह थी; लेकिन जिस देश में पहले से ही पर्याप्त उत्पादक मौजूद हों, वहाँ केवल नए उपभोक्ताओं की ज़रूरत होती है"। इसके जवाब में मैं कहना चाहूँगा कि सच्चे उपभोक्ता वही होते हैं, जो खुद भी उत्पादन करते हैं, क्योंकि केवल वे ही दूसरों के उत्पाद ख़रीद सकते हैं; और अनुत्पादक उपभोक्ता उत्पादकों द्वारा निर्मित मूल्यों के जरिए ख़रीद करने के अलावा कुछ नहीं ख़रीद सकते।[37]

से बताते हैं कि "संरक्षणवाद" स्वयं को ही नष्ट करता है: "मानो हर घर के दरवाज़े पर जैकेट और जूतों पर आयात शुल्क लगा दिया जाए, ताकि वहाँ रहने वाले उन्हें खुद बना सकें"।[38] आधुनिक युग की तरह ही वे भी अंतरराष्ट्रीय मूल्य श्रृंखला के महत्व को पहचानते थे।

कुछ लोग शिकायत करते हैं कि कुछ देश "व्यापार घाटा" उठाते हैं और कुछ देश "व्यापार नफा", और यह भी सुझाते हैं कि "घाटे" पर चल रही कोई भी चीज़ बुरी होती है। से ने स्पष्ट किया कि "व्यापार संतुलन" एक भ्रांति है, यह व्यापारवाद से मिली एक विनाशकारी विरासत है, जिसने कई युद्धों को जन्म दिया है। "व्यापार युद्ध " या "प्रतिशोध" केवल कुछ ऐसे लोगों के संरक्षण के लिए किए जाते हैं, जो जनता के सामने बड़ी चतुराई से खुद के हितों को राष्ट्रीय हितों के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

से उन चीज़ों से पहले से ही सावधान थे, जिन्हें हम आज "मुक्त व्यापार समझौते" कहते हैं। से की पसंदीदा नीति थी एकतरफा मुक्त व्यापार: हमें दूसरे देशों को पड़ोसी और दोस्त मानकर चलना चाहिए। विशिष्ट व्यापार संधियों में भागीदारों के साथ विषेश व्यवहार शामिल होता है: एक देश के निर्यातकों को छूट देने का मतलब है, दूसरे देश के निर्यातकों को "छूट देने से इंकार", और यह संघर्ष की ओर ले जा सकता है। से ने समझ लिया था कि ऐसी संधियाँ अधिक व्यापार उत्पन्न करने के बजाय केवल उसका रुख मोड़ देंगी, जिसमें व्यापार उन देशों से दूर चला जाएगा, जो संधि में शामिल नहीं हैं।

से ने निर्यात सब्सिडी देने के ख़तरों के प्रति आगाह किया है। ऐसी नीतियाँ "यार" या "पिछलग्गू" आकर्षित करती हैं, जो कानून का इस्तेमाल अपने मतलब के लिए करते हैं। से "सांठगांठ पूंजीवाद" (क्रोनी कैपिटलिज़्म) के उस समय आलोचक थे, जब यह शब्द अधिक प्रचलित भी नहीं हुआ था। इस तरह की यारी, एक अन्य महान फ्रांसीसी अर्थशास्त्री फ्रेडरिक बास्तियात के शब्दों में महज "साथ की गई लूटपाट" है।

मुक्त व्यापार – और शांति – के मुद्दे पर से का एक विरोधी नेपोलियन बोनापार्ट

भी था। डिकेड फिलोसॉफिक पत्रिका के संपादक रहते हुए से ने पहले बोनापार्ट द्वारा 1799 में किए गए तख़्तापलट का समर्थन किया था, जिसने फ्रांसीसी क्रांति के राज को ख़त्म किया और कॉन्सोलत संविधान की स्थापना की। से स्वयं ट्रिब्युनात के सदस्य भी थे, जोकि काउन्सेलात की चार सभाओं में से एक थी, लेकिन जब से ने 1803 में त्रैत प्रकाशित किया, तो बोनापार्ट, जो 1802 में "आजीवन" कौन्सुल बन गया था, ज़ोर दिया कि से मुक्त व्यापार से संबंधित भाग पुनः लिखें और उसे बदलकर संरक्षणवाद तथा सरकारी हस्तक्षेप का समर्थक बनाएं। से ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। उनकी बौद्धिक निष्ठा की वजह से उन्हें ट्रिब्युनात से निकाल दिया गया, त्रैत के दूसरे संस्करण को सेन्सर किया गया और उनके पत्रकार के रूप में कार्य करने पर पाबंदी लगा दी गई।

बोनापार्ट अन्य स्तरों पर भी से का विरोधक बन गया। सार्वजनिक जीवन से निष्कासित हो जाने पर से ने कताई कम्पनी शुरू करने का निर्णय लिया। से वाकई एक उद्यमी थे, उन्होंने नवीनतम हाइड्रोलिक इंजिन लगवाया, 400 कर्मचारी रखे और ब्रिटिश उत्पादकों को कड़ी चुनौती पेश की, लेकिन यह सब 1812 में बोनापार्ट की संरक्षणवादी नीतियों द्वारा कम्पनी को बरबाद कर देने तक ही चल पाया। से, उनके कर्मचारी और उनके परिवारों ने ख़राब नीतियों के परिणाम स्वयं भुगते।

समृद्धि के लिए शांति

बोनापार्ट के नेतृत्व में 1799 में इजिप्ट के एक अभियान में से के होनहार बुद्धिजीवी छोटे भाई होरेस की मृत्यु हो गई। शायद एक औपनिवेशिक अभियान में छोटे भाई की मृत्यु ने उसको युद्ध की विभीषिका से परिचित कराया। *ट्रीटाइज़* के बाद के संस्करणों में से ने "सर्वनाशी युद्धों" की कड़ी आलोचना की है, जो नेपोलियन के नेतृत्व में फ्रांस में हुए।[39]

आर्थिक विकास की पहली शर्त है शांति। लोग अपना नरसंहार होते हुए या नरसंहार का ख़तरा होने पर निवेश नहीं करते या भविष्य की योजनाएं नहीं बनाते। वे ऐसा सिर्फ़ शांति काल में करते हैं। से ने सरकार द्वारा की जा रही लूट को मर्यादित रखने पर ज़ोर दिया है। सरकार संपत्ति का नुकसान करती है, जब वह उद्योग तथा जमीन अधिग्रहित या ज़ब्त कर लेती है, या किसी की संपत्ति के इस्तेमाल पर प्रतिबंध या मर्यादा लगाती है। से का मानना था कि सरकार पर इस नियम की मर्यादा और बंधन होना चाहिए कि "नियमबद्ध सरकार के अधीन रहने वाला देश ही अमीर बन सकता है"।[40]

स्पष्ट रूप से, देशों के बीच आपसी अमीरी पाने की पहली शर्त शांति ही होती है। युद्ध मानव जीवन को नष्ट, अपाहिज और अभिशप्त करता है, संपदा को मिटा देता है, भुखमरी लाता है और दुर्लभ संसाधनों का अपव्यय करता है। युद्ध ऋणात्मक कुल योग होते हैं। युद्ध की लागत तथा शांति का मूल्य उजागर करना राजनैतिक अर्थव्यवस्था के कार्यों में शामिल है। ज्यूरिख में किसी स्विस व्यक्ति से या स्टॉकहोम में किसी स्वीडिश व्यक्ति से उस शहर की या उस देश की शानदार अमीरी का राज पूछिए; आप को प्रायः यही जवाब मिलेगा, "हमने खुद को दो विश्व युद्धों में नष्ट नहीं होने दिया"। जैसा से कहते हैं:

> राष्ट्रों को यह जान लेना सिखाया जाएगा कि उन्हें एक–दूसरे से लड़ने में कोई रुचि नहीं है; हार के कारण आने वाले संकट उन सभी को झेलने पड़ते हैं, जबकि जीत के फायदे केवल एक भ्रम होते हैं... ज़मीन या सागरी मार्गों पर प्रभुत्व में भी कोई आकर्षण नहीं रह जाएगा, जब यह सब की समझ में आ जाएगा कि सारा फायदा शासकों के हाथ में होता है और प्रजा को कुछ नहीं मिलता। निजी व्यक्तियों के लिए सबसे बड़ा फायदा होता है कार्य की स्वतंत्रता का, जो शांति के बिना कुछ नहीं। प्रकृति देशों को परस्पर मैत्री की ओर ले जाती है; और यदि सरकारें इसमें बाधा डालकर युद्ध करती हैं, तो यह उनकी अपनी जनता के, तथा युद्ध में उनके प्रतिद्वंद्वी के हितों के ख़िलाफ होता है। यदि प्रजा कमज़ोर है और इस अपने शासकों की इस विनाशक महत्वाकांक्षा में उनका साथ देती है, तो मैं नहीं जानता इस घोर मूर्खता और बेतुकेपन को उन खूंखार जानवरों की वहशियत से कैसे अलग देखा जाए, जिन्हें उनके क्रूर मालिक अपने आनन्द के लिए एक–दूसरे को चीर–फाड़कर मारना सिखाते हैं।[41]

शांति और मुक्त व्यापार एक–दूसरे के पूरक हैं, न केवल आर्थिक विकास में, बल्कि असली संपदा अर्जित करने तथा मानव प्रफुल्लता में भी।

4

शांति के पुजारी व्यापारी के साथ बातचीत– क्रिस रुफर

टॉम जी. पामर

शांति और व्यापार के बीच क्या सम्बन्ध है? वह कौन–सी प्रेरणा है, जो किसी व्यापारी को शांति का समर्थन तथा विदेशी हस्तक्षेप का विरोध करने के लिए प्रेरित करती है? आज़ादी, स्वयंसेवी कार्य और शांति के बीच क्या सम्बन्ध है? क्रिस रुफर ने विश्व के सबसे बड़े टमाटर प्रक्रिया कारख़ाने की स्थापना की और वे कृषि आधारित प्रक्रिया, वितरण तथा सेवा उद्यम चलाते हैं। वे सेल्फ–मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट एवं फाउंडेशन फॉर हार्मनी एंड प्रॉस्पेरिटी के संस्थापक हैं।

पामरः आपके समय के लिए धन्यवाद, क्रिस। मैंने आज ही आपके और आपकी कम्पनी के साथ कुछ लेन–देन किया है, हालांकि आप शायद इस बारे में नहीं जानते। मैंने अपनी फिंगर चिप्स के लिए केचप ख़रीदा और सलाद में कुछ टमाटर लिए। जहाँ तक मेरा ख़्याल है, ये टमाटर आपकी कम्पनी द्वारा प्रोसेस किए जाने की पूरी संभावना है। सो, बाज़ार ने किसी प्रकार आज हमारा शांतिपूर्ण मिलन करवा ही दिया। यहीं से मेरा पहला ज्वलंत प्रश्न निकलता है: एक व्यापारी शांति के मुद्दे में इतनी रुचि क्यों ले रहा है?

रुफरः मैं समझता हूँ इसका जवाब कई तरह से दिया जा सकता है। शांति हमें अधिकतम साझा मूल्यों पर इकट्ठे व्यापार करने की इजाज़त देती है इसलिए किसी चीज़ को एक ख़ास तरीके से करने पर मजबूर होने की बजाय हम एक–दूसरे के मूल्यों को, अपने सच्चे मूल्यों को प्रतिसाद दे सकते हैं। स्वैच्छिक विनिमय के लिए शांति एक पूर्व शर्त है, और मेरा व्यापार इसका पूर्ण समर्थन करता है। जब हम बिना किसी दबाव के, स्वैच्छिक रूप से एक साथ काम करते हैं तो हमें अपने ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं के मूल्यों का पता चलता है। और ये ग्राहक, आपूर्तिकर्ता और सहयोगी ही हैं, जो अपने मूल्यों को जानते हैं। एक व्यापारी के तौर पर, मैं वस्तुओं की मांग जानने के लिए अर्थव्यवस्था

के संकेत देखता हूँ, जो मुझे उन वस्तुओं की कीमत के रूप में मिलते हैं। यह जानकारी अर्थात कीमतें, मेरे पास आँकड़ों के रूप में आती है, जिन पर किसी राष्ट्रीयता, भाषा, नस्ल या धर्म का लेबल नहीं लगा होता। वे इंसानों के मूल्यों के संकेत होते हैं।

बाज़ार के बारे में और एक व्यापारी होने के बारे में यह एक विस्मयकारी बात है। कीमतों के पीछे कुछ नहीं होता; कोई पूर्वाग्रह, कोई राष्ट्रीयता, कोई धर्म, कुछ नहीं होता। वे कुछ व्यक्तियों का एकत्र मूल्य होती हैं और मेरे सामने कीमतों के रूप में आती हैं, जो एक संख्या होती है और उसकी दूसरी संख्याओं से तुलना की जा सकती है। मैं इन संख्याओं का इस्तेमाल कर अपने मूल्यवान संसाधनों के आवंटन पर फैसला कर सकता हूँ। वे मुझे यह बताती हैं कि दूसरे लोग इसके लिए कितना पैसा दे सकते हैं, जिससे मुझे उन संसाधनों की लागत पता चलती है। कीमतें मुझे मदद करती हैं कि मैं दूसरों का मूल्य समझ सकूँ।

पामरः क्या आपका अंतरराष्ट्रीय व्यापार भी है?

रुफरः हाँ। असल में, हमारे उत्पादों में से करीब 30 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेचे जाते हैं।

पामरः विदेशियों को?

रुफरः विदेशियों को, लेकिन मेरे लिए वे सभी सिर्फ ग्राहक हैं। मैं इन बातों की परवाह नहीं करता, जब तक सरकारें हस्तक्षेप नहीं करतीं। हमारी 10 से 20 प्रतिशत बिक्री कनाडा और मैक्सिको में होती है, लेकिन बाकी अंतरराष्ट्रीय बिक्री सारी दुनिया में होती है। हर महीने हम चालीस से पचास देशों के ग्राहकों को सामान बेचते हैं – जापान, सऊदी अरब, नीदरलैंड्स, इंग्लैंड, अर्जेंटीना, सब जगह। सामान में अधिकांश माल टमाटर की पेस्ट और टमाटर के उत्पाद होते हैं।

पामरः और आपको इस सारी बिक्री से मुनाफा मिलता है?

रुफरः हाँ, बिल्कुल। नहीं तो हम यह करेंगे ही नहीं। मुनाफा मुझे बताता है कि हम दुनिया में मूल्यों का संवर्धन कर रहे हैं, हम अपने ग्राहकों के मूल्य समझ रहे हैं और उन्हें संतुश्ट कर रहे हैं। इसका एक और प्रभाव पड़ता है, जो दूसरों के मूल्यों को प्रतिसाद देने से संबंधित है। आप जब अपना उत्पाद बेचते हैं, चाहे अंतरराष्ट्रीय या घरेलू बाज़ार में, आप सोचें कि वह उत्पाद शांति, सहयोग और परस्पर आदर का संदेशवाहक है। जब आप लोगों को ग्राहक के रूप में देखते हैं, तो आपको उन्हें गोली मारने या चोट पहुँचाने का ख़्याल नहीं आता। हिंसा और बल प्रयोग के लिए व्यापार एक सचमुच खूबसूरत विकल्प है।

पामरः कुछ लोग कहते हैं कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, और यदि ऐसा है...

रुफरः व्यापारी जब मुक्त व्यापार में होता है, अर्थात दूसरों की संपत्ति के हक़ का आदर करते हुए, तब वह एक सर्वोत्तम पर्यावरण–मित्र होता है। एक सच्चा पर्यावरण हितैषी सामग्री, भौतिक संसाधन जैसे तेल या लकड़ी या रबर या काँच आदि की लागत देखता है। और क़ीमते, नफा और नुकसान के ज़रिए जो हिसाब–किताब रखा जाता है, उससे लागत की जनकारी को सिर्फ ज्ञान नहीं रह जाती, बल्कि वह प्रभावी ज्ञान बन जाती है; वह आचरण को बदल देती है। कीमतें हमें लागत का ज्ञान देती हैं और साथ ही हमें लागत को कम करने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं। हमें चीज़ों की बरबादी अच्छी नहीं लगती और उसे रोकने के लिए हमारे पास पर्याप्त कारण भी है। मुख्य बात है दूसरों के अधिकार का सम्मान करना, संपत्ति के अधिकार कार्य जब संपत्ति के अधिकार का सम्मान नहीं किया जाता, तब पर्यावरण की दुर्दशा, प्रदूशण, बरबादी और नाश होता है। जब संपत्ति के अधिकार स्पष्ट रूप से परिभाषित और संरक्षित होते हैं, तब हमें हमारे विकल्पों का दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव का ध्यान रखना पड़ता है। सरकार को उसके कार्यों का दूसरों पर पड़ने वाले प्रभाव का ध्यान नहीं रखना पड़ता, क्योंकि वे बल प्रयोग कर सकती हैं, लेकिन हमें हर दिन, हर मिनट मूल्यों तथा लोगों के अधिकारों का ध्यान रखना पड़ता है। हमारा व्यवसाय स्वैच्छिक कार्य पर केन्द्रित है। हम लोगों को हमारे उत्पाद ख़रीदने के लिए या उनका उत्पादन करने के लिए, या हमें सामान की आपूर्ति करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते, न ही हम ऐसा करते हैं। यह संपूर्ण रूप से स्वैच्छिक है।

पामरः आपने स्वैच्छिक गतिविधियों का बार–बार ज़िक्र किया। आप स्वयं को स्वेच्छावादी मानते हैं, या उदारवादी, या...?

रुफरः मेरे लिए ये सारे शब्द लगभग समानार्थी हैं। इसके लिए पुराना शब्द है "उदारवादी", लेकिन यह यूनाइटेड स्टेट्स में कभी–कभी भ्रम पैदा कर देता है, क्योंकि यहां "उदारवादी" को "रूढ़ीवादी" का विपरीत माना जाता है। आप कह सकते हैं कि मैं "पारम्परिक उदारवादी" हूँ, लेकिन इन शब्दों के सही मायनों में आप कह सकते हैं कि मैं इन सबको मानता हूँ – उदारवाद, पारम्परिक उदारवाद, स्वेच्छावाद, इच्छास्वतंत्रतावाद। मेरे लिए यह बात मायने रखती है कि लोगों को मजबूर न किया जाए और हम स्वेच्छा से, शांतिपूर्वक साथ–साथ काम करें।

पामरः आपके यह विचार कब से हैं, और आपकी यह विचारधारा कैसे बनी?

रुफरः मेरे माता–पिता राजनीति से दूर ही रहते थे और बचपन में मैं बहुत शर्मीला था,

अब भी हूँ इसलिए मैं वाद–विवाद और इस तरह की गतिविधियों में ज़्यादा शामिल नहीं होता था। मैंने कभी खुद को एक बुद्धिजीवी के रूप में नहीं देखा। फिर मैंने यूसीएलए में दाख़िला लिया, हॉस्टल में रहा और काफी हम उम्र लोगों से मिला, जिनमें बहुत से लोग मुझसे अधिक स्मार्ट थे। यही वह समय था जब मैंने राजनीति पर ध्यान देना शुरू किया, और पता नहीं किस कारण से मैं एक ख़ास रुझान से ही बहस करता था, कि मुझे नहीं लगता लोगों को किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाना सही है। समय के साथ मैंने अपने तर्क और परिष्कृत किए। मुझे यही कॉमनसेन्स लगता था। मुझ पर किसी के प्रभाव पड़े होंगे, लेकिन यदि ऐसा है, तो मैं नहीं जानता कि वे किसके हैं। मुझे याद नहीं पड़ता कि कोई ऐसी किताब या व्यक्ति या विधान हो, जिसने मेरी सोच इस दिशा में मोड़ी हो। मैं केवल निरीक्षण करता था और चीज़ें कैसे काम करती हैं तथा उनमें बेहतरी किस प्रकार आ सकती है, इस पर सोचता था। यूसीएलए में मेरा प्रमुख विषय था – अर्थशास्त्र और मेरे श्रम विषय के प्रोफेसर थे टॉम सोवेल, साथ ही आर्मेन एल्कियन और विलियम एलेन भी बहुत अच्छे प्रोफेसर थे। मेरी पहली क्लास, मेरे ख़्याल से, बिल एलेन द्वारा अर्थशास्त्र 1 की थी इसलिए मेरा पहला परिचय अर्थशास्त्र से हुआ। मेरा यह मानना है कि लोगों की कार्यपद्धति को समझने में अर्थशास्त्र बहुत महत्वपूर्ण है।

अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है; यह गणित की शाख़ा नहीं है, जैसा कि आज कई लोगों को ग़लतफहमी है। यह एक सामाजिक विज्ञान है, जो लोगों के आपसी समन्वयन का अध्ययन करता है। मुझे कभी ऐसा नहीं महसूस हुआ कि मैं कोई राजनैतिक कार्यक्रम चला रहा हूँ। उस ज़माने में मैंने कभी "इच्छास्वतंत्रतावादी" शब्द सुना तक नहीं, लेकिन मैंने उसी समय इस बारे में सोचना शुरू कर दिया था कि लोग किस प्रकार अपने कार्य समन्वयित कर अपने मूल्यों को हासिल कर सकते हैं। और इसके कुछ समय बाद मैंने इच्छास्वतंत्रतावाद के बारे में सुना, और मुझे ख़्याल आया, "यह तो मैं ही हूँ। यह तो मेरी ही विचारधारा है"। ऐसी कोई अचानक बिज़ली की तरह कौंधने वाली प्रेरणा नहीं थी। मैंने केवल सोचा कि लोग अपनी ज़िंदगी शांति से जी सकें और अपने मूल्य आपसी सहयोग से पाने का रास्ता खोज सकें। मुझे बाद में पता चला कि मेरी विचारधारा का एक नाम भी है।

पामर: इसलिए आप कॉलेज में अर्थशास्त्र पढ़ रहे थे, जिसे आपने एक स्वैच्छिक सहयोग के विषय के रूप में देखा। आपने इस पढ़ाई को व्यापार में किस तरह लागू किया? यह कैसे संभव हुआ?

रुफर: मैं नौकरीपेशा परिवार में पला–बढ़ा हूँ, लेकिन मेरे दादाजी एक छोटे व्यापारी

थे, एक उद्यमी। मुझे याद है, जब उन्होंने तेल के कुंओं में कुछ निवेश किया था, तब मैं उनके साथ तेल के क्षेत्र में जाता था। उनके एक या दो पेटेन्ट भी थे, घर में एक वर्कशॉप था। वे एक अविष्कारक भी थे और उद्यमी भी। मेरी ये यादें तब की हैं, जब मैं बहुत छोटा था। मैं करीब 12 साल का था, जब उनकी मौत हुई, लेकिन मैंने यह देख लिया है कि बुजुर्ग होने पर जिंदगी कैसी होती है। मेरे पिताजी मेरे दादाजी के लिए काम कर करते थे। बिल्कुल खेतों की तरह। आप छोटे बच्चे होते हो, आप देखते हो कि पिताजी ट्रैक्टर चला रहे हैं, दादाजी बैंक जा रहे हैं। दादाजी व्यापार पक्ष देख रहे हैं और पिताजी मैदानी काम कर रहे हैं। मैं सोचता था ज़िंदगी ऐसे ही चलती है और सब लोग यही करते हैं। इसने मेरे जीवन पर काफी हद तक प्रभाव डाला। मैंने अर्थशास्त्र में बैचलर डिग्री ली, फिर कृषि विज्ञान में मास्टर डिग्री ली और एमबीए भी किया। मैंने यूसीएलए के बिज़नेस स्कूल में पढ़ाई की और कभी भी नौकरी का इंटरव्यू नहीं दिया। मैं कैलिफोर्निया के डेविस शहर में गया और ट्रक ड्राइवर बना, साथ ही मैंने कुछ विचारों पर और आगे सोचा इसलिए यह मेरा स्वभाव ही था, मेरी उम्मीदों का एक भाग था।

मैं कॉलेज में रहते हुए ही बिज़नेस में आ गया था। पिताजी ने करीब सवा साल तक मेरी मदद की। फिर मैं अपने हाल पर आ गया, क्योंकि वे इतना ख़र्च वहन नहीं कर सकते थे। इस पर कोई ख़ास चर्चा नहीं हुई; मैंने समझ लिया और काम करना शुरू कर दिया। मेरे पिताजी करीब–करीब ज़िंदगीभर एक ट्रक ड्राइवर थे। मैंने सोचा मैं भी यह कर सकता हूँ इसलिए दोस्तों के साथ मिलकर मैंने टमाटरों के परिवहन का काम ले लिया। जब मैं कॉलेज में एक जूनियर था – या शायद सीनियर – तब मैंने एक ट्रक और ट्रेलर किराए पर ले लिया और पिताजी के लाइसेन्स के नीचे काम करने लगा। गर्मियों में मुझे टमाटर, आड़ू और अन्य चीज़ों के परिवहन का ठेका मिला। वह पाँच साल, पाँच गर्मियों तक चला।

पामर: यह सब, जब आप कॉलेज में थे?

रुफर: हाँ, इससे मेरी कॉलेज की पढ़ाई पूरी हो सकी और मैं व्यापार से भी परिचित हो सका। मेरे मामले में यह टमाटर का व्यापार था। मेरी एक ट्रक ड्राइवर के रूप में पहचान भी बन गई, आप खेतों में जाते हैं, ग्रेडिंग स्टेशन्स पर जाते हैं, प्रोसेसिंग प्लांट्स पर जाते हैं, आप फलों की पहचान कर सकते हैं। इससे मुझे कुछ आइडिया मिले, जैसे, "टमाटर पेड़ों से उतारने की तकनीक में कुछ सुधार किए जाएं, प्रोसेसर्स में टमाटर डालने की विधि बदली जा सके और ग्रेडिंग स्टेशन को यहां से वहाँ शिफ्ट किया जाए तो यह सिस्टम और बेहतर हो सकता है। समय और पैसों की काफी बचत हो सकती है"। मैंने

सोचा, "यदि सिस्टम थोड़ा भी बदल जाए तो मैं ट्रक ड्राइवर होते हुए भी काफी पैसा कमा सकता हूँ" इसलिए यह इस बात से शुरू हुआ जब मैंने खुद से पूछा, "तुम क्या बेहतरी ला सकते हो"? मैं अन्य लोगों के बिज़नेस को देख रहा था और सिस्टम को बेहतर करने के तरीकों पर विचार कर रहा था। तब मैंने एक अलग सिस्टम बनाया और लोगों को दिखाया। मैं जगह–जगह भटका, प्रोसेसिंग उद्योग का और अधिक अध्ययन किया और टमाटर प्रोसेसिंग प्लांट का एक अलग डिज़ाइन तैयार किया। मैं इसी के पीछे पड़ा रहा और पाँच साल तक पैसा जुटाने की कोशिश की, कुछ और भटका और पैसा जुटाने में कामयाब रहा। अंततः फैक्टरी बनाने का समय आ ही गया। मेरे तीन बड़े भागीदार थे – मैं सबसे छोटा भागीदार था – और हमने टमाटर पेस्ट प्रोसेस करने की फैक्टरी डाली। उस फैक्टरी में कुछ नई चीज़ें थीं और उनकी वजह से हमारा धंधा अच्छा चल निकला। हालाँकि मैं सबसे छोटा भागीदार था, लेकिन मैंने कोई वेतन नहीं लिया और बदले में मुनाफे का अधिक प्रतिशत ले लिया। सात सालों में मैंने अपने भागीदारों को बहुत कमाई करवा दी और खुद भी कमाया इसलिए सब अच्छा चला। यह सही समय पर सही काम करने वाली बात थी। मैंने भागीदारों के सामने दूसरा प्लांट डालने का प्रस्ताव रखा, लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। तब हम अलग हो गए। मैंने अपने पैसों से एक प्लांट डाला। और वहाँ से यह सब आगे बढ़ा।

पामरः आप अपने व्यापार अनुभव से लिए हुए एक सिद्धान्त को बढ़ावा देते हैं, जिसे आपने नाम दिया है "स्व–प्रबंधन"। आपने स्वैच्छिक सहयोग तथा स्व–प्रबंधन को प्रोत्साहन देने के लिए एक स्व–प्रबंधन संस्थान भी शुरू किया है। आप सबके लिए फायदेमंद सम्बन्ध कैसे स्थापित करते हैं, ताकि, जैसा कि आपने संस्थान की वेबसाइट पर डाले गए वीडियो में कहा है, लोगों के निजी उद्देश्य उनके व्यापारिक उद्देश्यों के साथ, तथा उनके व्यापारिक उद्देश्य निजी उद्देश्यों के साथ सुसंगत रहें?

रुफरः मेरे लिए, स्व–प्रबंधन अत्यंत सरल है। लोग अपनी निजी ज़िंदगी में खुद की व्यवस्था खुद देखते हैं। उसके लिए कोई अलग से मैनेजर नहीं रखता। वे अपनी ज़िंदगी खुद चलाते हैं। और वे ऐसा करते हुए एक उद्देश्य की ओर बढ़ते हैं। मेरा मानना है कि हर एक की ज़िंदगी का उद्देश्य होता है खुश रहना। जाने या अनजाने, सभी लोग खुश रहने की ही कोशिश करते हैं। हर एक ज़िंदा चीज़ फलने–फूलने की कोशिश करती है। लोग अलग–अलग चीज़ों से खुश होते हैं। लोगों को व्यापार में स्वेच्छा से साथ आकर सहयोग करवाना हो, तो उस उपक्रम में प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक उद्देश्य स्थापित करना आवश्यक है।

अपना उद्देश्य कैसे पूरा हो सकेगा, इस बारे में इंसान निजी निर्णय करते हैं और जब

वे वस्तुओं का विनिमय करते हैं तो वे सौदेबाज़ी करते हैं। वे अपने निजी निर्णय के अनुसार और अपनी जानकारी के अनुसार चलते हैं, जो अक्सर दूसरे के पास नहीं होती इसलिए वे विनिमय करते हैः इस चीज़ के लिए इतना, उस चीज़ के लिए उतना। यही विनिमय का अनुपात कीमतों में बदल जाता है, जब लोग पैसों का इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि यही एक ऐसी वस्तु है, जिसे सब लोग स्वीकार करते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कोई और भी इसे ले ही लेगा। परिणामस्वरूप, उनके निजी निर्णय क़ीमतों में बदल जाते हैं, जो बाज़ार अर्थव्यवस्था में आंकड़ों के रूप में प्रदर्शित होती है। ये कीमतें एक ही इकाई में प्रदर्शित होती है, जिससे उनकी तुलना की जा सकती है। यह कितना अच्छा है ना? समन्वयन और सुव्यवस्था पाने के लिए आपको किसी केन्द्रीय योजनाकार की आवश्यकता नहीं होती। खुले बाज़ार की यह एक ख़ासियत है। और हम स्व–प्रबंधन के ज़रिए कम्पनी में आज़ादी और स्व–अनुशासन तथा खुला–बाज़ार अर्थव्यवस्था के फायदे लाते हैं। लोग ऐसी बातें जानते हैं, जो दूसरों को पता नहीं होती, लेकिन उनके फायदे की होती है। बाज़ार के ज़रिए हम अपने निजी उद्देश्य बीच में लाए बिना संवाद स्थापित कर सकते हैं और हम किसी के अधीन रहे बिना खुद के अनुशासन में रहने की कोशिश करते हैं। इससे बहुत बेहतर नतीजे मिलते हैं।

पामरः अच्छा, और संघर्ष? क्या वह अटल होते हैं? क्या संघर्ष स्थायी होता है, या उसे शांत करने के तरीके होते हैं? आपका क्या अनुभव है?

रुफरः संघर्ष अटल होते हैं। सवाल ही नहीं। यदि संघर्ष न हो, तो अर्थव्यवस्था भी नहीं होगी। संसाधन सीमित होते हैं और इन सीमित संसाधनों के वितरण के अध्ययन को ही अर्थशास्त्र कहते हैं इसलिए, संघर्ष तो रहेंगे ही। बिल्कुल। मुद्दा यह है कि उन्हें कैसे अच्छे से सुलझाया जाए। संघर्ष इंसानी कार्यों या संसाधनों के उपयोग को लेकर हो सकते हैं। संघर्षों के सुलझाने के दो तरीके होते हैं। आप संघर्ष सुलझाने के लिए सामने वाले के ख़िलाफ बल प्रयोग कर सकते हैं – बलपूर्वक या शांतिपूर्वक। यदि आप उन लोगों के साथ काम कर सकते हैं, जो संघर्षों को शांतिपूर्वक सुलझाने के लिए राज़ी होते हैं, तो यह आपकी जीत है, आप सबकी जीत है। मैं समस्याओं को सबकी जीत के लिए सुलझाने की कोशिश करता हूँ। सबको जिताने वाले समाधान सबके लिए फायदेमंद होते हैं। वे शांति लाते हैं। वे समृद्धि और खुशी देते हैं।

पामरः अब राजनीति से अधिक जुड़े सवालों की ओर चलते हैं। कुछ लोग कहते हैं

कि वे व्यापार–समर्थक हैं। कुछ अन्य लोग कहते हैं कि वे मुक्त–बाज़ार समर्थक हैं। क्या इन दोनों में फर्क है?

रुफरः मुक्त बाज़ार एक स्वैच्छिक प्रक्रिया है। जब लोग व्यापार समर्थक होने की बात कहते हैं, तो यह दूरदर्शिता नहीं होती। वे दूसरों के हक़ की अनदेखी कर जीतना चाहते हैं। स्वैच्छिक व्यापार आजाद होकर, मुक्त बाज़ार की स्थिति में किया जाता है, जिसमें कि, फर्म या समूह के प्रति पक्षपात नहीं किया जाता। यदि कोई व्यापारी सरकार के पास जाता है और ऐसी चीज़ पाने के लिए सरकार का इस्तेमाल करता है, जो उसे स्वैच्छिक वातावरण में नहीं मिली, तो यह सरासर अनैतिक और अनुत्पादक कृत्य होगा। व्यापार स्वैच्छिक, नैतिकतापूर्ण होना चाहिए, जिसमें सरकारी बल प्रयोग द्वारा पक्षपात या सब्सिडी न हो।

दुर्भाग्यवश, और मैं सचमुच इसके खिलाफ संघर्षरत हूँ, एक प्रकार का "पक्षपात का बाज़ार" बन गया है, जो वास्तविक बल प्रयोग का बाज़ार है। यह ऐसा है मानो मैं आपकी बंदूक लेकर किसी और को उसके बल पर लूट लोता हूँ और फिर हम दोनों हिस्सा बाँट लेते हैं। यह एक प्रकार का अभिशाप है, जिसे "सांठगांठ" कह सकते हैं, जिसमें सरकार अपने अधिकारों का इस्तेमाल कर किसी का हक छीनकर अपने पसंदीदा समूहों को फायदा पहुँचाती है। इसका इलाज है मुक्त बाज़ार – प्रतिस्पर्धा की आज़ादी, सबके हक़ों के प्रति आदर और कानून के समक्ष समानता। सांठगांठ की राजनीति का अर्थ है किसी सरकार, संस्था के पास जाकर उससे बल प्रयोग करवाना। यह ठीक माफिया की तरह है, कोई फर्क नहीं।

पामरः शांति के मुद्दे पर लौटते हैं। व्यापार और शांति के बीच क्या सम्बन्ध है? आप एषिया, लैटिन अमेरिका और मध्य–पूर्व के लोगों के साथ व्यापार करते हैं। क्या व्यापारियों को शांति का समर्थन करना चाहिए?

रुफरः बिल्कुल करना चाहिए। व्यापार क्षेत्र के लोगों को कई प्रकार से शांति का समर्थन करना चाहिए। सबसे पहले शांति को निजी तौर पर अपने मूल्यों में शामिल करना चाहिए; अर्थात अपने उपक्रम के भीतर, समस्याओं के शांतिपूर्ण समाधान का समर्थन करना चाहिए, यह नहीं कि सरकार के पास जाकर अपने प्रतिस्पर्धियों पर प्रतिबंध लगवाएं या सांठगांठ की राजनीति में शामिल हो जाएं। सब्सिड़ी न लें। सरकारी योजनाओं का इस्तेमाल न करें। बल प्रयोग से, मतलब सरकारी संस्थाओं से यथासंभव अधिक से अधिक दूरी बनाए रखें।

इसके बाद नम्बर आता है बल प्रयोग में शामिल न होने का, नैतिकतापूर्ण निर्णय लेने का। सरकार को हिंसा या बल प्रयोग या दमन के साधन न बेचें। यह महत्वपूर्ण है।

तीसरे नम्बर पर है स्वैच्छिक व्यापार के ज़रिए देशों के बीच शांतिपूर्ण सम्बन्धों को बढ़ावा देना। व्यापार से युद्ध होने की संभावनाएं घटती हैं। लोग जितना अधिक एक–दूसरे से परिचित होंगे और व्यापार से एक–दूसरे को फायदा पहुँचाएंगे, उतना ही उनकी सरकारों के बीच युद्ध होने की संभावना कम होगी, क्योंकि दोनों ओर शांति के पक्षधर लोगों की संख्या अधिक होगी। जितना अधिक व्यापार होगा, उतनी ही दोनों देशों की आपस में निर्भरता बढ़ेगी। मैं जानता हूँ इस पर काफी अध्ययन हो चुका है और अर्थशास्त्री और राजनीतिशास्त्र के विशेषज्ञ शांति और व्यापार पर विचार करते हैं। मैं भी इसे अपने जीवन और व्यापार के अनुभवों से जानता हूँ। जब ग्राहक आपके दरवाज़े पर आते हैं, तो आप उन्हें गोली नहीं मारते। आप उनका स्वागत करते हैं, ताकि उनका और आपका और आपके परिवार का और आपके सहकर्मियों का फायदा हो। आप व्यापार कर सकते हैं, या फिर आप लड़ाई कर सकते हैं। मैं व्यापार ही पसंद करता हूँ। यह सभ्यतापूर्ण है और सबके लिए बेहतर है, सिवाय उन लोगों के जो दूसरों को तकलीफ देना पसंद करते हैं। मैं उनमें से नहीं हूँ।

पामरः आपने व्यापार में नैतिक निर्णयों का ज़िक्र किया, लेकिन यदि आप टीवी शो देखें, तो उनमें से अधिकांश में व्यापारियों, उद्योगपतियों को हरामी दिखाया जाता हैः वे अच्छे लोग नहीं होते, दोस्ताना नहीं होते, नैतिक नहीं होते। वे केवल लोगों को धोखा देते रहते हैं। व्यापारियों की यही लोकप्रिय छवि है। व्यापार में नैतिक मूल्यों का क्या स्थान है?

रुफरः सहयोग की एक आधार होती है दोस्ती। यदि आपकी लोगों के साथ दोस्ती नहीं है, तो आप अपने उत्पादक जीवन में लोगों के साथ सामंजस्य कैसे स्थापित करेंगे? आप अकेले पड़ जाएंगे। दोस्ती के कई रूप होते हैं। पति–पत्नी होते हैं, करीबी दोस्त होते हैं, साथ खेलने वाले आदि दोस्त होते हैं। व्यापार के दोस्त होते हैं, ऐसे लोग होते हैं, जिनके साथ रहना आपको अच्छा लगता है, क्योंकि वे आपके साथ अच्छा बर्ताव करते हैं और मददगार होते हैं। लोगों को आमतौर पर दुष्ट प्रवृत्ति के लोग अपने आसपास अच्छे नहीं लगते, मारपीट करने वाले और चोर लोग तो दूर की बात है। इसलिए आप किसी के साथ सभ्यतापूर्ण सम्बन्ध तब तक स्थापित नहीं कर सकते, जब तक आप मारपीट और चोरी न करने के मूल्यों का आदर न करें। और उससे भी बढ़कर, लोग खुशमिजाज़ लोगों के आसपास रहना पसंद करते हैं।

इसलिए यदि आप व्यापार करना चाहते हैं और उसे फायदेमंद बनाना चाहते हैं, उसे बढ़ाना चाहते हैं, तो आपके पास दूसरों का सहयोग पाने की दृष्टि से उनके साथ

सहयोग करने का एक बहुत मज़बूत कारण है। मैं लोगों से अपना मनचाहा काम करवाने के सिर्फ दो तरीके जानता हूँ: नम्बर एक, आप उन पर कोड़े बरसा सकते हैं या बन्दूक तान सकते हैं; मैं एक भी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता, जिसे अपने साथ यह किया जाना अच्छा लगे। लोग ऐसा करने वालों से दूर भागते हैं। नम्बर दो, आफ उनके और उनके हक़ों के प्रति आदर जता सकते हैं। मुक्त बाज़ार में आप चुन सकते हैं कि किसके साथ व्यापार किया जाए। व्यापार में सफल होने के लिए आपको आदरपूर्ण तथा आदरणीय दोनों होना पड़ेगा, अन्यथा लोग आपसे सम्बन्ध नहीं रखना चाहेंगे। मैं और काफी कुछ कह सकता हूँ, लेकिन मैं उन लोगों को देखकर हैरत में पड़ जाता हूँ, जो व्यापार में नैतिकता का महत्व नहीं समझ पाते। मानो उन्होंने सोचना ही बंद कर दिया हो।

पामर: और सरकारों द्वारा दूसरे देश में सैनिक हस्तक्षेप? आप इस बारे में क्या कहेंगे?

रुफर: मुझे लगता है कि मार्केटिंग विभाग की तरह सोचने से इसमें मदद मिलेगी। लोगों को क्या चाहिए? क्या आप चीनी, रूसी या कनाडाई फौजों द्वारा यूनाइटेड स्टेट्स पर हमले की कल्पना में कर सकते हैं। वे अपनी यूनीफॉर्म पहने लॉस एंजेल्स या डेनवर शहर पर कब्जा रहे हैं? या सैन्य अड्डे स्थापित कर रहे हैं, शहर में अपनी मिलिट्री की गाड़ियों में गश्त लगा रहे हैं? यू. एस. सरकार दुनिया भर में यही कर रही है। यह अत्याचारपूर्ण है। इससे हमारी प्रतिष्ठा घटेगी। जब वे अपने देश की आज़ादी की सुरक्षा कर रहे हों, तो उनके प्रति सद्भावना बनेगी, लेकिन जब ऐसा कोई स्पष्ट मुद्दा न हो, तो हमारी सेना के प्रति नफरत और घृणा कैसे पैदा नहीं होगी?

पामर: आप इच्छास्वतंत्रता मूल्यों के सक्रिय समर्थक हैं। आप एक अधिक स्वतंत्र और अधिक शांतिपूर्ण दुनिया के लिए कैसे कार्य करते हैं?

रुफर: मैं जहाँ भी जाता हूँ, मैं सक्रिय रूप से शांति और स्वतंत्रता के मूल्यों की पैरवी करता हूँ। मैं व्यापार के सिलसिले में जिस देश में जाता हूँ, वहाँ ऐसा कोई भोज नहीं होता, ऐसी कोई बैठक नहीं होती, जहाँ मैं यह चर्चा नहीं छेड़ता कि समाज को बिना बल प्रयोग, बिना हिंसा के कैसे व्यवस्थित किया जा सकता है और हम यह कैसे कर सकते हैं। मैं एक स्पष्टवक्ता हूँ।

पामर: प्रमुख उद्योगपतियों द्वारा शांति का सक्रिय समर्थन करने की एक लम्बी परम्परा रही है। मेरा इशारा इंग्लैण्ड के रिचर्ड कॉबडेन और जॉन ब्राइट की ओर है, जो उत्कृष्ट उद्योगपति और महान शांति के पुजारी थे। यूनाइटेड स्टेट्स की साम्राज्यवाद–विरोधी लीग में ऐसे कई उद्योगपति थे, जिन्होंने स्पेनिश–अमेरिकी युद्ध का और फिलिपीन तथा अन्य स्पेनिश उपनिवेशों में अमेरिकी उपस्थिति का विरोध किया था। क्या आप खुद को व्यापारियों द्वारा शांति का समर्थन करने की इस परम्परा का एक भाग मानते हैं?

रुफर: बेशक। मैं जानता हूँ कि उद्योगपति – सांठगांठ वाले नहीं, बल्कि ईमानदार उद्योगपति – शांति के संदेशवाहक होते हैं। स्वैच्छिक विनिमय सबके लिए फायदेमंद होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अधिक लोग यह बात नहीं समझते। मुझे एक पुरानी कहावत याद आती है, "जब बिक्री का माल सीमा पार नहीं कर सकता, तो सेना करती है"। मैं गोलियों और मिसाइल्स की बजाय वस्तुओं का आदान–प्रदान चाहता हूँ। 1960 के दशक में लोगों ने नारा दिया था, "प्रेम करो, युद्ध नहीं"। यह बुरा नहीं है, लेकिन मैं इसे आगे बढ़ाते हुए कहना चाहूँगा, "प्रेम और व्यापार करो, युद्ध नहीं"।

पामर: पढ़ाई के बाद करियर के बारे में सोच रहे युवा को, चाहे हाई–स्कूल पास हो या कॉलेज, इस दुनिया को बेहतर बनाने के बारे में आप क्या संदेश देंगे? क्या आप उसे व्यापार में आने को कहेंगे? या सरकार में जाने को?

रुफर: सरकार में जाना केवल बरबादी है। मैं इस विषय पर अधिक बोल सकता हूँ, लेकिन मैं व्यापार में आने की, और संचार क्षेत्र, चाहे पत्रकारिता हो या कोई और मीडिया, उसमें आने की सिफारिश करूँगा।

पामर: और टमाटर के बिज़नेस में आकर आपका प्रतिस्पर्धी बन गया तो?

रुफर: (हँसकर) मुझे कोई आपत्ति नहीं। यदि आप शांति में रुचि रखते हैं, तो व्यापार के क्षेत्र में आकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार करें, यह बहुत अच्छी बात है। इससे वास्तव में दुनिया एक अच्छी जगह बन सकती है। और यदि कोई मेरा प्रतिस्पर्धी बनने के लिए भी व्यापार में आना चाहे, तो स्वागत है। मैं चाहता हूँ कि मुझे अच्छी स्पर्धा मिले, ताकि मैं और अधिक अच्छा काम करने के लिए हमेशा तैयार रह सकूँ।

पामर: आपके व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालने के लिए धन्यवाद, क्रिस।

रुफर: बिल्कुल।

5

मुक्त व्यापार शांति

एरिक गार्तज़्के

व्यापार तथा सीमा–पार निवेश युद्ध के कारणों को कैसे कम करते हैं? स्वतंत्रता का आचरण पर क्या प्रभाव पड़ता है? शांति, लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई सरकार और व्यापार में क्या सम्बन्ध है? एरिक गार्तज़्के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सान डिएगो में राजनीतिशास्त्र के तथा इसेक्स विश्वविद्यालय में शासन विषय के प्रोफेसर हैं। उनका शोध कार्य युद्ध तथा शांति पर सूचना तथा संस्थाओं के प्रभाव पर केन्द्रित रहता है। वे व्यापार, साइबर युद्ध, कूटनीति और संबंधित विषयों पर लिखते हैं।

यूरोप में चल रही नृशंस और विनाशकारी युद्धों की श्रृंखला 1648 में तब ख़त्म हुई, जब यूरोप के राज्यों को आंतरिक सार्वभौमता और बाह्य स्वायत्तता देने की प्रणाली स्थापित की गई और जिसे बाद में वेस्टफैलिया की शांति कहा गया। आज की दुनिया में, जहाँ अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध तेज़ी से वृद्धिगत हो रहे हैं, इस विरासत को अधिकाधिक चुनौतियां मिल रही हैं। जब दो या अधिक देश व्यापार के ज़रिए आपस में जुड़ते हैं, तो उसके परिणामस्वरूप आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। मानक आर्थिक राय यह है कि व्यापार से मूल्यों का निर्माण होता है।

जैसा राजनीति के अध्ययनकर्ता एक लम्बे समय से जानते हैं, व्यापार का यह मूल्य देशों के बीच किसी भी संघर्ष में "बंधक" बना लिया जाता है। यदि बंधक का पर्याप्त महत्व हो और उसे युद्ध से ख़तरा हो, तो सार्वभौम राज्यों की स्वायत्तता समाप्त हो जाती है। जहाँ युद्ध के कारण व्यापार के लाभ ख़त्म हो जाने की आषंका होती है, वहाँ लाभ का यह नुकसान व्यापार भागीदारों के बीच युद्ध नहीं होने का कारण बन सकता है। साफ शब्दों में, यदि सीमा के इस पार के लोगों की संपत्ति या ग्राहक सीमा के उस पार हैं, तो वे उस संपत्ति के विनाश का या व्यापार भागीदारी के ख़ात्मे का समर्थन कतई नहीं करेंगे और शांति के समर्थन में आवाज़ उठाएंगे।

शांति को बढ़ावा देने और युद्ध को रोकने में व्यापार का एक अन्य महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि वह उन्हीं वस्तुओं की कीमत घटाने में मददगार होता है, जो जिनकी प्राप्ति युद्ध के ज़रिए चाही जाती है, साथ ही फौजों का रखरखाव अत्यधिक ख़र्चीला हो जाता है। यदि व्यापार वस्तुओं की वास्तविक कीमत घटाता है और श्रम की उत्पादकता बढ़ाता है, तो काम करने वाले, कंपनियां और सार्वभौम राज्य श्रम को युद्ध से दूर और उत्पादक कार्य की ओर ले जाना चाहेंगे। मैं कुछ पार्श्वभूमि की जानकारी की समीक्षा के बाद नीचे इन प्रक्रियाओं पर चर्चा करूँगा।

रूपांतरण

इस बात को जानने के लिए कोई बहुत मेधावी बुद्धि ज़रूरी नहीं कि आज हम जिस दुनिया में रह रहे हैं, वह केवल कुछ पीढ़ियों पहले कई महत्वपूर्ण मामलों में अलग है, और सत्रहवीं शताब्दी में तो यह फ़र्क और भी अधिक था। ख़ासतौर पर, बाज़ार आज अंतरराष्ट्रीय मामलों के लिए पर वह काम कर रहे हैं, जो वे कई देशों के भीतर राजनीति के लिए पहले ही कर चुके हैं। पहले धीरे–धीरे, लेकिन पिछले कुछ दशकों में काफी तेज़ी से विश्व के नेतागण महसूस कर रहे हैं कि उनके देश और देशों की जनता जटिल और व्यापक आर्थिक नेटवर्कों से जुड़े हुए हैं। चित्र 1 में इस विकास को वैश्विक व्यापार के सम्बन्ध में वास्तविक 2000 यूएस डॉलर्स के मापन पर (सौ अरब डॉलर्स में) दर्शाया गया है।

दुनिया की औसत समृद्धि भी बढ़ रही है। चित्र 2 में विश्व का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) दर्शाया गया है। समय के साथ तुलना आसान बनाने के लिए मैंने मूल्यों का पैमाना नए से बनाया है, जिसमें सन् 1821 की औसत आय 1 है। इससे अधिक मर्यादित होती सरकारों तथा बढ़ती निजी स्वतंत्रता के साथ बढ़ती संपत्ति की तुलना की जा सकती है। वैश्विक लोकतंत्रीकरण अधिक असमान प्रतीत होता है – क्योंकि 1950 के बाद उपनिवेशवाद की समाप्ति के साथ स्वतंत्र देशों की संख्या तेज़ी से बढ़ी – लेकिन यह फिर भी बढ़ता चलन दर्शाता है, जिसे राजनैतिक सुधारों की "लहर" के नाम से जाना जाता है।[42] राज्यतंत्र के आंकड़े देश में लोकतंत्र का स्तर दर्शाते हैं, जहाँ 10 सर्वोच्च है और शून्य निम्नतम।[43] यहां राज्यतंत्र और प्रति व्यक्ति जीडीपी, दोनों को वैश्विक वार्षिक औसत स्तर पर दर्शाया गया है।[44]

चित्र 1

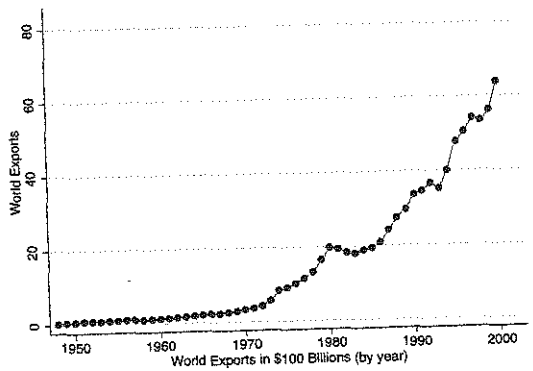

चित्र 2

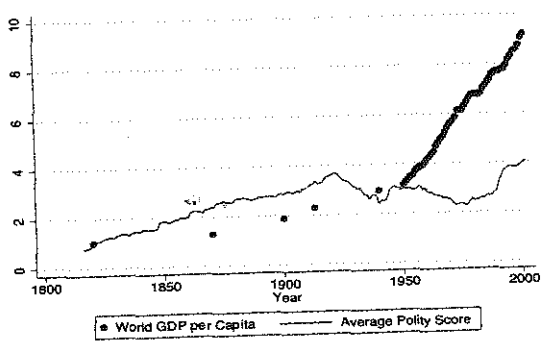

पुरानी उदारवादी राजनैतिक अर्थव्यवस्था ने इन तीनों बदलावों का पूर्वानुमान लगा लिया था और उनके परिणामों का अंदाज़ लगाया था। लोकतंत्र, व्यापार तथा आर्थिक विकास, तीनों इंसान की परिस्थिति में कई प्रकार से सुधार लाते हैं। यहां देखना यह है कि क्या इनमें से कोई बदलाव वेस्टफैलिया के देशों की वर्तमान प्रणाली में राजनैतिक हिंसा (देश के भीतर) तथा युद्ध (देशों के बीच) को

हतोत्साहित करता है, और कैसे। विश्व शांति को बढ़ावा देने के लिए व्यापार सबसे आकर्षक साधन है, लेकिन उसकी कार्यपद्धति के चलते, और वह राजनैतिक प्रतिस्पर्धा और संघर्ष को जिस प्रकार बदलता है, उस कारण से उसके प्रभाव भी जटिल होते हैं। दरअसल, साझा व्यापारिक बंधन से जुड़े देशों के लिए शांतिपूर्ण सम्बन्ध रखना एक "बंधन" हो सकता है। मेरा उद्देश्य है आर्थिक परस्पर–निर्भरता के प्रभावों का विश्लेषण करना।

शंकालु थॉमस

परस्पर–निर्भरता किस प्रकार कार्य करती है, इसका सबसे दमदार वर्णन नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री थॉमस शेलिंग[45] ने किया है। शेलिंग दो पर्वतारोहियों का उदाहरण देते हैं, जो पहाड़ चढ़ते हुए एक रस्सी से बंधे हैं। एक–दूसरे से बंधे होने के कारण दोनों का अंजाम भी बंध जाता है और दोनों एक–दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं। दोनों एक साथ चढ़ने या गिरने पर मजबूर होते हैं, इसलिए दोनों को अत्यधिक सावधान रहना पड़ता है, अधिक समझदारी दिखानी पड़ती है, जिससे शांति उत्पन्न होती है।

व्यापार की शांतिपूर्ण संभावनाएं उजागर करने के लिए उदारवाद के सिद्धांतवादी परस्पर–निर्भरता का तर्क देते हैं। सत्रहवीं शताब्दी के बाद से अंतरराष्ट्रीय व्यापार अनियमित रूप से, लेकिन सतत बढ़ा है और मोंतेस्क्यू, स्मिथ, पेन, कान्ट, कॉबडेन, एन्जेल और अन्य विद्वानों से लेकर आज के रोजक्रियेन्स, रुसेट और डॉयल जैसे विचारवंतों ने एक लाभकारी अंतरराष्ट्रीय व्यापार की शांति पैदा करने की ताकत पर ज़ोर दिया है।[46] यदि देश एक लाभकारी व्यापारिक सम्बन्धों से जुड़े हों, तो उनमें युद्ध होने की संभावना कम होती है, क्योंकि युद्ध होने पर उन्हें काफी आर्थिक नुकसान हो सकता है।

तथापि, यह ध्यान देने लायक है कि शेलिंग की परस्पर–निर्भरता में रुचि व्यापार से नहीं, बल्कि किसी और बात से उत्पन्न हुई। शेलिंग के उदाहरण में दो पर्वतारोहियों को बांधने वाली रस्सी व्यापार का प्रतीक नहीं है, वह न्यूक्लियर युद्ध का ख़तरा है। शीत युद्ध का गतिरोध एक परिदृश्य से पैदा हुआ था, जिसे सुनिश्चित परस्पर विनाश (Mutual Assured Destruction, MAD) नाम दिया गया था। नाभिकीय हथियारों का आगमन और उसके दोनों ओर से इस्तेमाल होने की स्थिति में यूनाइटेड स्टेट्स और रूस, दोनों का अवश्यंभावी विनाश, इन दोनों बातों ने सुनिश्चित किया कि दोनों ही देश अपना बचाव नहीं कर सकते थे।

दोनों पर्वतारोहियों की तरह, सर्वनाश टालने की आत्महितैषी इच्छा से ही सहयोग तथा नियंत्रण विकसित हुए, शांति को बढ़ावा देने की किसी परोपकारी भावना से नहीं।

साथ ही, शेलिंग का उद्देश्य स्थिरता को स्पष्ट करना नहीं था। वे ऐसे रास्ते खोज रहे थे, जिससे महाशक्तियां एक ऐसी दुनिया में प्रतिस्पर्धा करती रह सकें, जहाँ सीधा और प्रत्यक्ष टकराव अकाल्पनीय या अतार्किक नज़र आता हो। जैसा कि उनका उदाहरण स्पष्ट करता है, परस्पर–निर्भरता का बंधन – चाहे नाभिकीय या आर्थिक – आक्रामकता को थाम सकता है। फिर भी, जहाँ नाभिकीय परस्पर–निर्भरता ने एक ऐसी दुनिया को जन्म दिया, जहाँ संपूर्ण युद्ध नहीं होता, वहीं उसने एक ऐसा वातावरण तैयार किया, जहाँ *अस्थिरता, बलयुक्त कूटनीति, दुष्प्रचार और छद्म युद्ध* तथा अन्य युद्ध–सदृश प्रकारों की भरमार थी। सहमति न बनने के परिणामों का भय, चाहे इस भय का स्रोत जो भी हो, परस्पर–निर्भर पक्षों को समझौता करने पर विवश कर सकता है, लेकिन परस्पर–निर्भरता द्वारा उत्पन्न अवरोध पक्षों को "चिकन" नामक गेम खेलने के लिए उकसा सकते हैं।

व्यापार और नाभिकीय हथियारों में कोई समानता नहीं है; एक वह चीज़ है, जिसे हम बढ़ावा देना चाहते हैं, जबकि दूसरी वह है, जिसे मानव नष्ट करना चाहता है। तथापि, देशों की गतिविधियों को परस्पर–निर्भर बनाने में इन दोनों प्रक्रियाओं में काफी महत्वपूर्ण समानताएं हैं। दोनों में "स्वार्थी" आचरण शामिल है, जिसके अच्छे परिणाम हो सकते हैं, यह उसी अच्छी सामाजिक गतिशीलता की तरह है, जो स्मिथ ने बाज़ार प्रक्रिया में खोजी थी।

जैसाकि उदारवाद के सिद्धांतवादी लम्बे समय से कहते चले आ रहे हैं, व्यापार की बढ़ती मात्रा अधिक मूल्यवान "बंधक" तैयार करती है और इस प्रकार शांति के अधिक प्रलोभन उत्पन्न होते हैं; परस्पर–निर्भरता के वर्तमान उच्च स्तर देशों के लिए युद्ध को अत्यधिक ख़र्चीला साबित कर सकते हैं। फिर भी, व्यापार सम्बन्धों का मूल्य नाभिकीय युद्ध पर लगने वाले दांव से काफी कम होता है। यदि देश पारम्परिक या नाभिकीय युद्ध से होने वाले अपार नुकसान को सहने के लिए तैयार हैं, तो व्यापार इसे रोकने के लिए कर ही क्या सकता है? तब शांति को प्रोत्साहन देने में आर्थिक परस्पर–निर्भरता की भूमिका क्या है?

शांति का मकसद

विश्व इतिहास की सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक अभी, इसी समय घटित हो रही है। दरअसल, यह एक लम्बे समय से चल रही है। अमीर, समृद्ध देशों के बीच संघर्ष में दीर्घकालिक कमी आई है। शांति का प्रादुर्भाव हुआ है, कम से कम दुनिया के कुछ भागों में। यह चलन इतने धीमे पैर अवतरित हुआ है कि कई लोगों को इसकी ख़बर तक नहीं है, और कई अन्य इस अच्छी ख़बर की उपेक्षा कर रहे हैं और इसी बात पर अड़े हैं कि दुनिया में अन्य जगहों पर देश तथा समूह अब भी युद्धों में उलझे हैं। युद्ध के घटते चलन पर स्टीवन पिंकर, जोशुआ गोल्डस्टीन तथा अन्य द्वारा काफी कुछ लिखा जा चुका है।[47]

युद्ध में यह स्थायी कमी यूरोप में सर्वाधिक देखने को मिलती है, जहाँ यह चलन कुछ शताब्दी पहले ही स्थापित हो गया था। चित्र 3 "यूरोप में संघर्षों का रुझान" पीटर ब्रेक द्वारा एकत्र आंकड़ों पर आधारित है।[48] प्रत्येक चौकोर एक दशक में युद्धों की संख्या दर्शाता है (एक युद्ध=कम से कम बत्तीस युद्ध–सम्बन्धी मृत्यु)। यूरोप में युद्धों की संख्या पंद्रहवीं शताब्दी में तीस प्रति दशक थी, जो घटकर पिछली शताब्दी में क़रीब दस प्रति दशक रह गई। जटिल तथा बहु–आयामी सम्बन्धों के लिए इन आंकड़ों के विश्लेषण में सावधानी बरतना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, क्लॉडियो चिओफी–रेविला ने दर्शाया है कि संघर्ष की तीव्रता मौतों के संदर्भ में विपरीत दिशा में जाती है, और समय के साथ बढ़ती है।[49] फिर भी, रुझान स्पष्ट नज़र आता है; यूरोप की सत्ताएं एक लम्बे समय से युद्धों को टाल रही हैं और अपने मतभेद अहिंसात्मक रूप से सुलझा रही हैं।

इसी प्रकार का, किंतु कुछ अधिक अस्पष्ट सम्बन्ध वैश्विक स्तर पर भी नज़र आता है। चित्र 4 में देशों के मध्य सैन्य–हस्तक्षेप वाले विवादों का वार्षिक विवरण है। सैनिक कार्रवाई की धमकी से लेकर छोटे–मोटे युद्ध तक की घटनाएं इसमें शामिल हैं। ये आंकड़े भी वैश्विक स्तर पर एकत्र किए गए हैं, अर्थात वर्षभर के सैन्य–हस्तक्षेप विवादों को शामिल देशों की संख्या के आधार पर महत्व दिया गया है। हालांकि द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले कोई स्पष्ट रुझान नहीं दिखते, लेकिन दोनों विश्व युद्धों के बाद से सैन्य–हस्तक्षेप विवाद कम होते नज़र आते हैं। इस प्रकार, दुनिया में शांति फैल रही है।

चित्र 3

स्रोतः पीटर ब्रेक "विश्व के विभिन्न भागों में

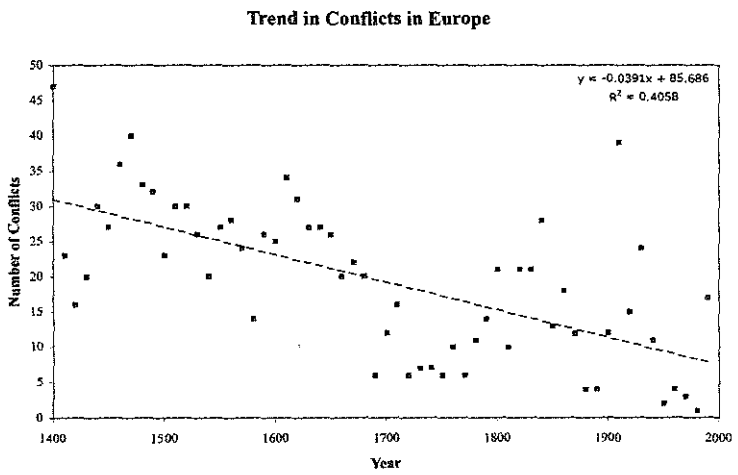

हिंसात्मक संघर्ष 1400 ईस्वी से अब तक"

इस रुझान का क्या स्पष्टीकरण है? यहां कई संभावनाएं हैं। कई विद्वान देशों के बीच शांति के लिए लोकतंत्र के उदय की ओर इशारा करते हैं। हालांकि इसके समर्थन में कुछ सबूत अवश्य हैं, लेकिन शांतिपूर्ण घरेलू राजनीति को शांति से जोड़ने में कुछ समस्याएं हैं।[50] सर्वप्रथम, यूरोप में लोकतंत्र का प्रसार काफी बाद में हुआ, जबकि युद्धों में कमी का चलन पहले ही शुरू हो चुका था। लोकतंत्र तब तक शांति नहीं ला सकता, जब तक सब जगह लोकतंत्र न हो। इससे भी आगे जाकर यह कह सकते हैं कि लोकतंत्र ही शांति की उपज है, इसका विपरीत नहीं। लोकतंत्र के लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि समाज के भीतर के गुट अपने विवादों को हिंसा के स्तर ले जाने के बजाए राजनैतिक नुकसान उठाना पसंद करें। राजनैतिक प्रणाली के चुनाव द्वारा विवाद मिट सकते हैं। तथापि, एक सरल तथा संभव दावा यह भी है कि राजनैतिक प्रणाली को चुनना विवाद के प्रकार पर निर्भर करता है। यदि विवादित मुद्दा इतना महत्वपूर्ण है कि उस पर समझौता नहीं किया जा सकता, तो लोकतंत्र विफल हो सकता है। इस प्रकार लोकतंत्र के लिए एक पूर्व–शर्त है, प्रणाली के चयन पर सर्वसम्मति या समभाव। यदि राजनैतिक मुद्दे पर मिली हार इतनी महत्वपूर्ण नहीं है कि उसके लिए घरेलू हिंसा छेड़ दी जाए, तो उच्च–वर्ग तथा नागरिकों के लिए लोकप्रिय शासन प्रणाली और एक मर्यादित सरकार स्वीकार करना संभव ही नहीं, बल्कि आकर्षक भी होगा। इसे संभव बनाने का एक मार्ग यह है कि राजनीति, या "जनता की पसंद" संसाधन या संपत्ति के आवंटन में कम दखल दे। यदि किसी राजनैतिक विवाद में हारने का मतलब है आपका घर, या व्यापार या आज़ादी या अपनी जान तक गंवा देना, तो पूरी संभावना है कि आप राजनैतिक संघर्ष जारी रखेंगे और जीत के लिए आवश्यक हुआ, तो हिंसा करने से भी पीछे नहीं हटेंगे, लेकिन यदि इन मसलों को बाज़ार अन्य निजी प्रणालियों द्वारा सुलझाने का चलन बढ़ा और संसाधनों के आवंटन से राजनैतिक कलह समाप्त हो गयी, तो आप राजनीति में जीत के लिए हिंसा का सहारा नहीं लेने की संभावना बढ़ जाती है।

चित्र 4

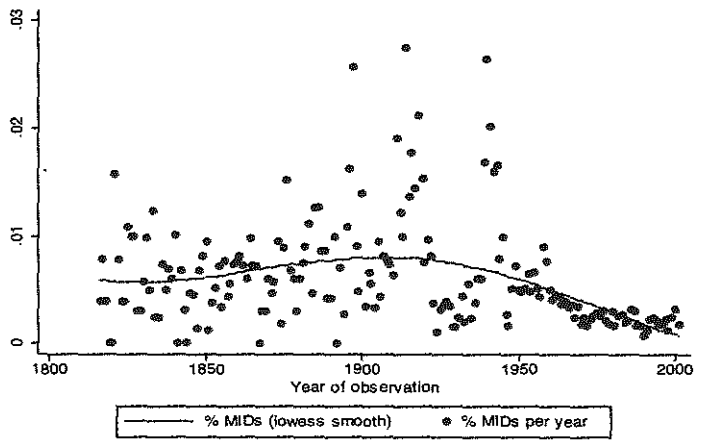

देशों के बीच सैन्य–हस्तक्षेप विवाद (एमआईडी)

प्राचीन समाज में उत्पादन के अधिकांश साधन भौतिक, वस्तुतः होते थे। लोगों के पास ज़मीन होती थी, जो सरकारें ज़ब्त कर सकती थी और लोगों को काम पर लगा सकती थी। अमीर होने – या ज़िंदा भी रह सकने – के लिए राजा की दया पर निर्भर रहना पड़ता था। जैसे–जैसे समाज विकसित हुआ, संपदा ज्ञान और रचनात्मक विचारों के कार्य से अर्जित होने लगी। राजा अब भी अपनी मनमर्ज़ी कर सकता था, लेकिन समाज की उत्पादकता ऐसे लोगों पर निर्भर होने लगी, जो होशियार थे और व्यापार में निपुण थे। इससे बाज़ार राजा की निर्भरता से अलग हो गए। यह

व्यापार को राजनीति से मिला छुटकारा था, जिसने राजा (या रानी) को बाज़ार में दख़ल कम करने की समझ दी, ताकि अर्थव्यवस्था मज़बूत हो सके और समाज (तथा राज्य) समृद्ध हो सके। एक नागरिक समाज और स्वतंत्र उद्यम की वृद्धि का अर्थ था कि अमीरी अब केवल राजा की निष्ठा या राज्य की कृपा पर निर्भर नहीं रह गई। अब सुरक्षा इस बात से भी मिलने लगी कि आपकी उत्पादकता इतनी महत्वपूर्ण हो कि राजा आपके काम में दख़ल न दे, ज़ब्ती न लाए, न ही आपको राजा के समक्ष चापलूसी करनी पड़े।[51] राजाओ तथा महारानियों को भी अब सोने का अंडा देने वाली मुर्गी का महत्व समझ में आने लगा था।

कुछ वाद के साथ कहा जा सकता है कि आधुनिक प्रातिनिधिक लोकतंत्र उपरोक्त प्रक्रिया की ही उपज है; वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार को मर्यादित करने की आवश्यकता का अर्थ था कि मुफ्त के फायदे के लिए राज्य को ज़ब्त करने में कम फायदा था, जबकि राज्य द्वारा बाज़ारों के नियमन की – स्पष्ट नियम बनाने और उन्हें प्रभावी रूप से लागू करने की (पारदर्शिता की) – और लोगों के लिए वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने की सख्त आवश्यकता थी। राजनीति में घुसकर सत्ता के लिए संघर्ष करने के बजाय लोग वस्तुओं के निर्माण में और बाज़ार के माध्यम से विक्रय सेवा के लिए निवेश कर सकते थे। साथ ही, यदि राज्य पर आंतरिक कब्ज़े के लिए संघर्ष जब फायदेमंद नहीं रह गया, तो भौतिक संपदा के लिए अंतरराष्ट्रीय संघर्ष उससे भी कम फायदे का रह गया। एक वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र का उदय चित्र 1 में दर्शाए गए पैटर्न के स्पष्टीकरण के बजाय चित्र में यूरोप तथा अन्यत्र वितरण की राजनीति का ह्रास दर्शाता हो सकता है।

व्यापार संघर्ष को कई प्रकार से हतोत्साहित कर सकता है। वैश्विक राजनीति को अधिक शांतिपूर्ण बनाने में व्यापार की भूमिका का महत्व व्यापक रूप से पहचाना जा रहा है और विद्वानों में यह सर्वमान्य है।[52] फिर भी, इसकी सही प्रक्रिया और उसके पोषण तथा वृद्धि के तरीके अब भी विवाद का विषय हैं। जैसाकि मैंने सुझाया है, कुछ खोने का डर युद्ध रोकने के लिए काफी नहीं होता और जब कोई किसी की संपत्ति लूटने पर उतारू ही हो जाए, तो यह युद्ध को उकसा भी सकता है। यदि आपके पास खोने के लिए कुछ है और प्रतिस्पर्धा का कुल योग शून्य हो (मेरी भलाई इसी में है कि आप हार जाएं, या इसके विपरीत), तो अक्सर इससे संघर्ष बढ़ता ही है जैसा राजनीति में होता है। चूंकि राजनीति खुद एक संघर्ष है, इसलिए हमें शांति के साथ उसका सम्बन्ध जोड़ने के मार्ग खोजने होंगे।

शांति का "अदृश्य हाथ"

समाजशास्त्र का एक महान निरीक्षण है एडम स्मिथ द्वारा मान्यता कि क्रियाओं के अवांछित परिणाम होते हैं और उन परिणामों का सामाजिक मूल्य उन क्रियाओं के करने वालों के मकसद से अलग हो सकता है। बाज़ार समुदायों तथा राष्ट्रों पर अच्छा प्रभाव छोड़ते हैं, तब भी जब बाज़ार में सहभागी होने वाले केवल खुद के भले के लिए काम कर रहे हों। बाज़ार के शांति पर प्रभाव के बारे में भी यही तर्क दिया जा सकता है। केवल अमीर बनने के प्रयासों से व्यक्तियों, कम्पनियों, उद्यमियों और राज्यों ने सेना की उपयोगिता, और कई मामलों में तो व्यावहारिकता तक, बदल दी है। अदृश्य हाथ इस मामले में एक नहीं, कई हैं। बाज़ार श्रम को महंगा बनाते हैं, जिससे संपत्ति को लूटने के लिए श्रम का इस्तेमाल उतना आकर्षक नहीं रह जाता। बाज़ार सामग्री और सेवाओं के स्थानांतरण को शांतिपूर्ण रूप से होने देते हैं। और बाज़ार संघर्ष को अच्छी प्रतिक्रिया नहीं देते, जो संघर्ष को टालने के लिए एक अच्छा कारण है।

व्यापार का संघर्ष पर सबसे प्रबल प्रभाव राज्य के हितों के रूपांतरण के रूप में होता है। बाज़ारों की बढ़ती पैठ और एकीकरण ने श्रम और "मानव संपदा" (अर्थात कौशल) का मूल्य समय के साथ बहुत ऊँचा कर दिया है।[53] महंगे श्रम और सस्ते उत्पादन के चलते कई देशों ने अन्य देशों की संपदा लूटकर अमीरी "चुराने" का वह रास्ता छोड़ दिया है, जो कभी आम हुआ करता था, लेकिन अब भी सावधानी बरतने की आवश्यकता है, क्योंकि शासकों तथा उनके प्रमुख समर्थकों के संकीर्ण हित आम हित की अनदेखी कर राज्य के भीतर या सीमापार लूटपाट और हिंसा भड़का सकते हैं।

पुरातन साम्राज्य अपने अधीन प्रदेशों से कर (जहाज़ भर अनाज तथा अन्य वस्तुएं) वसूल कर समृद्ध होते थे। वाइकिंग लुटेरे अपने जहाज़ों में लूट भरकर लाते थे। सोलहवीं शताब्दी में स्पेनिश लोग विदेशों से अपने जहाज़ों में चांदी भरकर अपने देश वापस लाते थे, जो स्थानीय लोगों को गुलाम बनाकर उनसे खदानों में काम करवाकर निकाली जाती थी। बाद के यूरोपियन उपनिवेशवादी राज्य अक्सर अपनी ही प्रजा को निचोड़कर विदेशी आक्रमणों के लिए पैसे की व्यवस्था करते थे, ऐसे आक्रमण जो केवल सामंतों के छोटे बेटों के लिए फायदेमंद होते थे। जैसाकि इतिहासकार लान्स ई. डेविस और रॉबर्ट ए. हटनबैक ने लिखा है, "एक देश के रूप में ब्रिटेन को अपने साम्राज्य से कोई आर्थिक फायदा नहीं हुआ, लेकिन निजी निवेशकों के लिए वह ज़रूर फायदे का सौदा था"।[54] आधुनिकता के तकाज़े ने अंततः सबसे

समृद्ध सैन्य महाशक्तियों को भी उत्पादन के साधन महंगे युद्धों द्वारा लूटने के बजाय ख़रीदने पर मजबूर कर दिया और उपनिवेशवाद का भी पतन हो गया। आधुनिक देश अब अपने पड़ोसी देश को लूटना अब फायदेमंद नहीं मानते जैसा वाइकिंग, स्पेनिश और एलिजाबेथ प्रथम के ज़माने के ब्रिटिश मानते थे। विदेशी जनता का दमन कर संसाधन तथा उनके श्रम का फल छीनने में कोई अर्थ नहीं जब कब्ज़ा करने वालों को भुगतान करना महंगा और अपनी इच्छित वस्तुएं पड़ोसी से लूटने के बजाय ख़रीदना सस्ता होता है।

विडम्बना यह है कि भले ही लूट अब आधुनिक राष्ट्रों के लिए फायदेमंद न रह गई हो – इस वास्तविकता को वैश्विक बाज़ार की बढ़ती चल संपत्ति से और मज़बूती मिलती है – लेकिन इसने विश्व में पुलिस कार्य के, अर्थात सामान्य हिंसा पर नियंत्रण रखने के कार्य को फायदे बढ़ा दिए हैं। अब आधुनिक राष्ट्र दूसरे देशों की राजनीति एवं नीतियों में कम के बजाय अधिक रुचि लेने लगे हैं, क्योंकि परस्पर–निर्भरता की वजह से दूसरे के कामों का असर अपने कल्याण पर भी पड़ता है। अब विजेता बनकर लूटने वाली सेना की जगह अंतरराष्ट्रीय "शांति सेना" ने ले ली है, जो संयुक्त राष्ट्र या क्षेत्रीय समूहों की ओर से तैनात होकर हिंसक संघर्षों को रोकती हैं। जब शामिल देश कमज़ोर हों और स्थानीय राजनैतिक महत्वाकांक्षा वैश्विक मामलों में दख़ल देने लगती है, तब शांति को बाहर से थोपा जाता है, ताकि व्यापार चालू रह सके। दूसरे शब्दों में, अमीर देशों के बीच चलने वाला व्यापार शक्तिशाली देशों को इस बात के लिए प्रोत्साहन देता है कि दूसरे देशों को आपस में युद्ध करने से रोका जाए, क्योंकि युद्ध व्यापार को वातावरणीय रूप से प्रभावित करता है, न केवल युद्धरत देशों में, बल्कि सब जगह, और तृतीय पक्षों में चल रहे युद्ध से व्यापार में आ रही रुकावट दूर करने में व्यापार के शक्तिशाली हितग्राही देशों को अधिक दिलचस्पी होती है।

परस्पर–निर्भर दुनिया की एक चुनौती है, उसकी जटिलता। सरल सम्बन्धों का यह फायदा है कि वे आसानी से समझे जा सकते हैं और उन्हें प्रभावी नीतियों के द्वारा संवारा भी जा सकता है। जटिल सम्बन्ध इसलिए अच्छे होते हैं कि वे अच्छी प्रतिक्रियाओं के तथा सैन्य शक्ति के अधिक विकल्प प्रस्तुत करते हैं। यदि व्यापार देशों को युद्ध से परावृत्त करे, तो यह शांति ला सकता है, लेकिन इसके लिए व्यापार इतना अधिक होना चाहिए कि वह अपने मूल्य के बल पर एक निवारक (परमाणु हथियारों की तरह) बन सके। इसके लिए आपसी मुद्दों या विवादों का भी गंभीर न होना आवश्यक है, जैसा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पश्चिमी यूरोप में हुआ। जब व्यापार अत्यंत मूल्यवान होता है और देशों के बीच विवाद हल्के–फुल्के होते हैं, तब शांति का

प्रादुर्भाव होता है। व्यापार विवादकर्ताओं को शांत भी कर सकता है, जिससे देश एक अनिश्चित तथा झगड़ालू वातावरण में निर्धारण प्रकट करने के लिए सेना के बजाय कूटनीति का सहारा लें। अंत में, व्यापार का शायद सबसे व्यापक प्रभाव यह है कि यह देशों के वस्तुनिष्ठ हितों का रूपांतरण कर देता है, जिससे हिंसात्मक आचरण की संकल्पना कालबाह्य हो जाती है। यहां तक कि बैंक लुटेरे भी किराने का सामान दुकान से लूटने की बजाय ख़रीदते हैं। आज लूटने लायक सामग्री को चुराना, या चुराने लायक सामग्री को लूटना फायदेमंद नहीं रह गया है। बढ़ता व्यापार विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करता है, जिससे हिंसात्मक आचरण कम प्रभावी और शांति अधिक फायदेमंद बन जाती है। कुशल कारीगरों को अच्छे कार्य वातावरण का प्रलोभन देना ही पड़ता है, जिससे युद्ध और सैन्य अभियान अनुत्पादक बन जाते हैं। आधुनिकता का यही तकाज़ा बनता जा रहा है कि चुराएं नहीं, बल्कि ख़रीदें।

देशों को एक सूत्र में बांधकर तथा परस्पर–निर्भरता बढ़ाकर बाज़ार शक्तियों ने वही दिया है, जो देश चाहते थे, अर्थात् राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति के साधन के रूप में युद्धों का महत्व कम करना, वैसे ही जैसे नेता और जनता अपने आम जीवन में देश के स्वामित्व को अत्यंत महत्वपूर्ण नहीं मानते। साथ ही, बाज़ार के लिए अनुकूल स्थितियां देने में राज्य की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण है। राज्य व्यापार की सुविधा के लिए स्थानीय, क्षेत्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करते हैं, जिससे कार्य–कारणभाव की श्रृंखला के अंतर्गत परस्पर–निर्भरता में इज़ाफा होता है और संघर्ष में और कमी आती है। ऐसा नहीं है कि केवल लोगों ने ही कुछ अच्छा करने का प्रयास किया है, बल्कि यह कि व्यापार ने अच्छे कामों की परिभाषा ही बदल दी है। यदि हम भाग्यशाली हैं और एक अधिक व्यापक और मुक्त व्यापार की राह पर बढ़ते रहे, तो व्यापार सेनाओं को व्यर्थ या निकम्मा बना देगा।

6

साम्राज्य और युद्ध की राजनैतिक अर्थव्यवस्था

टॉम जी. पामर

क्या सभ्यताओं का टकराव अवश्यंभावी है? साम्राज्यवाद या उपनिवेशवाद अच्छा है या बुरा? शांति के सबसे बड़े समर्थक और उपनिवेशवाद के सबसे कट्टर विरोधी कौन थे? क्या "तेल के लिए युद्ध" होना ज़रूरी है? युद्ध और शांति के मुद्दे कौन तय करता है और इससे किसे फायदा होता है?

"भीतर से आज़ादी, बाहर से शांति। यही है संपूर्ण योजना।" [55]

–फ्रेडरिक बास्तियात (1849)

कुछ लोग युद्धों का अध्ययन करते हैं, ताकि वे इसमें निपुण हो सकें। हम युद्ध का अभ्यास – एक अलग नज़रिए से – उसे टालने के लिए, कम करने के लिए, रोकने के लिए, समाप्त करने के लिए भी कर सकते हैं। हम युद्ध को समझने का प्रयास कर सकते हैं, मौसम या खगोलशास्त्र या किसी रोग को समझने की तरह नहीं, बल्कि उस तरह से जैसे हम अन्य प्रकार के मानवीय आचरणों को समझते हैं। ऐसी समझ से लैस होकर हम खुद को और अपने पड़ोसियों, दोस्तों, परिवारों तथा साथी नागरिकों को युद्ध के पक्ष में दी जाने वाली सफाई का झूठ समझा सकते हैं। साथ ही, हम उन संस्थाओं की स्थापना और सशक्तिकरण में मदद कर सकते हैं, जो युद्ध की संभावनाओं को कम करती हैं। यदि हम इसमें शामिल मुद्दों को अच्छी तरह से समझ सकें तो हम युद्ध के कारणों और मानव के प्रति हिंसा में कमी ला सकते हैं। ग़लत प्रचार और गलतफहमियां वास्तव में जानलेवा साबित हो सकती हैं। सही जानकारी और समझ जान बचा सकते हैं।

इच्छास्वतंत्रतावादी विचारकों ने पिछली कुछ शताब्दियों में युद्ध के कारणों को समझने तथा शांति स्थापित करने वाली मानसिकता तथा संस्थाओं को बढ़ावा देने के लिए काफी ऊर्जा ख़र्च की है।

शांति अब कोरी आदर्शवादी कल्पना नहीं रह गई है। सच तो यह है कि इतिहास देखने से पता चलता है कि दुनिया अब अधिक शांतिपूर्ण बन गई है। अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान जैसे विषय स्पष्ट करते हैं कि ज्ञान के हथियार से लैस होकर हम विश्व में शांति ला सकते हैं। हम मानव के लिए हिंसात्मक अनुभव कम कर सकते हैं। दुनिया एक साथ अधिक शांतिपूर्ण, अधिक न्यायपूर्ण, अधिक समृद्ध और अधिक स्वतंत्र हो सकती है।

अच्छी खबरः हिंसा कम हो रही है

"इसे मानें या न मानें – मैं जानता हूँ कि अधिकांश लोग इसे नहीं मानेंगे – समय के साथ हिंसा में कमी आई है, और आज हम मानव अस्तित्व के सबसे शांतिमय दौर से गुज़र रहे हैं।" 56

–स्टीवन पिंकर

यदि कोई कहता है कि हिंसा में कमी आ रही है, तो अधिकांश लोग इसे मानने से इंकार कर देते हैं। समाचारों में केवल हिंसा की ख़बरें होती हैं, अक्सर वीभत्स तस्वीरों के साथ। बलात्कार, हत्या और मारपीट दिन के मुख्य समाचार होते हैं। "खून है तो ख़बर है"। कोई न कोई देश सशस्त्र संघर्ष में शामिल रहते ही हैं, लेकिन हमें इन सबसे जरा पीछे हटकर पूरे परिदृश्य को देखना होगा। संघर्ष, विशेषतः हिंसक और प्राणघातक संघर्ष तुरंत अपनी ओर ध्यान खींचता है, शांतिपूर्ण सहयोग नहीं। जब कहीं भी कोई शांतिपूर्ण और स्वैच्छिक कार्य होता है, तो हम कहते हैं "कुछ नहीं हो रहा", लेकिन वास्तव में कई चीज़ें हो रही होती हैंः लोग काम पर जाते हैं, किसान फसल बोते हैं, निवेशक नई कम्पनियों में पैसा लगाते हैं, फैक्टरी में कारीगर उपयोगी उत्पाद बनाते हैं, लोग ख़रीदारी करते हैं, लोग प्यार में पड़ते हैं, प्रेमी षादी करते हैं, बच्चे पैदा होते हैं, जन्मदिन की पार्टियां मनाई जाती हैं, ज़िन्दगी चलती है, लेकिन यह सब पार्श्वभूमि है, आम बाते हैं। किसी हेडलाइन में लिखा नहीं रहता कि 'आज करोड़ों लोग शांतिपूर्वक अपने काम पर गए'। हेडलाइन तभी बनती है जब कुछ असामान्य हुआ हो, और अक्सर यह असामान्यता संघर्ष और हिंसा ही होते हैं। सचाई तो यह है कि हिंसा जितनी कम आम होगी, उतनी ही उसकी ख़बर बनने की संभावना बढ़ेगी। हम यह सोचकर

खुद को ग़लतफहमी में रख रहे हैं कि दुनिया में हिंसा बढ़ रही है। दरअसल यह कम हो रही है।

राजनीतिशास्त्र के विद्वान जेम्स पेन और मनोवैज्ञानिक स्टीवन पिंकर ने कुछ उल्लेखनीय बातें दर्ज की हैं।[57] किसी भी आम व्यक्ति की हिंसा का शिकार होने की संभावना में पिछले कुछ हज़ार वर्षों में आमतौर पर गिरावट ही आई है। दोनों विश्व युद्धों की विभीषिका, हिटलर का यहूदी नरसंहार, यूएसएसआर तथा चीन की सरकारों द्वारा चलाई गई नस्ली हिंसा और पिछले सौ सालों की अन्य त्रासदियों को ध्यान में रखते हुए भी, लोगों की दैनिक ज़िन्दगी में हिंसा कम होती जा रही है। यह संभव नहीं लगता, लेकिन ऐसा ही है। इसलिए अब भी हिंसा के शिकार हो रहे लोगों के लिए दुखी होते हुए भी आशा न छोड़ने के लिए अनेक कारण हैं। अच्छी ख़बर यह है कि अब यह एक आम बात नहीं रही और इसमें एक लम्बे समय से कमी आ रही है।

हिंसा तथा युद्ध मानव प्रकृति के अभिन्न अंग नहीं हैं। उनकी घटनाओं में समय के साथ लगातार कमी आ रही है। हम इतने भी अभिशप्त नहीं हैं कि हमारी दुनिया में हिंसा सदैव बनी रहे। हिंसा घटती और बढ़ती रहती है; यह एक लम्बे समय से घट रही है। समाजशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र हमें इसे समझने में मदद करते हैं। विद्वानों ने बहुत सारे सबूत इकट्ठा कर विश्लेषित किए हैं, जो दर्शाते हैं कि पुराने उदारवादी इस बात पर सही थे कि शांति स्थापित करने का मुख्य ज़रिया है आज़ादी, ख़ासकर सरकार से सवाल पूछ सकने की और उसकी आलोचना कर सकने की आज़ादी, साथ ही व्यापार प्रवास और विदेशों में निवेश की आज़ादी।

क्या सभ्यताओं या देशों के बीच युद्ध आवश्यक है?

एक प्रसिद्ध प्रबंध के अनुसार दुनिया के सम्मुख एक "सभ्यताओं का टकराव" है। राजनीतशास्त्र के विद्वान सैम्युएल हंटिंगटन के अनुसार "पश्चिम" पतन की ओर अग्रसर है, क्योंकि, अन्य कारणों के अलावा, "पश्चिमी देशों" का पृथ्वी के धरातल पर सैन्य नियंत्रण कम हो गया है। हंटिंगटन के मुताबिक, "सभ्यताओं" के हितों में टकराव है, और यदि एक का उत्थान होता है, तो दूसरे का पतन निश्चित है।

हंटिंगटन ने अपनी पुस्तक में काफी रोचक निरीक्षण दिए हैं, लेकिन उन्हें मानव अंतर्क्रियाओं के राजनैतिक अर्थशास्त्र की पूर्ण समझ नहीं थी। उनकी अर्थशास्त्र पर पकड़ कमज़ोर थी और वे स्वैच्छिक व्यापार का महत्व समझने में नाकामयाब थे, जोकि सभी सभ्यताओं की साझा ख़ासियत है और जिसके ज़रिये से एक–दूसरे को

अमीर बनाया जाता है। इसके बजाय उन्होंने सामाजिक सम्बन्धों के प्रति कुल योग शून्य का नजरिया अपनाया।[58]

उनके द्वारा किसी सभ्यता के "पतन" के मापन का एक उदाहरण इस प्रकार है।

> 1490 में पश्चिमी समाज बालकन के बाहर यूरोपियन प्रायद्वीप के अधिकांश हिस्से को नियंत्रित करता था, जो विश्व के कुल (अंटार्कटिका को छोड़कर) 5.25 करोड़ वर्ग मील में से 15 लाख वर्ग मील था। अपने सर्वोच्च क्षेत्र विस्तार के समय, 1920 में, पश्चिम लगभग 2.55 करोड़ वर्ग मील के क्षेत्र पर राज करता था, जोकि पृथ्वी के क्षेत्रफल का करीब आधा हिस्सा था। 1993 आते–आते यह नियंत्रण वाला हिस्सा घटकर 1.27 करोड़ अर्थात् लगभग आधा रह गया। पश्चिम अपने पुराने यूरोपियन हिस्से पर लौट आया था, और साथ में उत्तरी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड का बसाया गया हिस्सा रह गया था। इसके विपरीत, स्वतंत्र इस्लामिक समाज के नियंत्रण का क्षेत्र 1920 में 19 लाख वर्ग मील था, जो 1993 में बढ़कर 1.1 करोड़ वर्ग मील हो गया। इसी प्रकार के बदलाव जनसंख्या नियंत्रण में भी आए। वर्ष 1900 में पश्चिमी लोगों की जनसंख्या विश्व जनसंख्या का 30 प्रतिशत थी और पश्चिमी शासक उस समय विश्व की 45 प्रतिशत जनसंख्या पर और 1920 में 48 प्रतिशत जनसंख्या पर राज करते थे। 1993 में, साम्राज्य के हांगकांग जैसे कुछ छोटे अवशेषों को छोड़कर, पश्चिमी सरकारें सिर्फ पश्चिमी लोगों पर राज कर रही थीं।[59]

क्या यह पतन है? उन पश्चिमी देशों में से एक तथा उसके साम्राज्य का उदाहरण देखते हैं। नीदरलैंड्स 1800 से 1942 तक उस भू–भाग पर राज करता था, जिसे बाद में इंडोनेशिया कहा गया। 1942 में इस पर जापान ने कब्ज़ा कर लिया। डच सरकार विश्व युद्ध के बाद लौटी और डच औपनिवेशिक नियंत्रण फिर से स्थापित करने के लिए पाँच वर्षों तक प्रयासरत रही। वे उसमें विफल रहे और इंडोनेशिया 1950 में स्वतंत्र हो गया।

स्वाभाविक ही, हंटिंगटन के प्रबंध को मानें तो, इसके बाद डच लोगों का पतन शुरू हो गया। क्या सचमुच? 1990 में यूएस डॉलर की क्रय शक्ति को मानक आय मानते हुए, 1950 में नीदरलैंड्स में प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) (प्रति व्यक्ति आय) 5,996 यूएस डॉलर थी।[60] और 2010 में यह कितनी थी? 2010 में नीदरलैंड्स की प्रति व्यक्ति जीडीपी, 1990 के यूएस डॉलर के मान से, 24,303 यूएस डॉलर थी, जोकि 305 प्रतिशत की वृद्धि है।[61] डच सरकार का डच ईस्ट इंडीज़ उपनिवेश का "नुकसान" डच लोगों के लिए कोई अभिशाप सिद्ध नहीं

हुआ। इसका उल्टा ही हुआ। अब डच लोग अपने युवाओं को उपनिवेश में युद्ध करने और राज करने नहीं भेजते। यदि उन्हें इंडोनेशिया से कुछ चाहिए हो, तो वे उसे विदेशी धरती पर खून–ख़राबे और खर्च के बिना ख़रीद सकते हैं। हम देख सकते हैं कि डच लोगों के लिए साम्राज्यवाद नहीं, बल्कि व्यापार ही कहीं अधिक फायदेमंद साबित हुआ है। साथ ही यह इंडोनेशिया के लिए भी लाभकारी साबित हुआ है, जिसकी प्रति व्यक्ति जीडीपी (पुनः 1990 के यूएस डॉलर के स्थिर मानांक पर) 1950 में 817 यूएस डॉलर से बढ़कर 2010 में 4,722 यूएस डॉलर हो गई, अर्थात् 478 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी।[62]

दरअसल यह कोई ज़रूरी नहीं कि एक देश की समृद्धि दूसरे देश के लिए गरीबी का कारण बने। जब आपके व्यापार भागीदार अधिक समृद्ध बनते हैं, तो यह आपके लिए भी अच्छा होता है। जैसा अर्थशास्त्री जीन–बैप्टिस्ट से ने 1803 में स्पष्ट किया (लेकिन बहुत कम लोगों ने सुना),

> अच्छी फसल न केवल किसान के लिए फायदेमंद होती है, बल्कि सभी वस्तुओं के व्यापारियों के लिए भी अच्छी होती है। जितनी अच्छी फसल हो, उतनी ही उसके उत्पादकों की क्रय शक्ति में इज़ाफा होता है, लेकिन ख़राब फसल वस्तुओं की ख़रीद पर बुरा असर डालती है। और यही बात निर्माण तथा वाणिज्य के उत्पादों पर भी लागू होती है। व्यापार की एक शाख़ा की सफलता क्रय शक्ति को बढ़ाती है, और इस प्रकार अन्य सभी शाख़ाओं के लिए बाज़ार खोल देती है; इसके विपरीत, निर्माण या व्यापार के एक हिस्से में ठहराव बाकी सभी पर प्रभाव डालता है।[63]

अमीर देशों के राष्ट्रवादी अर्थशास्त्री यह पढ़कर नाराज़ हो जाते हैं कि चीनी या भारतीय या ब्राज़ीलियन या घाना के लोग अमीर हो रहे हैं। आख़िरकार, यदि ग़रीब लोग अमीर हो रहे हैं, तो इसका मतलब अमीर लोग ग़रीब हो ही रहे होंगे! लेकिन यह सिर्फ बेहूदा विद्वेषपूर्ण है और ग़लत तर्कों पर आधारित है। यदि चीनी या भारतीय लोग अमीर हो रहे हैं तो कनाडा (या जर्मनी, या डेनमार्क या अमेरिका या जापान या और कहीं) के लोगों को नाराज़ नहीं होना चाहिए; यदि वे उनके साथ व्यापार कर रहे हैं, तो यह उन लोगों के फायदे का ही है कि उनके ग्राहक उत्पादों की अधिक कीमत चुका सकते हैं। यही बात कोरियाई, केन्याई, वर्जिनियाई और वरमोंट के किसानों और फैक्टरी कारीगरों पर भी लागू होती है।

यदि सभी आर्थिक लेन–देन कुल–योग–शून्य वाली होतीं, तो सारे देशों के हित एक–दूसरे से विपरीत होते। और ऐसा होता तो संघर्ष अवश्यंभावी होता। हंटिंगटन सही होते, लेकिन वे ग़लत थे।[64]

क्या व्यापारिक साम्राज्यवाद एक अच्छा समाधान है?

हालांकि पुराने समय में युद्ध और साम्राज्यवाद के ख़िलाफ कुछ थोड़ी बहुत आवाज़ें उठाई गई थीं, लेकिन दूसरे देशों पर आक्रमण, स्थानीय लोगों को गुलाम बनाना और उनके सामान की ज़ब्ती आदि का पर्याप्त विरोध नहीं किया गया, जो दुख की बात है। यह निजी अधिकारों पर आधारित व्यापार के फायदे और हिंसात्मक अन्याय से होने वाले खुद के नुकसान ही थे, जिन्होंने आक्रमण और सैन्य अभियान के सिद्धांततः विरोध की नींव डाली। इस बात में कोई आश्चर्य नहीं कि 1759 में *दि थ्योरी ऑफ मॉरल सेंटीमेंट* लिखने वाले नैतिक दार्शनिक ने 1776 में लिखी पुस्तक में यूरोपीय उपनिवेशवाद की "मूर्खता और अन्याय" की निंदा की है:

> इन उपनिवेशों को बसाने की पहली परियोजना में शामिल प्रमुख मार्गदर्शक तत्वों में मूर्खता और अन्याय प्रमुखता से दिखाई पड़ते हैं; सोने और चांदी की खदानों को खोजने की मूर्खता, और एक ऐसे देश की संपत्ति हड़पने का अन्याय, जिसके निरीह लोगों ने यूरोप के लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था, उल्टे वहाँ पहले–पहल पहुँचने यूरोपीय लोगों के साथ दयालुता और मेहमान नवाज़ी का बर्ताव किया था।[65]

एडम स्मिथ ने जान लिया था कि साम्राज्यवाद अधिकांश लोगों को कुछ नहीं देता, और साम्राज्यों की क़ीमत उनके द्वारा होने वाले फायदों के मुकाबले कई गुना अधिक होती है। इस स्कॉटिश नैतिक दार्शनिक और अर्थशास्त्री ने लिखा है कि इस प्रकार के अन्याय के अलावा सैन्य अभियान और साम्राज्य ने करदाताओं पर अधिक बोझ डाला है, उन्हें फायदे बहुत कम दिये हैं।

> एक बड़े साम्राज्य को केवल इसलिए स्थापित किया गया है, ताकि ग्राहकों का एक देश बनाया जा सके, जो हमारे विभिन्न उत्पादकों की दुकानों से सामान ख़रीदने पर मज़बूर हों, वह सारा सामान जो ये दुकानें उन्हें उपलब्ध करा सकें। हमारे उत्पादकों को इस एकाधिकार के ज़रिए मिल सकने वाली थोड़ी अधिक कीमतों के लिए घरेलू ग्राहकों पर इस साम्राज्य के रखरखाव तथा सुरक्षा का बोझ डाल दिया गया है। केवल और केवल इसी उद्देश्य के लिए दो विश्व युद्धों में 20 करोड़ ख़र्च कर दिए गए हैं, और उससे पिछले युद्धों पर हुए ख़र्च के अलावा सत्रह करोड़ का नया कर्ज़ इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए लिया गया है। इस कर्ज़ का केवल ब्याज मात्र उन सारे फायदों से अधिक है, जो इस औपनिवेशिक व्यापार के एकाधिकार से मिले थे, उस सारे व्यापार के मूल्य से

अधिक था और उन सभी वस्तुओं के मूल्य से अधिक है, जो उपनिवेशों को वार्षिक रूप से निर्यात की जाती हैं।[66]

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद, तथा उनसे उपजे सैन्य अभियान और पराजित देशों की गुलामी वास्तव में उस उपनिवेश बनाने वाले देश के लोगों, अर्थात् जिन्होंने कर भरे, सेना को सामग्री उपलब्ध कराई और साम्राज्य का बोझ उठाया, के लिए फायदेमंद होती ही नहीं थी। फायदा उठाने वाले ज़रूर थे: ठेकेदार और सप्लायर्स, नौकरशाह और वायसरॉय, व्यापार का एकाधिकार तथा जीती हुई ज़मीन पाने वाले, लूट के सामान की कालाबाज़ारी करने वाले और मुफ्त के श्रमिक पाने वाले। लेकिन आक्रमणकारी देश के निवासियों पर लगे कर तथा हारे हुए देश के लोगों पर पड़े करों तथा दण्डों के बोझ की तुलना में यह फायदे नगण्य थे। जैसाकि एडम स्मिथ ने लिखा है, सेना के खर्च पूरे करने के लिए गए कर्ज़ का केवल ब्याज ही समूचे व्यापार के मूल्य से अधिक था। कुल मिलाकर यह एक हारी हुई बाज़ी थी।[67]

पुराने, मुक्त व्यापार के समर्थक उदारवादी यह बखूबी जानते थे। ब्रिटिश सांसद और यूरोप के इतिहास में मुक्त व्यापार के सबसे मुखर समर्थक रिचर्ड कॉबडेन 1860 में तैश में कहा था कि यदि कुछ विशिष्ट शक्तिशाली लोगों को फायदा पहुँचाना ही है, तो उसके काफी अन्य तरीके हैं, जो बहुत सस्ते और अत्यंत कम नुकसानदेह हैं। वे फ्रांस के साथ एक मुक्त व्यापार समझौते के लिए प्रसिद्ध थे, जिससे इन दो पारम्परिक रूप से दुश्मन देशों के बीच एक स्थायी शांति स्थापित हो सकी। ब्रिटिश साम्राज्य की मूर्खतापूर्ण ग़लती पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने मज़ाकिया लहज़े में अवसरवादी पक्षों को संतुष्ट करने का एक तरीका सुझाया। मुनाफाख़ोरों को युद्ध तथा साम्राज्य से जितना धन मिल सकता था, वह उन्हें वैसे ही दे दिया जाए। इसमें युद्ध की लागत के मुकाबले नगण्य ख़र्च होगा और समाज युद्ध और मृत्यु की त्रासदी से भी बच जाएगा:

> दुर्भाग्यवश, हमारे समाज में एक वर्ग है – जो सबसे रसूखदार है – जो इन विदेशी युद्धों से या अपनी ही जनता में फ्रांसीसी आक्रमण की घबराहट से मुनाफा कमाता है। युद्ध और हथियारों पर हो रहे इस ख़र्च के बिना यह सामंत वर्ग कैसे टिकेगा? क्या इन्हें पालने–पोसने के लिए कोई बेहतर और अधिक मानवीय उपाय नहीं खोजा जा सकता? जब मैं श्री रूहर के साथ कर्तव्यों में कमी पर चर्चा करता था, और ऐसे उद्योगों का ज़िक्र होता जहाँ बहुत कम कारीगर और पूँजी लगे थे और जिन्होंने सरकारी मदद के लिए दावा किया था, तो मैं सुझाव

> देता था कि इन छोटे, संरक्षित हितों का संवर्धन करने के लिए देश के व्यापार में व्यवधान उत्पन्न करने के बजाय क्यों नहीं आप उन्हें उनके नुकसान में चल रहे धंधे से बाहर निकालकर ज़िन्दगी भर उन्हें देश के ख़र्चे पर किसी अच्छे से होटल में ठहराते और अच्छा भोजन कराते? क्या इसी प्रकार का कोई रास्ता सामंतों के छोटे बेटों के लिए नहीं निकाला जा सकता, बजाय इसके कि उनकी सुविधा के लिए देश पर बोझ बनने वाले युद्ध अभियान शुरू किए जाएं?[68]

जॉन ब्राइट, जो ब्रिटेन में मुक्त व्यापार आंदोलन के संस्थापक थे और कॉबडेन की तरह एक साम्राज्यवाद–विरोधी सांसद थे, ने 1858 में ब्रिटिश साम्राज्य और उसके युद्धों की तुलना अमीरों के लिए सरकारी मदद से की थी।

> ऐसा कोई मुनीम नहीं है, जो इस बात का हिसाब कर सके कि इंग्लैंड के भू–स्वामी परिवारों की कितनी संपत्ति, कितनी ताक़त, कितनी श्रेष्ठता लोगों के श्रम का फल लूटकर हासिल की गई है, लोगों का वह धन जो हर प्रकार का कर लगाकर उनसे छीना गया है और जिसे सरकार ने हर संभव तरीक़े से बरबाद किया है। आप जितना इस विषय की गहराई में जाएंगे, उतना ही आप पाएंगे, जैसा मैंने पाया, कि यह विदेश नीति, यह "यूरोप की आज़ादी" की चिंता, वह एक ज़माने की "प्रोटेस्टेंट हित" की परवाह, यह "शक्ति संतुलन" के लिए प्रयास, यह सब कुछ और नहीं, सिर्फ ग्रेट ब्रिटेन के सामंत वर्ग को फायदा पहुँचाने की एक विशाल प्रणाली है।[69]

कुछ ब्रिटिश लोग, जैसे सेना को विभिन्न सेवाएं देने वाले, या "सामंत वर्ग के छोटे बेटे" जो उपनिवेशों में गवर्नर या सैनिक अधिकारी बनाकर भेजे गए, उन्हें उपनिवेशों की जनता तथा ग्रेट ब्रिटेन के आम नागरिकों के मुंह का निवाला छीनकर फायदा पहुँचाया गया, लेकिन ग्रेट ब्रिटेन के नागरिकों को कोई फायदा नहीं मिला, इसके विपरीत ही हुआ। ब्रिटिश साम्राज्य के ख़र्चे, निवेश, कर तथा अन्य वित्तीय मामलों के एक गहन अध्ययन के बाद लान, ई. डेविस और रॉबर्ट ए. हटनबैक ने अपने प्रबंध *मैमन एंड द परस्यूट ऑफ एम्पायर: दि इकनॉमिक्स ऑफ ब्रिटिश इम्पीरियालिज़्म* में लिखा है:

> एक देश के रूप में ब्रिटेन को अपने साम्राज्य से कोई आर्थिक फायदा नहीं हुआ, लेकिन निजी निवेशकों के लिए वह ज़रूर फायदे का सौदा था। साम्राज्य के अंतर्गत फायदे का स्तर इस बात पर निर्भर था कि आप किसे जानते हैं और किस तरह गणना करते हैं। उपनिवेशों में रहने वाले गोरों ने निश्चित ही जितना दिया,

उससे कितना ही गुना अधिक ले भी लिया। साम्राज्य पर निर्भर गोरों को भी मुनाफा ही हुआ। जहाँ तक स्थानीय जनता का सवाल है, उन्हें सरकारी वस्तुओं का बाज़ार थोक दरों पर मिला, लेकिन ऐसा कोई सबूत नहीं है, जो कहता हो कि यदि उनसे उनकी पसंद पूछी जाती, तो वे उन वस्तुओं को ख़रीदते ही, चाहे कीमतें कितनी भी कम होतीं।[70]

साम्राज्यवाद औपनिवेशिक ताक़तों की जनता के लिए आर्थिक रूप से फायदे का नहीं होता। वह केवल एक वर्ग–विशेष के फायदे का होता है। अगर ऐसा नहीं होता, तो उसे अपनाया ही नहीं जाता। यह फायदा पाने वाला वर्ग जनसंख्या का एक छोटा–सा हिस्सा होता है, लेकिन उन्हें मिलने वाले फायदे की तुलना में जनता को होने वाली परेशानी और नुकसान अत्यंत बड़े होते हैं। एक बड़ी संख्या में लोगों का मानना है कि 'एक का फायदा अर्थात् दूसरे का नुकसान'; "जब कोई खोता है, तभी दूसरा पाता है"; और "नफा और नुकसान हमेशा संतुलन में चलते ह"। ये मान्यताए ग़लत हैं।

समाजशास्त्रियों के अनुसार, हमारे आसपास धनात्मक योग का खेल चलता है और अधिकांश लोग ऐसे लेन–देन करते हैं, जिनमें दोनों पक्षों का फायदा होता है। जब एक ग्राहक किसी दुकानदार से कुछ ख़रीदता है, तो उसे "धन्यवाद" कहता है। किसी कुल–योग शून्य मान्यता वाले व्यक्ति को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि ग्राहक और दुकानदार दोनों एक–दूसरे को धन्यवाद दे रहे हैं। दोनों में से कोई भी किसी पर अहसान नहीं कर रहा या नुकसान नहीं उठा रहा। एक के फायदे से दूसरे को नुकसान नहीं हो रहा, बल्कि दोनों फायदे में हैं। फायदों का कुल योग शून्य नहीं, बल्कि धनात्मक है। ऐसे लेन–देन हमारे आसपास होते रहते हैं, लेकिन बहुत कम लोग हैं, जो धनात्मक योग के स्वैच्छिक विनिमय से उत्पन्न "दोहरे धन्यवाद" पर ध्यान देते हैं।

एक और प्रकार का लेन–देन होता है, जिसे ऋणात्मक योग का खेल कहते हैं। संघर्ष की स्थिति में केवल एक ही पक्ष की हार न होना भी संभव है। फायदे से अधिक नुकसान भी हो सकता है और संभव है कि दोनों पक्षों की हार हो जाए। वास्तव में, दोनों पक्ष ही अक्सर हारते हैं। (यहां स्पष्ट करना उचित होगा कि ऋणात्मक योग में प्राप्तिकर्ता भी शामिल होता है। किसी व्यक्ति की जान लेकर उसे लूटने वाले को 10 डॉलर मिल सकते हैं, लेकिन मरने वाले के 10 डॉलर भी जाते हैं और जान भी। इस प्रकार, लूटने वाले का लाभ इतना अधिक नहीं था, जितना मरने वाले का नुकसान। यह भी हो सकता है कि दोनों का ही नुकसान हो, उदाहरण के

लिए हाथापाई में दोनों की जान जा सकती है, या गंभीर चोटें आ सकती हैं और यह सब केवल 10 डॉलर के लिए, जो कि लुटेरा लूटना चाहता था)।

किसी ज़माने में वाइकिंग लोगों के छापों में जहाज़ भरकर लूट मिलती थी। स्पेन के जहाज़ी बेड़े शाही उपनिवेशों से चांदी भरकर स्पेन लाते थे, जो स्थानीय गुलाम खदानों से निकालते थे; इससे कम से कम शाही दरबार तो अमीर बनता था (हालांकि अंततः यह देश के लिए अभिशाप ही सिद्ध हुआ)। समुद्री लुटेरे कभी नाविकों के लिए बड़ा ख़तरा हुआ करते थे, लेकिन दुनिया बदल गई है। पिछली दो शताब्दियों के विदेशी सैन्य अभियानों से उपनिवेश के लोगों को बहुत नुकसान उठाना पड़ा, लेकिन इससे साम्राज्यवादी देश की जनता को कोई फायदा नहीं हुआ। फायदा उठाने वाले ज़रूर थे (जैसे सेना को सामग्री की आपूर्ति करने वाले ठेकेदार आदि), लेकिन ये फायदे उपनिवेश की जनता को और कब्ज़ा करने वाले देश की आम जनता को हुए नुकसान से कहीं कम थे। सामान्य व्यापक युद्धों, जैसे प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, में सभी पक्षों को हुआ नुकसान भयावह था। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में यूरोप और अधिकांश एषिया बरबाद हो गए थे और दोनों महाद्वीपों की जनता अनाज की कमी और भुखमरी से त्रस्त थी। युद्ध के पश्चात् आर्थिक स्थिति की बहाली में शांति और व्यापार की भूमिका थी, युद्ध की नहीं।[71]

मुक्त व्यापार के कट्टर समर्थक साम्राज्यवाद और विदेशी सैन्य अभियानों के, चाहे फ्रांस में हो, इंग्लैंड में हो या जर्मनी में, सबसे प्रबल विरोधी थे। नोबेल पुरस्कार के प्रथम विजेता फ्रेडरिक पैसी मुक्त–व्यापार समर्थक अर्थशास्त्री थे और वे फ्रेंच सोसायटी फॉर इंटरनेशनल आर्बिट्रेशन के संस्थापक तथा रिचर्ड कॉबडेन और जॉन ब्राइट के मित्र और सहकर्मी थे। इस सुप्रसिद्ध शांतिवादी ने स्पष्ट किया है कि

कई सारे दुखद अपवादों के बावजूद, वर्तमान रुझान सामंजस्य और वैश्विक सहमति का ही है, जो मानव जाति की एकता और भ्रातृभाव के ज़रिए इतनी उत्कटता से अभिव्यक्त होता है। इसकी जड़ में है विनिमय। विनिमय के बिना इंसान अपना भाईचारा खो देते हैं और दुश्मन बन जाते हैं। विनिमय के ज़रिए वे एक–दूसरे को समझना तथा प्यार करना सीखते हैं। उनके हित उन्हें एक साथ लाते हैं और इससे जागृति आती है। विनिमय के बिना वे दुनिया से अलग, अपने–आप में सिमटे रहेंगे और मुख्य धारा से जुड़ नहीं पाएंगे... निशेध तथा प्रतिबंध केवल अलगाव और बरबादी की ओर ले जाते हैं और मानव जाति के सदैव के लिए शत्रुता और नफरत से अभिशप्त कर देते हैं।[72]

पैसी ने शांति को बढ़ावा देने और युद्ध टालने के लिए व्यापार की स्वतंत्रता और अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के लिए समर्पित भाव से कार्य किया।

यूरोप के युद्ध तथा साम्राज्यवाद विरोधकों की तरह अमेरिकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं तथा योजनाओं के भी आलोचक थे। साम्राज्यवाद–विरोधी लीग की स्थापना 1898 में उद्योगपतियों, लेखकों तथा शिक्षाविदों ने की थी, जो यूएस सैन्य अभियानों के ख़िलाफ थे। उनके एक सदस्य, येल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विलियम ग्राहम सम्नर ने 1898 में अपने प्रसिद्ध निबंध "दि कांक्वेस्ट ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स बाय स्पेन" में कहा है कि हालांकि यूनाइटेड स्टेट्स ने स्पेनिश साम्राज्य की सेना को हरा दिया है और गुआम, पर्टो रिको और फिलिपीन्स को स्पेन से छीन लिया है, लेकिन वास्तव में स्पेनिश साम्राज्य के सिद्धांतों ने यूनाइटेड स्टेट्स पर फतह पाई है।

सम्नर इस चौंका देने वाले निबंध के अंत में कहते हैं, "हमने स्पेन को सैन्य संघर्ष में हरा दिया है", लेकिन विचारों और नीतियों के मोर्चे पर हम उनसे हार रहे हैं। विस्तारवाद और साम्राज्यवाद राष्ट्रीय समृद्धता के पुराने विचार हैं, जो स्पेन को आज इस अवस्था में ले आए हैं। ये विचार राष्ट्रीय अभिमान तथा राष्ट्रीय लोभ को उकसाते हैं। वे लुभावने होते हैं, ख़ासकर पहली नज़र में और सतही तौर पर, और इस प्रकार जनमानस पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वे केवल मरीचिका होते हैं और यदि हम विचारपूर्वक उनसे परे न देख पाए, तो वे हमें विनाश की ओर ले जाते हैं।[73]

"तेल (या अन्य संसाधन) संबंधी युद्ध" के बारे में?

वास्तविक औपनिवेशिक कब्ज़ा आज काफी दुर्लभ हो गया है (हालांकि यह आज भी मौजूद है), लेकिन आज भी कई देशों के लोगों को यह कहते सुना जा सकता है कि संसाधन जुटाने के लिए विदेशों में सेना भेजकर, या युद्ध शुरू करने की धमकी देकर या सरकार की ताकत का अन्य प्रकार से उपयोग कर वहाँ की सरकार का तख़्तापलट ज़रूरी होता है। यह एक पुराने व्यापारवादी विचार का ही पुनरावर्तन है, जिसे अर्थशास्त्री बार–बार नकार चुके हैं। नीति–निर्माता कई बार तर्क देते हैं कि युद्ध आर्थिक कारणों से आवश्यक होता है। वर्तमान युग में उनका तर्क है कि तेल प्राप्त करने के लिए खून और पैसा बहाना पड़ता है। 1990 में तत्कालीन यूएस सेक्रेटरी ऑफ स्टेट जेम्स बेकर ने यूनाइटेड स्टेट्स की संसद के सामने सद्दाम हुसैन की सरकार के ख़िलाफ खाड़ी युद्ध शुरू करने के पक्ष में गवाही दी थी। उन्होंने "अपनी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव" की ओर संकेत करते हुए कहा कि

> यह हमारे स्थानीय पेट्रोल पम्प पर पेट्रोल की कीमत बढ़ने के बारे में नहीं है। यह कुवैत और इराक से मिलने वाले तेल का संकीर्ण मामला भी नहीं है। यह एक तानाशाह के बारे में है, जिसे चुनौती नहीं दी गई, तो वह अकेले ही वैश्विक अर्थव्यवस्था का गला घोंट सकता है और हम सबको एक भयावह मंदी के दौर में धकेल सकता है।[74]

उनके एक पूर्ववर्ती हेनरी किसिंजर ने *लॉस एंजेल्स टाइम्स* में लिखे एक लेख में चेताया था कि इराक के तानाशाह सद्दाम हुसैन के पास 'एक वैश्विक आर्थिक संकट पैदा करने की क्षमता है'।[75] तेल तक पहुँच का मुद्दा यूएस के नेतृत्व में हुए द्वितीय इराक युद्ध के समय भी उठाया गया था। तेल के लिए युद्ध का समर्थन करने वाले लोग अन्य ग़लतियों के अलावा अर्थशास्त्र के मूल तत्वों को समझने में भी नाकामयाब रहे।

कैटो इंस्टीट्यूट के तत्कालीन अध्यक्ष और राष्ट्रपति रीगन की आर्थिक सलाहकार परिषद के भूतपूर्व सदस्य और प्रसिद्ध अर्थशास्त्री विलियम निसकानेन ने सीआईए के भूतपूर्व प्रमुख जेम्स वूल्से के साथ एक सार्वजनिक वाद–विवाद में कहा था,

> 1991 और 2001, दोनों बार तेल इतना मूल्यवान नहीं था कि उसे लेकर युद्ध छेड़ दिया जाए। तेल उसके नियंत्रक देश के लिए तभी मूल्यवान है, जब वह उसे हमें तथा अन्य देशों को बेच सके। और अमेरिका के राष्ट्रीय हित इस बात पर निर्भर नहीं हैं कि तेल नियंत्रक देश कौन–सा है। सवाल सिर्फ उस देश की संपदा का होता है। यह सवाल हमेशा ही लागू होगा, चाहे मामला तेल का हो या सोयाबीन का, चाहे हम आयातक हों या निर्यातक। तेल की कीमतें जापान और ब्रिटेन में एक समान हैं, जबकि जापान अपनी ज़रूरत का सारा तेल आयात करता है और ब्रिटेन तेल के मामले में काफी हद तक आत्मनिर्भर है। तेल की मांग पूरी दुनिया में है... इसे लेकर युद्ध आवश्यक नहीं है। 1991 में भी नहीं था और अब भी नहीं है।[76]

निसकानेन सही थे। तेल एक बिक्री की वस्तु है और उसकी वैश्विक क़ीमत है। उन्मादी तानाशाह तक इस बात को समझते हैं कि यदि उसे न बेचा जाए तो उसकी कोई क़ीमत नहीं। यूनाइटेड स्टेट्स के कट्टर दुश्मन, वेनेजुएला के स्वर्गीय तानाशाह ह्यूगो शावेज़ ने भी इसे समझा था और वहाँ की सरकारी तेल कम्पनियां अपने उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा अमेरिकी खरीदारों को बेचती थीं।

लेकिन मान लें कि तेल या किसी अन्य संसाधन की आपूर्ति में कमी आ जाए। तब क्या होगा? अर्थशास्त्री हमें दो महत्वपूर्ण बातें बताते हैं।

1. सैन्य शक्ति भी महंगी होती है। लगभग हर बार, विदेशी सरकार द्वारा आपूर्ति कम कर देने से होने वाले नुकसान की तुलना में सेना का ख़र्च ही अधिक होता है। सैन्य हस्तक्षेप के समर्थक सोचते हैं कि सेना का कोई खर्च नहीं होता, लेकिन ऐसा नहीं है।[77]

2. बाज़ार में लेन–देन करने वाले लोगों ने आपूर्ति में कमी से निपटने की प्रणालियाँ पहले ही खोज रखी हैं, ख़ासकर क़ीमतों की प्रणालीय क़ीमतें हमें बाध्य करती हैं कि वस्तुओं को उनके विभिन्न उपयोगों में से सबसे आवश्यक उपयोग में पहले इस्तेमाल किया जाए (जब क़ीमतें बढ़ती हैं, तो हम संसाधनों के इस्तेमाल में "किफायत" बरतते हैं); बढ़ती क़ीमतें संसाधनों के किफायती इस्तेमाल को प्रोत्साहित करती हैं और आपूर्ति भी बढ़ाती हैं, साथ ही उनकी जगह अन्य वस्तुओं के इस्तेमाल को भी बढ़ावा देती हैं (पेट्रोलियम की जगह दूसरे उत्पाद हैं प्राकृतिक गैस, जल शक्ति, सौर ऊर्जा और ऊर्जा के अन्य प्रकार)। बाजारों पर निर्भर रहना सेना के इस्तेमाल से कहीं अधिक सस्ता होता है।[78]

निश्चित ही, व्यापारवादी सोच और सैन्य हस्तक्षेप के ख़र्च को नज़रअंदाज करना सिर्फ यूएस सरकार तक ही सीमित नहीं है। इसी प्रकार की नीतियों ने सोवियत यूनियन को कंगाल कर दिया था (प्रत्येक नया अधीनस्थ राज्य उनके साम्राज्य को बढ़ाता गया और साम्राज्यवादी शक्ति पर अधिक बोझ डालता गया) और चीन पिछले कुछ वर्षों से तेल तथा अन्य वस्तुओं के लिए भारी क़ीमत चुका रहा है। यह नीति चीनी करदाताओं के लिए ख़ासी महंगी साबित हो रही है, क्योंकि सरकार बाज़ार भाव से अधिक मूल्य चुका रही है (साथ ही दूसरे देशों के राजनैतिक निर्णयकर्ताओं को प्रोत्साहन राशि भी) और सरकारी उपक्रमों द्वारा इन संसाधनों के इस्तेमाल पर सब्सिडी भी दे रही है।[79]

फ्रांसीसी सरकार पश्चिम अफ्रीका में फ्रांसीसी व्यापार के लिए विशेष छूटें प्राप्त करने के लिए कई दशकों से प्रयासरत है; ये छूटें अफ्रीकी उपभोक्ताओं के और फ्रांसीसी करदाताओं के हित में नहीं हैं। फ्रांसीसी सरकार फ्रांसीसी उद्योगों के लिए छूट सीएफए–फ्रैंक (सीएफए को मूलतः 1945 से 1958 तक *अफ्रीका के फ्रांसीसी उपनिवेश* कहा जाता था, और *फ्रांसीसी उपनिवेशों* की स्वतंत्रता के बाद *अफ्रीका का फ्रांसीसी समुदाय* कहा जाता है) के तहत, विदेशी मदद (यह फ्रांसीसी करदाताओं पर एक बोझ है, जैसे यूएस मदद यूएस करदाताओं के लिए, चीनी मदद चीनी करदाताओं के लिए) और फ्रांसीसी सेना की तैनाती और समय–समय पर सैन्य हस्तक्षेप के एवज में मांग रही थी। इसके अंतिम लाभकारी "फ्रांसीसी लोग" नहीं, बल्कि कुछ चुनिंदा लोगों के हित थे। तत्कालीन फ्रांसीसी राष्ट्रपति निकोलस सरकोज़ी और टोगो के निर्वाचित राष्ट्रपति फाउरे नैसिंगबे (जो फ्रांस की मदद से चुने गए थे) के बीच एक

चर्चा में सरकोज़ी ने कहा था (और जिसे पत्रकारों ने सुन लिया था), "यदि आप फ्रांस के दोस्त हैं, तो आपको फ्रांसीसी कम्पनियों का ध्यान रखना पड़ेगा"। इसमें छिपा संदेश स्पष्ट था और यह आधुनिक युग के सांठगांठ पूँजीवाद की झलक दिखाता है।[80]

इसी प्रकार, पुतिन की रूसी सरकार ने आक्रामक विदेश नीति, पड़ोसी देशों पर आक्रमण और उनकी ज़मीन हथियाना, तथा "यूरेशियन कस्टम्स यूनियन" की स्थापना के ज़रिए सरकारी तथा निजी, दोनों रूसी उद्योगों को लाभ पहुँचाने का प्रयास किया है। इसके परिणाम रूसी उपभोक्ताओं तथा करदाताओं के लिए बुरे और क्रेमलिन की नज़दीकी कम्पनियों के मालिकों तथा मैनेजरों के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं, ख़ासकर "साइलोविकी" के लिए जो उस देश की तेज़ी से अधिकारवादी बनती जा रही सरकार के लिए गुंडे और अन्य मदद देती है।[81]

संसाधनों तक पहुँच बनाने के लिए सरकारी ताक़त के किसी भी रूप में इस्तेमाल से कहीं बेहतर है मुक्त विनिमय। व्यापारवाद, साम्राज्यवाद, और सैन्यवाद विशिष्ट संकीर्ण हितों को फायदा पहुँचाते हैं, लेकिन वे आम हितों को नुकसान पहुँचाते हैं। वे किसी काम के नहीं होते।

आर्थिक भ्रांतियाँ और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध

आज़ादी और शांति के एक महान पुजारी और इच्छास्वतंत्रतावाद के कट्टर समर्थक फ्रेडरिक बास्तियात ने इच्छास्वतंत्रतावादी राजनैतिक अर्थशास्त्र के प्रमुख उद्देश्य को इस प्रकार वर्णित किया है: इस बात की व्याख्या करना कि व्यापार परस्पर–लाभकारी है, जबकि युद्ध परस्पर–विनाशकारी है।

> हमारा उद्देश्य उस मिथ्या और ख़तरनाक राजनैतिक अर्थव्यवस्था से जूझना है, जो यह मानती है कि एक व्यक्ति की समृद्धता दूसरे की समृद्धता से सुसंगत नहीं होती, जो व्यापार को आक्रमण के और शोषणकारी प्रभुत्व को उत्पादक कार्य के समतुल्य मानती है। जब तक ऐसे विचार स्वीकार्य माने जाते रहेंगे, तब तक दुनिया में स्थायी शांति नहीं आ सकती। यही नहीं, ऐसे विचारों के चलते शांति एक असंगत और बेतुका विचार बनकर रह जाएगी।[82]

"किसी देश का निर्यात यदि उसके आयात से अधिक हो, तो उस देश का व्यापार फायदे का, संतुलित होता है"[83] – यह कहना है "व्यापार का संतुलन" सिद्धांत का, जिसे विशेषज्ञ सिरे से नकार चुके हैं, लेकिन इस तथा इस प्रकार के अन्य सिद्धांतों के अब तक टिके रहने से दुनिया को अपरिमित नुकसान उठाना पड़ा है। इस प्रकार के मिथ्या सिद्धांतों को नकारना राजनैतिक विचारधारा का नहीं, बल्कि

एक ठोस अर्थव्यवस्था का काम है, चाहे दुनिया के बारे में किसी का नज़रिया कुछ भी हो। जैसा कि व्यापार अर्थशास्त्री पॉल क्रुगमैन ने कहा है,

> नीति बनाने वाले बुद्धिजीवियों की यह मान्यता कि देशों के बीच संघर्ष चलते रहते हैं, केवल एक भ्रम है, लेकिन यह भ्रम व्यापार से मिलने वाले परस्पर लाभों की वास्तविकता को नष्ट कर सकता है।[84]

राष्ट्रवादी अर्थशास्त्रियों का अज्ञान और उनकी यह व्यापारवादी मान्यता कि ग़रीब विकासषील देश और विकसित देश एक–दूसरे के लिए ख़तरा होते हैं, क्योंकि उनमें से कोई भी विदेशी निवेश को आकर्षित कर सकता है और साथ ही अधिशेषी व्यापार भी अर्जित कर सकता है[85], अचंभित कर देने वाली है। हमें उम्मीद करनी चाहिए कि ठोस आर्थिक विश्लेषण के सम्मुख यह अज्ञान मिट जाएगा और जीन–बैप्टिस्ट से की यह भविष्यवाणी सच होने का दिन नज़दीक आ जाएगाः

> आज नहीं तो कल, वह दिन आएगा जब लोग इस बचकाना और बेहूदा प्रणाली की मूर्खता पर सवाल उठाएँगे, जो अक्सर बंदूक की नोंक पर लागू की जाती है।[86]

जब माल सीमा पार नहीं कर सकता, तो सेनाएं करेंगी

व्यापार और निवेश की आज़ादी देशों के बीच शांति स्थापित करती है। यह देशों के बीच युद्ध को असंभव तो नहीं बनाती, लेकिन उसकी संभावना ज़रूर कम करती है। यह भी अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। पुराने उदारवादी शांति और व्यापार के इस सम्बन्ध को जानते थे। जैसाकि जर्मन उदारवादी डॉन प्रिंस–स्मिथ ने 1860 में कहा,

> व्यापार की स्वतंत्रता से उपजे हितों का अंतरराष्ट्रीय परस्पर–सम्बन्ध युद्ध टालने का सबसे प्रभावी साधन है। यदि हम इतने प्रगत हो सकें कि प्रत्येक विदेशी में हमें एक अच्छा ग्राहक नज़र आए, तो हमें उसे गोली मारने की इच्छा नहीं होगी।[87]

अब हम शांति और व्यापार की आज़ादी का, और शांति का तथा व्यापार की मात्रा का आपसी सकारात्मक सम्बन्ध बेहतर ढंग से समझने लगे हैं। सीमापार व्यापार और निवेश जितने अधिक होंगे, उतनी ही युद्ध की संभावना कम होगी।

1748 में फ्रांसीसी दार्शनिक और राजनैतिक विचारक मोंतेस्क्यू ने अपनी प्रभावशाली पुस्तक *दि स्पिरिट ऑफ लॉ* में लिखा है,

> व्यापार का प्राकृतिक प्रभाव शांति की ओर ले जाता है। आपस में व्यापार करने वाले दो देश एक–दूसरे पर निर्भर हो जाते हैं; यदि एक की ख़रीदने में रुचि है तो दूसरे की बेचने में, और सभी सम्बन्ध परस्पर–आवश्यकताओं पर टिके होते हैं।[88]

सोलोमॉन डब्ल्यू. पोलाचेक और कार्लोस सीग्ली ने संघर्षों के अध्ययन के बाद निष्कर्ष दिया था, "व्यापार करने वाले देश सहयोग अधिक और युद्ध कम करते हैं। व्यापार में दोगुना वृद्धि से आक्रामकता में 20 प्रतिशत कमी आती है"।[89] सीमापार व्यापार, और विशेषतः सीमापार निवेश, से लोगों की शांति बनाए रखने में रुचि बढ़ती है। जिन लोगों का सीमापार व्यापार या निवेश होता है, वे अपने ही ग्राहकों तथा व्यापार भागीदारों के खिलाफ युद्ध छेड़ने का समर्थन नहीं करेंगे। जितने अधिक लोगों की आजीविका व्यापार पर निर्भर करती है, उतना ही अधिक शांति को समर्थन मिलता है, क्योंकि उन बहुमूल्य व्यापार सम्बन्धों में बाधा डालने वालों के विरोध में उतनी अधिक आवाज़ें उठेंगी। और सीमापार निवेश जितना अधिक होगा, उतना ही शांति के लिए अधिक समर्थन जुटेगा, क्योंकि साफ है कि लोगों को अपने निवेश पर बम गिराना और उसे नष्ट करना अच्छा नहीं लगता।[90]

जैसा कि समझा जा चुका है, 1930 के दशक की "व्यापार संरक्षणवाद" (अर्थात विद्यमान घरेलू उत्पादकों को "संरक्षण" देने के लिए प्रतिबंध खड़े करना) की मूर्खतापूर्ण तथा विनाशक नीति ने आर्थिक मंदी तथा उसके बाद हुए विश्व युद्ध में ख़ासा योगदान दिया था।[91] और ठीक यही भविष्यवाणी 1028 अमेरिकी अर्थशास्त्रियों ने की थी, जिन्होंने अमेरिकी संसद द्वारा 1930 में बीस हज़ार से अधिक आयातित वस्तुओं पर कड़े प्रतिबंध लगाए जाने के विरोध में एक याचिका पर हस्ताक्षर किए थे। अमेरिकी उपभोक्ताओं (तथा अमेरिकी निर्यातकों) पर हुए इस कुठाराघात ने सारे विश्व में संरक्षणवाद की लहर पैदा कर दी और यूरोप तथा यूनाइटेड स्टेट्स की मंदी को अधिक लंबा कर दिया, विश्व व्यापार ध्वस्त हो गया और इसने युद्ध का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस याचिका के अंत में लिखा गया थाः "कीमतों का संघर्ष विश्व शांति के लिए अच्छा नहीं होता"। और वैसा ही हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने 1947 में कहा,

इस समय समूचे विश्व का ध्यान और शक्ति शांति और आज़ादी प्राप्त करने में लगा हुआ है। ये उद्देश्य पूरी तरह एक तीसरे उद्देश्य से बंधे हुए हैं – विश्व व्यापार की पुनःस्थापना। वास्तव में, ये तीनों – शांति, आज़ादी और व्यापार – आपस में अटूट रूप से जुड़े हैं। अतीत के गंभीर सबक यही साबित करते हैं।

इसी भाषण में राष्ट्रपति ट्रूमैन ने कहा कि "तीस के दशक के आर्थिक संघर्ष की प्रत्येक लड़ाई के साथ अवश्यंभावी दुखद परिणाम भी अधिकाधिक स्पष्ट होते गए"।[93]

एक प्राचीन ज्ञान

यह समझ कि शांतिपूर्ण आचरण और व्यापार का आपसी सम्बन्ध है, बहुत प्राचीन है। ग्रीक कवि होमर के महाकाव्य *ओडेसी* की पुस्तक 9 में साइक्लोपियन्स नामक जंगलियों का ज़िक्र है, जो उनके टापू पर आने वाले लोगों को खा जाते हैं। उनमें सभ्यता के कोई मूल्य नहीं है, ख़ासकर विचार–विमर्श, कानून और व्यापार।

न तो उनके पास कोई सभागृह है, और न ही कोई कानून,
नहीं, वे तो पहाड़ पर बनी विशाल गुफाओं में रहते हैं–
हर एक अपनी मर्ज़ी से रहता है, अपने बीवी–बच्चों पर राज करता है
किसी और की परवाह किए बिना।

. . .

साइक्लोप्स की कोई सजी–सँवरी नौकाएँ नहीं हैं,
न कोई नौका बनाना जानने वाला है,
जो उन्हें ले जा सके विदेशों में,
जैसा अधिकांश मानव करते हैं दूसरे मानवों से व्यापार के लिए[94]

विवाद, चर्चा, आलोचना, व्यापार, यात्राएं निवेश और स्वतंत्र समाज के अन्य तत्व युद्ध को नामुमकिन तो नहीं बनाते, लेकिन उसकी संभावनाओं को अत्यंत क्षीण कर देते हैं। वे वहशी हिंसा को मर्यादित और कम करते हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है।

फैसला कौन करता है?

इच्छास्वतंत्रावादी हमेशा से ही इस बात को समझते आ रहे हैं कि राज्यकर्ता अभिजात्य वर्ग द्वारा चलाए गए युद्ध किसी भी प्रकार से उनकी अधीनस्थ आम जनता के लिए किसी भी प्रकार से लाभकारी नहीं होते। इतिहासकार पार्कर टी. मून ने अपनी पुस्तक *इम्पीरियालिज़्म एंड वर्ल्ड पॉलिटिक्स* में स्पष्ट शब्दों में लिखा है:

> भाषा अक्सर सत्य को अस्पष्ट बनाती है। शब्द–छल के ज़रिए अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों के इतने तथ्य हमसे छुपाए जाते हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं

कर सकते। जब हम एक शब्द "फ्रांस" कहते हैं, तो हम उसकी कल्पना एक इकाई, एक अस्तित्व के रूप में करते हैं। जब हमें देश के नाम का बार–बार उच्चार टालना होता है, तो हम सर्वनाम का उपयोग करते हैं, जैसे हम कहते हैं, "फ्रांस ने अपनी सेना ट्यूनिस पर आक्रमण करने के लिए भेजी", उस समय हम देश का केवल इकाई के रूप में ही ज़िक्र नहीं करते, बल्कि उसे एक व्यक्तित्व भी प्रदान करते हैं। यही शब्द तथ्य को छुपाते हैं और अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धों को एक सम्मोहक नाट्यमयता देते हैं, जिसमें ये व्यक्तित्व–पूर्ण देश अभिनेता होते हैं, और हम आसानी से यह भूल जाते हैं कि इसमें जीते–जागते के बने इंसान भी शामिल हैं। कितना अच्छा होता यदि "फ्रांस" जैसा कोई शब्द ही न होता और हमें कहना पड़ता – तीन करोड़ अस्सी लाख विभिन्न रुचियों और मान्यताओं वाले, 218,000 वर्ग मील क्षेत्र में रहने वाले स्त्री–पुरुष और बच्चे! फिर हम ट्यूनिस पर हुए आक्रमण का सही वर्णन कुछ इस तरह से करते: "इन तीन करोड़ अस्सी लाख लोगों में से कुछ ने तीस हज़ार लोगों को ट्यूनिस पर आक्रमण के लिए भेजा"। बात को इस तरह कहने से एक प्रश्न, बल्कि प्रश्नों की एक श्रृंखला खड़ी होती है। ये "कुछ" लोग कौन हैं? उन्होंने तीस हज़ार लोगों को ट्यूनिस क्यों भेजा? और उन तीस हज़ार लोगों ने उनकी बात क्यों मान ली?

साम्राज्य निर्मिती "राष्ट्रों" द्वारा नहीं, इंसानों द्वारा होती है। हमारे सामने सवाल है प्रत्येक देश में उन थोड़े, सक्रिय लोगों को खोजने का, जो साम्राज्यवाद में सक्रिय रुचि रखते हैं, और इस बात का विश्लेषण करने का कि एक बड़ी संख्या के लोग साम्राज्यवादी विस्तार का ख़र्च क्यों उठाते हैं और उसकी लड़ाईयां लड़ते हैं।[95]

यह कहना युद्ध की जटिल गतिविधियों का अति–सरलीकरण होगा कि "एक देश ने दूसरे देश के साथ युद्ध छेड़ दिया"; सच्चाई यह होती है कि एक देश के कुछ लोगों के समूह ने कुछ ऐसे निर्णय लिए, जिसके परिणाम दूसरे देश के लिए अत्यंत गंभीर थे, और किसी समाजशास्त्री का कार्य होता है कि ये निर्णय कैसे और क्यों लिए गए और दूसरे लोगों ने उन्हें क्यों स्वीकार किया। युद्ध एक निर्णय होता है, कम से कम आक्रामक पक्ष का। किसी देश के सभी लोगों को, सभी हितों को, सभी मतों को एक छाते के नीचे लाना, सभी को शामिल कर एकमत से निर्णय लेना केवल अति–आदर्शवादी कल्पना है, साथ ही यह राजनीतिशास्त्र के महत्वपूर्ण प्रश्नों को भी ढक लेती है, जो और भी बुरा है, लेकिन कई युद्ध और संघर्ष के कई टिप्पणीकार, विश्लेषक तथा विचारक इसे

सच मान कर चलते हैं। वे इसमें शामिल मुद्दे नहीं समझते, क्योंकि वे नैतिकता के ही नहीं, बल्कि समाजशास्त्र के नज़रिए से भी एकत्रतावादी होते हैं। वे मानते हैं कि विभिन्न प्रकृति और स्वभाव वाले लोगों से युक्त विशाल जनसंख्या और उन व्यक्तियों के आपस में जटिलता पूर्ण सम्बन्ध (परिवार, समुदाय, राजनैतिक पार्टियां, उद्यम, धर्म) आदि से बना देश खुद भी एक व्यक्ति है।[96] यह लापरवाह विचार पद्धति है, जिसके गंभीर परिणाम होते हैं।

निर्णय लिए जाते हैं; वे अपने आप उत्पन्न नहीं होते। हम प्रलोभनों को प्रतिसाद देते हैं, लेकिन हम विचारों से भी प्रेरित होते हैं। मूर्खतापूर्ण विचार मूर्खतापूर्ण नीतियों को जन्म देते हैं, जो दुराग्रही – यहां तक कि विनाशकारी – प्रलोभनों को जन्म देती हैं।

यदि आपको शांति चाहिए, तो आपको उसके लिए आवाज़ उठानी होगी। यदि युद्ध के पक्ष में तर्क दिए जा रहे हैं, तो उन्हें चुनौती देनी होगी। युद्ध के विषय में "कह नहीं सकते" वाली स्थिति नहीं होती। इसमें केवल दो विकल्प होते हैं। यदि आप इसके पक्ष में नहीं हैं, तो आप इसके विरोधी ही होंगे; युद्ध के विषय में तटस्थ नहीं रहा जा सकता। युद्ध की वजह से हुई निरपराध लोगों की मृत्यु, विनाश और बरबादी उसका विरोध करने के प्रबल कारण देते हैं। इसके अलावा, यदि आप चाहते हैं कि अन्य लोग भी शांति का समर्थन करें, तो आपको शांति के समर्थन में आवाज़ उठाने के साथ "सभ्यताओं का टकराव", "आर्थिक संघर्ष", "संरक्षणवाद" आदि भ्रांतियों और शून्य–योग नज़रिया आदि तर्कों को भी काटना होगा और शांति को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों का सक्रिय समर्थन करना होगा, जिसमें व्यापार, यात्रा और निवेश की स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक अधिकार जैसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सरकार की आलोचना का हक़ शामिल हैं।

"इस बात का विश्लेषण करना कि एक बड़ी संख्या के लोग साम्राज्यवादी विस्तार का ख़र्च क्यों उठाते हैं और उसकी लड़ाइयाँ लड़ते हैं" इतिहासकार पार्कर टी. मून की यह चुनौती हमारे लिए भी है। और जब हम यह मुद्दा समझ जाएंगे, तो हमें जो सही है, उसका समर्थन करना होगा – स्वैच्छिक सहयोग युक्त एक शांतिपूर्ण दुनिया का सिद्धांत, उसका राजनैतिक अर्थशास्त्र, उसकी संस्थाएं, नीतियां और उसे वास्तविकता में लाना।

7

अमेरिकी जागृति की युद्ध के प्रति सचेतता

रॉबर्ट एम. एस. मैक्डोनाल्ड

लोगों ने युद्ध की ओर अभिमान की नज़र से देखना बंद कर, उसे प्रथम उपाय न मानकर अंतिम उपाय मानना कब शुरू किया? सेना पर नागरिक नियंत्रण कब से शुरू हुआ? इस प्रक्रिया में अमेरिकी जागृति की क्या भूमिका थी और उसमें प्रमुखता से कौन शामिल थे? रॉबर्ट एम. एस. मैक्डोनाल्ड यूनाइटेड स्टेट्स मिलिट्री अकादमी में एसोसिएट प्रोफेसर तथा कैटो इंस्टीट्यूट से अनुबद्ध विद्वान हैं। उनके लेख विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं, उन्होंने अमेरिकी राष्ट्र की स्थापना पर पुस्तकें लिखी हैं और वे थॉमस जेफरसन के जीवन तथा विचारों के गहन अभ्यासक हैं।

किसी ज़माने में युद्ध को अटल मानकर चलते थे। इसे जीवन का एक सामान्य और सकारात्मक पहलू माना जाता था। युद्ध होने पर खुशियाँ तक मनाई जाती थीं – यह बहुत पुरानी बात नहीं है। ब्रिटेन के विंस्टन चर्चिल, जो द्वितीय विश्व युद्ध में फांसीवाद के विरुद्ध डटकर मुकाबला करने के लिए जाने जाते हैं, ने कभी डींग हांकी थी कि उन्होंने "जंगली लोगों के ख़िलाफ कई छोटे–छोटे मज़ेदार युद्ध किए हैं"। उन्होंने लिखा है, "हम चरणबद्ध रूप से आगे बढ़े, गाँव के बाद गाँव, और उन्हें सज़ा देने के लिए हमने उनके घर नष्ट कर दिए, कुँए बुझा डाले, टॉवर गिरा दिए, छायादार पेड़ काट डाले, फसलें जला दीं और तालाब तोड़ दिए।[97]

जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ, तो यूरोप की राजधानियों में लोग जश्न मनाते हुए सड़कों पर उतर आए। राष्ट्रीय अभिमान के लिए युद्ध का स्वागत किया गया था। युद्ध का स्वागत तथा कथित आर्थिक लाभों के लिए भी किया गया था: उत्पादन के संसाधनों को हथियार और विनाश के अन्य साधन बनाने की ओर मोड़ने का

"प्रोत्साहन" जो इससे मिलता है। (यदि किसी को यह विश्वास है कि इस बात को अब कोई नहीं मानता कि टूटे–फूटे घर और बरबाद ज़िंदगियों से अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है, तो उसे याद रखना चाहिए कि पॉल क्रुगमैन ने *न्यूयॉर्क टाइम्स* में लिखा था कि काष यूनाइटेड स्टेट्स पर भी कोई विदेशी आक्रमण हो जाए, ताकि इसकी अर्थव्यवस्था को कुछ "प्रोत्साहन" मिले।[98])

आज, जबकि अधिकांश लोग मानेंगे कि दुश्मन से युद्ध अपने देश की रक्षा के लिए या आक्रामकता के ख़िलाफ अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आवश्यक हो सकता है, सशस्त्र संघर्ष अपने आप में आवश्यक नहीं होता। युद्ध को अब केवल अंतिम उपाय – प्रथम उपाय नहीं – और जीवन, आज़ादी और संपत्ति के लिए ख़तरा माना जाता है। युद्ध के प्रति यह आधुनिक रुझान जागृतिकाल से जोड़ा गया है, जो मानवों के आपसी सम्बन्धों पर गहन पुनर्विचार का दौर था, जिसमें युद्ध का पुनर्मूल्यांकन शामिल था। इसे एक नकारात्मक मानवीय अंतर्क्रिया के रूप में देखा गया, जिससे युद्ध करने वालों में उदात्तता या सभ्यता के मूल्यों का संवर्धन नहीं होता था, न ही युद्ध करने वालों को या युद्धरत देशों को कोई फायदा ही होता था। थॉमस जेफरसन ने 1797 में लिखा है, "मैं युद्ध से घृणा करता हूँ और इसे मानव जाति का अभिशाप मानता हूँ"।[99]

जैसा जेफरसन का कथन सुझाता है, जागृतिकाल का युद्ध का पुनर्मूल्यांकन उन विचारकों के लिए गहन मूल्य रखता था, जिन्होंने अमेरिकी विद्रोह को बढ़ावा दिया, उत्तरी अमेरिका में ब्रिटिश उपनिवेशों की आज़ादी के लिए लड़े, और अमेरिकी गणतंत्र की स्थापना की। बेंजामिन फ्रैंकलिन का कथन कि "अच्छा युद्ध या बुरी शांति जैसी चीज़ न कभी हुई है, न कभी होगी" तब तक सत्य था जब तक भड़काने के कारण हल्के–फुल्के और अस्थायी थे।[100] जब वे ऐसे नहीं थे – और युद्ध अटल नज़र आता था – तब भी अमेरिका के निर्माताओं ने यह समझ लिया था कि युद्ध न केवल आज़ादी दिला सकता है, बल्कि आज़ादी को मिटा भी सकता है। आज़ादी और स्वतंत्रता पाने के लिए सशस्त्र संघर्ष आवश्यक हो सकता है, लेकिन उसके नतीजे हानिकारक भी हो सकते हैं। जेम्स मेडीसन ने चेतावनी दी थी, "लोगों की आज़ादी के ख़तरों में शायद युद्ध ही सबसे ख़तरनाक है, क्योंकि इसमें अन्य सभी ख़तरों के बीज शामिल होते हैं"। मेडीसन के अनुसार, युद्ध कुछ निहित स्वार्थों का औज़ार बन सकता है। ये "सेनाओं की जननी" कही जाने वाली ख़र्चीली व्यवस्थाएं थीं, जिन्होंने "कर्ज़ और कर" को जन्म दिया और उनके साथ जुकर वह साधन बन गईं, जिसे "बहुसंख्य लोगों को कुछ थोड़े लोगों के आधिपत्य में लाने का ज्ञात साधन" कहा जाता है। इसके अलावा, "युद्धकाल में कार्यकारिणी के विवेकाधीन अधिकार बढ़ा दिए

जाते हैं; कार्य आवंटन, सम्मान तथा मेहनताना देने में उसका प्रभाव कई गुना अधिक हो जाता है; और लोगों की ताक़त को दबा सकने के अधिकारों में ये लुभावने अधिकार भी शामिल हो जाते हैं"।[101] जैसे युद्ध सरकार की शक्तियाँ बढ़ा सकता है, उसी तरह वह व्यक्तिस्वतंत्रता कम भी कर सकता है।

इसके बावजूद, सरकार का उद्देश्य, स्वतंत्रता के घोषणापत्र में वर्णन किए अनुसार, व्यक्ति स्वतंत्रता सुनिश्चित करना था। इसमें शामिल "स्वयं–साक्षी", "सत्य", "सभी इंसान समान हैं... और सबके कुछ अप्रवर्तनीय अधिकार हैं", जिसमें "जीने का, आज़ादी का और खुशी पाने का अधिकार" शामिल है, आदि शब्द अब प्रसिद्ध हो चुके हैं, लेकिन आगे दिए महत्वपूर्ण वाक्यों को ख़ास प्रसिद्धि नहीं मिली है:

> इन अधिकारों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए सरकारों की स्थापना की गई है, जिसे अपने न्यायपूर्ण अधिकार उसके द्वारा षासित लोगों की अनुमति से मिलते हैं, और यह कि जब भी कोई सरकार इन उद्देश्यों के विपरीत कार्य करती है, तो लोगों को यह अधिकार है कि वे उसे बदल दें या समाप्त कर दें और एक नई सरकार की स्थापना करें, जिसकी नींव ऐसे तत्वों पर खड़ी हो और उसकी शक्तियों का स्वरूप ऐसा हो, जो लोगों की सुरक्षा और खुशी सुनिश्चित कर सकने में सक्षम हो।

दूसरे शब्दों में, जब लोग देखते हैं कि उनकी सरकार जीने का, आज़ादी का और खुशी पाने का अधिकार छीन रही है, वे उसका तख़्तापलट कर सकते हैं और एक ऐसी नई सरकार बना सकते हैं, जो उनकी "सुरक्षा और खुशी" सुनिश्चित करे।[102] (थॉमस जेफरसन और महाद्वीपीय कांग्रेस ने अभिमान या आर्थिक प्रोत्साहन का ज़िक्र तक नहीं किया है)। अमेरिकी आज़ादी की लड़ाई में सबसे बड़ी दुविधा यह थी कि ग्रेट ब्रिटेन की सेना तथा नौसेना – जो उस समय दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति – को हरा सकने वाली सेना कैसे जुटाई जाए, और यह सेना इतनी भी ताकतवर न हो कि जिस आज़ादी के लिए वह गठित की गई है, उसे ही ख़तरे में डाल दे। यही वह दुविधा थी जिसने एक रचनात्मक तनाव पैदा किया, जिससे सेना पर नियंत्रण तथा उसकी निर्णायक कार्य की क्षमता एवं नागरिक नियंत्रण के प्रति उसकी जवाबदेही के बीच संतुलन संभव हुआ।

जूलियस सीज़र तथा ऑप्रिमर क्रॉमवेल द्वारा इसके दुरुपयोग को ध्यान में रखते हुए – साथ ही टैसिटस जैसे प्राचीन तथा जॉन ट्रेन्चार्ड एवं थॉमस गोर्डन जैसे आधुनिक लेखकों द्वारा मानवता की सत्तालोलुपता की चेतावनियों को ध्यान में रखते

हुए – महाद्वीपीय कांग्रेस के सदस्यों ने महाद्वीपीय सेना की कमान जॉर्ज वॉशिंगटन को सौंपी, जो वर्जीनिया का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्हें इस पद के लिए योग्य उम्मीदवार मानने के कई कारणों में से एक यह भी था कि फ्रांसीसी और रेड इंडियन युद्धों में अनुभव प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपनी अधिकांश ज़िंदगी सेना में नहीं, बल्कि औपनिवेशिक वर्जिनिया की प्रतिनिधि सभा हाउस ऑफ बर्जेस में एक विधायक के रूप में गुज़ारी थी। वॉशिंगटन के चयन के साथ ही अमेरिका में सेना पर असैनिक राजनैतिक नेताओं के वर्चस्व की परंपरा स्थापित हुई, जिनके साथ वॉशिंगटन ने काफी निर्भीक और स्पष्ट पत्राचार किया, लेकिन उनके नेतृत्व की वैधता पर कभी सवाल खड़ा नहीं किया।[103]

महाद्वीपीय कांग्रेस के सदस्यों ने जिस प्रकार वॉशिंगटन द्वारा युद्ध–संचालन के तरीक़ों का पूर्वानुमान लगा लिया था, उसे देखते वॉशिंगटन द्वारा असैनिक नियंत्रण को स्वीकार करना प्रशंसा–योग्य है। लगभग शुरू से ही वॉशिंगटन ने शायद समझ लिया था कि समय नए देश के साथ है। युद्ध जितना लंबा चलेगा, उतना ही ब्रिटिश सरकार अमेरिकी लोगों से तानाशाही और क्रूरता का व्यवहार करेगी और उनके मन में नफरत पैदा कर खुद के लिए परेशानी खड़ी कर लेगी। लंबे युद्ध से ब्रिटिश सरकार की युद्ध जारी रखने की इच्छा पर भी असर पड़ सकता था। फिर भी, लंबे खून–ख़राबे को टालने के उद्देश्य से जॉन एडम्स ने 1777 में कहा, "मैं एक छोटे और भीषण युद्ध के पक्ष में हूँ"। कईयों ने इसका समर्थन किया। जब वॉशिंगटन के नेतृत्व वाली सेना ब्रिटिशों को फिलाडेल्फिया पर कब्ज़ा करने से नहीं रोक पाई, तो उनकी लंबे युद्ध की रणनीति की आलोचना और तीव्र हो गई। इस आग में और घी पड़ गया जब महाद्व ीपीय सेना के दूसरे सर्वोच्च अधिकारी मेजर जनरल होरेशियो गेट्स के नेतृत्व वाली सेना ने साराटोगा में ब्रिटिशों को परास्त कर दिया। लेकिन समय ने, और साथ ही महाद्वीपीय कांग्रेस के असैनिक नेतृत्व के साथ उनकी स्पष्ट चर्चाओं ने एवं उनके प्रति आदर ने वॉशिंगटन की सावधानी और धीरज की रणनीति को सही साबित किया।[104]

महाद्वीपीय सेना के सभी अधिकारियों ने उनका अनुकरण नहीं किया। 1782 में लिखे एक पत्र में कर्नल लेविस निकोला ने वॉशिंगटन को सूचित किया कि कई अधिकारियों का मानना है कि महासंघ के अनुच्छेदों के तहत बनी सरकार कमज़ोर है और सेना को पर्याप्त समर्थन नहीं दे सकेगी। वॉशिंगटन इस बात से तो सहमत थे, लेकिन उन्होंने निकोला के इस सुझाव को नकार दिया कि इस समस्या का इलाज यह है कि वॉशिंगटन को अमेरिका का राजा बना दिया जाए। उन्होंने जवाब में लिखा कि उन्हें उस पत्र के ज़रिए "यह जान कर पीड़ा हुई... कि सेना में ऐसे ख़्यालात फैल

रहे हैं"। वॉशिंगटन तथा अमेरिकी जागृति के अन्य सदस्यों को यह बर्दाश्त नहीं था कि जनता के मतों द्वारा चुनी गई और जनता के हितों में काम करने वाली सरकार के बजाय सेना–समर्थित सरकार बने।[105]

नए गणतंत्र की असैनिक सरकार के प्रति विद्वेश अगले साल उभरकर सामने आया, जब न्यूयॉर्क के न्यूबर्ग के समीप एक सैन्य छावनी के अधिकारियों को एक बेनामी पत्र मिला। कम वेतन, कम सुविधाएं तथा कम पेंशन का विरोध करते हुए इस पत्र में लिखा गया था कि यदि संसद इन मांगों को नहीं मानती है, तो उसे धमकाया जाए। इस परिस्थिति की सूचना मिलते ही वॉशिंगटन ने एक बैठक बुलाई, उसमें नाट्यपूर्ण ढंग से प्रवेश किया, कुछ शब्द कहे और – उन्होंने सभा के समक्ष पढ़ने के लिए एक पत्र निकाला – और उपस्थित लोगों को अचंभे में डालते हुए जेब से चश्मा निकालकर आँखों पर चढ़ाया। उन दिनों चश्मा लगाना कमज़ोरी और बुढ़ापे का लक्षण माना जाता था। "सज्जनों", उन्होंने कहा, "आप मुझे चश्मा लगाने की इजाज़त दें, क्योंकि मैं देश की सेवा करते–करते बूढ़ा और लगभग अंधा हो गया हूँ"। वॉशिंगटन महाद्वीपीय सेना में शुरू से ही सेवा दे रहे थे, वे महाद्वीपीय कांग्रेस से कोई वेतन नहीं लेते थे और उनके कोट में गोली से बना छेद था। उनके इस वाक्य ने वहाँ उपस्थित अधिकारियों को याद दिलाया कि वॉशिंगटन नैतिक गुणों में उनसे कितने श्रेष्ठ हैं। "न्यूबर्ग षड्यंत्र" से असैनिक अमेरिकी सरकार को जो भी ख़तरा था, वह उसी क्षण दूर हो गया।[106]

वॉशिंगटन की तुलना अक्सर इ.पू. पाँचवीं शताब्दी के वरिष्ठ योद्धा–राजनीतिज्ञ सिनसिनेटस से की जाती है, जिसने रोम के शत्रुओं से निपटने के बाद पद छोड़ दिया था। इसी प्रकार वॉशिंगटन ने भी युद्ध के बाद अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वे खुशी–खुशी निजी ज़िंदगी में लौट आए। 1781 में यॉर्कटाउन की विजय के बाद के महीनों में युद्ध को पीछे छोड़ने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने लिखा है, "अब मेरी प्रथम इच्छा यही है कि मानव जाति का यह अभिशाप इस धरती से समाप्त हो जाए, और हम सभी प्रकृति के बेटे–बेटियाँ मानव जाति के विनाश के साधन बनाने और उनका इस्तेमाल करने की बजाय अधिक सुखकर और निश्छल आनन्द की गतिविधियों में समय गुज़ारें। उन्होंने आशा जताई कि यूरोप में भले ही युद्ध की परम्परा हो, वह अमेरिका में जड़ न पकड़े ज़मीन को लेकर झगड़ा करने की बजाय दुनिया के ग़रीब, ज़रूरतमंद और उत्पीड़ित लोग, और जिन्हें ज़मीन चाहिए वे, हमारे देश के पश्चिम के उपजाऊ मैदानों में आएं, और वहाँ शांतिपूर्वक जीवन बिताते हुए फलें–फूलें"।[107]

सेना के भूतपूर्व अधिकारियों का सेवानिवृत्ति के बाद भी अच्छा ख़ासा प्रभाव

था। 1787 में महासंघ के अनुच्छेद को संविधान से विस्थापित करने का समर्थन करने वाले निर्वाचित अधिकारियों तथा राजनीतिज्ञों के समूह में वे प्रमुखता से शामिल थे। एक अधिक केन्द्रीकृत सरकार के पक्षधरों में वॉशिंगटन भी शामिल थे, और संविधान सभा का अध्यक्ष बनने के मेडीसन के अनुरोध को स्वीकार कर उन्होंने संविधान निर्माण की प्रक्रिया को वैधता प्रदान की और शंकालु अमेरिकीयों को आश्वस्त किया कि नया संविधान आज़ादी का विरोधी नहीं होगा। संविधान ने केंद्र सरकार को लक्षणीय नई शक्तियाँ प्रदान कीं, ख़ासकर विदेशी मामलों में। वह राज्यों के दख़ल के बिना स्वतंत्र रूप से कर लगा सकती थी, सेना खड़ी कर सकती थी, युद्ध घोषित कर सकती थी और संधियाँ कर सकती थी। ये शक्तियाँ संघ सरकार के विभिन्न विभागों में वितरित की गई थीं। उदाहरण के लिए, हालांकि नया राष्ट्रपति (सब जानते थे कि वे वॉशिंगटन ही होंगे) सेनाओं का सर्वोच्च कमांडर था, लेकिन युद्ध घोषित करने की शक्ति संसद में निहित थी। हालांकि राष्ट्रपति दूसरे देशों के साथ संधिवार्ता कर सकता था, लेकिन उन संधियों को मंजूरी देना या नामंजूर करना सीनेट की शक्ति में था, और उन संधियों को लागू करने के लिए धन की व्यवस्था प्रतिनिधि सभा करती थी।[108]

वॉशिंगटन के राष्ट्रपतिकाल में कोई युद्ध नहीं हुए, लेकिन विदेश नीतिगत विवाद कई हुए। ब्रिटेन और फ्रांस के बीच लगातार संघर्ष के मद्देनजर सर्वोच्च सेनापति ने तटस्थ रहने का भरपूर प्रयास किया। संघ राज्य के समर्थकों का ब्रिटेन की ओर, तथा जेफरसन–अनुयायियों का फ्रांस की ओर झुकाव था, और अपने राष्ट्रपतिकाल के अंत में विदाई समारोह में बोलते हुए उन्होंने अमेरिकीयों से आग्रह किया कि दुनियाभर में "शांति और सौहार्द" का प्रसार करें और सभी देशों के प्रति "सद्भावना और न्यायपूर्णता" रखें। वॉशिंगटन ने ज़ोर देकर कहा कि यूनाइटेड स्टेट्स जैसे एक "आज़ाद, जागरूक और जल्द ही महानता प्राप्त करने वाले" देश को दुनिया के सामने ऐसे नागरिकों का एक शानदार और अनूठा उदाहरण पेश करना चाहिए, जो "उच्च कोटि के न्याय और दयालुता के मार्ग पर चलते हों"। उन्होंने स्पष्ट किया कि "किन्हीं ख़ास देशों के प्रति स्थायी, कट्टर दुश्मनी और अन्य देशों के प्रति गहरी दोस्ती टाली जानी चाहिए; और उसके स्थान पर सभी के लिए समान दोस्ताना भाव होना चाहिए"। हम अपनी शांति और समृद्धि को यूरोपियन महत्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्धा, हित, संतुष्टि या सनक में क्यों उलझने दें"?[109]

अगली सरकारें वॉशिंगटन के आदर्शों को पूरा कर पाने में पूरी तरह से कामयाब नहीं हुईं। 1801 में जेफरसन ने अपने शपथ–ग्रहण भाषण में "सभी राज्य या पंथ, धर्म या राजनीतिक विचारों के लोगों के लिए समान और सटीक न्याय" का तथा "सभी देशों के साथ शांति, व्यापार और सच्ची दोस्ती, तथा किसी के हितों में न उलझने" का वादा किया।[110] लेकिन राष्ट्रीय सरकार हमेशा ही तटस्थ रहती या संविधान का पालन करती नज़र नहीं आती थी – ख़ासकर अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में। सन् 1800 के चुनावों में जेफरसन के समर्थक इस बात से उत्तेजित थे कि 1798 में राष्ट्रपति जॉन एडम्स ने राजद्रोह कानून पर दस्तख़त किए थे, जो सरकार को यह अधिकार देता था कि यूनाइटेड स्टेट्स के राष्ट्रपति, संसद या कानूनों के प्रति "झूठी, निन्दात्मक या दुर्भावनापूर्ण आलोचना लिखने, छापने, बोलने या प्रकाशित करने" पर किसी भी व्यक्ति को दो साल तक की जेल की सज़ा दे सके। फ्रांस के साथ अघोषित छद्म–युद्ध के दौरान पारित किए गए इस कानून के समर्थक इसे अमेरिका को विदेशी तथा भीतरी दुश्मनों के ख़िलाफ मज़बूत बनाने वाला बताते थे। एडम्स ने इसे इसलिए भी पारित कराया होगा, क्योंकि वह उन आक्रामक संघ–समर्थकों को शांत करना चाहते थे, जो संपूर्ण युद्ध चाहते थे और जिसे एडम्स किसी भी कीमत पर टालना चाहते थे। जेफरसन और राजद्रोह कानून के अन्य विरोधकों ने इसे सात साल पहले पारित प्रथम संशोधन की भावना के स्पष्ट रूप से विपरीत बताया, जिसमें कहा गया है कि "संसद ऐसा कोई कानून नहीं बनाएगी... जो अभिव्यक्ति की, या प्रेस की आज़ादी पर, या लोगों द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से इकट्ठा होकर सरकार को शिकायत निवारण की याचिका देने अधिकार पर अंकुश लगाए"।[111]

जेफरसन ने राष्ट्रपति बनने पर स्वयं भी संविधान द्वारा सरकार को प्रदत्त अधिकारों को बढ़ा लिया या उनका उल्लंघन किया – हालांकि उन्होंने ऐसा इसी प्रकार किया, जिससे युद्ध को टाला जा सके। उनके द्वारा 1807–1809 में अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर लगाया गया प्रतिबंध संसद की अनुच्छेद 1, धारा 8 में दी गई "विदेशों के साथ व्यापार का विनियमन" शक्तियों का लगभग दुरुपयोग ही था, लेकिन उन्होंने ऐसा युद्ध को टालने के लिए और ग्रेट ब्रिटेन तथा फ्रांस पर "शांतिपूर्ण दबाव" लाने के लिए किया, क्योंकि इन दोनों देशों ने नेपोलियन के युद्धों के दौरान अमेरिका के तटस्थ व्यापार अधिकारों को चुनौती दी थी। जेफरसन ने निजी तौर पर यह भी स्वीकार किया है कि 1803 में लुइसियाना को ख़रीदना संविधान का उल्लंघन था, क्योंकि संविधान में राष्ट्रीय सरकार को यूनाइटेड स्टेट्स का क्षेत्र बढ़ाने के लिए शक्ति का स्पष्ट और विशिष्ट उल्लेख नहीं है। लेकिन यूनाइटेड स्टेट्स का क्षेत्रफल दुगुना कर देने वाली और उसकी पश्चिमी सीमा पर एक मज़बूत यूरोपियन प्रतिस्पर्धी की उपस्थिति रोकने वाली यह ख़रीद उन्हें युद्ध की संभावना कम करने के लिए आवश्यक प्रतीत हुई। उन्हें चिंता थी कि फ्रांस का उस क्षेत्र पर (ख़ासकर न्यू ऑर्लियन्स पर) आधिपत्य उसे "हमारा स्वाभाविक और आदतन शत्रु" बना देगा और इस कारण से यूनाइटेड स्टेट्स

को "ब्रिटिश नौसेना और ब्रिटेन की मदद" लेने पर विवश कर अमेरिकी तटस्थता को ख़तरा पैदा करेगा।[112]

जेफरसन के शांति बनाए रखने के प्रयासों के बावजूद अगले राष्ट्रपति मेडीसन ने पाया कि परिस्थितियां सशस्त्र संघर्ष को अटल बना रही हैं। 1812 में ग्रेट ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध यूनाइटेड स्टेट्स के लिए लगभग अनर्थकारी साबित हुआ, जिसमें न केवल यूनाइटेड स्टेट्स की भूमि पर आक्रमण हुआ, बल्कि भीतरी असंतोष ने न्यू इंग्लैंड के देश से अलग होने की आवाज़ तक उठा दी। फिर भी मेडीसन युद्ध कालीन राष्ट्रपतियों में अपना अलग स्थान कायम करने में सफल हुए, क्योंकि इन ख़तरों के सम्मुख भी उन्होंने सरकार की शक्ति बढ़ाने के या नागरिक अधिकारों में अस्थायी कमी लाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए।[113] मेडीसन समझते थे कि अमेरिकीयों की आज़ादी को ख़तरा पहुँचाने वालों के ख़िलाफ शक्ति का इस्तेमाल कर उन्हें सुरक्षा प्रदान करना सरकार की सबसे मूलभूत ज़िम्मेदारी है; लेकिन सरकार को ऐसी शक्तियाँ देने से वह इसी आज़ादी को ख़तरे में डालने के लिए भी सक्षम बन सकती है।

मेडीसन तथा अमेरिकी जागृति की अन्य हस्तियों ने इस दुविधा के प्रति दिखाई तीव्र जागरूकता वहाँ की क्रांतिकारी पीढ़ी द्वारा युद्ध के बजाय शांति को समर्थन, संविधान की शक्तियों के विकेन्द्रीकरण तथा अन्य नियंत्रणों पर ज़ोर और आत्म–नियंत्रण दर्शाने वाले नेतृत्व की प्रशंसा का प्रतिनिधित्व करती है। अमेरिकी स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान उभरकर सामने आए लोग हालांकि अपने युद्ध–विरोधी रवैये में परिपूर्ण या सातत्यपूर्ण तो नहीं थे (अलेक्ज़ैंडर हैमिल्टन और आरोन बर ताक़त के इस्तेमाल में पारम्परिक रवैया ही अपनाते थे), लेकिन अंतरराष्ट्रीय संघर्ष टालना, युद्ध की गौरवशाली छवि मिटाना और सेना को असैनिक नियंत्रण के तले लाना उन सबकी ख़ासियत रही है। उन्होंने अपने नए देश की कल्पना "आज़ादी के साम्राज्य" के रूप में की, जहाँ क्षेत्र विस्तार केवल नए इलाकों में बसने वाले गोरे निवासियों की याचिका के माध्यम से होता, जब वे खुद के क्षेत्र को एक आज़ाद और समान अधिकार वाले नए राज्य के रूप में शामिल करने की याचिका स्वेच्छा से देते।[114] (लेकिन उन क्षेत्रों के मूल निवासियों से, जिनका वहाँ की ज़मीन पर पहला हक़ था, इस बारे में कोई चर्चा नहीं की जाती थी)। एडम स्मिथ, डेविड ह्यूम, मोंतेस्क्यू और अन्य "प्रकृतिशाह" फ्रांसीसी विचारकों की तरह वे भी युद्ध में विजय की जगह मुक्त विनिमय में विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि मुक्त विनिमय में समृद्धि, मानवीय ज्ञान, सभ्यता और भाईचारा बढ़ाने की ताकत होती है। थॉमस पेन ने *कॉमन सेन्स* में

लिखा है कि "हमारी योजना व्यापार की है, जो यदि अच्छे से किया जाए तो हमारे लिए समूचे यूरोप में शांति और दोस्ती स्थापित कर सकता है"। भविष्य की घटनाओं ने पेन का आदर्शवाद से मोहभंग कर दिया, लेकिन जिस पीढ़ी को आज़ादी के लिए हथियार उठाने पड़े और कष्ट सहना पड़े थे, वह केवल आज़ादी छिन जाने के डर से ही युद्ध से परावृत्त हो सकती थी। जेफरसन ने 1786 में लिखा है, "हमारी सरकार के पास जो सबसे ताक़तवर सेना हो सकती है, वह है लोगों की सुबुद्धि"।[116]

अमेरिकी जागृति में शामिल हस्तियों की उपलब्धियाँ वाकई शानदार थीं। उन्होंने सेना को नागरिक नेतृत्व के तले लाया। उन्होंने युद्ध की राह में बौद्धिक, नैतिक, कानूनी और राजनैतिक अवरोध खड़े किए। उनकी इस तथा अन्य क्षेत्रों में उपलब्धियाँ अधूरी और दोषपूर्ण थीं, जैसा अमेरिकी इतिहास का अध्ययन करने वाले अच्छी तरह से जानते हैं। लेकिन उन्होंने "सभी इंसान समान हैं" से लेकर अभिव्यक्ति तथा प्रेस की आज़ादी, और अपनी सेना को नागरिक नेतृत्व के अधीन रखने तक सिद्ध ांतो के ऐसे मानक खड़े किए, जिन्होंने दुनिया में बड़ा परिवर्तन लाया — पारम्परिक रूप से अब तक सेना ही नागरिकों पर नियंत्रण करती आई थी। हालांकि कानून के समक्ष लोगों की समानता अब तक पूर्ण रूप से स्थापित नहीं हो पाई है, और सेन्सरशिप तथा सैन्य सरकारें अब भी प्रचलन में हैं, लेकिन अमेरिकी जागृति के सदस्यों ने नैतिकता और राजनीति के ऐसे मानक स्थापित किए, जो आज भी चलन में हैं। क्रांतिकारी पीढ़ी द्वारा युद्ध की मूर्खता से संरक्षण के उपायों की प्रभावकारिता उनके द्वारा स्थापित गणतंत्र में कम होती गई, जिसका उन्हें डर था। यूनाइटेड स्टेट्स का बाद का इतिहास दर्शाता है कि युद्ध के नाम पर कार्यकारिणी अपने अधिकार बढ़ाकर विधायिका के अधिकार कम कर देती है, निर्णय प्रक्रिया की पारदर्शिता कम कर देती है, नागरिकों की आज़ादी पर अंकुश लगाती है, और कर्ज़ तथा कर बढ़ा देती है। लेकिन कमज़ोर पड़ने पर भी ये उपाय अस्तित्व में हैं और आशा दिलाते हैं कि आज़ादी, मर्यादित सरकार और शांति फिर से स्थापित होगी, और बढ़ेगी।

8

आज के समय में युद्ध का घटता महत्व एक नीतिगत हथियार

जस्टिन लोगन

क्या युद्ध उनका घोषित उद्देश्य हासिल करने में सफल होते हैं? आधुनिक दुनिया में युद्ध का बदलता चेहरा कैसा है? युद्ध चलाने में भौतिक हितों तथा विचारधाराओं की क्या भूमिका है? जस्टिन लोगन कैटो इंस्टीट्यूट में विदेश नीति विभाग के निर्देशक हैं। वे *फॉरेन पॉलिसी, फॉरेन सर्विस जर्नल, ऑर्बिस तथा हारवर्ड इंटरनेशनल रिव्यू* आदि विदेशी मामलों की पत्रिकाओं में लेख लिखते हैं और प्रसार माध्यमों में नियमित रूप से अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं में हिस्सा लेते हैं।

"यदि हम कोरियाई युद्ध की समीक्षा करते हैं, तो हमें बहुत कम ऐसे मौके देखने को मिलते हैं, जहाँ सेना ने कोई बड़ी लड़ाई की हो और हमें स्पष्ट विजय मिली हो, जैसा द्वितीय विश्व युद्ध और 1991 के प्रथम खाड़ी युद्ध में हुआ था।"

–रॉबर्ट गेट्स[117]

आधुनिक दुनिया का यह स्वरूप युद्धों के ज़रिए आया है। देश–राज्य, वैश्विक अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय प्रणालियों का स्वरूप, ये सभी युद्धों की विरासत हैं।[118] हालांकि युद्ध एक महत्वपूर्ण घटक रहा है, लेकिन सदियों से इसमें कमी आ रही है, जैसाकि स्टीवन पिंकर, जेम्स पेन, जॉन म्युलर और अन्य विद्वानों ने उजागर किया है।

एक अन्य पहलू, जिस पर अधिक ग़ौर नहीं किया गया है, वह यह है कि आधुनिक युग में, युद्ध शुरू करने वाले पक्ष को अपने घोषित लक्ष्यों की प्राप्ति शायद ही कभी हुई है। इस लेख में 1945 तक के युद्ध के प्रकारों पर चर्चा की गई है और उनमें कमी आने के कारण खोजे गए हैं। आगे, इसमें 1945 के बाद के युद्धों के वर्णन है और

यह विशद किया गया है कि इन युद्धों में घोषित लक्ष्यों की प्राप्ति क्यों नहीं हुई। अंत में नीति निर्माताओं तथा नागरिकों के लिए सबक दिए गए हैं।

महाशक्तियों के युद्धों का उत्थान और पतन

हज़ारों वर्षों तक क़बीले, नगर–राज्य, राज्य, साम्राज्य और देश–राज्य अतिरिक्त ज़मीन, बहुमूल्य संसाधन तथा सत्ता के लिए एक–दूसरे से युद्ध करते रहे।[119] चार्ल्स टिली की प्रसिद्ध कहावत के अनुसार, "युद्ध ने राज्य को बनाया और राज्य ने युद्ध को जन्म दिया"।[120]

सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में आधुनिक युग के आरंभ होते समय राज्यों में हिंसा, और साथ में प्रतिहिंसा, के नए संगठन और तकनीक विकसित होने के साथ युद्धों की बारंबारता और भीषणता में उतार–चढ़ाव आते रहे।[121]

महाशक्तियों ने खदानें, चरागाह, गुलाम, बंदरगाह, सोना–चांदी, कर दे सकने वाली जनता आदि संसाधन छीनने के लिए, और शासकों के पसंदीदा धर्म या पहचान परिवर्तन के लिए अन्य महाशक्तियों से युद्ध किए।

बीसवीं सदी के मध्य से ऐसे युद्धों में ख़ासी गिरावट आई है। कुछ विद्वान सुझाते हैं कि युद्धों में कमी आई है, क्योंकि मानव जाति अब युद्धों को इस हद तक भद्दे और असभ्य मानने लगी है कि कोई युद्ध को वांछनीय गतिविधि मानता ही नहीं। जॉन म्युलर के शब्दों में "युद्ध का ख़्याल सोते हुए भी नहीं आता"।[122]

आदर्श समय के साथ विकसित होते हैं, लेकिन वे कभी भी अन्य, भौतिक कारकों से पृथक नहीं होते। भौतिक विकास में बदलाव ने विचारसरणी के इस बदलाव में यदि तेज़ी नहीं लाई, तो कम से कम उसका समर्थन अवश्य किया। महाशक्तियों द्वारा भूतकाल में लड़ी गई लड़ाईयाँ अब सबसे अधिक जोखिम उठाने वाले नेताओं तक को आकर्षित नहीं करतीं। परमाणु हथियारों जैसी सैन्य तकनीकों ने सैन्य अभियानों को मानों आत्मघाती बना दिया है। राष्ट्रवाद तथा अन्य प्रकार की पहचान की राजनीति जैसे असैनिक सिद्धान्तों के उदय ने पराजित जनता का नियंत्रण और सम्मिलीकरण कठिन बना दिया है। आपूर्ति श्रृंखला के क्षैतिज एकीकरण और सीमापार व्यापार में वृद्धि आदि प्रकार के आर्थिक विकास ने युद्ध से संभव आर्थिक लाभों को बहुत कम कर दिया है।[123]

छोटी शक्तियों में सैन्य अभियान के प्रयास अब तक पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए हैं। उदाहरण के तौर पर, 1990 में इराक ने कुवैती तेल कुओं पर कब्ज़ा जमाने

के लिए और इराक पर चढ़े कुवैती कर्ज़े को मिटाने की नीयत से कुवैत पर आक्रमण कर दिया। लेकिन यूएस के नेतृत्व में गठबंधन सेना ने जिस सहजता से सद्दाम हुसैन की सेना को कुवैत से भगा दिया, उससे स्पष्ट होता है कि सीमापार आक्रामकता अब जोखिम भरी हो गई है।

समकालीन युद्ध

यद्यपि महाशक्तियों के बीच युद्ध अब दुर्लभ हो गए हैं, फिर भी युद्ध छिड़ते हैं। मुख्यतः तीन प्रकार के युद्ध होते हैं, लेकिन वे अक्सर अपना लक्ष्य हासिल करने में असफल रहते हैं।

प्रसाररोधी / निवारक युद्ध

बड़ी शक्तियाँ, ख़ासकर यूनाइटेड स्टेट्स, नियमित रूप से अन्य देशों द्वारा परमाणु हथियार तकनीक और क्षमता प्राप्त करने पर चिंता जताती रहती हैं। 2003 के इराक युद्ध को प्रमुखतः प्रसाररोधी होने के तर्क पर न्यायोचित ठहराया गया था, बावजूद इसके कि प्रशासन ने इराक के पास परमाणु हथियार होने के पर्याप्त सबूत नहीं जुटाए और कुछ हद तक ऐसे हथियार इराक के पास न होने के सबूतों की उपेक्षा की गई।

यद्यपि भय के तौर पर परमाणु हथियार रखने का सिद्धांत बड़ी शक्तियों ने आमतौर पर स्वीकार कर लिया है, लेकिन यही बड़ी शक्तियाँ कई कारणों से परमाणु प्रसार का विरोध करती हैं। उन्हें अनभिप्रेत परमाणु युद्ध का डर है; उन्हें "अतिप्रसार" या परमाणु प्रसार के "दूरगामी परिणामों" का डर है; उन्हें परमाणु आतंकवाद का डर है; और अंततः, उन्हें तृतीय पक्ष के विरुद्ध कार्यवाही कर सकने की आज़ादी चाहिए। जैसा केनेथ वॉल्ट्ज़ लिखते हैं, "परमाणु प्रसार के प्रति अमेरिकी विरोध का एक बड़ा कारण यह है कि यदि कमज़ोर देशों के पास परमाणु हथियार आ गए, तो हमारी दादागिरी कैसे चलेगी"।[124]

परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए छेड़े गए युद्धों की कई समस्याएं होती हैं, जिसमें से पहली इराक में स्पष्ट रूप से नज़र आई थी। एक सफल प्रसाररोधी युद्ध के लिए आवश्यक गुप्तचर सूचनाएं इकट्ठा करना बहुत कठिन होता है और अक्सर ये भरोसे की नहीं होतीं। इराक का मामला इसमें चरम दर्जे का है; 2003 में बगदाद का कोई परमाणु कार्यक्रम था ही नहीं। उन मामलों में भी, जहाँ परमाणु कार्यक्रम का अस्तित्व भरोसेमंद रूप से ज्ञात हो, एक विकसित परमाणु कार्यक्रम के प्रमुख ठिकानों पर वार करने के लिए आवश्यक व्यापक सूचनाएं प्राप्त करना लगभग असंभव होता है।[125]

इसका विकल्प है कार्यक्रम को फिर से खड़ा करने के प्रयासों को विफल करने के लिए नियमित हमले करते रहना, उस देश पर प्रत्येक कुछ वर्षों में बमबारी करना ताकि वह अंततः परमाणु तकनीक प्राप्त करने के प्रयास छोड़ दे या वहाँ हमलावर शक्ति के अनुकूल "सत्ता परिवर्तन" हो जाए। किसी सफल प्रसाररोधी युद्ध का उदाहरण खोजना कठिन है। इतना ही नहीं, प्रसाररोधी युद्ध की आशंका से भी कोई देश परमाणु हथियार की तलाष में लग सकता है, जिससे हमलावर देश हमला करने से डरे।

प्रभाव तथा विश्वसनीयता के लिए युद्ध

युद्धों का एक अन्य उद्देश्य होता है बड़ी शक्तियों द्वारा कमज़ोर देश पर अपना "प्रभाव" जमाने की कोशिश करना। बड़ी शक्तियों ने अक्सर इसलिए युद्ध छेड़े या जारी रखे हैं, ताकि कोई देश किसी दूसरी बड़ी शक्ति या देश के प्रभाव में न आ जाए, जिससे अपना नुकसान हो सकता हो। "दूरगामी परिणाम" का सिद्धांत कहता है कि किसी देश की घरेलू राजनीति में परिवर्तन, या उस देश के किसी अन्य देश के प्रभाव में आ जाने के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं और घटनाओं की एक सम्बद्ध श्रृंखला शुरू हो सकती है और कुछ अन्य देश किसी प्रतिस्पर्धी देश के प्रभाव तले जा सकते हैं।

यह लिखे जाने के समय रूसी सेना ने यूक्रेन में प्रवेश कर लिया है। रूसी सरकार का कहना है कि सेना की टुकड़ियाँ रूसी सेना की नहीं हैं, बल्कि वे यूक्रेनियन आत्मरक्षक दस्ते हैं। ये टुकड़ियाँ रूसी नहीं होने का दावा पूर्णतः हास्यास्पद है और इस पर मॉस्को के प्रभाव के बाहर किसी ने विश्वास नहीं किया है। यह दावा कि वे क्रीमिया होते हुए काले सागर तक नौसैनिक पहुँच के लिए नहीं, बल्कि राजनैतिक अस्थिरता से संघर्ष कर रहे हैं, किसी भी प्रकार की छानबीन के सम्मुख टिक नहीं सकता।

यद्यपि रूसी अभियान दिखाता है कि सैन्य शक्ति अब भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति में प्रासंगिक है, इस लेख का उद्देश्य यह दिखाना नहीं है कि सैनिक ताकत अप्रसांगिक है। रूसी फौजें यूक्रेन में ग़ैर–कानूनी तरीके से घुसीं, लेकिन कोई युद्ध नहीं हुआ, क्योंकि कीव ने अचूक अंदाजा लगा लिया था कि प्रतिकार करने से कोई उपयुक्त राजनैतिक हल नहीं मिलने वाला, और दूसरे, क्रीमिया के नागरिकों में मॉस्को समर्थकों की बहुतायत थी। सत्रहवीं या बीसवीं शताब्दी के नेताओं द्वारा छेड़े गए विशाल युद्ध 2014 के रूस के क्रीमिया अभियान से अलग श्रेणी के था। ताकतवर देश कमज़ोर देशों को धमकाते हैं जब उन्हें लगता है कि ऐसा करना आसान है और दाँव पर लगी वस्तु उतनी मूल्यवान है।

ऐसे युद्ध कभी–कभी युद्ध छेड़ने वाले के लिए बुरे परिणाम देता है। सोवियत यूनियन पहले ही अपनी आर्थिक कुप्रबंधन और भारी–भरकम सेना के कारण कमज़ोर हो चुका था, लेकिन अफ़ग़ानिस्तान में सेना भेजने से वह टूट ही गया। अफ़ग़ानिस्तान में सेना भेजने के कारण स्पष्ट नहीं हैं – वह देश संसाधनों से भरपूर नहीं है – लेकिन सबूत संकेत देते हैं कि सोवियत नेताओं को डर था कि अफ़ग़ानिस्तान मॉस्को से दूरी बनाकर पश्चिम की ओर झुक रहा है, और यह स्थिति यूएसएसआर की सामरिक स्थिति के लिए अच्छी नहीं होती। जैसे–जैसे युद्ध की स्थिति बद से बदतर होती गई, सोवियत नेताओं का डर बढ़ने लगा कि अफ़ग़ानिस्तान का "हाथ से निकल जाना" एक नाकामयाबी और सोवियत प्रतिष्ठा पर बड़ा कलंक होगा।[126]

इस प्रकार के प्रभाव और विश्वसनीयता से संबंधित तर्कों तथा अनुमानों की श्रृंखला अक्सर हमलावर के विचारों में सर्वोपरि होती है, लेकिन ऐसा कुछ होता नहीं है। जैसाकि डैरिल प्रेस ने लिखा है, विश्वसनीयता हस्तांतरणीय नहीं होती जैसे नेता मानते हैं। राजनीतिज्ञ वर्तमान संकटों का मूल्यांकन करते समय अपने विरोधियों के पिछले आचरण पर विचार नहीं करते। इसके बजाय वे विशिष्ट परिस्थितियों में विरोधियों के भौतिक हित और सैन्य शक्ति का मूल्यांकन करते हैं।[127] इसी प्रकार प्रभाव भी प्रासंगिक और अल्पजीवी होता है। कोई भी देश किसी अन्य देश के प्रभाव में केवल अपने स्वार्थों की ख़ातिर ही होता है।

मानवीयता के लिए युद्ध

अंत में, देशों ने कथित रूप से कमज़ोर या ख़तरे पर पड़े तृतीय पक्षों की ओर से भी युद्ध छेड़े हैं। इस तरह के मानवीय युद्धों के मामले पहचानना कई बार कठिन होता है, क्योंकि सामरिक रूप से अप्रासंगिक युद्धों के लिए घरेलू समर्थन जुटाने के लिए सरकारें अक्सर कह देती हैं कि युद्ध मानवीयता के आधार पर नहीं, बल्कि खुद के हितों के लिए किया गया था।

तथाकथित राष्ट्रीय सुरक्षा तर्क के बावजूद, 2011 का यूएसए के नेतृत्व में लीबिया का अभियान इसका ताज़ा उदाहरण है। हालांकि यूएस अधिकारी अब भी कहते हैं कि वहाँ के गृह युद्ध में हस्तक्षेप के कारण करीब 100,000 लीबियाई नागरिकों की जान बच गई, जो बेंगाज़ी में लीबियाई सरकार द्वारा मौत के घाट उतार दिए जाते, और इसके विपरीत तथ्य देना भी मुश्किल है, लेकिन यह दावा गले नहीं उतरता। बेंगाज़ी को निशाना बनाने से ठीक पहले मिसराता में जो लड़ाई हुई, वहाँ लीबिया की सरकारी फौजों ने अंधाधुंध गोलीबारी की नीति नहीं अपनाई थी। इसके

अलावा, लीबियाई तानाशाह मुहम्मद गद्दाफी ने विद्रोहियों को तो कड़े शब्दों में चेतावनी दी थी, लेकिन नागरिकों के सम्मुख भाषण देते हुए उन्होंने कहा:

> जो भी अपने हथियार डाल देगा, निहत्था अपने घर में रहेगा, तो उसने पहले चाहे जो भी किया हो, उसे माफी देकर सुरक्षा प्रदान की जाएगी। हम सड़कों पर किसी को भी माफी दे देंगे... जो कोई हथियार डाल देगा और घर में शांति से रहेगा, उसे अपने पहले किए हुए कामों के लिए माफी दे दी जाएगी। वह सुरक्षित रहेगा।[128]

उसका लक्ष्य था सत्ता में बने रहना, अपनी प्रजा को दंड देना नहीं। गद्दाफी एक क्रूर तानाशाह था। इस वजह से पश्चिमी उदारवादी उससे नाराज़ थे। इसलिए जो भी यह कहता कि उसके द्वारा नागरिकों का क़त्लेआम किए जाने का ख़तरा नहीं था, वह एक तानाशाह का पक्ष लेता प्रतीत होता। साथ ही, पश्चिमी सरकारों का आग्रह था कि अरब उदारीकरण – "अरब का वसंत" – का भविष्य गद्दाफी को गृह युद्ध जीतने से रोकने पर टिका है।[129] पश्चिमी अधिकारी तो यहां तक कहते थे कि उनका उद्देश्य तख़्तापलट नहीं था, जबकि सैन्य अभियान यही उद्देश्य साबित करता है।[130] जो भी हो, युद्ध का अंत वही हुआ, जो अन्य मानवीयता के युद्धों का होता है: तख़्तापलट, उसके बाद अर्थव्यवस्था का ढहना और अनसुलझे राजनैतिक विवाद जो पश्चिमी जनता और नीति निर्माताओं की रुचि ख़त्म हो जाने के बाद भी बरकरार रहते हैं।[131]

उपसंहार

यदि युद्ध हमलावरों के लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते, तो क्यों उन्हें बार–बार छेड़ा जाता है? इस प्रश्न का एक जवाब नहीं है, बल्कि युद्ध की शुरुआत होने में कई कारक शामिल होते हैं।

देशों ने संस्थाएं बनाईं और एक समूचे ऐसे उद्योग को समर्थन और मदद दी, जिसका एकमात्र उद्देश्य था युद्ध की तैयारी करना या युद्ध के लिए अवसंरचना तथा साधनों का निर्माण करना। इस प्रक्रिया पर सबसे प्रसिद्ध टिप्पणी है अमेरिकी राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइज़नहावर की, जिन्होंने अपने विदाई भाषण में "सेना–उद्योग संकुल" के बारे में चेतावनी दी थी। आइज़नहावर, जो स्वयं सेना में जनरल रह चुके थे, ने चेताया कि हालांकि वैज्ञानिक प्रगति और एक बड़ा सेना–केन्द्रित उद्योग सैन्य ताकत एवं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आवश्यक है, फिर भी इसमें एक ख़तरा यह है कि "सार्वजनिक नीति वैज्ञानिक–तकनीकी लोगों की बंधक बन सकती है"। दूसरे शब्दों में, सैन्य–उद्योग संकुल यूएस प्रतिरक्षा नीति को अपने अनुसार "ढाल" सकता है और

उसे ऐसा मोड़ दे सकता है, जो शस्त्र निर्माताओं तथा रक्षा ठेकेदारों के लिए फायदे का हो, लेकिन जो देश–हित की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ न हो।[132]

यूनाइटेड स्टेट्स में एक सुरक्षित मुद्रा, अधिकांश ख़तरों से भौगोलिक दूरी और एक विशाल, मज़बूत अर्थव्यवस्था ने इन ख़तरों को बढ़ा दिया है। यूएस के नीति–निर्माता सुरक्षा या सम्पत्ति का नुकसान टालते हुए भी सैन्य–उद्योग संकुल को सब्सिडी देकर संसाधनों का अपव्यव कर सकते हैं। सुरक्षा की दृष्टि से नाजुक स्थिति और कम अमीरी वाले देशों को रक्षा सौदे में कई समझौते करने पड़ते हैं और वे व्यर्थ के युद्ध अपेक्षाकृत कम ही छेड़ते हैं। अमेरिका की सुरक्षा और अमीरी के चलते मूर्खतापूर्ण विदेश नीति की कई लागतें बंट जाती हैं और उन्हें लागू करने वाले नेता पर कोई ख़ास नकारात्मक परिणाम नहीं होते।[133]

अंततः, समाज के सैनिकीकरण करने और युद्ध शुरू करने के देश के प्रयासों में विचारधारा की एक अहम भूमिका होती है।[134] बीसवीं शताब्दी के खूनी संघर्ष राष्ट्रीयता, कम्युनिस्ट, फासीवादी, और राष्ट्रीय समाजवादी विचारधाराओं से प्रेरित थे। अधिकांश विचारधाराएं उनके अपने राजनैतिक नेता के निर्णयों को ही सर्वोपरि मानती हैं। फ्रांसीसी "सभ्यता अभियान" से लेकर इंग्लैंड के "श्वेत लोगों की ज़िम्मेदारी" और आज के "अमेरिकी उत्कृष्टतावाद" तक, नागरिक मानते हैं कि उनके देश की श्रेष्ठता उन्हें इजाज़त देती है कि वे दुनिया को अपनी पसंद के अनुसार बदलें। राजनैतिक नेता अपने देश और उद्देश्यों के बारे में बोलते हुए धर्म को भी बीच में ले आते हैं और इस प्रकार राष्ट्रीय हितों को भगवान की इच्छा से जोड़ देते हैं।[135]

भौतिक हित और विचारधारा, दोनों ही युद्ध छेड़ने में मददगार होते हैं। इन दोनों कारकों – सैन्य–उद्योग संकुल और राजनेताओं के भौतिक हित तथा युद्ध एवं संघर्ष की विचारधाराओं – का प्रतिकार किया जाए, तो युद्धों में कमी लाई जा सकती है। शांति के कार्यकर्ताओं की उभरती पीढ़ी के लिए यह एक योग्य चुनौती है।

9

पुलिस कार्य का सैन्यीकरण

रैडली बाल्को

नागरिक पुलिस कार्य के बढ़ते सैनिकीकरण के क्या कारण हैं? क्यों पुलिस के विशेष दस्तों को टैंक सहित युद्ध के अन्य हथियारों से लैस किया जा रहा है? क्या यह सिर्फ यूनाइटेड स्टेट्स में ही हो रहा है या विश्व में अन्य जगहों पर भी? पुलिस के सैनिकीकरण का पुलिस और जनता के सम्बन्धों पर क्या असर पड़ा है? रैडली बाल्को एक पत्रकार हैं, जो वर्तमान में आपराधिक न्याय, ड्रग वार और नागरिक अधिकारों पर वॉशिंगटन पोस्ट के लिए ब्लॉग लिखते हैं। वे *हफिंगटन पोस्ट* के अन्वेशक पत्रकार हैं और रीजन के संपादक तथा कैटो इंस्टीट्यूट में नीति विश्लेषक रह चुके हैं। उनकी नवीनतम पुस्तकों में राइज़ ऑफ द *वॉरियर कॉप* तथा *दि मिलिट्राइज़ेशन ऑफ अमेरिकन पोलिस फोर्सेज़ शामिल हैं।*

पुलिस कार्य में कुछ बदलाव आ रहा है। बीते दिनों के "शांति स्थापना अधिकारी" अब नज़र नहीं आते। अधिकाधिक पुलिस विभाग अब सेना की तरह दिखने – और कार्य करने – लगे हैं। कई देशों में यही चलन नजर आ रहा है। और इससे घरेलू शांति, कानून और व्यवस्था को ख़तरा पैदा हो गया है।

यूनाइटेड स्टेट्स में 1980 के दशक की शुरुआत से आज के बीच पुलिस दलों में काफी नाटकीय तथा मूलभूत बदलाव आए हैं। एक ओर, नागरिक समीक्षा बोर्डों तथा घरेलू मामलों के विभागों की संख्या बढ़ी है; अधिकांश अपराध विशेषज्ञ सहमत हैं कि बदमाश पुलिसकर्मियों की संख्या में पहले से कमी आई है। दूसरी ओर, पुलिस संगठन अब छोटे–मोटे अपराधों से लेकर वारंट की तामिली, प्रदर्शनकारियों से निपटना या किसी संकट का सामना करना, आदि के लिए अधिक बल प्रयोग करने लगे हैं। दूसरे शब्दों में, अब शायद ही कोई पुलिसकर्मी अधिकृत नीति में स्वीकार्य से अधिक बल प्रयोग करता है। लेकिन अब अधिकृत नीति में जो स्वीकार्य माना गया है, वही अत्यंत चिंताजनक है।

1999 में सिएटल में विश्व व्यापार संगठन की बैठक के दौरान हुए भीषण दंगों के बाद (जाँच के दौरान पाया गया था कि इसके लिए प्रदर्शनकारियों के साथ–साथ पुलिस कार्यवाही भी समान रूप से ज़िम्मेदार थी) विकसित देशों में ऐसे प्रदर्शनों के प्रतिसाद में कठोर बल प्रयोग अब मानक हो गया है। पुलिस प्रदर्शनकारियों के सामने दंगाइयों से निपटने की तैयारी में ही जाती है। वे दंगे होने की उम्मीद में ही जाते हैं – यह ऐसी मानसिकता है, जो स्वयं की उम्मीदों को पूरा करके ही मानती है। वास्तव में, सम्मेलन, उसमें शिरकत करने वाले प्रतिनिधि और उसमें लिए जाने वाले निर्णय जितने महत्वपूर्ण होंगे, प्रदर्शनकारियों को सम्मेलन स्थल से उतनी ही दूर रखा जाएगा – अर्थात उनकी आवाज़ सुनी जाने की संभावना उतनी ही कम होगी। और यह अभिव्यक्ति की आज़ादी की उस भावना के बिल्कुल विपरीत है, जिसका दावा आज़ाद देश करते हैं।

बेशक, उत्कृष्ट पुलिसकर्मी, महान पुलिस प्रमुख और बेहतरीन पुलिस एजेंसियां मौजूद हैं, जिनके जनता के साथ स्वस्थ सम्बन्ध हैं। ऐसी राष्ट्रीय सरकारें तथा स्थानीय निकाय और नगर निगम हैं, जो नागरिक अधिकार तथा अभिव्यक्ति की आज़ादी का पूरा सम्मान करते हुए व्यवस्था बनाए रखते हैं। उसके बावजूद पुलिस के बढ़ते सैनिकीकरण के कारण नागरिक समाज में युद्ध जैसा आचरण और चलन बढ़ रहा है। एसडब्ल्यूएटी के छापे, राह चलते तलाषी अभियान और राजनैतिक विरोध प्रदर्शनों पर सेना जैसा बल प्रयोग आदि के चलते पुलिस और जनता के बीच दूरी बढ़ती जा रही है और वे एक–दूसरे को शंका की नज़र से देखने लगे हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि यूएस, कनाडा या ब्रिटेन पुलिस राज्य बन गए हैं। इस प्रकार का लेख किसी पुलिस राज्य में छप ही नहीं सकता था, लेकिन इसके ख़िलाफ समय रहते आवाज़ उठाना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

10

शांति का सिद्धांत और संघर्ष का सिद्धांत

टॉम जी. पामर

राजनैतिक जीवन में संघर्ष और हिंसा की क्या भूमिका है? क्या ऐसे लोग अब भी हैं, जो संघर्ष को गौरवान्वित करते हैं? आज "दक्षिणपंथी" और "वामपंथियों" में संघर्ष के प्रमुख समर्थक कौन हैं? दक्षिणपंथी और वामपंथी विचारधाराओं में संघर्ष का क्या स्थान है और यह उदारवादियों के संघर्ष के प्रति नज़रिए से क्यों और कैसे भिन्न है?

Πόλεμος πάντων μὲν πατήρ ἐστι πάντων δὲ βασιλεύς, καὶ τοὺς μὲν θεοὺς ἔδειξε τοὺς δὲ ἀνθρώπους, τοὺς μὲν δούλους ἐποίησε τοὺς δὲ ἐλευθέρους.

"युद्ध सबका अधिपति होता है, और वह किसी को देवता, तो किसी को इंसान के रूप में दिखाता है; वह किसी को गुलाम बनाता है, तो किसी को आज़ाद करता है।"

–एफेसस के हेराक्लिटस[137]

युद्ध कभी आम बात हुआ करते थे। केवल मानव समाज ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया ही युद्धरत थी, इसी से भविष्य तय होता था। युद्ध अटल थे। इसे अच्छा माना जाता था। हालांकि इससे दुख ही मिलता था, लेकिन यह दुख मानव की प्रगति और सद्गुणों के लिए आवश्यक था। फ्रांसीसी प्रतिक्रियावादी लेखक जोसेफ डी माइस्त्रे ने बड़े उत्साह से लिखा था कि "युद्ध इंसानों की स्वाभाविक स्थिति है, मतलब दुनिया में हर समय, बिना व्यवधान, कहीं न कहीं खून–ख़राबा होते ही रहना चाहिए, और हर देश के लिए शांति केवल एक अल्प–विराम है"।[138] क़त्ल ही जीने का तरीक़ा था।

आज लोगों को यह अजीब और घृणास्पद लगता है। कुछ, या कुछ चीज़ें,

अवश्य ही बदली हैं। आज अधिकांश ज़िंदा लोगों की नज़रों में युद्ध अच्छी बात नहीं रह गया है।

युद्ध की तारीफ सुनना लोगों को अच्छा न लगने के पीछे एक कारण है। एक अलग विचार ज़ोर पकड़ गया है और इस विचार को वास्तव में लाने वाली संस्थाएं अब अधिकांश (लेकिन सब नहीं) जगहों पर अधिकांश (लेकिन सब नहीं) इंसानों का चरित्र–चित्रण करती हैं। दुनिया अब पहले से अधिक शांतिपूर्ण हो गई है। यह एक विवादास्पद दावा लग सकता है, लेकिन इसके पक्ष में भरपूर सबूत उपलब्ध हैं, जिन्हें हारवर्ड के प्रोफेसर स्टीवन पिंकर ने अपनी पुस्तक *बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचरः अ हिस्टरी ऑफ वायलंस एंड ह्यूमैनिटी* में विशद किया है।[139] समय के साथ केवल देशों के बीच होने वाले सैन्य संघर्ष ही कम नहीं हुए हैं; पति द्वारा पत्नी के ख़िलाफ, पालकों द्वारा बच्चों के ख़िलाफ, अपराधियों द्वारा अपने शिकार के ख़िलाफ हिंसा में भी गिरावट आई है। इनमें से प्रत्येक की मासिक या वार्षिक दर घट या बढ़ सकती है, लेकिन इनका औसत रुझान आमतौर पर घटा ही है और एक लंबे समय से घटता चला आ रहा है।[140] हिंसा के घटते चलन के लिए पिंकर द्वारा बताए गए कारणों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- ऐसी सरकारों की स्थापना, जो हिंसा पर एकाधिकार रख सकती हैं (और इस प्रकार कुछ हद तक उसे नियंत्रण में रख सकती हैं);
- व्यापार में वृद्धि, जो मृत के बजाय ज़िंदा लोगों को अधिक महत्व देती है;
- "इज्ज़त" की संस्कृति की जगह "आत्म–सम्मान" की संस्कृति आना (जिसमें बेइज़्ज़ती का बदला चुकाने से अधिक महत्वपूर्ण है अपना आत्म–नियंत्रण और आत्म–सम्मान कायम रखना);
- जागृति की मानवतावादी क्रांति, जिसमें इंसान की ज़िंदगी को महत्व दिया गया था, खुद की भी तथा औरों की भी, अंधविश्वास की जगह तर्क और सबूतों ने ले ली (उदाहरण के लिए, "डायन" करार दी गई महिलाओं के लिए यह एक खुशख़बरी थी);
- नागरिक समाज एवं सरकार, दोनों में युद्ध की बजाय कूटनीति और मध्यस्थता को बढ़ावा देने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का उदय तथा वृद्धि;
- उपन्यास लिखने की कला का अविष्कार और लोकप्रियता, जिसे मुक्त बाज़ार की क्रांति से बढ़ावा मिला, और जिससे लोग अन्य लोगों की ज़िंदगियों के बारे में जान पाए (और उनके मन में सहानुभूति पैदा हुई);

- अंतरराष्ट्रीय विनिमय, निवेश तथा यात्राओं में बढ़ोत्तरी, जिससे शांति बनाए रखने में रुचि उत्पन्न हुई;
- "पारम्परिक उदारवाद का उद्देश्यः कबीलाई और सर्वाधिकारवादी शक्तियों से व्यक्तियों की आज़ादी, और निजी पसंद की स्वीकार्यता, जब तक यह दूसरों के अधिकार तथा कल्याण का हनन न करे" इस उद्देश्य की बढ़ती स्वीकार्यता,141
- व्यापार तथा प्रौद्योगिकी की वृद्धि से उपजा अर्थपूर्ण तर्क का महत्व, जिससे लोग पारम्परिक उदारवाद/इच्छास्वतंत्रतावाद के वैश्विक अधिकार के सामान्य सिद्धांत अपना सकते हैं।

यह कहानी कुछ जटिल है, क्योंकि मानव इतिहास जटिल, बहु–कारणीय तथा विविधतापूर्ण है। लेकिन यह अच्छी तरह से दर्ज की गई है और यह उस दावे को नकारती है कि "दुनिया में हर वक्त, बिना व्यवधान, कहीं न कहीं खून–ख़राबा होते ही रहना चाहिए"। स्थायी शांति संभव है, वह केवल एक "अल्प–विराम" नहीं है।

सहनशीलता और सह–अस्तित्व, करार और सहयोग, संपत्ति और विनिमय, इन नैतिक आदर्शों ने उत्पीड़न और ख़ात्मा, ज़बरदस्ती और संघर्ष, चोरी और गुलामी, युद्ध और टकराव को काफी हद तक (लेकिन संपूर्णता से नहीं) विस्थापित कर दिया है। दुनिया को बदल देने वाले और युद्ध को शांति से, असहनशीलता को सहनशीलता से, लूट को विनिमय से बदल देने इस आंदोलन को विभिन्न समय में विभिन्न नाम दिए गए हैं, लेकिन उनमें सबसे आम है "उदारवाद", जिसे अब अंग्रेज़ी बोलने वाले देशों में "पारम्परिक उदारवाद" या "इच्छास्वतंत्रतावाद" कहा जाता है।[142] इच्छास्वतंत्रतावाद एक ऐसा सिद्धांत है, जो शांति को पूर्ण समर्थन देता है। "इच्छास्वतंत्रतावाद की विचारधारा का केन्द्र बिन्दु शांति है, क्योंकि आज़ादी का केन्द्र बिन्दु भी शांति ही है। "आज़ादी का मतलब है अन्य लोगों के बंधनों और हिंसा से मुक्त रहना" प्रभावशाली दार्शनिक जॉन लॉक ने कहा है।[143] युद्ध हिंसा है – दिशापूर्ण, सुव्यवस्थित, व्यावहारिक, तर्कयुक्त तथा गौरवास्पद मानी गई, प्रचण्ड हिंसा।

इच्छास्वतंत्रतावादी लोग शांतिपूर्ण और स्वैच्छिक सहयोग को एक आदर्श, और मानव समाज के लिए एक वास्तविक संभावना, दोनों मानते हैं। अन्य दार्शनिक – इनमें "वामपंथी" और "दक्षिणपंथी", समाजवादी, राष्ट्रीयतावादी, रूढ़िवादी, फासीवादी, कम्युनिस्ट, ईश्वरसत्तावादी और इनके सभी संयोजन शामिल हैं – कहते हैं कि संघर्ष, टकराव, यहां तक कि युद्ध, चाहे वह वर्गों का हो, जातियों का

थोड़े शब्दों में कहें, तो:
निजी स्वतंत्रता और
सामंजस्यपूर्ण समाज–व्यवस्था के बीच।

और यही बात स्पष्ट करती है कि यद्यपि उनके हृदय में मानवता के लिए एक प्रकार का प्रेम ही है, लेकिन उनके होठों से नफरत भरी बातें ही क्यों निकलती हैं। ये लोग अपना सारा प्रेमभाव अपनी स्वयं की कल्पना के समाज के लिए बचाकर रखते हैं; लेकिन वह प्राकृतिक समाज, जिसमें हम जैसे लोग रहने पर मजबूर हैं, उसे ये लोग जल्द से जल्द मिटा देना चाहते हैं, ताकि उसके खंडहरों पर वे अपने ख़्वाबों की दुनिया बसा सकें।[148]

बास्तियात ने बीसवीं शताब्दी के एकत्रतावादियों के प्रयासों का अनुमान पहले ही लगा लिया था, जिन्होंने देशों और उनकी विशाल जनसंख्याओं का नियंत्रण अपने हाथों में लेकर उन्हें अपने विचारों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया। इस प्रकार एक नई विचारधारा वाले इंसान का निर्माण करना दक्षिणपंथी और वामपंथी, दोनों गुटों के उदारवाद–विरोधियों का जुनून था, अंतर केवल इतना था कि दोनों ही इस नए इंसान की विचारधारा अपने–अपने अनुसार चाहते थे। बास्तियात लिखते हैं, "इसके विपरीत, अर्थशास्त्री इंसान, उसकी प्रकृति के नियम और उन नियमों से उत्पन्न सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करते हैं। समाजशास्त्री अपनी कल्पनाशक्ति के बल पर एक समाज का निर्माण करते हैं और फिर उस समाज के अनुकूल मानव विचार का निर्माण करते हैं"।[149]

मानवों में संघर्ष तो होता ही है। पारम्परिक उदारवादी विचारधारा अपने सभी स्वरूपों में संघर्ष की समस्या से निपटने के तरीकों पर विचार करती थी। पारम्परिक उदारवादी विचारधारा, धार्मिक सहनशीलता, मर्यादित सरकार (जिससे विवादास्पद मुद्दे "जनता की आवाज़" के क्षेत्राधिकार में नहीं रह जाते), मध्यस्थता और दंड के बजाय क्षतिपूरण, अभिव्यक्ति की आज़ादी और विनिमय की आज़ादी जैसे उपायों के ज़रिए यह करना चाहती थी। मुख्य मुद्दा था संघर्ष का महिमामंडन न करते हुए उसे सहयोग से विस्थापित करना था।

संघर्ष का सिद्धांत

"मैंने सेना में इन चार वर्षों में और युद्ध की विभीषिका से यही सीखा है कि जीवन का कोई गहन अर्थ नहीं है, सिवा इसके कि किसी आदर्श के लिए जान न्यौछावर कर दी जाए, और यह कि ऐसे आदर्श भी होते हैं, जिनके सामने किसी व्यक्ति या जनसमूह की ज़िंदगी की कोई कीमत नहीं होती। और यद्यपि जिन लक्ष्यों

की प्राप्ति के लिए मैं एक व्यक्ति के तौर पर, एक समूची सेना के एक क्षुद्र भाग के तौर लड़ा, वे तो प्राप्त नहीं हो सके, हालांकि उस महान शक्ति ने हमें धरती पर इसी कार्य के लिए भेजा प्रतीत होता था, फिर भी हमने यह सीख लिया कि किसी उद्देश्य के लिए संघर्ष किया जाए और आवश्यक हो तो जान देने से भी न हिचकें... सभी लोग इतने भाग्यशाली नहीं होते।"

–अर्न्स्ट जुंगर[150]

जहाँ पारम्परिक उदारवादियों ने सिखाया कि मानव हितों को शांतिपूर्ण तरीके से, व्यापार, चर्चा, लोकतांत्रिक प्रक्रिया और शांतिपूर्ण मतभेदों के प्रति सहिष्णुता से साध्य किया जा सकता है और सही संस्थाएं संघर्ष तथा हिंसा का निवारण कर सकती हैं, वहीं उनके विरोधकों तथा आलोचकों ने, जो पुरानी व्यवस्था बहाल करने के लिए आतुर थे, ऐसे सिद्धांत प्रतिपादित किए, जो इस बात पर आधारित थे कि संघर्ष मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है और जीवन इसी से अर्थपूर्ण बनता है। आज़ादी के नए सिद्धांतों के एक सबसे प्रभावशाली विरोधक थे फ्रांसीसी प्रतिक्रियावादी जोसेफ डी माइस्त्रे। उन्होंने शांति के विचार की कड़ी आलोचना करते हुए युद्ध को मानवता की उत्कृष्टता का स्त्रोत बताया है: "मानव प्रकृति के उत्कृष्ट परिणाम – कला, विज्ञान, महान उपक्रम, बेहतरीन संकल्पनाएं, सद्गुण – युद्धों की ही उपज हैं... दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि हम जिसे प्रतिभा कहते हैं, उस पौधे को खून से सींचा गया है"।[151] हेराक्लिटस की तर्ज़ पर वे कहते हैं कि "दुनिया में हिंसा के अलावा और कुछ नहीं है"।[152] जागृति–विरोधियों का और पारम्परिक उदारवादियों के नए विचारों के आलोचकों का यही मूलभूत दर्शन था।

जागृति–विरोधी विचारकों ने वैश्विक विचार को नकार कर विशिष्ट विचार को अपनाया; उन्होंने वस्तुनिष्ठ सत्यों को नकारा तथा रचनात्मकता को बढ़ावा दिया – आज़ाद व्यक्ति की रचनात्मकता नहीं, बल्कि समूहों की, जिसमें व्यक्ति का स्वतंत्र स्थान नहीं था।[153] बाज़ारों, व्यापारियों, और यहूदियों, जो यूरोपियन व्यापारी समुदाय में बहुतायत में थे, को धिक्कारा गया। देश, वर्ग और नस्लें अपनी श्रेष्ठता केवल अन्य देशों, वर्गों और नस्लों से संघर्ष के ज़रिए ही स्थापित कर सकती थीं। स्टीवन पिंकर कहते हैं कि वैश्विकता, वस्तुनिश्ठता और तार्किकता को नकार कर "जागृति–विरोधियों ने यह मानने से ही इंकार कर दिया कि हिंसा एक समस्या है, जिसे सुलझाना आवश्यक है। टकराव और रक्तपात प्राकृतिक चक्र में निहित हैं और इन्हें पूरी तरह से समाप्त करना संभव नहीं है, अन्यथा मानव जाति के भविष्य की दिशा ही बदल सकती है"।[154]

मानव जीवन के केन्द्र में धधकते संघर्ष की यह मान्यता और स्थिर सम्बन्धों की एक काल्पनिक दुनिया के लिए बेताबी समाजवादी विचारकों की ख़ासियत थी, विशेषतः फ्रेडरिक इंगल्स और कार्ल मार्क्स की, जिन्होंने शांति और व्यापार, सहनशीलता और आज़ादी के उदारवादी विचारों को एक धोखा करार दिया, जो एक अधिक गहरे घृणास्पद संघर्ष, हिंसा और शोषण को छुपाता था। उन्होंने माना कि उदारवादी मूल्य युद्ध को शांति से, चोरी को विनिमय से, क़त्लेआम को सहनशीलता से, देशों की दुश्मनी को वैश्विक सहनशीलता से विस्थापित करते हैं, लेकिन उनके मतानुसार ये सभी आँखों में धूल झोंकने वाले मूल्य थे, जो एक अधिक गहरी हिंसा को छिपाते थे। इंगल्स ने 1844 में प्रकाशित अपने एक पत्रक में कहा,

आपने लोगों का मेल–मिलाप बढ़ा दिया है, लेकिन यह भ्रातृभाव चोरों का आपसी भाईचारा है। आपने युद्धों की संख्या कम कर दी है, लेकिन सिर्फ इसलिए कि आप शांति के नाम पर मुनाफा कमाना चाहते हैं, प्रतिस्पर्धा के नाम पर व्यक्तियों के बीच दुश्मनी को चरम पर ले जाना चाहते हैं! आपने व्यक्तिगत और आम हितों के टकराव की व्यर्थता का ध्यान रखते हुए सिर्फ "इंसानियत के नाम पर" कभी कुछ किया है? क्या आपने अपने मन में अनैतिक, दांभिक स्वार्थ न रखते हुए कभी निस्वार्थ नैतिकता दिखाई है?

राष्ट्रीयताओं को समाप्त कर उदारवादी अर्थव्यवस्था ने शत्रुता को वैश्विक बना दिया है, मानव जाति को पषुवत बना दिया है (प्रतिस्पर्धा से यही होता है) जो एक दूसरे के विनाश में लगे हैं, क्योंकि प्रत्येक का हित एक ही है।[155]

उदारवाद और मुक्त व्यापार ने "युद्धों की संख्या में कमी" ज़रूर लाई होगी, लेकिन केवल "शांति के नाम पर अधिक मुनाफा कमाने" के लिए। इस मुद्दे पर जोर देना आवश्यक हैः इंगल्स ने अधिक मुनाफा (जो उसे अच्छा नहीं लगता था, जब तक कि वह उसका न हो) कमाने को युद्धों में कमी से अधिक चिंताजनक माना है।

प्रभावशाली विक्टोरिया–कालीन कला समीक्षक और जागृति–विरोधी टोरी समाजवादी जॉन रस्किन ने युद्ध की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा है कि "इस धरती पर सैनिकों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली कला से बढ़कर दूसरी कोई कला नहीं है। भेड़ चराने वालों में कोई कला नहीं होती, यदि वे शांतिपूर्वक रहें। किसानों में कोई कला नहीं होती, यदि वे शांतिपूर्वक रहें। व्यापार ललित कलाओं से लगभग सुसंगत है, लेकिन वह उसे जन्म नहीं दे सकता। उत्पादन न केवल उसे जन्म नहीं

दे सकता, बल्कि उसके जैसा निशान तक मिटा देता है। किसी देश में युद्ध पर आधारित कला के अलावा अन्य कोई अच्छी कला संभव ही नहीं है।[156]

इसके विपरीत, जागृति के विचारक – वोल्तेयर इसके प्रमुख उदाहरण हैं – मानते थे कि शांति और सामाजिक सामंजस्य स्वयं एक मूल्य हैं, सामाजिक शत्रुता को छिपाने के बहाने नहीं, जैसा मार्क्स और इंगल्स सोचते थे। जब वोल्तेयर ने शांति लाने के लिए विनिमय और सहनशीलता की तरफदारी की, तो वे जागृति के मूल्यों तथा नज़रिए का ही प्रतिनिधित्व कर रहे थे।[157] मार्क्स, डी माइस्त्रे तथा रस्किन आदि जागृति–विरोधी विचारकों ने विनिमय और सहनशीलता की भर्त्सना की और कहा कि यह मानवीय मूल्यों का पतन है।

कार्ल मार्क्स और उनके सह–लेखक, सहयोगी तथा वित्तदाता फ्रेडरिक इंगल्स ने उदारवाद को नए उभरते वर्ग "मध्यम वर्ग" (उनका ही दिया हुआ शब्द, जिसे उन्होंने काफी प्रकीर्णता से और विसंगतियों के साथ इस्तेमाल किया) के समकक्ष माना और इस वर्ग पर विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त करने का तथा साम्राजिक गर्मजोशी को पत्थर दिल समीकरणों से विस्थापित करने का आरोप लगाया। जैसे–जैसे व्यापारिक सम्बन्ध बढ़े, वैसे–वैसे वस्तु–विनिमय (उदाहरण के लिए, अंडे के बदले मक्खन) का चलन कम होता गया और पैसे के माध्यम से विनिमय का चलन बढ़ता गया (उदाहरण के लिए, अंडे बेचना, फिर उन पैसों से मक्खन ख़रीदना)। इससे सरलीकरण बढ़ा, क्योंकि लोग बहुमूल्य संसाधनों के वैकल्पिक इस्तेमाल की तुलना एक समान इकाई से कर सकते थेः पैसा। इससे तर्कसंगत हिसाब रखा जाने लगा और नफा–नुकसान की गणना संभव हुई, जिससे अधिक समन्वय स्थापित किया जा सका, अधिक समृद्धि उत्पन्न हुई, इस समृद्धि के फायदे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचने लगे और दूरदराज़ के लोगों की इच्छाएं भी पूरी कर सकने की सुविधा मिली। मार्क्स और इंगल्स ने इस बाज़ार–मध्यस्थता के तर्क को "करुणाहीन" और "अहंकारी परिकल्पना" बताकर नकार दिया। *दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो* में उन्होंने कहा कि उदारवादी मूल्य, संस्थाएँ और कार्य अधिक मानवीय केवल नज़र आते हैं, वास्तव में वे एक प्रकार की हिंसा को दूसरे प्रकार की, अधिक क्रूर हिंसा से विस्थापित करते हैं।

मध्यम वर्ग का जहाँ–जहाँ उदय हुआ है, वहाँ उसने सभी सामन्ती, पारिवारिक और आदर्श रिश्तों को समाप्त कर दिया है। उसने बड़े ही निर्दयी तरीके से उन विविध सामन्ती सम्बन्धों को तोड़ डाला, जो व्यक्ति को उसके "स्वाभाविक श्रेष्ठ" व्यक्ति से जोड़ते थे, और परिणामस्वरूप इंसानों के बीच अब नंगे स्वार्थ और "हृदयहीन

मानव जीवन के केन्द्र में धधकते संघर्ष की यह मान्यता और स्थिर सम्बन्धों की एक काल्पनिक दुनिया के लिए बेताबी समाजवादी विचारकों की ख़ासियत थी, विशेषतः फ्रेडरिक इंगल्स और कार्ल मार्क्स की, जिन्होंने शांति और व्यापार, सहनशीलता और आज़ादी के उदारवादी विचारों को एक धोखा करार दिया, जो एक अधिक गहरे घृणास्पद संघर्ष, हिंसा और शोषण को छुपाता था। उन्होंने माना कि उदारवादी मूल्य युद्ध को शांति से, चोरी को विनिमय से, क़त्लेआम को सहनशीलता से, देशों की दुश्मनी को वैश्विक सहनशीलता से विस्थापित करते हैं, लेकिन उनके मतानुसार ये सभी आँखों में धूल झोंकने वाले मूल्य थे, जो एक अधिक गहरी हिंसा को छिपाते थे। इंगल्स ने 1844 में प्रकाशित अपने एक पत्रक में कहा,

आपने लोगों का मेल–मिलाप बढ़ा दिया है, लेकिन यह भ्रातृभाव चोरों का आपसी भाईचारा है। आपने युद्धों की संख्या कम कर दी है, लेकिन सिर्फ इसलिए कि आप शांति के नाम पर मुनाफा कमाना चाहते हैं, प्रतिस्पर्धा के नाम पर व्यक्तियों के बीच दुश्मनी को चरम पर ले जाना चाहते हैं! आपने व्यक्तिगत और आम हितों के टकराव की व्यर्थता का ध्यान रखते हुए सिर्फ "इंसानियत के नाम पर" कभी कुछ किया है? क्या आपने अपने मन में अनैतिक, दांभिक स्वार्थ न रखते हुए कभी निस्वार्थ नैतिकता दिखाई है?

राष्ट्रीयताओं को समाप्त कर उदारवादी अर्थव्यवस्था ने शत्रुता को वैश्विक बना दिया है, मानव जाति को पशुवत बना दिया है (प्रतिस्पर्धा से यही होता है) जो एक दूसरे के विनाश में लगे हैं, क्योंकि प्रत्येक का हित एक ही है।[155]

उदारवाद और मुक्त व्यापार ने "युद्धों की संख्या में कमी" ज़रूर लाई होगी, लेकिन केवल "शांति के नाम पर अधिक मुनाफा कमाने" के लिए। इस मुद्दे पर जोर देना आवश्यक है: इंगल्स ने अधिक मुनाफा (जो उसे अच्छा नहीं लगता था, जब तक कि वह उसका न हो) कमाने को युद्धों में कमी से अधिक चिंताजनक माना है।

प्रभावशाली विक्टोरिया–कालीन कला समीक्षक और जागृति–विरोधी टोरी समाजवादी जॉन रस्किन ने युद्ध की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा है कि "इस धरती पर सैनिकों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली कला से बढ़कर दूसरी कोई कला नहीं है। भेड़ चराने वालों में कोई कला नहीं होती, यदि वे शांतिपूर्वक रहें। किसानों में कोई कला नहीं होती, यदि वे शांतिपूर्वक रहें। व्यापार ललित कलाओं से लगभग सुसंगत है, लेकिन वह उसे जन्म नहीं दे सकता। उत्पादन न केवल उसे जन्म नहीं

दे सकता, बल्कि उसके जैसा निशान तक मिटा देता है। किसी देश में युद्ध पर आधारित कला के अलावा अन्य कोई अच्छी कला संभव ही नहीं है।[156]

इसके विपरीत, जागृति के विचारक – वोल्तेयर इसके प्रमुख उदाहरण हैं – मानते थे कि शांति और सामाजिक सामंजस्य स्वयं एक मूल्य हैं, सामाजिक शत्रुता को छिपाने के बहाने नहीं, जैसा मार्क्स और इंगल्स सोचते थे। जब वोल्तेयर ने शांति लाने के लिए विनिमय और सहनशीलता की तरफदारी की, तो वे जागृति के मूल्यों तथा नज़रिए का ही प्रतिनिधित्व कर रहे थे।[157] मार्क्स, डी माइस्त्रे तथा रस्किन आदि जागृति–विरोधी विचारकों ने विनिमय और सहनशीलता की भर्त्सना की और कहा कि यह मानवीय मूल्यों का पतन है।

कार्ल मार्क्स और उनके सह–लेखक, सहयोगी तथा वित्तदाता फ्रेडरिक इंगल्स ने उदारवाद को नए उभरते वर्ग "मध्यम वर्ग" (उनका ही दिया हुआ शब्द, जिसे उन्होंने काफी प्रकीर्णता से और विसंगतियों के साथ इस्तेमाल किया) के समकक्ष माना और इस वर्ग पर विश्व की व्यवस्था को ध्वस्त करने का तथा सामाजिक गर्मजोशी को पत्थर दिल समीकरणों से विस्थापित करने का आरोप लगाया। जैसे–जैसे व्यापारिक सम्बन्ध बढ़े, वैसे–वैसे वस्तु–विनिमय (उदाहरण के लिए, अंडे के बदले मक्खन) का चलन कम होता गया और पैसे के माध्यम से विनिमय का चलन बढ़ता गया (उदाहरण के लिए, अंडे बेचना, फिर उन पैसों से मक्खन ख़रीदना)। इससे सरलीकरण बढ़ा, क्योंकि लोग बहुमूल्य संसाधनों के वैकल्पिक इस्तेमाल की तुलना एक समान इकाई से कर सकते थे: पैसा। इससे तर्कसंगत हिसाब रखा जाने लगा और नफा–नुकसान की गणना संभव हुई, जिससे अधिक समन्वय स्थापित किया जा सका, अधिक समृद्धि उत्पन्न हुई, इस समृद्धि के फायदे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचने लगे और दूरदराज़ के लोगों की इच्छाएं भी पूरी कर सकने की सुविधा मिली। मार्क्स और इंगल्स ने इस बाज़ार–मध्यस्थता के तर्क को "करुणाहीन" और "अहंकारी परिकल्पना" बताकर नकार दिया। *दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो* में उन्होंने कहा कि उदारवादी मूल्य, संस्थाएँ और कार्य अधिकांश मानवीय केवल नज़र आते हैं, वास्तव में वे एक प्रकार की हिंसा को दूसरे प्रकार की, अधिक क्रूर हिंसा से विस्थापित करते हैं।

मध्यम वर्ग का जहाँ–जहाँ उदय हुआ है, वहाँ उसने सभी सामन्ती, पारिवारिक और आदर्श रिश्तों को समाप्त कर दिया है। उसने बड़े ही निर्दयी तरीके से उन विविध सामन्ती सम्बन्धों को तोड़ डाला, जो व्यक्ति को उसके "स्वाभाविक श्रेष्ठ" व्यक्ति से जोड़ते थे, और परिणामस्वरूप इंसानों के बीच अब नंगे स्वार्थ और "हृदयहीन

नक़दी" के सिवा कोई रिश्ता नहीं रह गया है। इसने धार्मिक उत्साह, शिष्टाचारी उदात्तता और सामान्य जनों की भावनात्मक खुशियों को अहंकारी सौदेबाज़ी के बर्फीले पानी में डुबो दिया है। इसने व्यक्तियों की अमीरी को केवल सौदों की कीमतों में बदल दिया है और असंख्य अपरिहार्य अधिकृत आज़ादियों के बदले केवल एक, अविवेकपूर्ण आज़ादी स्थापित कर दी है – मुक्त व्यापार। दूसरे शब्दों में, इसने धार्मिक और राजनैतिक भुलावों की आड़ में चल रहे शोषण की जगह नंगा, निर्लज्ज, क्रूर और सीधा शोषण शुरू कर दिया है।[158]

जागृति–विरोध के विचारक नेताओं ने उदारवाद पर उग्र हमला बोल दिया और देश, राष्ट्र, वर्ग और नस्ल के नए संकीर्ण समूहों में समूहवाद की विभिन्न कल्पनाओं को साकार करने का प्रयास किया। सभी मामलों में, संदेश यही था कि इंसानों के ऐसे सभी समूह अपने मूलतः और अपरिहार्य रूप से परस्पर–विरोधी हितों के कारण हमेशा टकराव की स्थिति में होते हैं। उनका मानना था कि मित्रता केवल दुश्मनी और नफरत की पूरक के रूप में ही स्थापित हो सकती है। गहन विचारक तथा पारम्परिक उदारवादी लेखक रॉबर्ट मुसिल ने लिखा है, "इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि इंसान की सबसे गहरी सामाजिक प्रवृत्तियां ही उसकी सबसे असामाजिक प्रवृत्तियाँ होती हैं"।[159] यह विचार उन बुद्धिजीवियों में अब तक टुका हुआ है, जो विवेकपूर्ण विचार–विमर्श, बाज़ारी लेन–देन के ज़रिए तर्कपूर्ण गणना, सहनशीलता और शांति के मूल्यों को नकारते आए हैं। इनमें से कुछ स्वयं को शांति का समर्थक मान सकते हैं (समकालीन बुद्धिजीवियों में सैन्य संघर्ष की तारीफ करना अच्छा नहीं माना जाता), लेकिन वे सभी मूलतः और अपरिहार्य रूप से परस्पर–विरोधी हित, संघर्ष, दुश्मनी तथा सतत टकराव के सिद्धांतों को मानते हैं। 1848 में इन दो उस समय के अनजान बुद्धिजीवियों ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका में एक विचार प्रतिपादित किया, जिसने एक ऐसे आंदोलन को जन्म दिया, जिसने दुनिया को खून में रंग डाला।

अब तक विकसित हुए समाज का इतिहास वर्ग–संघर्ष का इतिहास है... समाज अधिकाधिक रूप से दो बड़े विरोधी खेमों में बंटता जा रहा है, दो बड़े वर्ग, जो सीधे टकराव की स्थिति में हैं: मध्यम वर्ग और सर्वहारा वर्ग।[160]

मार्क्सवादी वर्ग–संघर्ष का अध्ययन करते हैं और लोगों के आर्थिक रूप से विभाजित वर्गों के बीच सतत संघर्ष में यकीन करते हैं, जिनमें से एक मध्यम वर्ग को "असंभव बनाना" आवश्यक है।[161] फासीवादी युद्ध और हिंसा की एक राष्ट्र निर्माता शुद्धिकारक ताकत के रूप में तारीफ करते हैं।[162] राष्ट्रीय समाजवादी ("नाज़ी") "अशुद्ध

" या "नकृष्ट" नस्लों को "आर्यों" के आधिपत्य में लाना चाहते थे और उन्होंने चुनौती दी: "जिन्हें जीना है, उन्हें लड़ना होगा, और जो इस संघर्षमय दुनिया में लड़ना नहीं चाहते, वे मरने के काबिल हैं"।[163] आलोचक सिद्धांतवादी (मार्क्स, नीत्शे, फ्रायड और अन्य उदारवादी सहनशीलता के विरोधियों से प्रभावित) मानते हैं कि "मध्यमवर्गीय उदारवाद तथा सहनशीलता अक्सर बहाने हैं, जो "राज करने की इच्छा" को छिपाते हैं"।[164] ऐसे जागृति–विरोधी लोग अभिव्यक्ति की आज़ादी को "दमनकारी सहनशीलता" बताकर उसका विरोध करते हैं।[165] कई अनुदारवादी विद्वानों ने प्रभुता की "सामाजिक ताकतों" की लंबी फेहरिस्त दी है – जिसमें वर्ग, लिंग, और अन्य श्रेणियां शामिल हैं – *जो हमारे आसपास मौजूद हाड़–मांस के इंसानों से अधिक सक्रिय और वास्तविक हैं (लेकिन इन सामाजिक ताकतों को ठीक से देखने और समझ पाने के लिए अत्यधिक* विद्वान होना आवश्यक है)।[166]

सैन्यवादी लोग युद्ध को उसके तथाकथित आर्थिक तथा नैतिक फायदों के लिए अच्छा मानते हैं।[167] नव–रूढ़िवादी सैन्य गुणों को सम्माननीय आदर्श और राष्ट्रीय जीवन में "बहादुरी का भाव" फिर से लौटाने वाला मानते हैं।[168] (नव–रूढ़िवादी "खुशी की खोज" जैसे भद्दी, तुच्छ और अमेरिकीयों को शोभा न देने वाले लक्ष्य के मुकाबले "राष्ट्रीय महानता" को कहीं अधिक उच्च दर्जे का और अनुकरणीय मानते हैं)। "वास्तववादी" लोग देशों, या उससे भी बढ़कर "सभ्यताओं", के बीच शत्रुता या सम्बन्धों के ठंडेपन को चिरस्थायी मानते हैं।[169]

ईश्वरसत्तावादी सभी को हिंसा के ज़रिए भगवान (या भगवानों) के आधिपत्य में लाना चाहते हैं, जिसमें सभी एक ही धर्म, एक ही आस्था और जीवन के एक ही स्वरूप को मानें, या यदि यह संभव न हो, तो एक ऐसी व्यवस्था लागू करना चाहते हैं, जिसमें अन्य धर्मों को मानने वाले लोग दोयम दर्जे के और अपमानित हों तथा किसी धर्म को न मानने वाले लोगों को या तो निष्कासित कर दिया जाए या मार डाला जाए।

पारम्परिक उदारवाद के "मार्क्सवादी विश्लेषकों" सहित अन्य समकालीन आलोचक कहते हैं कि समाजवाद में अन्य व्यवस्थाओं की तुलना में अधिक हिंसा नहीं है, क्योंकि दुर्लभ संसाधनों को लेकर निर्णयों में सभी व्यवस्थाएं बल प्रयोग का समर्थन करती हैं, भले ही वह बल प्रयोग दूसरे के बल प्रयोग के विरोध में किया जा रहा हो।[170] यह उदारवाद पर पुराने समय से लगाया जाने वाला आरोप है, जब सत्रहवीं शताब्दी में सर रॉबर्ट फिल्मर ने सार्वभौम राजसत्ता के दैवीय अधिकार के बचाव में लिखा,

नक़दी" के सिवा कोई रिश्ता नहीं रह गया है। इसने धार्मिक उत्साह, शिष्टाचारी उदात्तता और सामान्य जनों की भावनात्मक खुशियों को अहंकारी सौदेबाज़ी के बर्फीले पानी में डुबो दिया है। इसने व्यक्तियों की अमीरी को केवल सौदों की कीमतों में बदल दिया है और असंख्य अपरिहार्य अधिकृत आज़ादियों के बदले केवल एक, अविवेकपूर्ण आज़ादी स्थापित कर दी है – मुक्त व्यापार। दूसरे शब्दों में, इसने धार्मिक और राजनैतिक भुलावों की आड़ में चल रहे शोषण की जगह नंगा, निर्लज्ज, क्रूर और सीधा शोषण शुरू कर दिया है।[158]

जागृति–विरोध के विचारक नेताओं ने उदारवाद पर उग्र हमला बोल दिया और देश, राष्ट्र, वर्ग और नस्ल के नए संकीर्ण समूहों में समूहवाद की विभिन्न कल्पनाओं को साकार करने का प्रयास किया। सभी मामलों में, संदेश यही था कि इंसानों के ऐसे सभी समूह अपने मूलतः और अपरिहार्य रूप से परस्पर–विरोधी हितों के कारण हमेशा टकराव की स्थिति में होते हैं। उनका मानना था कि मित्रता केवल दुश्मनी और नफरत की पूरक के रूप में ही स्थापित हो सकती है। गहन विचारक तथा पारम्परिक उदारवादी लेखक रॉबर्ट मुसिल ने लिखा है, "इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि इंसान की सबसे गहरी सामाजिक प्रवृत्तियां ही उसकी सबसे असामाजिक प्रवृत्तियाँ होती हैं"।[159] यह विचार उन बुद्धिजीवियों में अब तक टुका हुआ है, जो विवेकपूर्ण विचार–विमर्श, बाज़ारी लेन–देन के ज़रिए तर्कपूर्ण गणना, सहनशीलता और शांति के मूल्यों को नकारते आए हैं। इनमें से कुछ स्वयं को शांति का समर्थक मान सकते हैं (समकालीन बुद्धिजीवियों में सैन्य संघर्ष की तारीफ करना अच्छा नहीं माना जाता), लेकिन वे सभी मूलतः और अपरिहार्य रूप से परस्पर–विरोधी हित, संघर्ष, दुश्मनी तथा सतत टकराव के सिद्धांतों को मानते हैं। 1848 में इन दो उस समय के अनजान बुद्धिजीवियों ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तिका में एक विचार प्रतिपादित किया, जिसने एक ऐसे आंदोलन को जन्म दिया, जिसने दुनिया को खून में रंग डाला।

अब तक विकसित हुए समाज का इतिहास वर्ग–संघर्ष का इतिहास है... समाज अधिकाधिक रूप से दो बड़े विरोधी खेमों में बंटता जा रहा है, दो बड़े वर्ग, जो सीधे टकराव की स्थिति में हैं: मध्यम वर्ग और सर्वहारा वर्ग।[160]

मार्क्सवादी वर्ग–संघर्ष का अध्ययन करते हैं और लोगों के आर्थिक रूप से विभाजित वर्गों के बीच सतत संघर्ष में यकीन करते हैं, जिनमें से एक मध्यम वर्ग को "असंभव बनाना" आवश्यक है।[161] फासीवादी युद्ध और हिंसा की एक राष्ट्र निर्माता शुद्धिकारक ताकत के रूप में तारीफ करते हैं।[162] राष्ट्रीय समाजवादी ("नाज़ी") "अशुद्ध

" या "नकृष्ट" नस्लों को "आर्यों" के आधिपत्य में लाना चाहते थे और उन्होंने चुनौती दी: "जिन्हें जीना है, उन्हें लड़ना होगा, और जो इस संघर्षमय दुनिया में लड़ना नहीं चाहते, वे मरने के काबिल हैं"।[163] आलोचक सिद्धांतवादी (मार्क्स, नीत्शे, फ्रायड और अन्य उदारवादी सहनशीलता के विरोधियों से प्रभावित) मानते हैं कि "मध्यमवर्गीय उदारवाद तथा सहनशीलता अक्सर बहाने हैं, जो "राज करने की इच्छा" को छिपाते हैं"।[164] ऐसे जागृति–विरोधी लोग अभिव्यक्ति की आज़ादी को "दमनकारी सहनशीलता" बताकर उसका विरोध करते हैं।[165] कई अनुदारवादी विद्वानों ने प्रभुता की "सामाजिक ताकतों" की लंबी फेहरिस्त दी है – जिसमें वर्ग, लिंग, और अन्य श्रेणियां शामिल हैं – जो हमारे आसपास मौजूद हाड़–मांस के इंसानों से अधिक सक्रिय और वास्तविक हैं (लेकिन इन सामाजिक ताकतों को ठीक से देखने और समझ पाने के लिए अत्यधिक विद्वान होना आवश्यक है)।[166]

सैन्यवादी लोग युद्ध को उसके तथाकथित आर्थिक तथा नैतिक फायदों के लिए अच्छा मानते हैं।[167] नव–रूढ़िवादी सैन्य गुणों को सम्माननीय आदर्श और राष्ट्रीय जीवन में "बहादुरी का भाव" फिर से लौटाने वाला मानते हैं।[168] (नव–रूढ़िवादी "खुशी की खोज" जैसे भद्दी, तुच्छ और अमेरिकीयों को शोभा न देने वाले लक्ष्य के मुकाबले "राष्ट्रीय महानता" को कहीं अधिक उच्च दर्जे का और अनुकरणीय मानते हैं)। "वास्तववादी" लोग देशों, या उससे भी बढ़कर "सभ्यताओं", के बीच शत्रुता या सम्बन्धों के ठंडेपन को चिरस्थायी मानते हैं।[169]

ईश्वरसत्तावादी सभी को हिंसा के ज़रिए भगवान (या भगवानों) के आधिपत्य में लाना चाहते हैं, जिसमें सभी एक ही धर्म, एक ही आस्था और जीवन के एक ही स्वरूप को मानें, या यदि यह संभव न हो, तो एक ऐसी व्यवस्था लागू करना चाहते हैं, जिसमें अन्य धर्मों को मानने वाले लोग दोयम दर्जे के और अपमानित हों तथा किसी धर्म को न मानने वाले लोगों को या तो निष्कासित कर दिया जाए या मार डाला जाए।

पारम्परिक उदारवाद के "मार्क्सवादी विश्लेषकों" सहित अन्य समकालीन आलोचक कहते हैं कि समाजवाद में अन्य व्यवस्थाओं की तुलना में अधिक हिंसा नहीं है, क्योंकि दुर्लभ संसाधनों को लेकर निर्णयों में सभी व्यवस्थाएं बल प्रयोग का समर्थन करती हैं, भले ही वह बल प्रयोग दूसरे के बल प्रयोग के विरोध में किया जा रहा हो।[170] यह उदारवाद पर पुराने समय से लगाया जाने वाला आरोप है, जब सत्रहवीं शताब्दी में सर रॉबर्ट फिल्मर ने सार्वभौम राजसत्ता के दैवीय अधिकार के बचाव में लिखा,

दुनिया में आज़ादी और स्वतंत्रता को लेकर बड़ी चर्चाएं हो रही हैं, जिसके बारे में कहा जा रहा है कि ये समाज की भलाई के लिए हैं। यह एक जाँच का विषय है कि आज़ादी को लेकर हो रही ये बातें कहाँ तक सच हैं: "सच्ची आज़ादी का मतलब है हर कोई अपनी मनमर्ज़ी करे, या चाहे जैसे जिये, और किसी कानून से बंधकर न रहे"। लेकिन ऐसी आज़ादी से किसी समाज का भला नहीं होने वाला, क्योंकि लोकप्रिय सत्ताओं में अन्य जगहों की अपेक्षा अधिक कानून होते हैं, और परिणामस्वरूप कम आज़ादी होती है; कई लोगों का कहना है कि सत्ता आज़ादी छीन लेती है और कोई भी आज़ाद नहीं रह पाता। ऐसी आज़ादी अस्तित्व में ही नहीं है; यदि होती, तो सरकारें ही नहीं होतीं।171

इस विचारधारा की बात मानें, तो बलात्कार पर प्रतिबंध लगाने वाला राज्य भी उतना ही दमनकारी है, जितना कि बलात्कार को आवश्यक बनाने वाला, क्योंकि बलात्कारी को रोकने और बलात्कार करने, दोनों के लिए बल प्रयोग आवश्यक होगा। इस विचारधारा के अनुसार, दुनिया में हिंसा की एक मात्रा है, जो न कम होती है न बढ़ती है।[172] इच्छास्वतंत्रतावादी इससे इंकार करते हैं और बलात्कार रोकने को बलात्कार करने के समकक्ष नहीं मानते।

दोस्त–दुश्मन का फर्क

पिछली शताब्दी में पारम्परिक उदारवादियों के शांति तथा टकराव के समाधान सम्बन्धी विचारों को जागृति–विरोधकों द्वारा नकारे जाने में अग्रणी योगदान था एक कानूनविद कार्ल श्मिट का, जिनकी पुस्तक *दि कांसेप्ट ऑफ द पॉलिटिकल* ने उदारवाद–विरोधी "दक्षिणपंथी" और उदारवाद–विरोधी "वामपंथी", दोनों को खासा प्रभावित किया। वे "शताब्दी के सबसे उत्कृष्ट उदारवाद–विरोधी" थे।[173] श्मिट ने प्रतिपादित किया कि "विशिष्ट राजनैतिक पहचान को... दोस्त और दुश्मन इन दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है"।[174]

श्मिट का आग्रह था कि उदारवादी सामाजिक सामंजस्य के मुद्दे पर ग़लत हैं, वे ग़लत कहते हैं कि विनिमय सैन्य अभियान का नैतिक विकल्प है, वे ग़लत कहते हैं कि चर्चा युद्ध को विस्थापित कर सकती है, वे ग़लत कहते हैं कि सहनशीलता दुश्मनी को विस्थापित कर सकती है, और वे ग़लत कहते हैं कि दुश्मनी–रहित दुनिया संभव है। श्मिट के लिए, संघर्ष ही राजनीति को परिभाषित करता था, और राजनीति इंसानों के लिए अत्यावश्यक थी। पिछली शताब्दी की राजनैतिक विचारधारा पर उनका एक गूढ़ प्रभाव था, और उनकी लज्जाजनक और निन्दनीय ज़िंदगी के कारण उनके केन्द्रीय विचारों ने दक्षिणपंथी और वामपंथी, दोनों के विचारों में

जगह पाई और "दक्षिणपंथी" और "वामपंथी", दोनों के द्वारा सहनशीलता, बाज़ार अर्थव्यवस्था, मर्यादित सरकार, मुक्त व्यापार और शांति पर हमलों को प्रेरणा दी। श्मिट के विचार यूरोप में फासीवाद की धारा के पुनरागमन को भी उकसा रहे हैं। इसका एक उदाहरण है मॉस्को स्टेट विश्वविद्यालय के व्याख्याता अलेक्सान्द्र दुगिन, जिनका कार्य राष्ट्रीय समाजवादी विचारों को ही पुनःप्रतिपादित करता है, जिसमें विस्तारवादी "रूस" ने "जर्मनी" की जगह ले ली है और "थर्ड राइश" की जगह "यूरेशिया" ने।[175]

श्मिट के अनुसार, "दुश्मन कोई ऐसा वैसा प्रतिस्पर्धी नहीं है, या किसी सामान्य संघर्ष में भागीदार भी नहीं है। वह कोई निजी दुश्मन भी नहीं है, जिससे नफरत की जाए। दुश्मन का अस्तित्व तभी होता है जब कोई किसी समूह के ख़िलाफ संघर्ष करते हुए उसके सामने जाता है"।[176] और, "केवल वास्तविक युद्ध में ही दोस्त और दुश्मनों के राजनैतिक मतों के सबसे कठोर परिणाम सामने आते हैं। इसी सबसे कठोर संभावना से मानव जीवन को अपना विशिष्ट राजनैतिक तनाव प्राप्त होता है"।[177]

मार्क्सवादी दार्शनिक स्लावोज ज़िज़ेक ने मान्य किया है कि उदारवाद–विरोधी राजनैतिक विचारं के दक्षिणपंथी और वामपंथी, दोनों मत श्मिट के दोस्त और दुश्मन के फर्क को मानते हैं, और "वामपंथी" होने के नाते ज़िजेक दक्षिणपंथियों द्वारा बाहरी दुश्मनों पर ध्यान देने और वामपंथियों द्वारा "अंतर्गत दुश्मनों को बिना शर्त सर्वोपरि चिंता का कारण" मानने को ही राजनीति का मूल मानते हैं:

यह अत्यंत लक्षणीय है कि अतिवादी दक्षिणपंथी वर्ग–संघर्ष की जगह वर्ग (या लैंगिक) युद्ध की बातें करते हैं। आंतरिक राजनीति (आंतरिक सामाजिक शत्रुता) की तुलना में बाहरी राजनीति (सार्वभौम देशों के बीच सम्बन्ध) की प्रमुखता राजनैतिक घटनाओं के श्मिटवादी अस्वीकरण की सबसे स्पष्ट निषानी है, जिसके सम्बन्ध में वे कहते हैं, "क्या बाहरी व्यक्ति के साथ शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध रखना अपने समाज में मौजूद आंतरिक संघर्षों का अस्वीकरण नहीं है"? श्मिट के विपरीत, वामपंथी मतानुसार आंतरिक सामाजिक शत्रुता की बिना शर्त सर्वोपरिता को ही राजनैतिक माना जाना चाहिए।[178]

ऐसे विचारकों के लिए, चाहे वामपंथी हों या दक्षिणपंथी, संघर्ष – "आंतरिक शत्रुता" – ही मानव जीवन को संगठित रखता है। (यहाँ तक कि समकालीन मध्य–वामपंथी प्रगतिशील विचारक जॉन रॉलस ने भी अपने सामाजिक न्याय के सिद्धांत में नागरिकों के बीच निहित संघर्ष को स्थान दिया है, जो नागरिकों के कार्य का

न्याय और सामाजिक व्यवस्था के न्याय के फर्क के रूप में सामने आता है, क्योंकि जब भी कोई सकारण रूप से यह मानता है कि वह न्यायोचित आचरण कर रहा है और सहमति के नियमों का निष्ठापूर्वक पालन कर रहा है... व्यक्तियों को न्यायोचित आचरण करने पर भी पार्श्वभौमिक न्याय की क्षति ही होती है; पृथक तथा स्वतंत्र कार्यों के परिणाम पाभौमिक न्याय से दूर ही जाते हैं, उसकी ओर नहीं।[179] अर्थात् सामाजिक समूहों के हितों का टकराव न्यायप्रणाली में ही रचा–बसा है, क्योंकि यद्यपि अपेक्षानुसार सभी अपने अधिकारों के और न्याय के नियमों के अनुसार ही कार्य करते हैं, फिर भी परिणाम अन्यायपूर्ण और टकरावपूर्ण होता है, और सरकार को समाज पर एक नई न्यायपूर्ण व्यवस्था लागू करनी पड़ती है, जो व्यक्तियों के बीच न्यायपूर्ण आचरण से स्वतंत्र होती है)।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वामपंथी जगत में "कार्ल श्मिट प्रकाशनों" की बाढ़ आ गई है; प्रभावशाली मार्क्सवादी पत्रिका *टेलोस* ने अपने उदारवाद–विरोधी कार्यक्रम के लिए श्मिट के राजनैतिक सिद्धांतों को अपना आधार बनाया[180] और उनके विचार उदारवाद और शांति पर उस हमले में प्रमुख भूमिका निभाते हैं, जो इटली के वामपंथी लेखक अंतोनियो नेग्री (जिन्हें हिंसा और हत्या के आरोप में इटली में जेल की सज़ा हुई थी) और अमेरिकी साहित्यिक सिद्धांतवादी माइकल हार्ट ने *"नए कम्युनिस्ट घोषणापत्र"* के रूप में रचा था।[181] उनकी पुस्तक *एम्पायर* एक निहायत ही अपठनीय पुलिंदा है, जो हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा 9/11 के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमलों से कुछ पहले प्रकाशित की गई थी। इस पुस्तक में "वैश्विक राजधानी" पर हमला करने की अपील, इसके द्वारा साम्राज्य कहे जाने वाले एक वैश्विक सम्बन्धों की "एक विशिष्ट सरकार" को शत्रु मानना,[182] अतिवादी इस्लामी रूढ़िवाद के प्रति इसकी भयावह टिप्पणी कि यह मात्र पष्चआधुनिकता का एक प्रकार है, और इसका आवाहन कि "सामान्यजनों में यह क्षमता है कि अपनी उत्पादक शक्ति से वह पश्चआधुनिकता की परजीवी हुकूमत को नष्ट कर दे"[183] आदि के द्वारा 9/11 हमले का पूर्वानुमान लगाया गया है। (पुस्तक में तनिक भी सुस्पष्टता और बोधगम्यता नहीं है और निश्चित ही इसका कारण है लेखकों का हिंसा और नफरत के प्रति झुकाव; जैसाकि जॉर्ज ऑरवेल ने कहा था, "जब कथनी और करनी में अंतर रहता है, तब व्यक्ति स्वतः ही लच्छेदार शब्दों का इस्तेमाल करने लगता है"[184])।

नेग्री और हार्ट ने थर्ड राइश के भू–राजनैतिक सम्बन्धों के प्रति "ग्रोब्रॉउम" रवैये से प्रेरणा ली थी। श्मिट ने जर्मन न्यायशास्त्र के इस कार्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया कि, "एक ओर आज तक चली आ रही अंतर्देशीय विचार पद्धति को रूढ़िवादी ढंग से बनाए रखना, तो दूसरी ओर पश्चिमी लोकतंत्रों द्वारा अपनाए गए सार्वभौम वैश्विक कानून की देश–रहित, राष्ट्रीयता–रहित अति–महत्वाकांक्षा, इन दोनों मिथ्या विकल्पों से बचना। इसे इन दोनों संकल्पनाओं के बीच की एक ठोस, बृहत, बहुआयामी व्यवस्था खोजनी होगी। एक ऐसी व्यवस्था जो समूची पृथ्वी, और साथ ही हमारे राज्य और राष्ट्र की नई संकल्पना, दोनों को अपने में समेटती हो"।[185] इसी "पश्चिमी लोकतंत्रों द्वारा अपनाए गए सार्वभौम वैश्विक कानून की देश–रहित, राष्ट्रीयता–रहित अति–महत्वाकांक्षा" को नेग्री और हार्ट ने "साम्राज्य" कहा और इसे हिंसा द्वारा नष्ट करने पर ज़ोर दिया।

श्मिट के राजनैतिक विचार और संकल्पनाएं अति–दक्षिणपंथी और नव–रूढ़िवादी विचारों से भी जुड़े हुए हैं, और वे ख़ासकर नव–रूढ़िवादी दार्शनिक लियो स्ट्रॉस,[186] स्ट्रॉस के प्रभावशाली अमेरिकी अनुयायी, जैसे भूतपूर्व व्हाइट हाउस सलाहकार विलियम क्रिस्टल, जो *दि वीकली स्टैंडर्ड* के संपादक और इराक युद्ध के रचनाकारों में से एक थे,[187] तथा *न्यूयॉर्क टाइम्स* के स्तंभकार एवं "राष्ट्रीय महानता रूढ़िवाद" को मानने वाले डेविड ब्रूक्स, आदि से प्रभावित हैं।[188] यह रूढ़िवाद अपने कम आक्रामक स्वरूप में इतने तक ही सीमित रहता है कि राष्ट्रीय महानता को समर्पित बड़े–बड़े स्मारक खड़े किए जाएँ। अपने आक्रामक स्वरूप में यह खुले तौर पर युद्ध की मांग करता है; इराक पर आक्रमण के पीछे नव–रूढ़िवादियों की बड़ी भूमिका थी और वे हर समय सैन्य अभियान छेड़ने की मांग करते रहते हैं। विलियम क्रिस्टल और रॉबर्ट कागान के अनुसार, युद्ध करने से "दिल में एक सच्चा रूढ़िवाद फिर से जागेगा", "जो व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी पर जोर देगा, राष्ट्रीय कार्य में भाग ले सकने का अवसर देगा, राष्ट्र को महान बनाने की संभावना जगाएगा और बहादुरी की उस भावना को जागृत करेगा, जो पिछले कुछ वर्षों में अमेरिकी विदेश नीति से – और अमेरिकी रूढ़िवाद से – गायब हो गई है।[189]

श्मिट लियो स्ट्रॉस द्वारा उनके कार्य पर की गई टिप्पणियों से काफी प्रभावित हुए थे और स्ट्रॉस के सुझाव पर उन्होंने अपने विचारों का सुसूत्रीकरण कर उन्हें और अधिक उदारवाद–विरोधी बना लिया। स्ट्रॉस ने *दि कांसेप्ट ऑफ द पॉलिटिकल* के 1932 के संस्करण पर अपनी टिप्पणी में लिखा था कि श्मिट ने उदारवाद का पर्याप्त विरोध नहीं किया है और वे अब भी उदारवाद द्वारा स्थापित श्रेणियों के जाल में उलझे हैं। स्ट्रॉस ने निष्कर्ष निकालाः "हमने कहा है कि श्मिट उदारवाद की आलोचना एक उदारवादी विश्व में कर रहे हैं; और इससे हमारा तात्पर्य है कि उदारवाद की आलोचना करने में वे उसकी तह तक नहीं जाते; उनका उदारवाद–विरोधी रुझान अब भी "उदारवादी विचारधारा की अजेय व्यवस्था" से जकड़ा हुआ है। इसलिए श्मिट

द्वारा प्रस्तुत उदारवाद की आलोचना तभी पूर्ण मानी जा सकती है जब वे उदारवाद से परे स्थित क्षितिज तक पहुँच सकें"।[190] और श्मिट ने यही किया; 1933 के संस्करण में, जो हिटलर की चुनावी विजय के बाद प्रकाशित हुआ था, लेकिन युद्ध के पश्चात प्रतिबंधित हो गया था (बाद के संस्करण 1932 संस्करण के पुनर्मुद्रण थे), श्मिट ने राष्ट्रीय समाजवाद की प्रशंसा की है, अपना यहूदी–विरोध अधिक स्पष्टता से उजागर किया है और दोस्त तथा दुश्मन के संघर्ष का वर्णन स्पष्ट नस्ली भेदभाव के शब्दों में किया है।[191] (एक यहूदी बुद्धिजीवी की तीखी आलोचना के ज़रिए एक जर्मन बुद्धि जीवी का कट्टर नात्सी और थर्ड राइष का एक अग्रणी न्यायविद बनना[192], यह एक विडम्बना ही है)।

श्मिट, मार्क्स और इंगल्स के लिए मुक्त व्यापार युद्ध का शांतिपूर्ण विकल्प नहीं, बल्कि एक अधिक क्रूर शोषण का बहाना था। "मानवता की संकल्पना साम्राज्यवादी विस्तार के लिए एक अत्यंत उपयोगी वैचारिक साधन है, और इसके नैतिक–मानवतावादी स्वरूप में यह संपूर्ण रूप से आर्थिक साम्राज्यवाद को आगे बढ़ाता है।[193] वैश्विक मानवाधिकारों की उदारवादी संकल्पना को यह कहकर नकार दिया गया कि वह उनके द्वारा दिए गए दोस्त और दुश्मन के फर्क से असंगत है:

> मानवता कोई राजनैतिक संकल्पना नहीं है, और कोई राजनैतिक संस्था या समाज या स्थिति उससे मेल नहीं खाती। मानवता की अठारहवीं शताब्दी की मानवीय संकल्पना उस समय मौजूद सामंती–ज़मींदारी व्यवस्था और उससे जुड़े विशेषज्ञाधिकारों को विवादास्पद रूप से नकारती थी। प्राकृतिक नियमों और उदारवादी–व्यक्तिवादी सिद्धांतों के अनुसार मानवता एक वैश्विक, अर्थात् सर्वव्यापी, सामाजिक आदर्श है, व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों की व्यवस्था है। यह तभी संभव हो सकती है जब युद्धों को समाप्त कर दिया जाए और दोस्त, दुश्मन आदि समूह बनें ही नहीं। ऐसे वैश्विक समाज में देश किसी राजनैतिक इकाई के रूप में नहीं रहेंगे, वर्ग संघर्ष नहीं होगा और दुश्मन समूह भी नहीं बनेंगे।[194]

वैश्विक मानवाधिकार, या सहनशीलता, या अभिव्यक्ति, व्यापार तथा यात्रा की आज़ादी जैसे उदारवादी आदर्श उनके लिए कोई मायने नहीं रखते थे।

> सभी उदारवादी मनोभाव दमन तथा गुलामी के ख़िलाफ हैं। व्यक्तिस्वतंत्र, निजी संपत्ति तथा मुक्त प्रतिस्पर्धा पर कोई भी अतिक्रमण, कोई भी खतरा दमन कहलाता है और इसलिए बुरा है। देश, सरकार तथा राजनीति के लिए उदारवाद में जो

> भूमिका है, वह सिर्फ आज़ादी की स्थिति की सुरक्षा तथा आज़ादी पर अतिक्रमण को समाप्त करने तक सीमित है।

इस प्रकार हम एक सैन्य–रहित तथा राजनीति–रहित संकल्पनाओं की समूची व्यवस्था पर आ पहुँचते हैं।[195]

श्मिट (और स्ट्रॉस, जुंगर तथा इस परम्परा के अन्य) के लिए "सैन्य–रहित तथा राजनीति–रहित" विश्व एक गंभीरतारहित, केवल "हँसी–मज़ाक का", विश्व था। एक सच्चा मानव विश्व एक राजनैतिक दुनिया होती है और "इसमें राजनैतिक घटक सबसे तीव्र और चरम शत्रुता होती है, और सभी ठोस शत्रुताएँ अपने चरम पर, अर्थात् दोस्त–दुश्मन विभाजन पर आते–आते अधिकाधिक राजनैतिक बनती जाती हैं"।[196] चाहे दुश्मन बाहरी हो या भीतरी, वही दक्षिणपंथी तथा वामपंथियों के लिए जीवन का केन्द्र बिन्दु होता है। राक्षसों की तथा देवपुत्रों की सेनाओं को मुकाबला करना ही होता है, जो एक "हँसी–मज़ाक", उद्योग, व्यापार, परिवार, प्रेम की ज़िंदगी से कहीं अधिक उपयुक्त, दर्जेदार तथा सम्माननीय होता है। ये सभी "राजनैतिक घटक" की तुलना में कतई गंभीर नहीं हैं। एक गंभीर राजनैतिक ज़िंदगी जीने के लिए शांतिपूर्ण सहयोग, सहनशीलता और "आंतरिक रूप से समृद्ध" जीवन – जो सभी उदारवाद के मूल्य हैं – का दमन करना होगा और सामाजिक शक्ति को शत्रु को परास्त करने पर केन्द्रित करना होगा।

1914 के विचार

> "हम मृतकों की स्मृति में खड़े हैं, जो हमारे लिए पवित्र हैं, और हम मानते हैं कि हमारे लोगों के सच्चे तथा आत्मिक कल्याण की ज़िम्मेदारी हम पर है। हम भूतकाल के सहारे और भविष्य को सहारा देने के लिए खड़े हैं। चाहे बाहरी शक्तियाँ और भीतरी वहशियत संकट के तूफान खड़े कर दें, जब तक हमारी तप्रेमार इस अंधेरे में चमक रही है, तब तक नारा बुलंद होता रहेगा: "जर्मनी ज़िंदा है और जर्मनी कभी नहीं हारेगा"!
>
> –अर्न्स्ट जुंगर197

उस बुद्धीजीवी आंदोलन में, जिसके श्मिट एक प्रमुख सदस्य थे, कई अन्य भी शामिल थे, जो "1914 के विचार" से अत्यंत प्रभावित थे। यह उस वर्ष की खुशियाँ मनाता था, जिस वर्ष यूरोप सामूहिक उन्माद की गर्त में चला गया था और लाखों लोग मौत के मुँह में चले गए थे।[198] इस युद्ध ने सारी दुनिया पर अपना असर छोड़ा था, राजनैतिक मुद्दों पर भी (उदाहरण के लिए, यूनाइटेड स्टेट्स में सरकार की शक्तियों

का केन्द्रीकरण) और संघर्ष, सैन्यीकरण तथा युद्धवादियों का एक पंथ बनाने पर भी। अर्न्स्ट जुंगर की उत्कृष्ट पुस्तक *दि स्टॉर्म ऑफ स्टील* इसी परम्परा का एक लक्षणीय उदाहरण है। (जुंगर और श्मिट के बीच ख़ासा पत्राचार भी होता था; यह पचास वर्षों से अधिक तक जारी रहा[199])।

अपने पत्रमित्र श्मिट की तरह जुंगर भी एक ताकतवर बुद्धिजीवी थे, जिन्होंने दक्षिणपंथी तथा वामपंथी, दोनों को उदारवादी मूल्यों तथा विचारों के विरुद्ध प्रभावित किया।[200] प्रथम विश्व युद्ध में एक सैनिक के रूप में अनुभवों पर उनके लेख "1914 के विचार" की एक लोकप्रिय अभिव्यक्ति थे, ख़ासकर उसमें निहित आक्रामक समूहवाद। दि स्टॉर्म ऑफ स्टील में जुंगर ने युद्ध के ज़रिए संघर्ष और टकराव को महिमामंडित किया है। इसमें एक तुलना निहित थी और शांतिपूर्ण जीवन में गंभीरता का अभाव, वस्तुओं का उत्पादन और उनकी ख़रीद–फरोख़्त, नाटक या संगीत की महफिलों में जाना, प्रयोगशालाएं और कला वीथिकाएं, वैज्ञानिक अनुसंधान, दोस्तों के साथ कुछ अच्छे पल बिताना आदि को बोरियत भरा और व्यर्थ जताया गया था। मध्यम वर्गीय ज़िंदगी निरुत्साह, बोरियत भरी थी, जबकि संघर्ष, हिंसात्मक मृत्यु और युद्ध ही जीने लायक परिस्थितियाँ थीं।

> और यदि यह आपत्ति उठाई गई कि हम एक असंस्कृत, शक्ति प्रधान ज़माने में रहते थे, तो हमारा जवाब है: भले ही हम खून से सने कीचड़ में खड़े थे, लेकिन हमारे चेहरे बहुमूल्य बातों की ओर थे। और हमारे हमलों में जो हताहत हुए, उन्होंने अपनी जान व्यर्थ ही नहीं गँवाई। उनमें से प्रत्येक ने अपना कर्तव्य पूरा किया था।
>
> जब यह समझना असंभव हो जाएगा कि क्यों कोई अपनी जान अपने देश पर न्यौछावर कर देता है – और ऐसा समय आएगा ज़रूर – उस समय वह विश्वास भी उठ जाएगा, और तब मातृभूमि की संकल्पना भी नहीं रहेगी; शायद उस समय हमारी कीमत पता चलेगी, जैसे आज हम संत–महात्माओं की अतुल्य आंतरिक शक्ति पर रश्क करते हैं।[201]

जुंगर तथा कई अन्य युद्ध को इस निगाह से देखते थे, लेकिन वे लाखों सैनिक, जिन्होंने उस खून से सने कीचड़ में अपनी जान गँवाई, जिनके फेफड़े मस्टर्ड गैस से जल गए थे और वे खून की उल्टियाँ करते हुए मरे, जो अपने बीवी–बच्चों से, अपनी प्रेमिकाओं से फिर कभी नहीं मिल पाए, शायद उनका नज़रिया कुछ अलग हो। एरिक मारिया रेमार्क, जिन्होंने *ऑल क्वायट ऑन द वेस्टर्न फ्रंट* लिखी, ने युद्ध का वर्णन बिल्कुल अलग तरीके से किया है। जुंगर को प्रशंसा मिली, लेकिन रेमार्क की

पुस्तकें नेशनल सोशलिस्ट (नाज़ी) पार्टी के सदस्यों द्वारा जला दी गईं और "जनता की अदालत" के एक नेशनल सोशलिस्ट "न्यायाधीश" के आदेश पर उनकी बहन का सिर कलम कर दिया गया था। उस न्यायाधीश ने कथित रूप से टिप्पणी की थी, "तुम्हारा भाई तो हमसे बच गया, मगर तुम नहीं बचोगी"।[202]

जुंगर महज एक सामान्य कलाकार नहीं थे, बल्कि वे हिंसा, संघर्ष, और सैन्यीकरण की सौंदर्यवादी समझ के जरिए सर्वाधिकारवादी तानाशाही के सक्रिय समर्थक थे।

सच्ची क्रांति अब तक हुई ही नहीं है। इसका आगे की ओर कूच चालू है। यह कोई प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि सभी विशिष्टता और लक्षण लिए एक वास्तविक क्रांति है। इसके पीछे लोगों की ताकत है, जिसे अब तक परखा नहीं गया है, इसका चिन्ह है स्वास्तिक; इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति है इच्छाशक्ति को एक ही बिन्दु पर एकाग्र करना – तानाशाही! तानाशाही बातों की जगह कार्य करेगी, स्याही की जगह खून, लच्छेदार बातों की जगह त्याग और कलम की जगह तप्रेमार लाएगी।[203]

"संपूर्ण लामबंदी" की संकल्पना जुंगर ने 1930 में एक लेख में प्रस्तुत की थी और एक तकनीकी रूप से सक्षम समूहवाद के रूप में यह जर्मनी के उदारवाद–विरोधी समूहवादियों को (इनमें मार्टिन हाइडेगर भी शामिल थे) बहुत पसंद आई। हाइडेगर ने "व्यक्तिस्वतंत्रता पर बढ़ते अंकुश की तारीफ की; उनकी राय में यह विशेषज्ञाधिकार अनुचित ही था", और आश्चर्य जताया कि सोवियत यूनियन में रूसी पंचवर्षीय योजना ने कैसे "दुनिया में पहली बार किसी महान साम्राज्य की एकत्र ऊर्जा को एक धारा में लाने का प्रयास किया है" और कहा कि "संपूर्ण लामबंदी" मात्र उस अधिक उच्च लामबंदी का एक संकेत है, जो आज का दौर हम पर थोप रहा है।[204]

तानाशाही, उदारवाद के अलावा कुछ भी, का चुनाव समूहवाद के प्रतिस्पर्धी स्वरूपों का गहरा सम्बन्ध दर्शाता है। जुंगर ने अपनी बाद की ज़िंदगी में अपने शुरुआती (थर्ड राइश का समर्थन करने से पहले); सोवियत–समर्थक रुझान का ज़िक्र करते हुए कहा,

> मैं योजना को लेकर काफी उत्साहित था। मैंने सोचा: उनका कोई संविधान नहीं है, लेकिन उनकी योजना है। यह एक शानदार बात हो सकती है।[205]

जुंगर और उनके मित्रों के समूहवाद के समर्थन की तुलना रूसी लेखक वासिली ग्रॉसमैन की एक संपूर्ण भिन्न प्रतिक्रिया से करना असंगत नहीं होगा। ग्रॉसमैन सोवियत समूहवाद के सैन्यीकरण में पले–बढ़े और वे इसे सख़्त नापसंद करते थे; उन्होंने फासीवाद, राष्ट्रीय समाजवाद और कम्यूनिज़्म की मूल समानताओं को पहचान

लिया था। ग्रॉसमैन रूसी सेना के अख़बार *रेड स्टार* के लिए लिखते थे और वे सबसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने थर्ड राइश द्वारा चलाए जा रहे मौत के एक शिविर, ट्रेब्लिंका, को आज़ाद कराने का वृत्तांत लिखा था। ग्रॉसमैन कभी भी आज़ाद समाज में नहीं रहे, लेकिन उन्होंने आज़ादी को समझा और उसके लिए तरसते थे। उनका उपन्यास *लाइफ एंड फेट* उनके जीते जी प्रकाशित नहीं हो पाया उसे (और जिस टाइपराइटर पर टाइप किया गया था, उसके रिबन को) केजीबी ने ज़ब्त कर लिया था। *लाइफ एंड फेट* में, थर्ड राइश और सोवियत यूनियन के बीच युद्ध के दौरान रूसी सेना का कर्नल प्योत्र पावलोविच अपनी कमांड के सैनिकों को इकट्ठा करता है और उनके निरीक्षण के दौरान उसे महसूस होता है कि,

> मानव समूहों का एक प्रमुख उद्देश्य होता है: प्रत्येक के दूसरों से अलग होने के, विशेष होने के, सोचने के, महसूस करने के, और अपने तरीके से जीने के अधिकार को व्यक्त करना। इसी अधिकार को जीतने या उसकी रक्षा करने के लिए लोग एक होते हैं। लेकिन यहीं एक भयानक, गंभीर भूल होती है: यह मानना कि नस्ल, या भगवान, या पार्टी, या देश के नाम से एकत्र हुआ यह समूह ही ज़िंदगी का उद्देश्य है, उद्देश्य प्राप्ति का साधन नहीं, ग़लत! ज़िंदगी के संघर्ष का एक ही सच्चा और स्थायी अर्थ व्यक्ति में, उसकी सामान्य विशेषताओं में और उन विशेषताओं को रखने के उसके अधिकार में निहित होता है।[206]

ऐसी "सामान्य विशेषताएँ" समूहवाद के दक्षिणपंथी और वामपंथी विचारकों को कोई प्रेरणा नहीं देतीं। वे अपने महती मकसदों और संघर्षों के लिए बाकी लोगों को इकट्ठा करने और उनका सैन्यीकरण में ही व्यस्त रहते हैं।

जुंगर का प्रभाव अब तक समाप्त नहीं हुआ है। *न्यूयॉर्क टाइम्स* के नव–रूढ़िवादी लेखक डेविड ब्रूक्स के लेखों में अब भी उनकी आवाज़ स्पष्ट सुनी जा सकती है। 23 अगस्त 2010 को अपने स्तंभ में "ए केस फॉर मेंटल करेज" शीर्षक से छपे लेख में ब्रूक्स ने उपन्यासकार फैनी बर्नी के स्तन कैंसर की शल्यक्रिया के वीभत्स वर्णन को उद्धृत किया है, जो बेहोशी की दवा दिए बिना हो रही है ("फिर मैंने चाकू को अपने सीने की हड्डी पर महसूस किया – वह उसे खरोंच रहा था! यह होते हुए मुझे इतनी यातना हो रही थी कि मेरे मुँह से शब्द तक नहीं फूट रहा था") और उनके इस अनुभव की तथा उसका शब्दशः वर्णन करने की उनकी "बहादुरी" तारीफ की ("उन्हें मज़बूत चरित्र और साहसपूर्ण व्यक्ति बनने के लिए यह एक कठिन, लेकिन आवश्यक अनुभव था")। ब्रूक्स यहाँ जुंगर के 1934 के प्रभावशाली निबंध "ऑन पेन" को दोहरा रहे हैं, जो जागृति की प्रगति को नकारता है और कहता है कि "निश्चित ही

आत्म–तुष्टि और स्व–मूल्यांकन की दुनिया समाप्त हो गई है और वे मूल्य, हालाँकि वे अब भी अस्तित्व में हैं, निर्णायक रूप से नकार दिए गए हैं या स्वयं के परिणामों से असत्य साबित हो गए हैं"।[207]

ब्रूक्स के अनुसार, "बहादुरी केवल युद्ध के मैदान में या लोगों में ही नहीं होती, यह दिमाग में, अप्रिय विचारों का सामना कर सकने में भी होती है"। साथ ही, श्मिट, जुंगर और स्ट्रॉस की तर्ज़ पर ब्रूक्स उदारवादी पूँजीवाद की निंदा करते हैं: "आजकल पाप और दुर्बलता की परवाह कम होती है। पूँजीवाद ने इस लोकाचार की जड़ें भी कमज़ोर कर दी हैं। ध्यान आकृष्ट करने की मीडिया की प्रतिस्पर्धा में आनन्ददायक और स्वीकारात्मक सामग्री देने वाले को ही पुरस्कार मिलता है"। ज़िंदगी "आनन्ददायक और स्वीकारात्मक" सामग्री में ही सिमट कर रह गई है और इसमें "बहादुरी" को स्थान नहीं मिलता, आदि शिकायतें स्ट्रॉस और श्मिट की शिकायतों की भांति ही हैं कि मुक्त समाज में गंभीरता नहीं होती। ब्रूक्स, जो इराक में युद्ध छेड़ने के एक आतुर समर्थक थे, ने अपने लेखन में साथी नव–रूढ़िवादी रॉबर्ट कागन और विलियम क्रिस्टल के संदेश "दुनिया के राक्षसों को समाप्त करने या रोकने के लिए" यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा अपनी सेना का इस्तेमाल कर "बहादुरी की भावना फिर लौटाने" को एक सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति दी है।[208]

कोई देश बिना युद्ध किए, बिना हिंसा किए, बिना दुश्मनी किए, व्यक्तियों के उनकी सामान्य विशेषताओं का शांतिपूर्ण आनन्द ले सकने के अधिकार का रक्षण कर महान बन सकता है, यह बात समूहवाद की परम्परा के उत्तराधिकारियों की समझ के बाहर है। उनके लिए बहादुरी भरे संघर्ष के बिना जीवन में कोई गंभीरता नहीं होती, जीवन में कोई अर्थ नहीं होता। युद्ध के सौदर्यात्मक महिमामंडन ने वह आग लगाई है, जिसमें करोड़ों लोग जलकर स्वाहा हो चुके हैं।

युद्ध अटल नहीं होते

> "जल्दी ही ग़रीबों में भी युद्ध पर न जाने की अक्ल आ जाएगी; इसलिए नहीं कि अब इसमें कोई फायदा नहीं, इसमें फायदा कभी था ही नहीं; बल्कि इसलिए कि सामाजिक चेतना उन महान इच्छास्वतंत्रतावादियों की शिक्षा के ज़रिए विकसित हो चुकी है, जिन्होंने हमेशा ही शांति का समर्थन किया। आज़ादी से शांति आती है, जबकि सर्वाधिकार से युद्ध आता है। स्वतंत्रताप्रेमी लोग शांति के समर्थकों की ज़िंदगी की तुलना सर्वाधिकार के समर्थकों की ज़िंदगी के साथ करने के लिए तैयार हैं, रक्षकों की ज़िंदगी बनाम विनाशकों की ज़िंदगी।
>
> —चार्ल्स टी, स्प्रेडिंग[209]

1913 में, यूरोप में एक अत्यंत घातक और विनाशक युद्ध छिड़ने से कुछ पहले, एक अमेरिकी इच्छास्वतंत्रतावादी ने अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन, जो यूनाइटेड स्टेट्स को "सभी युद्धों को समाप्त करने वाले युद्ध" में उतारना चाहते थे, के वाक्चातुर्य को पहले ही रोक दिया। चार्ल्स टी, स्प्रेडिंग ने पूछा,

> युद्ध को कैसे रोकेंगे? युद्ध के ज़रिए? क्या रक्तपात को अधिक रक्तपात के ज़रिए रोकना संभव है? नहीं; युद्ध को रोकने का उपाय है युद्ध न करना।[210]

उस समय के इच्छास्वतंत्रतावादियों की आवाज़ नहीं सुनी गई और लाखों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। वक्त आज़ादी के ख़िलाफ हो गया था, जैसा इच्छास्वतंत्रतावादी पत्रकार ई. एल. गॉडकिन ने शताब्दी की शुरुआत में चेताया था:

> केवल मुठ्ठीभर लोग, जिनमें से अधिकांश बूढ़े हैं, अब उदारवादी सिद्धांतों का समर्थन करते हैं, और जब वे भी नहीं रहेंगे, तो उसका नामलेवा भी कोई नहीं रहेगा... दैवीय अधिकार का पुराना झूठ फिर अपनी विनाशक ताकत के साथ उभर रहा है और इसे हराने से पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक महाभयंकर युद्ध करना पड़ेगा।[211]

गॉडकिन तात्कालिक रूप से सही थे और स्प्रेडिंग ग़लत, लेकिन दोनों ने ऐसी दीर्घकालिक स्थिति को पहचान लिया था, जो शांति का वादा करती थी। अब वक्त फिर आज़ादी के विचार की ओर लौट रहा है। सभी महाद्वीपों पर इच्छास्वतंत्रतावादी विश्व शांति के लिए और विचार, अभिव्यक्ति, धर्म, प्रेम, सम्बन्ध, यात्रा, कार्य और व्यापार की स्वतंत्रता के लिए कार्यरत हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था के उदय ने युद्ध के अवसर कम किए हैं और शांति के अवसर बढ़ाए हैं।

अब यह हमारे ऊपर है कि हम शासकों, राजनेताओं और सेनापतियों द्वारा लोगों की ज़िंदगी से खिलवाड़ करने के "दैवीय अधिकार" के आधुनिक सिद्धांतों को एक और अंतिम बार ख़ारिज करें। कर्नल प्योत्र पावलोविच नोविकोव के शब्दों में, "प्रत्येक के दूसरों से अलग होने के, विशेष होने के, सोचने के, महसूस करने के, और अपने तरीके से जीने के अधिकार को व्यक्त करने का" और सभी आज़ादी और शांति से रह सकें, ऐसी दुनिया बसाने का समय आ गया है।

11

युद्ध की कला

साराह स्क्वायर

साहित्य और काव्य हमें युद्ध के छिपे पहलुओं से किस तरह अवगत कराते हैं? किसी आंकड़ेबाज़ या इतिहासविद् या पत्रकार की तुलना में किसी कवि के पास ऐसा क्या होता है, जिससे हमें युद्ध को समझने में आसानी हो? सेरा स्क्वायर कॉलेजों में उपयोग की जाने वाली किताब *राइटिंग विद ए थीसिस* की लेखिका हैं, जिसका अभी ग्यारहवां संस्करण चल रहा है, और उन्हें अपनी कविताओं के लिये अनेक पुरस्कार भी मिले हैं, ये कविताएं *दि न्यू क्राइटेरियन, दि ऑक्सफोर्ड मैगज़ीन* और *वोकेब्यूला रिव्यू* आदि में छप चुकी हैं। वे लिबर्टी फंड की साथी भी हैं।

शेक्सपीयर के *हेनरी दि फिफ्थ* की भव्य ऐतिहासिक घटनाओं और दिव्य पात्रों के बीच लगभग खोया हुआ एक पात्र है, जिसे पात्रों की सूची में सिर्फ "बॉय" का नाम दिया गया है। वह हाल के पुराने साथियों के साथ रहता है, जो अपने पुराने दोस्त और अब के राजा द्वारा शुरू किये गए फ्रांस के ख़िलाफ युद्ध में शामिल होने की तैयारियां कर रहे हैं। हमारा ध्यान बॉय की छोटी भूमिका की ओर तब तक नहीं जाता, जब तक चौथे अंक के आखिर में वह पिस्टल नामक विदूषक की मदद करने के लिये फ्रेंच भाषा का थोड़ा अनुवाद करता है, और फिर दर्शकों से मुख़ातिब होकर कहता है, "मुझे इन नौकरों के साथ ही रहना होगा, हमारे कैम्प के सामान के साथ; फ्रांसीसियों के लिये हमारा शिकार करना आसान हो सकता है, यदि उन्हें यह मालूम पड़ जाए कि हमारे कैम्प की रखवाली के लिये लड़कों के अलावा और कोई नहीं है।"

और बॉय के साथ हमारा यही आख़िरी संवाद है, क्योंकि फ्रांसीसियों को यह मालूम पड़ जाता है। सामान की रखवाली करने वाले लड़के मारे जाते हैं, और "बदमाशी का यह कुख्यात नमूना" उस नाटक की एक और खूनी घटना मात्र बनकर रह जाता है, जिसमें युद्ध की विभीषिका और महिमा का संतुलन बनाने की कोशिश की गई है।

लेकिन शेक्सपीयर ने यह करने के लिये समय क्यों गंवाया? एजिनकोर्ट की लड़ाई के दौरान उन्होंने एक ऐसे बेनाम बच्चे को ये संवाद क्यों दिये, जो मरने ही वाला है?

मेरे ख़्याल से इसका उत्तर है कि हमें हेनरी दि फोर्थ के पहले अंक में फाल्स्टाफ के अपने सैनिकों के प्रति निर्दयी रवैये के प्रभाव से बचने के लिये इस बच्चे की कहानी की, और उसके प्रति हमारी भयाकुल प्रतिक्रिया की, जरूरत है। फाल्स्टाफ कहता है, "च–च, फेंकने के लिये अच्छा है; बारूद का शिकार, बारूद का शिकार। इनसे गड्ढे अच्छी तरह भर जाएंगे। ओह, मनुश्य, नाशवान मनुष्य, नाशवान मनुष्य।" मेरे ख़्याल से इसका उत्तर है कि शेक्सपीयर को इस बात की अच्छी समझ थी कि साहित्य सबसे प्रभावशाली काम यह कर सकता है कि – युद्ध के समग्रीकरण, बेनामीकरण के साथ ही – हमें सामान्य व्यक्तियों की बातें सुनने का अवसर दे। और यही क्षमता साहित्य को उन परम्परागत उदारवादियों के लिये बहुमूल्य बनाती है, जो युद्ध का अध्ययन करना और उसे समझना चाहते हैं, जिससे वे युद्ध का अस्तित्व मिटा सकें।

युद्ध हमें बेनाम कर देता है, यह कोई नया कथन नहीं है। ऑरवेल को यह अच्छी तरह पता था, और उनके उपन्यास 1984 में, जिसमें हम ऐसी दुनिया देखते हैं, जो "हमेशा से युद्ध–रत रही है", हम देखते हैं एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था, जो इस बेनामीकरण को बढ़ावा देती है। पुरुषों और महिलाओं को भावनात्मक रिश्ते बनाने से हतोत्साहित किया जाता है। सभी काम सामूहिक होते हैं। हमेशा सभी पर नज़र रखी जाती है, निजी स्पेस नहीं दिया जाता, या निजी सामान भी रखने नहीं दिया जाता, और ऐसा इसलिये कि व्यक्ति–विशेष की जगह पर एक जैसी "मानव यूनिट्स" बना दी जाएं।

जब वाक्लाव हावेल एक ऐसे सर्वाधिकारवादी देश के बारे में लिखते हैं, जहाँ पर हिंसा का दौर गुज़र चुका है और अब दमनकारी शासन स्थापित हो चुका है, तब वे युद्ध–रत देश के बारे में ही बता रहे होते हैं: "सर्वाधिकारवादी सिस्टम के लक्ष्यों और जीवन के लक्ष्यों के बीच एक गहरी खाई है: जहाँ पर जीवन अपने मूल रूप में अनेकात्मकता, विविधता, स्वतंत्र स्व–निर्धारण, और स्व–संगठन यानि स्वयं की स्वतंत्रता की ओर बढ़ना चाहता है, वहीं सर्वाधिकारवादी सिस्टम को चाहिये अनुकूलता, एकरसता और अनुशासन...। यह सिस्टम उसी हद तक लोगों के काम आता है, जब तक वह यह सुनिश्चित नहीं कर लेता कि लोग उसकी सेवा में लगे रहेंगे। इससे आगे कुछ भी, अर्थात् ऐसा कुछ जिससे लोग अपनी पूर्व–निर्धारित भूमिका के बाहर यदि कदम भी रखें तो यह सिस्टम उसे अपने ऊपर आक्रमण समझता है।"

युद्ध और युद्ध–रत देशों की इस बेनामीकरण और विध्वंसक ताकत के विरूद्ध, हमें लेखक की आवाज़ सुनाई देती है।

मार्क ट्वेन अपने लेख *युद्ध की प्रार्थना* में इस शक्ति का उपयोग करते हैं जब उनका देवदूत चर्च में जमा हुए लोगों याद दिलाता है कि विजय की प्राप्ति की उनकी प्रार्थना का एक अर्थ अन्य लोगों का विनाश भी है:

हे परमेश्वर, हमारी तोप के गोलों से उनके सैनिकों के शरीर तहस–नहस करने में हमारी मदद करें; उनके सुंदर मैदानों को उनके देशभक्तों की लाशों से पाटने में हमारी मदद करें: बंदूकों के धमाकों की आवाज़ को उनके घायलों की चीखों से दबा दें, जो दर्द से तड़प रहे हैं; उन ग़रीबों के घरों को आग के तूफान से जलाकर ख़ाक करने में हमारी मदद करें: उनकी मासूम विधवाओं के दिलों में असहनीय दुःख भरने में हमारी मदद करें: उन्हें बेघर करने में, उनके छोटे–छोटे बच्चों को उनकी वीरान ज़मीन पर अकेले ... वे आपसे मौत मांग रहे हों, पर उन्हें वह भी नसीब नहीं हो ऐसी हालत में दर–दर भटकने को मजबूर करने में हमारी मदद करें।

जब दुश्मन बिना नाम की भीड़ नहीं हो, तो उस पर गोली चलाना बहुत मुश्किल होता है।

और जब व्यक्ति बेनामी भीड़ का हिस्सा नहीं हो, तब तो गोलियां चलाना और भी मुश्किल होता है। इसीलिये अनुशासन इतना ज़रूरी होता है। हेनरी रीड की कविता "वसंत का आगमन" जो द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लिखी गई थी, हमें हथियार चलाने की एक कक्षा में ले जाती है, जहां नए रंगरूटों को सैनिक बनाया जा रहा है। ड्रिल सार्जेंट की दनदनाती आवाज़ और उसके द्वारा सिखाए जाने वाले अनुशासन के साथ ही कक्षा के बाहर दिखाई दे रहे वसंत के खूबसूरत दिन और प्रकृति की सुंदरता का वर्णन किया गया है।

आज हम हथियारों के पुर्ज़ों के नाम सीख रहे हैं। कल,
हमें उन्हें साफ करना सिखाया था। और कल सुबह हम सीखेंगे,
फायरिंग के बाद क्या करना चाहिये। लेकिन आज,
आज हम पुर्ज़ों के नाम सीख रहे हैं। बिही के फूल
आस–पास के बग़ीचों में मूंगे की तरह चमक रहे हैं,
और आज हम पुर्ज़ों के नाम सीख रहे हैं।

लेकिन युद्ध में होने वाला बेनामीकरण केवल इसीलिये ख़तरनाक नहीं है कि वह व्यक्तियों को एक समान कल–पुर्ज़ों में बदल देता है। ये कल–पुर्ज़े जब युद्ध में जाते हैं तो उनके साथ जो होता है, वह दिल दहला देना वाला होता है।

और यहीं पर लेखक की आवाज़ सबसे महत्वपूर्ण होती है, और यहीं पर ऐसे लेखक की आवाज़ का महत्व और भी बढ़ जाता है, जो खुद युद्ध का भाग रह चुका हो।

ऐसी आवाज़ों में महानतम आवाज़ों में से एक है विल्फ्रेड ओवेन की, जिनकी कविताएं, जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान युद्ध के मोर्चे पर लिखी गई थीं, युद्ध के बेनामीकरण को प्रदर्शित करती हैं, जिससे उसके विरुद्ध लड़ा जा सके। उनकी "एंथेम फॉर डूम्ड यूथ" इस सवाल के साथ शुरू होती है, "जानवरों की तरह कट–मरने वालों के लिये कैसी सांत्वना?" और उनकी कविता में उनकी चिंता है उन व्यक्तियों की त्रासदी, जिन्हें मरने के लिये सामूहिक रूप से भेजा गया है। उनकी सबसे मशहूर कविता, "मीठा और गर्व–भरा अहसास" शुरू होती है सैनिकों के एक दल के दर्शन से, जो "झुकी पीठ, जैसे बूढ़े भिखारी बोरा लादे हों, / टकराते हुए घुटने, खांसती छातियों के साथ हम बर्फ में चले जा रहे हैं" और फिर एक सैनिक के साथ हम जाते हैं, जिसके पास गैस के हमले में मास्क नहीं होता।

लेकिन कोई अब भी चीख रहा है और लड़खड़ा रहा है
आग या धधकते चूने से घिरा होने की तरह छटपटा रहा है –
धुंध और गाढ़ी हरी रोशनी में धुंधला दिखाई देता हुआ,
हरे समुद्र में मैं उसे डूबते हुए देख रहा था।
मेरे इस बेबस दृश्य पर मेरे सारे सपनों में
वह मेरी ओर बढ़ा चला आता है,
हलक़ से घिग्घी बंधी आवाज़ निकालता, डूबता हुआ

इसके बाद, ओवेन पाठक से मुख़ातिब होकर कहते हैं, "यदि आप वह देख पाते, जो मैंने देखा, और सुन पाते, जो मैंने सुना, तो आप युद्ध के गौरव की बात सोचते भी नहीं।" और इस तरह, उनकी कला द्वारा, वह अनाम सैनिक एक व्यक्ति हो जाता है, और उसकी मौत हमारा निजी दुःख बन जाती है।

यीट्स अपनी कविता "ईस्टर 1916" में ऐसा ही कुछ कहते हैं, जिसके आख़िर में ईस्टर के विद्रोह में मरने वालों के नाम दिये हैं।

मैं इसे छंद में लिखता हूं – मैकडोना
और मैकब्राइड और कॉनली और पियर्स
आज और भविष्य में, जहां भी हरा वेष पहना जाता है,
बदल जाते हैं, पूरी तरह बदल जाते हैं:
एक भीषण सुंदरता जन्म लेती है।

मृतकों के नामों की सिर्फ एक सूची बना देने से जो जानें गई हैं, वो जानें थीं, सिर्फ गिनती की संख्या नहीं थी, यह पता चलता है। और साहित्य आग्रह करता है कि हम उन जानों पर और उन आवाजों पर ध्यान दें। हम सोचने लगते हैं कि हेनरी दि फिफ्थ में उस बॉय का नाम क्या रहा होगा?

जहां पर यीट्स को उन व्यक्तियों की मौत में, भीषण ही सही, एक सुंदरता दिखाई देती है, वहीं इज़राइल के कवि येहुदा अमीकाई उसमें सिर्फ निराशा देखते हैं।

उस बम का व्यास तीस सेंटीमीटर था
और उसका असर सात मीटर के व्यास में हुआ
जिससे चार मरे और ग्यारह घायल हुए।
और इनके आस–पास, एक बड़े घेरे में
जिसमें दर्द और काल है, दो अस्पताल बिखरे हैं
और एक कब्रिस्तान भी, लेकिन वह युवती
जिसे उसके ही शहर में दफनाया गया जो,
सौ किलोमीटर से भी ज़्यादा दूर था,
उससे यह घेरा काफी बड़ा हो जाता है,
और उसकी मौत का शोक मनाता एक अकेला आदमी
जो समुद्र के दूसरे तट पर दूसरे देश में बैठा है
सारी दुनिया को इस घेरे में समेट लेता है।
और मैं उन अनाथों के रोने का उल्लेख भी नहीं करूंगा
जो परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँचता है और उससे भी परे,
और इस घेरे को सीमाओं से परे
और ईश्वर से भी परे ले जाता है।

जैसे ओवेन की "मीठा और गर्व–भरा अहसास" गैस के हमले को नज़दीक से दिखाती है और फिर मांग करती है कि पाठक इस बारे में सोचे कि उसके लिये इसका क्या मतलब है, वैसे ही अमीकाई आग्रह करते हैं कि उनके पाठक सोचें कि एक छोटे बम का क्या अर्थ है, जब हम उसके असर के घेरे को समझना शुरू करते हैं। उस बम से भले ही सिर्फ चार लोग मरे हों, लेकिन उसका असर "परमेश्वर के सिंहासन तक और उससे भी परे" पहुँचता है।

युद्धों की बड़ी संख्याओं का अध्ययन करने के अपने फायदे हैं। हमें पता होना चाहिये कि हम कितनी क़ीमत चुकाते हैं, हमने कितने सैनिक खो दिये, कितने नागरिक मारे गए। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिये कि ये बड़े आंकड़े, हमें चाहे जितनी जानकारी देते हों, हमें सब कुछ नहीं बताते हैं। एमी लोवेल जिसे "युद्ध नामक पैटर्न" कहती हैं सिर्फ उसी पर ध्यान देने से उस पैटर्न की बारीकियां छिप जाती हैं और हम उन व्यक्तियों के जीवन के बारे में भूल जाते हैं, जिनके कारण वह बारीकियां हैं।

अनेक लेखकों ने उस निरर्थकता की भावना के बारे में बात की है, जो युद्ध के समय में लेखक होने पर मन में आती है, जब लोगों को जानकारी चाहिये होती है, कला नहीं। पाब्लो नेरूदा इसका मशहूर और कड़वा स्पष्टीकरण देते हैं कि वे युद्ध के समय में अधिक, या अधिक अच्छा, क्यों नहीं लिखते:

आप पूछेंगे: उनकी कविता अब हमसे
सपनों के बारे में, उनके देश के उस विशाल
ज्वालामुखी के बारे में क्यों नहीं बताती?
आओ और देखो सड़कों पर बहते खून को
आओ और देखो सड़कों पर बहते खून को
आओ और देखो सड़कों पर बहते खून को!

युद्ध के समय में, वे कहते हैं, इसके अलावा और क्या कहा जा सकता है कि "आओ और देखो सड़कों पर बहते खून को"? और जब सिर्फ यही कहना है, तो कविता की क्या ज़रूरत है?

लेकिन ऑडेन हमें बताते हैं कि लेखक की आवाज़ का उपयोग सड़कों पर बहते खून को व्यक्तिगत बनाने में किया जा सकता है और किया जाना चाहिये और उसका महत्व बताया जाना चाहिये। यह सिर्फ खून नहीं है; यह किसी व्यक्ति का खून है। व्यक्ति की आवाज़ का उपयोग युद्ध के छिपे झूठ के विरुद्ध व्यक्ति के मूल्य की रक्षा करने के लिये ही किया जाना चाहिये।

मेरे पास सिर्फ एक आवाज़ है जो छिपे झूठ को उघाड़ती है,
राह चलते कामुक आदमी के दिमाग में बैठा रोमांटिक झूठ
और आधिकारिक असत्य जिसकी अट्टालिकाएं आसमान छूती हैं:
देश जैसी कोई चीज़ नहीं होती
और किसी का भी अ़स्तित्व अकेला नहीं है;
भूख किसी को भी विकल्प नहीं देती
नागरिकों को या पुलिस को;
हम या तो एक–दूसरे से
प्रेम करें या मर जाएं।

12

युद्ध की प्रार्थना

मार्क ट्वेन

सैम्युअल लैंगहॉर्न क्लीमेंस, जिन्हें मार्क ट्वेन के नाम से ज़्यादा जाना जाता है, अमेरिकन इतिहास के महानतम लेखकों में से एक थे। *दि एडवेंचर्स ऑफ टॉम सॉयर और एडवेंचर्स ऑफ हकलबेरी फिन* उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

उस दौरान बड़ी गहमागहमी थी। देश में युद्ध छिड़ा हुआ था, सभी ने हथियार उठा लिये थे, हर किसी के सीने में देशप्रेम की ज्वाला धधक रही थी; नगाड़े बज रहे थे, बैंड बज रहे थे, खिलौना पिस्तौलें ठांय–ठांय कर रही थीं, पटाख़े फुसफुसा रहे थे; हर एक हाथ में और छतों और बालकनियों की कतार में कई तरह के झंडे धूप में फड़फड़ा रहे थे; रोज़ाना उस चौड़ी सड़क पर नौजवान स्वयंसेवक अपने नए यूनिफॉर्म पहनकर इतराते हुए परेड करते थे, उनके मां–बाप, बहनें, प्रेमिकाएं गर्व के साथ भावनाओं से तर आवाज़ में उनका हौसला बढ़ाते थे; हर रात भीड़ भरी सभाएं होती थीं, जिनमें देशप्रेम से भरी बातें सुनकर भीड़ के दिल गहराई तक हिल जाते थे, और जिन्हें सुनते हुए भीड़ की ओर से आंसुओं के बहाव के साथ ही तालियों की गड़गड़ाहट अक्सर हो जाया करती थी; चर्च में पादरी अपने झंडे और अपने देश के प्रति श्रद्धा रखने की बातें किया करते थे, और युद्ध के देवता की प्रार्थना हमारा साथ देने के लिये ऐसे शानदार शब्दों में किया करते, जिससे हर सुनने वाला हिल जाता था।

यह वास्तव में खुशनुमा और शानदार ज़माना था, और जो कुछ पांच–छह बददिमाग लोग ऐसे थे, जो युद्ध का विरोध करते या उसके औचित्य पर सवाल उठाते थे, उन्हें तुरंत ही ऐसी कड़ी और गुस्से भरी चेतावनी मिलती, जिसकी वजह से वे खुद की भलाई इसी में समझते कि वे चुपचाप वहाँ से खिसक लें और ऐसी बातें आगे से नहीं करें।

रविवार का दिन आया – अगले दिन बटालियनें सीमा पर जाने वाली थीं; चर्च खचाखच भरा था; सैनिक वहीं थे, उनके जवान चेहरे युद्ध की भावना से चमक रहे

थे – वीरता से आगे बढ़ना, तेज़ी से दौड़कर आक्रमण करना, तप्रेमारों की खनक, दुश्मनों का मैदान छोड़ना, घमासान लड़ाई, चारों ओर फैला धुआं, दुश्मनों का पीछा, और फिर उनका हथियार डाल देना!

फिर युद्ध से घर लौट कर आना, आग में तपे हुए हमारे हीरो, उनका स्वागत होना, उन पर प्रेम की बरसात होना और उन्हें उनकी तारीफ के समुद्र में डुबा दिया जाना! सैनिकों के साथ उनके अपने लोग बैठे थे, गर्व से भरे, खुश और ऐसे पड़ोसियों और दोस्तों की ईर्ष्या के पात्र, जिनके अपने बेटे या भाई नहीं थे, जो गर्व से मैदान में जाते, झंडे को ऊँचा रखते, या असफल होने पर सम्मान की मौत मरते। चर्च में बाइबल का पाठ शुरू हुआ; ओल्ड टेस्टामेंट में से एक युद्ध का प्रसंग पढ़ा गया; पहली प्रार्थना कही गई; उसके बाद ऐसा ऑर्गन वादन हुआ, जिससे इमारत हिल गई, और सभी लोग एक साथ उठ खड़े हुए, आंखों में तेज़ और दिल की धड़कनें भी तेज़ हो गईं, और सभी ने एक साथ वह शानदार बात कही–

सर्वशक्तिमान ईश्वर! आप, जो सबको आदेश देते हैं, बादलों की गड़गड़ाहट आपका नगाड़ा है और बिजली आपकी तप्रेमार!

फिर एक "लम्बी" प्रार्थना की बारी आई। इतनी सुंदर और हिला देने वाली भाषा में इतनी भावनाएं पहले किसी ने नहीं सुनी थीं। इस प्रार्थना का अर्थ था, कि सदैव–दयालु और मेहरबान परमपिता हमारे महान युवा सैनिकों का ध्यान रखेंगे, और उन्हें उनके देशहित के काम में सहायता करते हुए उनका हौसला बढ़ाएंगे; उन्हें आशीर्वाद देंगे, युद्ध में और ख़तरे से उनकी रक्षा करेंगे, उन्हें अपने मज़बूत कंधों पर उठा कर चलेंगे, उन्हें ताकतवर बनाएंगे, आत्म–विश्वास प्रदान करेंगे और इस खून–ख़राबे में उन्हें अपराजेय; बनाएंगे; दुश्मन को कुचलने में उनकी मदद करेंगे, उन्हें और उनके झंडे को और उनके देश को कभी ख़त्म नहीं होने वाला गौरव और सफलता देंगे––

तभी एक बूढ़ा अजनबी अंदर आया और पैरों की आवाज़ किये बिना धीरे–धीरे आगे बढ़ा, उसकी निगाहें पादरी पर टिकी हुई थीं, उसका लंबा बदन उसके पैरों तक आए चोग़े से ढका था, उसका सिर ढका नहीं था, उसके सफेद बाल उसके कंधों तक आ रहे थे, उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था, भुतहा पीला। सभी की निगाहें उस पर थीं और सभी आश्चर्य कर रहे थे, और वह चुपचाप चलता हुआ आया; बिना रुके वह पादरी की ओर मंच पर चढ़ा और इंतजार की मुद्रा में खड़ा हो गया। पादरी साहब आंखें बंद किये हुए, उसकी मौजूदगी से अनजान, अपनी रौ में बहे जा रहे थे, और आख़िरकार

अपनी प्रार्थना को इन शब्दों में ख़त्म किया, "हमारे हथियारों को धन्य करें, हमें विजयी बनाएं, ओ परमपिता परमेश्वर, आप ही हमारी भूमि और झंडे के रखवाले हैं!"

उस अजनबी ने उनकी बांह छूकर उन्हें एक ओर हटने का इशारा किया – जिसे हैरान पादरी ने मान लिया – और उनकी जगह पर खड़ा हो गया। कुछ पलों तक उसने गंभीर निगाहों से जिनमें एक विचित्र चमक थी, स्तब्ध दर्शकों की ओर देखा; और फिर एक धीर–गंभीर आवाज़ में कहना शुरू किया:

"मैं सीधा सिंहासन की ओर से आया हूं – परम शक्तिमान परमेश्वर का संदेश लाया हूं!" इन शब्दों ने सभी पर मानों हथौड़ा चला दिया; उस अजनबी ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। "उन्होंने अपने सेवक यानि आपके पादरी की प्रार्थना सुनी है, और वे उसे पूरा करने के लिये तैयार हैं, यदि मैं, उनका संदेशवाहक, अब जो कहने जा रहा हूं, उसे समझने के बाद भी आप लोग ऐसा ही चाहते हों – मेरा मतलब है पूरी तरह समझने के बाद, क्योंकि यह प्रार्थना भी वैसी ही है, जैसी अनेक व्यक्तियों की होती है, जिसमें प्रार्थना करने वाला भी नहीं जानता कि इसमें क्या मांगा गया है – यदि वह थोड़ा रुके और सोचे तो उसे पता चल सकता है।

"ईश्वर के और आपके सेवक ने अपनी प्रार्थना कह दी है। क्या वह रुका, और उसने इस बारे में सोचा है? क्या ये एक ही प्रार्थना है? नहीं, ये दो हैं – एक कही गई और दूसरी अनकही। दोनों ही उस महान पिता तक पहुँची हैं, जो सभी की सुनता है, कही गई भी और अनकही भी। ज़रा सोचिये – इस पर ग़ौर कीजिये। यदि आपको खुद के लिये आशीर्वाद चाहिये, तो सावधान! कहीं आप इसके साथ अपने पड़ोसी पर कहर तो नहीं ढा रहे। यदि आप अपनी फसल के लिये बारिश की प्रार्थना करते हैं, क्योंकि आपकी फसल को इसकी ज़रूरत है, तो ऐसा करके आप अपने किसी पड़ोसी की फसल को नुकसान पहुँचा सकते हैं, क्योंकि उसकी फसल को इसकी ज़रूरत नहीं है।

"आपने अपने सेवक की प्रार्थना सुनी – जो उसने कही है। मुझे परमेश्वर ने इसलिये भेजा है कि मैं आपको इसका दूसरा भाग कहकर सुनाऊं – वह भाग जोकि पादरी जी के – और आप लोगों के भी – दिल में है और चुपचाप इसकी प्रार्थना की गई है। और ऐसा अनजाने में बिना सोचे–समझे? ईश्वर जानता है कि ऐसा ही है! आपने ये शब्द सुने 'हमें विजयी बनाएं, ओ परमपिता परमेश्वर!' इतना ही काफी है। जितनी बड़ी प्रार्थना कही गई है, वह इन कुछ शब्दों में समाई हुई है। इससे ज़्यादा की ज़रूरत नहीं है। जब आपने विजय की कामना की है, तब उसके साथ ही आपने

विजय के उन परिणामों की भी कामना कर ली है, जिनका ज़िक्र नहीं किया जाता – लेकिन वे परिणाम आते हैं, ज़रूर आते हैं। परमेश्वर के कानों पर इस प्रार्थना का अनकहा भाग भी आया है। उन्होंने मुझे आदेश दिया है कि मैं उसे शब्दों मे बयान करूं। तो सुनिये!

"हे परमपिता परमेश्वर, हमारे युवा देशभक्त, जो हमारे जिगर के टुकड़े हैं, युद्ध के मैदान में जा रहे हैं – आप उनके साथ उनके पास ही रहिये! उनके साथ – भावनात्मक रूप से – हम भी आगे बढ़ रहे हैं अपनी शांत ज़िंदगी छोड़कर, जिससे हम दुश्मन के दांत खट्टे कर सकें। हे परमेश्वर, हमारी तोप के गोलों से उनके सैनिकों के शरीर तहस–नहस करने में हमारी मदद करें; उनके सुंदर मैदानों को उनके देशभक्तों की लाशों से पाटने में हमारी मदद करें; बंदूकों के धमाकों की आवाज़ को उनके घायलों की चीखों से दबा दें, जो दर्द से तड़प रहे हैं; उन ग़रीबों के घरों को आग के तूफान से जलाकर ख़ाक करने में हमारी मदद करें; उनकी मासूम विधवाओं के दिलों में असहनीय दुःख भरने में हमारी मदद करें; उन्हें बेघर करने में, उनके छोटे–छोटे बच्चों को उनकी वीरान ज़मीन पर अकेले, भूखे–प्यासे, फटे कपड़ों में, सूरज की तपन और बर्फीली ठंड सहन करते हुए, दुःखों से परेशान, जिनकी संवेदनाएं मर गई हों, ऐसी हालत में, वे आपसे मौत मांग रहे हों, पर उन्हें वह भी नसीब नहीं हो, ऐसी हालत में दर–दर भटकने को मजबूर करने में हमारी मदद करें –

"हम आपसे प्रेम करते हैं प्रभु, और हमारी भलाई के लिए आप उनकी आशा–आकांक्षाओं पर तुषारापात करें, उनका जीना कष्टमय कर दें, उनकी तीर्थयात्रा कभी पूरी न हो, उनका चलना दूभर कर दें, उनकी राह उन्हीं के आँसुओं से कीचड़ से भर जाए, वहाँ पड़ी बर्फ उन्हीं के खून से लाल कर दो प्रभु!

"ऐसा हमारे लिये करें, क्योंकि हम आपसे प्रेम करते हैं, आप, जोकि प्रेम का सागर हैं, और जो हर उस व्यक्ति का आसरा हैं और हर ऐसे व्यक्ति के मित्र हैं, जो सताए गए, दुखियारे हैं और दिलो–जान से आपकी सहायता की अपेक्षा करते हैं। आमीन।"

(कुछ देर शांति के बाद) "आपने ऐसी प्रार्थना की है; और यदि आप अब भी ऐसा ही चाहते हैं, तो बोलिये! परमपिता का संदेशवाहक आपके बोलने की राह देख रहा है।"

बाद में सभी ने ऐसा मान लिया कि वह आदमी पागल था, क्योंकि वह एकदम बेसिर–पैर की बातें कर रहा था।

13

मीठा और गर्व–भरा एहसास

विल्फ्रेड ओवेन

विल्फ्रेड ओवेन एक अंग्रेज़ कवि और सैनिक थे। उनकी मृत्यु नवंबर 4, 1918 को युद्ध के मैदान में तब हुई, जब पहला विश्व युद्ध समाप्त कराने वाली संधि पर हस्ताक्षर होने में एक हफ्ता रह गया था।

झुकी पीठ, जैसे बूढ़े भिखारी बोरा लादे हों,
टकराते हुए घुटने, खांसती छातियों के साथ हम बर्फ में चले जा रहे थे,
भुलाए न भूलने वाली आग की ओर पीठ फिरा कर
हमने अपनी सुदूर आरामगाह की ओर चलना शुरू किया।
आदमी नींद में आगे बढ़ रहे थे।
कई लोगों के जूते भी नहीं थे
फिर भी लंगड़ाते, पैरों से खून रिसते हुए बढ़ रहे थे।
सभी लंगड़े थे; सभी अंधे;
थकान से चूर; अपने पीछे गिरने वाले
तोप के गोलों के थके हुए धमाकों से भी अनजान।
गैस! गैस! जल्दी, जवान! – हाथ से फिसल जाने की खुशी,
समय रहते किसी तरह हेलमेट पहन पाना;
लेकिन कोई अब भी चीख रहा है और लड़खड़ा रहा है,
आग या धधकते चूने से घिरा होने की तरह छटपटा रहा है...
धुंध और गाढ़ी हरी रोशनी में धुंधला दिखाई देता हुआ,
हरे समुद्र में मैं उसे डूबते हुए देख रहा था।
मेरे इस बेबस दृश्य पर मेरे सारे सपनों में
वह मेरी ओर बढ़ा चला आता है,
हलक से घिग्घी बंधी आवाज़ निकालता, डूबता हुआ।
यदि अपने कुछ दबे हुए सपनों में आप भी वहां जा सकें
उस गाड़ी के पीछे जहां हमने उसे फेंका था,
और उसकी सफेद आंखें उसके चेहरे में तड़पती हुई देखें,
उसका लटका चेहरा, जैसे षैतानी पापों से लथपथ;
यदि आप सुन सकें, हर धक्के पर, उस खून की आवाज़

जो बह रहा है धूल–सने फेफड़ों से,
कैंसर की तरह बदनुमा, कड़वा मासूम जुबानों पर
असाध्य छालों की कड़वाहट जैसा,
मेरे दोस्त, आप बच्चों को इतनी षान से कभी नहीं बताएंगे
जिनके मन में गौरव प्राप्त करने के सपने हों,
वह पुराना झूठ; मीठा और गर्व–भरा एहसास है,
अपने देश के लिये जान कुर्बान कर देना।

14

बूढ़े और जवान आदमी की नीतिकथा

विल्फ्रेड ओवेन

विल्फ्रेड ओवेन एक अंग्रेज़ कवि और सैनिक थे। उनकी मृत्यु नवंबर 4, 1918 को युद्ध के मैदान में तब हुई, जब पहला विश्व युद्ध समाप्त कराने वाली संधि पर हस्ताक्षर होने में एक हफ्ता रह गया था।

तब अब्राम उठे, और लकड़ी काटी,
और अपने साथ आग ली, और एक चाकू भी।
और जब राह में दोनों विश्राम कर रहे थे,
तो उनके बड़े बेटे आइज़क ने पूछा, पिताजी,
हमने तैयारी तो कर ली, आग है, हथियार है,
लेकिन आहुति के लिए मेमना कहाँ है?
तब अब्राम ने बालक को बेल्ट और पट्टों से बांध दिया,
और वहाँ खंदक और मुंडेर बनाईं,
और अपने बेटे की बलि चढ़ाने के लिए हथियार निकाला।
अरे रुको! तभी एक देवदूत ने स्वर्ग से पुकारा,
और कहा, बच्चे को मारो नहीं,
उसे कुछ मत करो। देखो,
वहाँ झाड़ी में एक बकरे के सींग उलझ गए हैं;
बच्चे के बदले उस घमंडी बकरे की आहुति दो।
लेकिन बुजुर्ग ने उसकी बात नहीं मानी और अपने बेटे को मार ड़ाला,
और साथ ही एक–एक कर यूरोप के आधे बेटों को भी।

15

शांति की शुरुआत आपसे होती है

कैथी राइसेनवित्ज़

आप, इस पुस्तक के पाठक, दुनिया को अधिक शांतिपूर्ण बनाने के लिए क्या कर सकते हैं? आप क्या फर्क ला सकते हैं? ऐसे कौन से काम हैं, जो आप कर सकते हैं, और इसके लिए आपके क्या साधन हैं? कैथी राइसेनवित्ज़ *यंग वॉइसेज़* की संपादक हैं और स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी के लिए कार्य करती हैं। राजनीति और संस्कृति पर उनके लेख *फोर्ब्स, शिकागो ट्रिब्यून, रीज़न, वीआइसीई मदरबोर्ड* और *वॉशिंगटन एक्ज़ामिनर* जैसे प्रकाशनों में छपे हैं।

युद्ध हमारे चारों ओर है, फिर भी छिपा हुआ है। एक समय था जब युद्धों की शुरुआत और अंत अदृश्ट हुआ करते थे, लेकिन अब हम सतत संघर्ष के दौर में जी रहे हैं। युद्ध अब देशों के ख़िलाफ नहीं, "ड्रग्स" और "आतंक" जैसे अमूर्त अस्तित्वों के ख़िलाफ छेड़े जा रहे हैं, इसलिए यह जान पाना संभव नहीं है कि जीत हुई भी या नहीं। आतंक एक रणनीति है और ड्रग्स एक वस्तु; उन्हें पारम्परिक शत्रु की तरह "हराया" नहीं जा सकता। इसलिए उनके ख़िलाफ युद्ध हमेशा चलता रहेगा।

युद्ध ज़िंदगी मिटाते हैं, साथ ही कानून के राज को और नागरिक स्वतंत्रता को कमज़ोर करते हैं। यही वे दो संस्थाएं हैं, जो नागरिक समाज का होना संभव करती हैं। निर्धारित निशानों को बिना किसी मुक़दमें के उड़ा देने के लिए गुप्त ड्रोन्स का इस्तेमाल किया जाता है। असल और काल्पनिक दुश्मनों के ख़िलाफ युद्ध संचालन के लिए विशाल जासूसी कार्यक्रम शुरू किए जाते हैं और उन्हें आवश्यक ठहराया जाता है। सेनाएं "विफल देशों" में तैनात की जाती हैं, जहाँ वे अक्सर स्थानीय संतुलन को बिगाड़ती ही हैं। राजनैतिक व्यवस्था को गिराकर अराजकता फैलाने के लिए सैन्य बलों का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि सैन्य हस्तक्षेप और कब्ज़े को न्यायोचित ठहराया जा सके। स्थानीय "व्यवस्था अधिकारियों" को सैन्य आक्रमण की इकाईयों में बदल दिया जाता है, जो स्थानीय नागरिकों से युद्ध भूमि के दुश्मन जैसा बर्ताव करने लगते हैं।

इराक, अफग़ानिस्तान, चेचेन्या, जॉर्जिया और क्रीमिया पर आक्रमण और लीबिया, सीरिया, सोमालिया और दारफूर के सशस्त्र संघर्ष आदि घटनाओं को तथा कई अन्य देशों के संघर्षों को साथ मिलाकर देखें, तो हमें पता चलता है कि अधिकांश सहस्त्राब्दियों में शांति थी ही नहीं। हम एक युद्धरत दुनिया में बड़े हुए हैं, चाहे वह घोषित हो या अघोषित, एकतरफा हो या बहुपक्षीय। तब हम उस अज्ञात आदर्श "शांति" के पक्षधर कैसे हो सकते हैं?

इसके बावजूद, पिछले काफी समय से रुझान युद्धों से दूर ही जा रहा है। अधिक से अधिक लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी पिछली पीढ़ियों की तुलना में अधिक शांतिपूर्ण है। वैश्विक व्यापार और संचार, जो शांति लाने के साधन हैं, ने आज की पीढ़ी को वैश्विक रूप से सबसे अधिक जागृत पीढ़ी बना दिया है – सही अर्थों में वैश्विक नागरिक।

अधिकांश जगहों पर अधिकांश लोगों की हिंसा से मृत्यु होने की संभावना कम हो गई है, लेकिन कई देशों के नागरिकों के लिए देश द्वारा चलाए जा रहे हिंसात्मक अभियान अब हमेशा की बात हो गए हैं। ऐसे सतत चलने वाले युद्धों के शिकार जनता की नज़रों से छिपे रहते हैं: ड्रोन हमलों में मारे गए निरपराध नागरिक, ड्रग–युद्ध में गैंग और पुलिस की हिंसा के शिकार, सैनिक संघर्ष में मारे जाने वाले सैनिक तथा असैनिक कर्मी, तथा अधिकांश लोगों के लिए सबसे दुखदायक शिकार, जो हैं आज़ादी, मर्यादित सरकार और कानून का राज।

अपनी पीढ़ी शांति की रक्षा के लिए क्या कर सकती है? तीन कदम: *सीखें, विस्तार करें, संगठित करें।*

सीखें

युद्ध की मांग करने वाले एक अनभिज्ञ, आत्म–संतुष्ट और भरोसा करने वाली जनता के समर्थन के भरोसे ऐसा करते हैं। "युद्ध अर्थव्यवस्था में गतिशीलता लाते हैं" जैसे आर्थिक भुलावे, अफवाहें, धोखा और प्रश्न पूछने वाले को ग़द्दार बताकर लोगों से झूठी देशभक्ति के लिए आह्वान करना, आदि से लोग या तो युद्ध की मांग करने लगते हैं या सरकार पर आँख मूंदकर भरोसा कर लेते हैं। सेना का इस्तेमाल करने के संभाव्य परिणामों की सही जानकारी देने की बजाय केवल बड़े–बड़े वादे किए जाते हैं। सेना के इस्तेमाल के अवांछित परिणाम या अतिरिक्त जोखिम होने को सीधे–सीधे नकार दिया जाता है। जानकारी रखना, फायदे, जोखिम, लेन–देन को समझना, तथ्य खोजना और राजनेताओं की मंशा पर संदेह व्यक्त करना और उन्हें चुनौती देना, ये सभी शांति बरकरार रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह किताब एक अच्छी शुरुआत

है, लेकिन जो शांति के लिए कार्य करना चाहते हैं, उन्हें इससे भी और बहुत कुछ करना पड़ेगा।

हमें स्वयं को विदेश मामलों तथा सैन्य आक्रमण के इतिहास पर शिक्षित करना होगा, विशेषतः शिकार लोगों के नज़रिए से इसे देखना होगा। युद्ध एक गंभीर मसला होता है और हमसे तथ्यों, अवांछित परिणामों और पूरी लागत की ओर, साथ ही जीवन, आज़ादी और खुशियों पर परिणाम की ओर ध्यान देने की मांग करता है।

इस पुस्तक के निबंध पढ़ लेने के बाद इसके अंत में दिए "अधिक पठन के सुझाव" भी ग़ौर करने लायक हैं। अधिक विस्तृत "नीति–केन्द्रित" जानकारी तथा विश्लेषण का एक उत्कृष्ट स्रोत है www.cato.org/foreign-policy-national-security. इंटरनेट तक मुक्त पहुँच वाले देशों में सर्च इंजन भी जानकारी के बहुमूल्य स्रोत साबित होते हैं (लेकिन तभी जब स्रोतों पर पूर्ण विश्वास हो)।

विस्तार करें

कभी–कभी, लोगों को शांति के लिए आवाज़ उठाने के लिए इतनी ही प्रेरणा काफी होती है कि वे किसी और को इस पर बोलते हुए सुनें। आप वह कोई और व्यक्ति हो सकते हैं। जब भी आप किसी को हिंसा की तरफदारी करते सुनें, तो शांति और सहमति के लिए अपना समर्थन अवश्य व्यक्त करें। यह निजी बातचीत हो सकती है (ऐसे समय गुस्से की बजाय कारण बताएं, जिससे आपके आसपास के लोग नारों से परे हिंसा का वीभत्स रूप, उसके कारण होने वाली बरबादी और कष्ट देख सकें), फेसबुक या अन्य सामाजिक मीडिया हो सकता है, सार्वजनिक सभा हो सकती है, संपादक के नाम पत्र हो सकते हैं, रेडियो कार्यक्रम में फोन हो सकता है, वाद–विवाद स्पर्धा हो सकती है या आपके विद्यार्थी समाचारपत्र में लेख भी हो सकता है। आमतौर पर आप पाएंगे कि आप अकेले नहीं हैं, और आपकी आवाज़ में दूसरों की आवाज़ मिलकर उसका विस्तार होगा। वे दूसरे, जो शायद चुप रहते।

शांति के महान प्रवक्ता फ्रेडरिक बास्तियात की एक प्रमुख नसीहत यह थी कि सरकार की नीतियों के केवल "दृश्य" ही नहीं, "अदृश्य" प्रभाव भी होते हैं। राजनेताओं के कुछ करने के आदेश से क्या नहीं हुआ? युद्ध के लिए जीपें और टैंक बनाए गए हैं, इसका अर्थ कार और ट्रैक्टर नहीं बनाए गए। हथियारों की फैक्टरी में रोज़गार निर्मित हुआ, इसका अर्थ शांतिपूर्ण उद्योंगों में रोज़गार नष्ट हुआ। हर एक विकल्प की एक क़ीमत होती है, कुछ छोड़ना पड़ता है, कुछ चीज़ें नहीं हो पातीं, कुछ चीज़ें नहीं दिख पातीं। युद्ध भी ऐसा ही है। यह एक विकल्प है और सभी विकल्पों की एक कीमत

होती है। लोगों को यह कीमत समझ पाने में, "अदृश्य" को देख पाने में मदद करना युद्ध की मूर्खता और दुस्साहस को समाप्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा।

यदि आप ऐसे देश में रहते हैं, जहाँ की सरकार जनता को कम से कम कुछ प्रतिसाद देती हो, तो आप अपना नज़रिया अपने चुने हुए प्रतिनिधि को बता सकते हैं। एक निजी तौर पर, सुव्यवस्थित रूप से कही गई बात नेताओं को बताती है कि अन्य कई लोग हैं, जो आप ही की तरह सोचते हैं। अधिकांश लोगों की धारणा के विपरीत, वे अक्सर ऐसी बातों पर ध्यान देते हैं (जबकि गुस्से या तैश में कही गई बातों की उपेक्षा होती है)।

यदि आप कोई ऑनलाइन लेख या अध्ययन देखें, जिसमें शांति के पक्ष में अच्छे तर्क दिए गए हों, तो आप उसे ट्विटर, फेसबुक, वीके, अपने ब्लॉग या अन्य मीडिया के ज़रिए साझा करें। जब अन्य लोग उस पर टिप्पणी करें, तो उसका जवाब तर्कपूर्ण दें और उनके दिल और दिमाग दोनों को शांति की ओर आकर्षित करने का प्रयास करें। प्रत्येक संवाद में गुस्से के बजाय प्रबोधन पर ज़ोर दें। निन्दा करने की बजाय यकीन दिलाएं। हमारी भड़ास निकालना कतई ज़रूरी नहीं है, इसके बजाय दूसरों को शांति की राह चलने के लिए प्रोत्साहित करें।

सारांश, शांति, प्रेम और आज़ादी के लिए अपने उत्साह को साझा करें। (आप इस पुस्तक की प्रतियाँ अपने परिवार, मित्रों या सहपाठियों को दे सकते हैं – और दे सकें, तो अपने प्रोफेसरों को भी)।

संगठित करें

यदि आप कॉलेज में हैं, तो *स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी* की शाख़ा खोलें और सक्रिय हो जाएं। यह आसान है, संतुष्टि देता है और आप शांति, प्रेम और आज़ादी पर समान विचार रखने वाले लोगों से मिल सकेंगे। शाख़ा में सदस्य कैसे बनें या शाख़ा शुरू कैसे करें, यह जानने के लिए studentsforliberty.org. देखें या शांतिपूर्ण समाज का निर्माण करने वाले सुधारों का समर्थन करने वाली अन्य संस्थाओं की जानकारी पाने के लिए एटलस नेटवर्क ग्लोबल डाइरेक्टरी (http://AtlasNetwork.org/) देखें।

फिर, शांति के लिए संगठित हों। अन्य लोग संगठित हो रहे हैं और आप भी ऐसा कर सकते हैं। यहाँ कुछ ताज़ा उदाहरण दिए हैं, जो यूनाइटेड स्टेट्स (जहाँ मैं रहती हूँ) और अन्य जगहों से लिए गए हैं:

अक्तूबर 2012 में मिषिगन स्टेट विश्वविद्यालय कॉलेज के इच्छास्वतंत्रतावादियों

ने एक नागरिक अधिकार कब्रिस्तान बनाया। उन्होंने नकली कब्र के पत्थर बनाए, जिनमें से प्रत्येक एक ऐसी आज़ादी का प्रतिनिधित्व करता था, जो समाप्त हो गई है, या जल्द ही युद्ध का शिकार बनने जा रही है ("निजता", "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता", "बंदी प्रत्यक्षीकरण", और "धार्मिक स्वतंत्रता")। उन्होंने ये कब्र के पत्थर कैम्पस के मुख्य चौराहे पर रखे, जहाँ वे सबका ध्यान आकर्षित कर सकते थे। उन्होंने वहाँ शांति का पाठ पढ़ाने वाले पर्चे बाँटे और नए सदस्य बनाए।

मार्च 2012 में, स्लिपरी रॉक विश्वविद्यालय यंग *अमेरिकन्स फॉर लिबर्टी* ने कैम्पस में अपने "युद्धों का दशक" कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को इराक और अफ़गानिस्तान में यूएस मौतों के आंकड़ों की सही तस्वीर समझने में मदद की। उन्होंने अहाते को यूएसए के झंडों से भर दिया, जिनमें से प्रत्येक पिछले दशक में युद्ध में मारे जाने वाले दो अमेरिकीयों का प्रतिनिधित्व करता था। उन्होंने झंडों के बीच एक "स्वतंत्र अभिव्यक्ति की दीवार" भी बनाई, जिस पर विद्यार्थी युद्ध के बारे में अपने विचार लिख सकते थे। इस झाँकी को हज़ारों विद्यार्थियों ने सप्ताह के हर दिन देखा। इस कार्यक्रम के ज़रिए समूह के लोग विद्यार्थियों से युद्ध के परिणामों पर चर्चा कर सके और झाँकी के सामने टेबल लगाकर और आज़ादी से संबंधित साहित्य बाँटकर उन्हें क्लब का परिचय भी दे सके।

अप्रैल 2013 में फ्लोरिडा विश्वविद्यालय कॉलेज के इच्छास्वतंत्रतावादियों ने एक "ड्रोन–विरोधी कार्यवाही सप्ताह" का आयोजन किया। इसमें सभी राजनैतिक विचारधाराओं के समूहों ने हिस्सा लिया और सरकार द्वारा ड्रोन्स के इस्तेमाल पर तथा विश्वविद्यालय द्वारा ड्रोन्स के सैनिक उपयोग को समर्थन देने के निर्णय पर विरोध जताया। उन्होंने स्वतंत्र अभिव्यक्ति की दीवार भी बनाई, जिस पर मिसाइल से लैस एक ड्रोन की पेंटिंग थी, और उन्होंने कैम्पस के भीड़–भरे क्षेत्र में टेबलें लगाईं, जिन पर "युद्ध क्षेत्र में ड्रोन को पिन करें" खेल था, जिसके ज़रिए विद्यार्थी देख सकते थे कि ड्रोन कहाँ–कहाँ तैनात किये गए हैं।

मार्च 2014 में बर्लिन में यूरोपियन स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी परिषद के सदस्यों ने क्रेमलिन द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण के तथा क्रीमिया पर कब्ज़े के विरोध में रूसी दूतावास पर मोर्चा निकाला। समूह में रूस तथा यूक्रेन, दोनों से आए विद्यार्थी शामिल थे, जो एक देश द्वारा दूसरे पर सशस्त्र आक्रमण के विरोध में साथ आ गए थे।

जिन देशों में अभिव्यक्ति पर सरकार का अधिक नियंत्रण है, या उसका दमन होता है, वहाँ इस प्रकार की कार्यवाही कठिन हो सकती है, लेकिन शांति के समर्थक

विद्यार्थी अपनी आवाज़ उठा ही देते हैं। रूस में स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी के कार्यकर्ताओं ने यूक्रेन में सैन्य हस्तक्षेप के विरोध में मॉस्को, सेंट पीटर्सबर्ग और अन्य शहरों में मोर्चे निकाले। (इस बहादुरी के फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार भी किया गया)। भारत और पाकिस्तान में स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी ने शांति और मित्रता के ज़रिए मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया है, ताकि दोनों देशों के बीच युद्ध, टकराव और तनाव कम हो सके। अफ्रीका में स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी के सदस्यों ने कुछ देशों में, जहाँ हिंसात्मक संघर्ष चल रहा था, नागरिक शांति को बढ़ावा देने का प्रयास किया है। यही बात लातिनी अमेरिका पर भी लागू होती है, जहाँ स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी के कार्यकर्ताओं ने वेनेजुएला, ग्वाटेमाला, एल साल्वेडोर और अन्यत्र शांति के लिए कार्य किया है।

सच तो यह है कि आप – इस निबंध के पाठक – फर्क ला सकते हैं। आप दूसरों के साथ जुड़कर सक्रिय रूप से शांति को बढ़ावा दे सकते हैं। यदि आपके आसपास इस वक्त कोई समूह या आंदोलन नहीं है, तो आप स्वयं उसे शुरू कर सकते हैं। प्रत्येक समूह तथा आंदोलन किसी के द्वारा शुरू किया ही गया था। वह कोई आप भी हो सकते हैं।

परिवर्तन लाएं: शांति चुनें

यह पुस्तक पढ़कर आपने स्वयं को शिक्षित कर लिया है। बेशक, आप और ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन आपने शांति की ओर एक बड़ा कदम उठा लिया है। आपकी आवाज़ एक शिक्षित आवाज़ है, जिसे आप शांति के कार्य में तैनात कर सकते हैं। अपनी आवाज़ उठाइये, आप पाएंगे कि आप अकेले नहीं हैं, अन्य लोग भी आपकी आवाज़ में आवाज़ मिलाएंगे और शांति के संदेश का प्रसार होगा। दूसरों के साथ मिलकर शांति के प्रति अपना समर्थन संगठित करें। जब आप बूढ़े हो जाएंगे, तब आप गर्व से कह सकेंगे, "हाँ, मैंने भी शांति के लिए आवाज़ उठाई थी"।

अधिक पढ़ने के लिए सुझाव

मानव इतिहास में युद्ध की एक बहुत बड़ी भूमिका रही है, इसलिए इस विषय पर एक विशाल साहित्य उपलब्ध है, जो इसका स्वागत भी करता है, इसका वर्णन करता है और इसकी निन्दा भी करता है। इस पुस्तक में दी गई वाद टिप्पणियाँ अतिरिक्त पठन और अभ्यास हेतु मार्गदर्शन करती हैं। नीचे कुछ और महत्वपूर्ण पुस्तकों के नाम हैं, जो आत्म–समर्पण, प्रभुत्व और गौरवास्पद हिंसा की जगह आज़ादी, स्वैच्छिक सहयोग तथा आपसी समृद्धि को महत्व देने वाले लोगों के नज़रिए से युद्ध और शांति के विषय पर चर्चा करती हैं।

"दि लॉ", "दि स्टेट", एंड अदर पॉलिटिकल राइटिंग्स, 1843–1850, लेखक फ्रेडरिक बास्तियात (इंडियानापोलिसः लिबर्टी फंड, 2012)। इसमें उन्नीसवीं शताब्दी के एक महान अर्थशास्त्रीय लेखक के युद्ध, लूट और देशवाद की प्रकृति पर शक्तिशाली लेख हैं। बास्तियात वर्णन करते हैं कि सरकारें कैसे शिकारी प्रवृत्ति की बन सकती हैं और रक्षक की जगह भक्षक बन जाती हैं (बास्तियात के लिबर्टी फंड श्रृंखला सहित दूसरे लेख भी पढ़ने लायक हैं)।

दि लिबर्टेरियन रीडरः क्लासिक एंड कन्टेम्परेरी राइटिंग्स फ्रॉम लाओ त्ज़ु टु मिल्टन फ्राइडमैन, संपा. डेविड बोज़ (न्यूयॉर्कः दी फ्री प्रेस, 1997; संवर्धित संस्करण 2015 में) केवल प्राचीन काल से आधुनिक समय तक इच्छास्वतंत्रतावाद की समक्षा ही नहीं करती, बल्कि "शांति और अंतरराष्ट्रीय सामंजस्य" पर एक सुव्यवस्थित विभाग भी प्रस्तुत करती है, जिसमें शांति पर उत्कृष्ट निबंध हैं।

डिप्रेशन, वार एंड कोल्ड वारः स्टडीज़ इन पॉलिटिकल इकॉनमी, रॉबर्ट हिग्स (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006), इस मिथक को सबूतों के बल पर पूरी तरह झुठलाती है कि द्वितीय विश्व युद्ध की वजह से "आर्थिक मंदी समाप्त हो गई", और युद्ध के राजनैतिक एवं आर्थिक प्रभावों पर तथा सार्वजनिक नीति निर्धारण में रक्षा विभाग के ठेकेदारों की भूमिका एवं अन्य विषयों पर प्रकाश डालती है।

ऑन वार एंड मोरालिटी, रॉबर्ट होम्स (प्रिंसटनः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989), युद्ध के नैतिक मुद्दों पर चर्चा करती है और हमें युद्ध करने के संपूर्ण परिणामों पर विचार करने पर मजबूर करती है।

टेरर, सेक्युरिटी, एंड मनीः बैलेन्सिंग दि रिस्क्स, बेनिफिट्स, एंड कॉस्ट्स ऑफ होमलैंड सेक्युरिटी, जॉन मुलर तथा मार्क जी. स्टीवर्ट (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011), जोखिम और प्रतिसादों के मूल्यांकन का एक भिन्न (और अधिक तर्कपूर्ण) उपाय सुझाती है। यह पुस्तक लागत–लाभ विश्लेषण तथा तर्कपूर्ण जोखिम प्रबंधन के लिए विशेषतः उपयोगी है।

ए हिस्टरी ऑफ फोर्सः एक्सप्लोरिंग द वर्ल्डवाइड मूवमेंट अगेंस्ट हैबिट्स ऑफ कोअर्शन, ब्लडशेड एंड मेहेम, जेम्स एल. पेन (सैंडपॉइंट, इडाहोः लिटन पब्लिशिंग कं., 2004) समय के साथ हिंसा तथा क्रूरता जिस तरह सहयोग एवं सभ्य समाज द्वारा विस्थापित हुए हैं, उस पर एक नया नज़रिया पेश करती है।

दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचरः अ हिस्ट्री ऑफ वायलंस एंड ह्यूमैनिटी स्टीवन पिंकर (लंदनः पेंग्विन बुक्स, 2011) "लंबी शांति" पर आंकड़े और विश्लेषण प्रस्तुत करती है और हिंसा में कमी के संभव कारणों की तुलना करती है। पिंकर हिंसा, सामाजिक इतिहास, राजनैतिक सिद्धांत और मनोविज्ञान के आंकड़े एकत्र कर एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विद्वत्तापूर्ण पुस्तक पेश करते हैं। विलियम ग्राहम समनर की

"दि कांक्वेस्ट ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स स्पेन" विलियम ग्रेहम समनर (1898) (इंडियानापोलिसः लिबर्टी फंड, 2013) में गणराज्य और साम्राज्य के फर्क का उत्कृष्ट वर्णन करती है।

लिबर्टी के ऑनलाइन पुस्तकालय में पारम्परिक उदारवादी/इच्छास्वतंत्रावाद परम्परा पर उत्कृष्ट पुस्तकों का विशाल भंडार है, जिसमें लगातार वृद्धि हो रही है। इसे http://oll.libertyfund.org पर देखा जा सकता है।

संपादक के विषय में: टॉम जी. पामर

चित्र

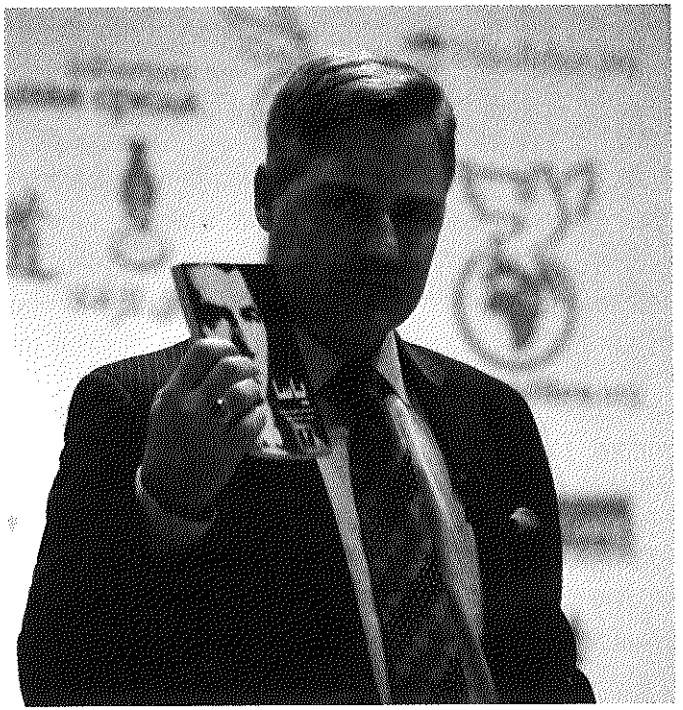

डॉ. टॉम जी. पामर एटलस नेटवर्क में अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम के कार्यकारी उपाध्यक्ष हैं। वे विश्व भर में पारम्परिक उदारवाद के तत्वों को बढ़ावा देने वाले दलों के कार्य की निगरानी करते हैं तथा विचार मंचों और शोध संस्थाओं के वैश्विक नेटवर्क के साथ कार्य करते हैं। डॉ. पामर कैटो इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ फेलो हैं, जहां वे अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम के कार्यकारी उपाध्यक्ष और मानवाधिकार प्रोत्साहन केन्द्र के निर्देशक के पद पर रह चुके हैं।

वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के हर्टफोर्ड कॉलेज के एच.बी. इयरहार्ट फेलो

तथा जॉर्ज मेसन विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ ह्यूमन स्टडीज़ के उपाध्यक्ष थे। वे स्टूडेन्ट्स फॉर लिबर्टी के सलाहकार मंडल के सदस्य हैं। उन्होंने हारवर्ड जर्नल ऑफ लॉ एंड पब्लिक पॉलिसी, एथिक्स, क्रिटिकल रिव्यू, और कॉन्स्टीट्यूशनल पॉलिटिकल इकनॉमी जैसी विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाओं तथा स्लेट, वॉल स्ट्रीट जर्नल, न्यूयॉर्क टाइम्स, डाइ वेल्ट, अल हयात, कैक्सिंग, वॉशिंगटन पोस्ट और दि स्पेक्टेटर ऑफ लंदन आदि प्रकाशनों में समीक्षाएं और लेख लिखे हैं।

उन्होंने सेंट जॉन्स कॉलेज, एनापोलिस, मैरीलैंड से लिबरल आर्ट्स में बी. ए. की उपाधि ली है; उन्होंने दि कैथोलिक यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिकी, वाशिंगटन डीसी से दर्शनशास्त्र में एम.ए. किया है; और उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से राजनीतिशास्त्र में डॉक्टरेट पूरी की है। उनकी विद्वत्ता प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, रूटलेज तथा अन्य शैक्षणिक प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गई है। वे *रियलाइज़िंग फ्रीडमः लिब्रेशन थ्योरी, हिस्ट्री, एंड प्रैक्टिस* (विस्तारित संस्करण 2014 में प्रकाशित) के लेखक हैं; 2011 में प्रकाशित *दि मोरालिटी ऑफ कैपिटलिज़्म*, 2012 में प्रकाशित *आफ्टर द वेलफेयर स्टेट* तथा 2013 में प्रकाशित *व्हाय लिबर्टी* के संपादक हैं।

टिप्पणियाँ

1. नेल्सन मंडेला, *लांग वॉक टु फ्रीडम* (न्यूयॉर्कः लिटिल, ब्राउन एंड कम्पनी, 1995) पृ. 622।
2. इच्छास्वतंत्रता के विचारों पर अधिक जानकारी इस श्रृंखला की एक अन्य पुस्तक में मिल सकती है, व्हाय लिबर्टी, संपा. टॉम जी. पामर (ओटावा, इलि.: जेमसन बुक्स, 2013)।
3. सिसेरो, *ऑन ड्यूटीज़* (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991) पुस्तक III] पृ. 109–10।
4. जेम्स मेडीसन, *दि राइटिंग्स ऑफ जेम्स मेडीसन, जिसमें उनके सार्वजनिक दस्तावेज़ और उनके विशाल संख्या में पत्रों सहित निजी पत्राचार एवं दस्तावेज़ शामिल हैं, प्रथम प्रकाशन,* संपा. गाइलार्ड हंट (न्यूयॉर्कः जी. पी. पटनम्स संस, 1900)। खंड 6, अध्यायः यूनिवर्सल अमन, मूलतः *दि नेशनल गैज़ेट,* फरवरी 2, 1972 में प्रकाशित। http://oll.libertyfund.org/title/1941/124396 से 2014–02–16 को उद्धृत।
5. कॉलिन पॉवेल, *माइ अमेरिकन जर्नी* (1996; संशोधित संपा., न्यूयॉर्कः बैलेंटाइन बुक्स, 2003) पृ. 576।
6. "यूएस की इराक नीति की ओहियो में आलोचना," सीएनएन की स्पेशल रिपोर्ट, "इराक पर गतिरोध," फरवरी 18, 1998, http://edition.cnn.com/WORLD/9802/18/town.meeting.folo/ से उद्धृत। बुश से पहले वाले राष्ट्रपति की पत्नी और यूएस की संसद सदस्य हिलेरी क्लिंटन ने इराक में सैन्य हस्तक्षेप के पक्ष में मत दिया था। फिर जब वे 2006 में डेमोक्रेटिक पार्टी की राष्ट्रपति उम्मीदवार के रूप में नामांकन चाह रही थीं, तब उन्होंने इसके बचाव में कहा, "स्पष्ट है, आज हमें जो बातें पता हैं, वे उस समय पता होतीं, तो वोट होता ही नहीं, और मैं निश्चित ही उसके पक्ष में मत नहीं देती"। टोबी हार्नडेन, "ओबामा की बढ़त के चलते क्लिंटन इराक पर बदलीं", दि टेलीग्राफ, दिसम्बर 20, 2006, http://www.telegraph.co.uk/news/worldnews/1537474/Clinton-shifts-over-Iraq-as-Obama-threatens-html पर उपलब्ध। (अपना मत देने से पहले उन्हें सोच लेना चाहिए था कि इसके बुरे नतीजे भी निकल सकते हैं, या उन आवाज़ों को ही सुन लेना चाहिए था, जो प्रस्तावित युद्ध की विनाशलीला की चेतावनी दे रही थीं)।
7. इराक बॉड़ी काउंट परियोजना, http://www.iraqbodycount.org/database/
8. लिंडा जे. ब्लाइम्स, "दि फाइनेंशियल लीगेसी ऑफ इराक एंड अफग़ानिस्तानः हाउ वारटाइम स्पेंडिंग डिसीज़न्स विल कंस्ट्रेन फ्यूचर नेशनल सेक्युरिटी बजट्स", हारवर्ड केनेडी स्कूल फैकल्टी रिसर्च वर्किंग पेपर सीरीज़, मार्च 2013 RWP-13-006।

9. रिचर्ड टक की *दि राइट्स ऑफ वार एंड अमनः पॉलिटिकल थॉट्स एंड दि इंटरनेशनल ऑर्डर फ्रॉम ग्रोशियस टू कान्ट* (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999) में दार्शनिक तर्कों को अच्छी तरह से रखा गया है। संबंधित संधियां और अन्य कानूनी दस्तावेज़ एडम रॉबर्ट्स और रिचर्ड गुलेफ द्वारा संपादित *डॉक्युमेंट्स ऑन दि लॉज़ ऑफ वार* (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001) में संग्रहित हैं।
10. रॉबर्ट होम्स, *ऑन वार एंड मोरालिटी* (प्रिंसटनः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989), पृ. 178–79।
11. रॉबर्ट होम्स, *उपरोक्त* पृ. 179।
12. रॉबर्ट होम्स, *उपरोक्त* पृ. 180। होम्स जोड़ते हैं, "सो यह निश्चित तौर पर जानते हुए भी कि युद्ध करने में ये कार्य करना भी शामिल है, युद्ध करना उचित ठहराने के लिए इन कार्यों को भी उचित ठहराना आवश्यक होगा। युद्ध में किसी भी लक्ष्य की पूर्ति के न्यायसंगत प्रयास, किसी भी प्रकार से, करने की एक आवश्यक शर्त (साथ ही युद्धारंभ की शुचिता और युद्ध संचालन की शुचिता दोनों के मानदंड पूरे करने की भी आवश्यक शर्त) यह होती है कि पहले आपके द्वारा की जा रही हत्याएं और हिंसाचार भी न्यायसंगत हों।"
13. ग्लेन ग्रीनवॉल्ड की "जो क्लाइन्स सोश्योपैथिक डिफेन्स ऑफ ड्रोन्स किलिंग ऑफ चिल्ड्रन" में पूर्ण वीडियो लिंक के साथ उद्धृत, दि गार्जियन, अक्टूबर 23, 2012, http://www.theguardian.com/commentisfree/2012/oct@23/klein-drones-morning-joe?newsfeed=true पर उपलब्ध।
14. रैंडोल्फ बोर्न की *दि रैडिकल विलः सिलेक्टेड राइटिंग्स* 1911–1918 से रैंडोल्फ बोर्न, "दि स्टेट" (बर्कलेः यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1992), पृ. 355–95, पृ. 360।
15. रॉबर्ट हिग्स, क्राइसिस एंड लेविएथनः क्रिटिकल एपिसोड्स इन द ग्रोथ ऑफ अमेरिकन गवर्नमेंट (ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987) पृ. 73।
16. ब्रूस कुकलिक द्वारा संपादित पेन, पॉलिटिकल राइटिंग्स, में थॉमस पेन, दि राइट्स ऑफ मैन, भाग I (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989) पृ. 86।
17. मार्गरेट लेवी, *ऑफ रूल एंड रेवेन्यू* (बर्कलेः यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1988) पृ. 105
18. विलियम शेक्सपियर, *हेनरी* IV, *भाग* II, अंक IV, दृश्य 5।
19. प्लूटार्च, *प्लूटार्च प्रिमसः दि ट्रान्सलेशन कॉल्ड ड्रायडेन्स*। ए. एच. क्लो द्वारा ग्रीक भाषा से संशोधित तथा पुनरीक्षित, 5 खंडों में (बोस्टनः लिटिल ब्राउन एंड कं., 1906) खंड 4, अध्याय "कैटो द यंगर"। http://oll.libertyfund.org/title/1774/93963 से 2014–02–22 को उद्धृत।

20. जूलियस सीज़र (2004–01–01)। *"डी बेलो गैलिको" तथा अन्य समीक्षाएं,* पुस्तक प्ट, 14–15 (किंडल पर स्थान 1374–80)। पब्लिक डोमेन बुक्स। किंडल संस्करण।

21. इस अवधि की हिंसा के अतिरेक का वर्णन पढ़ना व्यथित करने वाला अनुभव है। एक्सिस सेनाओं (और जर्मनी के सोवियत मित्र) ने युद्ध की शुरुआत की और कुछ एक्सिस राजनेताओं तथा सैन्य अधिकारियों को उचित सज़ा भी हुई, लेकिन वे इस मानव संहार के स्रोत नहीं थे। जैसाकि युद्धों में अक्सर होता है, अधिकांश अपराधों को सज़ा ही नहीं हुई।

22. अज्ञात लेखक, "हेसियोद, द होमरिक हिम, एंड होमरिका, में "ऑफ दि ओरिजिन ऑफ होमर एंड हेसियोद, एंड ऑफ देअर कॉन्टेस्ट", अनु. ह्यूग ई.जी. एवलिन–व्हाइट (कैम्ब्रिज, मैस.: हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1914), पृ. 585–87।

23. बियांकामारिया फोंतानां द्वारा संपादित *कॉन्स्टंट, पॉलिटिकल राइटिंग्स* में बेंजामिन कॉन्स्टंट, "दि स्पिरिट ऑफ कांक्वेस्ट एंड उसर्पेशन एंड देअर रिलेशन टु यूरोपियन सिविलाइज़ेशन" (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988) पृ. 82।

24. जीन–बैप्टिस्ट से, *अ ट्रीटाइज़ ऑन पॉलिटिकल इकॉनमी,* (फिलाडेल्फियाः लिपिनकॉट, ग्रैम्बो एंड कं.) पुस्तक III अध्याय 6ए §. 51। http://www.econlib.org/library/Say/sayT39.html#Bk.III,Ch.VI से ऑनलाइन उद्धृत।

25. से, *ट्रीटाइज़,* पुस्तक III अध्याय 6ए §. 54। http://www.econlib.org/library/Say/sayT39.html#Bk.III,Ch.VI

26. जीन–बैप्टिस्ट से, *कैटिशिज़्म दि इकॉनमी पोलिटिक* (पेरिसः गिलोमिन ए सी, लाइब्रेरी, छठा संस्करण, 1881), पृ. 9 (फ्रांसीसी भाषाः "उत्पादन करने का अर्थ है वस्तुओं को उपयोगिता देकर उन्हें एक मूल्य देना"।) यह वाक्य अंग्रेज़ी संस्करण में शामिल नहीं है।

27. से ने प्रतिस्पर्धी उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के बीच शांतिपूर्ण प्रतिस्पर्धा का महत्व भी स्पष्ट किया। बाज़ार प्रतिस्पर्धा एक प्रक्रिया होती है, जो उद्यमशील नवाचार से प्रेरित होती है; कीमतें वह संकेत होती हैं, जो आर्थिक सहभागियों को मुनाफे की ओर ले जाती हैं। यह एक सीखने की प्रक्रिया भी है, जो प्रयत्न–त्रुटि विधि से आगे बढ़ती है, जिससे उपभोक्ताओं को नए और बेहतर उत्पाद और अन्य फायदे मिलते हैं। प्रतिस्पर्धा के लिए एक आवश्यक शर्त है प्रवेश की आज़ादी, और से इसी कारण से विशेषज्ञाधिकार मंडल, राज्य द्वारा प्रदत्त छूटें, शाही–अधिकृत कार्पोरेशन आदि के विरोधी थे, क्योंकि ये मार्केट का दायरा संकुचित कर एकाधिकार लाते थे।

28. से, *ट्रीटाइज़,* पुस्तक I, अध्याय 15ए §. 3। http://www.econlib.org/library/Say/sayT15.html#Bk.I,Ch.XV

29. एडम स्मिथ, *ऐन इन्क्वायरी इनटु दि नैचर एंड कॉज़ेस ऑफ दि वेल्थ ऑफ नेशन्स* (इंडियानापोलिसः लिबर्टी फंड, 1979), पुस्तक I, अध्याय 3, पृ. 31।

30. से, ट्रीटाइज़, पुस्तक I अध्याय 15ए §. 15।

31. उपरोक्त, §. 9।

32. उपरोक्त, §. 4।

33. उपरोक्त, §. 16।

34. उपरोक्त, §. 17।

35. उपरोक्त, §. 18।

36. जीन–बैप्टिस्ट से, *लेटर्स टु मि. माल्थस, और सेवेरल सब्जेक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल इकॉनमी, एंड ऑन दि कॉज़ ऑफ स्टैग्नेशन ऑफ कॉमर्स। इसमें जोड़े गए हैं अ कैटेशिज़्म ऑफ पॉलिटिकल इकॉनमी, ऑर फैमिलियर कन्वरसेशन्स ऑन दि मैनर इन व्हिच वेल्थ इज़ प्रौड्यूस्ड, डिस्ट्रीब्यूटेड एंड कंज़्यूम्ड इन सोसायटी,* अनु. जॉन रिक्टर (लंदनः शेरवुड, नीली, एंड जोन्स, 1821)। पत्र 1: http://oll.libertyfund.org/index.php?option=com_staticxt&staticfile=show.php%3Ftitle=1795&laizseut=html#chapter_99253

37. से, *लेटर्स टु मि. माल्थस,* पत्र 1।

38. से, *ट्रीटाइज़,* पुस्तक I अध्याय XVII] §. 55। http://www.econlib.org/library/Say/sayT17.html#Bk.I,Ch.XVII

39. से, *ट्रीटाइज़,* पुस्तक I अध्याय XI] टिप्पणी 7। http://www.econlib.org/library/Say/sayT11-html#Bk.I,Ch.XI

40. से, *ट्रीटाइज,* पुस्तक। अध्याय 14, §. 9। इतनी हिंसक सरकार की मुसीबत यह है कि लोग "अपनी संपत्ति का कुछ भाग सत्ता की लालची निगाहों से छिपा लेते हैंः और निष्क्रिय होने पर उसका मूल्य भी अदृश्य हो जाता है" (से, *ट्रीटाइज़,* पुस्तक। अध्याय 14, §. 9)। http://www.econlib.org/library/Say/sayT14.html

41. से, *ट्रीटाइज़,* पुस्तक III अध्याय 6, §. 54 http://www.econlib.org/library/Say/sayT39.html#Bk.III,Ch.VI

42. उदाहरण के लिए देखें, सैम्युएल पी. हंटिंगटन, *दि थर्ड वेवः ऑफ डेमोक्रेटाइज़ेशन इन दि लेट ट्वेंटीइथ सेंचुरी* (नॉर्मन, औकेः यूनिवर्सिटी ऑफ ओक्लाहोमा प्रेस, 1991)।

43. राजतंत्र–सम्बन्धी आंकड़े अक्सर ही लोकतंत्र मापन का पैमाना होते हैं। देखें कीथ जैगर्स और टेड रॉबर्ट गर, "ट्रांज़िशन टु डेमोक्रेसीः ट्रैकिंग डेमोक्रेसीज़ 'थर्ड वेव' विद दि पॉलिटी III डेटा", *जर्नल ऑफ अमन रिसर्च* 32(4) 1995:469–82।

44. चित्र 1 में विश्व बैंक द्वारा उपलब्ध कराया गया डेटा इस्तेमाल हुआ है। चित्र 2 एरिक गार्तज़्के और अलेक्स वाइसीगर के "अंडर कंस्ट्रक्शनः डेवलपमेंट, डेमोक्रेसी एंड डिफ्रेंसेज़ ऐज डिटरमिनेंट्स ऑफ दि सिस्टेमिक लिबरल अमन", *इंटरनेशनल स्टडीज़ क्वार्टरली* 58(1) 2014:130–45 से ली गई है।

45. थॉमस सी. शेलिंग, *आर्म्स एंड इंफ्युएंस* (न्यू हेवनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966) पृ. 99।

46. बैरन डी मोंतेस्क्यू, *स्पिरिट ऑफ दि लॉज़* (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989{1748,}); एडम स्मिथ, *एन इंक्वायरी इनटु दि नैचर एंड कॉज़ेस ऑफ दि वेल्थ ऑफ नेशन्स* (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1976 {1776,}); थॉमस पेन, *कॉमन सेन्स* (न्यूयॉर्कः पेंग्विन, 1986{1776,}); इमानुएल कान्ट *परपेचुअल अमनः अ फिलोसॉफिकल एसे* (न्यूयॉर्कः गारलैंड, 1972 {1795,}); रिचर्ड कॉबडेन *पॉलिटिकल राइटिंग्स* (लंदनः टी. फिशर अनविन, 1903{1867,}); नॉर्मन एंजेल *दि ग्रेट इल्युज़न* (न्यूयॉर्कः पटनम, 1933)। रिचर्ड रोज़क्रैन्स *दि राइज़ ऑफ दि ट्रेडिंग स्टेटः कॉमर्स एंड कांक्वेस्ट इन दि मॉडर्न वर्ल्ड* (न्यूयॉर्कः बेसिक बुक्स, 1985); ब्रूस रुसेट *ग्रास्पिंग दि डेमोक्रेटिक अमनः प्रिन्सिपल्स फॉर अ पोस्ट–कोल्ड वार वर्ल्ड* (प्रिंसटनः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993); माइकल डॉयल वेज़ ऑफ वार एंड अमनः *रियलिज़्म, लिबरलिज़्म एंड सोशलिज़्म* (न्यूयॉर्कः नॉर्टन, 1997)।

47. स्टीवन पिंकर *दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचरः व्हाय वायलंस हैज़ डिक्लाइन्ड* (न्यूयॉर्कः वाइकिंग प्रेस, 2011); जोशुआ एस. गोल्डस्टीन,) *विनिंग दि वार ऑन वारः दि डिक्लाइन ऑफ आर्म्ड कॉन्फिक्ट वर्ल्डवाइड* (न्यूयॉर्कः ड्यूटन 2011); युद्धों में कमी की वैश्विक प्रकृति कुछ कमज़ोर है। विकसित देशों में सम्बन्ध (आधुनिकता और शांति के बीच) सबसे अधिक मज़बूत हैं।

48. पीटर ब्रेक "वायलेंट कॉन्फ्लिक्ट्स 1400 ए.डी. टु दि प्रेज़ेन्ट इन डिफ्रेंट रीज़न्स ऑफ दि वर्ल्ड"। अमन साइन्स सोसायटी (इंटरनेशनल) की वार्षिक सभा में प्रस्तुत दस्तावेज़। अन्य क्षेत्रों (अफ्रीका, एशिया तथा उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका) के निष्कर्ष अवधि में कम हैं तथा कम निर्णायक हैं।

49. सिओफी–रेविला, क्लाउडियो, 2004। "दि नेक्स्ट रेकॉर्ड–सेटिंग वार इन दि ग्लोबल सेटिंगः अ लांग–टर्म एनालिसिस"। *जर्नल ऑफ दि वॉशिंगटन एकेडमी ऑफ साइन्स* 90(2): 61–93। शोधकर्ताओं में इस बात को लेकर कुछ संदेह है कि युद्ध की तीव्रता का मुल्यांकन करते हुए जनसंख्या को आधार माना जाए या नहीं। कुल मिलाकर, किसी व्यक्ति की युद्ध (गृहयुद्ध हो या दूसरे देश के साथ) में मरने की जोखिम कम हुई है।

50. देखें ब्रूस रुसेट, *ग्रास्पिंग दि डेमोक्रेटिक अमनः प्रिन्सिपल्स फॉर अ पोस्ट–कोल्ड वार वर्ल्ड* (प्रिंसटनः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993) तथा माइकल डॉयल, *वेज़ ऑफ वार एंड अमनः रियलिज़्म, लिबरलिज़्म एंड सोशलिज़्म* (न्यूयॉर्कः नॉर्टन, 1997)।

51. डगलस नॉर्थ तथा रॉबर्ट थॉमस *दि राइज़ ऑफ दि वेस्टर्न वर्ल्ड* (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1973)। मैन्कर ओल्सन "डिक्टेटरशिप, डेमोक्रेसी एंड डेवलपमेंट" 1993। *अमेरिकन पॉलिटिकल साइन्स रिव्यू* 87(3):567–76।

52. उदाहरण के लिए देखें ब्रूस रुसेट तथा जॉन आर ओनील, *ट्राइंग्युलेटिंग अमनः डेमोक्रेसी, इंटरडिपेंडेन्स, एंड इंटरनेशल ऑर्गनाइज़ेशन्स* (न्यूयॉर्कः नॉर्टन, 2001)।

53. व्यापार विशेषज्ञता को प्रोत्साहित करता है, जिससे उत्पादकता बढ़ती है और पारिश्रमिक में वास्तविक वृद्धि होती है। हाल वेरियान, *माइक्रोइकनॉमिक एनालिसिस*, तृतीय संस्करण (न्यूयॉर्कः डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन, 1992)।

54. सूजन ग्रे डेविस के सहयोग से लान्स ई. डेविस तथा रॉबर्ट ए. हटनबैक, *मैमन एंड दि परस्यूट ऑफ एम्पायरः दि इकनॉमिक्स ऑफ ब्रिटिश इम्पीरियालिज़्म*, संक्षिप्त संस्करण (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988) पृ. 267।

55. फ्रेडरिक बास्तियात, *दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ फ्रेडरिक बास्तियात, खंड 2: दि लॉ, दि स्टेट, एंड अदर पॉलिटिकल राइटिंग्स*, 1843–1850 में फ्रेडरिक बास्तियात, "अमन एंड फ्रीडम ऑर दि रिपब्लिकन बजट" (1849), जैक्स डी ग्वेनिन, जनरल संपादक (इंडियानापोलिसः लिबर्टी फंड, 2012) पृ. 282–327, पृ. 191 ।http://oll.libertyfund.rg/index.php\option=com_staticxt&staticfile=show.php%3Ftitle=2450&Itemid=28 पर ऑनलाइन उपलब्ध।

56. स्टीवन पिंकर *दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचरः अ हिस्ट्री ऑफ वायलंस एंड ह्यूमैनिटी* (लंदनः पेंग्विन बुक्स, 2011) पृ. गपग

57. ज़ेम्स एल. *पेन, ए हिस्ट्री ऑफ फोर्सः एक्सप्लोरिंग दि वर्ल्डवाइड मूवमेंट अगेंस्ट हैबिट्स ऑफ कोअर्शन, ब्लडशेड एंड मेहेम*, (सैंडपॉइंट, इडाहोः लिटन पब्लिशिंग कं., 2004), स्टीवन पिंकर, *पूर्व उल्लेखित*।

58. हंटिंगटन ने अपनी "प्रतिस्पर्धा" और "संघर्ष" जैसे शब्दों की अपर्याप्त समझ भी उजागर की हैः "एक दिलचस्प, हालांकि पेचीदा, बात यह है कि अमेरिकी लोग अमेरिकी समाज के भीतर विभिन्न समूहों, पार्टियों, सरकारी विभागों तथा व्यापारों के बीच प्रतिस्पर्धा को अच्छा मानते हैं। क्यों अमेरिकी लोग अपने समाज के भीतर इस संघर्ष को अच्छा मानते हैं, लेकिन समाज के बीच संघर्ष को बुरा मानते हैं, यह एक दिलचस्प सवाल है, जिस पर, मेरी

जानकारी के अनुसार, अब तक किसी ने गंभीरता से अध्ययन नहीं किया है"। सैम्युएल हंटिंगटन, *दि क्लैश ऑफ सिविलाइज़ेशन्स एंड दि रीमेकिंग ऑफ वर्ल्ड ऑर्डर* (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर, 1997), पृ. 221। उन्हें यह नहीं सूझा जान पड़ता है कि विचारों की ऐसी भ्रांति का अध्ययन न किए जाने का कोई कारण भी ज़रूर रहा होगा। सरकार के विभागों के बीच "नियंत्रण तथा संतुलन" एवं कम्पनियों द्वारा ग्राहकों को लुभाने की प्रतिस्पर्धा, "समाज के बीच संघर्ष" से बिल्कुल अलग होते हैं।

59. सैम्युएल हंटिंगटन, *उपरोक्त*, पृ. 84

60. एंगस मेडीसन, *कंटूर्स ऑफ दि वर्ल्ड इकॉनमी, 1–2030 ए.डी., एसेज़ इन मैक्रो–इकनॉमिक हिस्ट्री* (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007), तालिका अ 7 के आंकड़े, पृ. 382।

61. जुट्टा बोल्ट और जान लुइटेन वान ज़ांदेन, "दि फर्स्ट अपडेट ऑफ दि मेडीसन प्रोजेक्ट: री–एस्टीमेटिंग ग्रोथ बिफोर 1820", मेडीसन प्रोजेक्ट वर्किंग पेपर डब्ल्यूपी–4 (जनवरी 2013), http://www.ggdc.net/maddison/maddison-project/publications/wp4-pdfa; database at http://www.ggdc.net/maddison/maddison-project/data/mpd_2013-01-xlsx पर ऑनलाइन उपलब्ध। यूएस फेडरल रिज़र्व सिस्टम की मुद्रास्फीति की नीति के कारण 2010 में डॉलर के अनुसार यह संख्या बहुत बड़ी थी। विश्व बैंक के अनुसार 2010 की डॉलर की कीमतों के अनुसार उच प्रतिव्यक्ति जीडीपी यूएस डॉलर 48,530 था। (http:// data.worldbank.org/indicator/NY.GNP.PCAP.CD/countries/NL-XS?display=graph)

62. बोल्ट और वान ज़ांडेन डेटाबेस http://www.ggdc.net/maddison/maddison-project/data/mpd_2013-01.xlsx

63. जीन–बैप्टिस्ट से, *ए ट्रीटाइज़ ऑन पॉलिटिकल इकॉनमी* अनु. सी.आर. प्रिंसेप तथा क्लेमेंट सी बिडल (फिलाडेल्फिया: लिपिनकॉट, ग्रैम्बो एंड कं., 1885), पुस्तक 1, अध्याय 15, "ऑफ् दि डिमांड ऑर मार्केट फॉर प्रॉडक्ट्स", http://www-econlib-org/library/Say/sayT15-html पर उपलब्ध।

64. विश्व के इस प्रकार के कुल–योग–शून्य नज़रिए का अर्थ होगा कि लोग व्यापार करेंगे ही नहीं, क्योंकि लोग लेन–देन तभी करेंगे, जब उन्हें इससे मुनाफे की उम्मीद हो। आर्थिक राष्ट्रवाद ऊपर से नीचे तक विसंगतियों से भरा है।

65. एडम स्मिथ, *एन इंक्वायरी इनटु दि नैचर एंड कॉज़ेस ऑफ दि वेल्थ ऑफ नेशन्स*, संपा. आर. एच. कैम्बेल तथा ए. एस. स्किनर, वर्क्स एंड कॉरस्पांडेन्स ऑफ एडम स्मिथ, ग्लासगो संस्करण का खंड II (इंडियानापोलिस: लिबर्टी फंड, 1981) IV: vii "ऑफ कालोनीज़", पृ. 588।

66. एडम स्मिथ, *एन इंक्वायरी इनटु दि नैचर एंड कॉजेस ऑफ दि वेल्थ ऑफ नेशन्स*, संपा. आर. एच. कैम्बेल तथा ए. एस. स्किनर, वर्क्स एंड कॉरस्पांडेन्स ऑफ एडम स्मिथ, ग्लासगो संस्करण का खंड II (इंडियानापोलिस: लिबर्टी फंड, 1981) IV: viii "कॉन्क्लुज़न ऑफ दि मर्केन्टाइल सिस्टम", पृ. 661।

67. स्मिथ के समकालीन जेरेमी बेन्थम विदेश में सैन्य अभियानों के चरित्र–चित्रण में कहीं अधिक तीखापन दिखाते हैं। उन्होंने कहा है कि, "सैन्य अभियानों से हुए फायदों को, चाहे वे किसी भी स्वरूप के हों, मैं लूट से अधिक कुछ नहीं मानता: विशाल पैमाने पर हत्याओं के ज़रिए की गई लूट: जीते हुए देश के कुछ शासक वर्ग के लोगों द्वारा, दोनों देशों की प्रजाओं पर: ऐसी लूट, जिसके पहले शिकार होते हैं विजेता देश के नागरिक, जो हथियारों का ख़र्च उठाते हैं। बेन्थम का मानना था कि "ऐसा सभी प्रभुत्व केवल अधिकार पाने का जुल्म ढाने का एक साधन मात्र है, जो बप्रेमान देश के एक छोटे शासक वर्ग के हाथ में होता है, और जिसका ख़र्च दोनों देशों के नागरिकों को अपने सुख–चैन के त्याग के जरिए उठाना पड़ता है"। ई. के. ब्रामस्टेड तथा के. जे. मेलहिश द्वारा संपादित *वेस्टर्न लिबरलिज़्म: ए हिस्ट्री इन डॉक्युमेंट्स फ्रॉम लॉक टु क्रोसे* (लंदन: लांगमैन, 1978) में जेरेमी बेन्थम, "इन इंटरनेशनल डीलिंग्स, जस्टिस एंड बेनिफिशियंस", दस्ता. 36, पृ. 353।

68. जॉन मोर्ले, *दि लाइफ ऑफ रिचर्ड कॉबडेन* (लंदन: टी. फिषर अनविन, 1903)। अध्याय XXXIII.: विविध पत्राचार, 1859–60–पेरिस–इंग्लैंड को वापस। http://oll.libertyfund.org/title/1742/90559/2050419 से 2014–01–02 को उद्धृत।

69. *सार्वजनिक प्रश्नों पर राइट ऑनरेबल जॉन ब्राइट एम.पी. के चुनिंदा भाषण*, प्रस्तावना जोसेफ स्टर्ज (लंदन: जे.एम. डेन्ट एंड कं., 1907) अध्याय XVI, विदेश नीति, अक्टूबर 29, 1858, बर्मिंघम का भाषण।

70. सूज़न ग्रे डेविस के सहयोग से लान्स ई. डेविस तथा रॉबर्ट ए. हटनबैक, *मैमन एंड दि परस्यूट ऑफ एम्पायर*: दि इकनॉमिक्स ऑफ ब्रिटिश इम्पीरियालिज़्म, संक्षिप्त संस्करण (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988) पृ. 267

71. "युद्ध ने यूएसए को महान आर्थिक मंदी से उबार लिया" इस नज़रिए को आर्थिक इतिहासकार रॉबर्ट हिग्स ने अपनी "वारटाइम प्रॉस्पेरिटी? ए रीअसेसमेंट ऑफ दि यू.एस. इकॉनमी इन दि 1940", *दि जर्नल ऑफ इकनॉमिक हिस्ट्री*, खंड 52 क्र. 1 (मार्च 1992) में, और "फ्रॉम सेंट्रल प्लानिंग टु दि मार्केट: दि अमेरिकन ट्रांज़िशन, 945–47, *दि जर्नल ऑफ इकनॉमिक हिस्ट्री*, खंड 59 क्र. 3 (सितम्बर 1999) में पूरी तरह से झुठलाया है। ये दोनों संशोधित स्वरूप में रॉबर्ट हिग्स, *डिप्रेशन, वार एंड कोल्ड वार: स्टडीज़ इन पॉलिटिकल इकॉनमी* (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006), अध्याय 3, पृ. 61–80 तथा पृ. 101–23 में पुनर्मुद्रित हुए हैं।

72. (फ्रांसीसी भाषा)

73. विलियम ग्राहम समनर, "दि कांक्वेस्ट ऑफ यूनाइटेड स्टेट्स बाय स्पेन" (1898) (इंडियानापोलिसः लिबर्टी फंड, 2013) | http://oll.libertyfund.org/title/2485 से 2014–02–03 को उद्धृत। डेविड टी. बीटो और लिंडा रॉयस्टर बीटो की "गोल्ड डेमोक्रेट्स एंड दि डिक्लाइन ऑफ क्लासिकल लिबरलिज़्म, 1896–1900" *दि इंडिपेंडेंट रिव्यू,* खंड IV क्रं. 4 (वसंत 2000) पृ. 555–75 भी देखें, http://www.independent.org/pdf/tir/tir_04_4_beito.pdf पर उपलब्ध।

74. जेम्स बेकर, "कन्फ्रंटेशन इन दि गल्फः एक्सपर्ट्स फ्रॉम बेकर टेस्टीमनी ऑन यू.एस. एंड गल्फ" *न्यूयॉर्क टाइम्स* सितम्बर 5, 1990, http://www.nytimes.com/1990/09/05/world/confrontation-in-the-gulf-excerpts-from-baker-testimony-on-us-and-gulf.html पर उपलब्ध।

75. हेनरी किसिंजर, "यूएस ने मध्य–पूर्व में अपना दांव चल दिया है – और अब हर कीमत पर जीतना ही होगा", *लॉस एंजेल्स टाइम्स,* अगस्त 19, 1990

76. विलियम निसकानेन तथा जेम्स वूल्से, "क्या यूनाइटेड स्टेट्स को इराक के खिलाफ युद्ध छेड़ना चाहिए?" कैटो इंस्टीट्यूट में सार्वजनिक बहस, दिसम्बर 13, 2001, http://www.c-span.org/video/?167840-1/WarAgainst पर उपलब्ध।

77. प्रथम खाड़ी युद्ध के मामले में, देखें डेविड हेंडरसन, "क्या तेल के लिए युद्ध करना आवश्यक है?" कैटो *इंस्टीट्यूट विदेश नीति ब्रीफिंग,* अक्टूबर 24, 1990, http://object.cato.org/sites/cato.org/files/pubs/pdf/fpb004.pdf पर उपलब्ध। हेंडरसन आर्थिक सलाहकार परिषद के वरिष्ठ ऊर्जा अर्थशास्त्री रह चुके हैं। वे नेवल पोस्ट ग्रैजुएट स्कूल में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्होंने एक ऐसी घटना की कल्पना की, जिसमें इराक, कुवैत, सऊदी अरब और यूनाइटेड अरब अमीरात के तेल पर सद्दाम हुसैन का नियंत्रण हो जाता है और तेल की आपूर्ति में भारी कमी हो जाती है। उन्होंने इसके परिणामस्वरूप तेल की कीमतों में बढ़ोत्तरी की गणना की और पाया कि यूएस की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव उस ख़र्च की तुलना में नगण्य होगा, जो इस काल्पनिक घटना को रोकने पर करना पड़ेगा। यूएस के पास फारस की खाड़ी में अपनी सेना भेजने का कोई आर्थिक कारण नहीं था।

78. देखें यूजीन गोल्ज़ तथा डैरिल जी. प्रेस, "दि प्राइज़ः ऑयल एंड यूएस नेशनल इंटरेस्ट", *सेक्युरिटी स्टडीज़,* खंड 19, क्रं. 3 (पतझड़ 2010) पृ. 453–85।

79. एक उदाहरण के तौर पर, "अमेरिकन एंटरप्राइज़ इंस्टीट्यूट के निवासी विद्वान डेरेक सिज़र्स, जो चीनी विदेशी निवेश का अध्ययन करते हैं, ने कहा है कि चीनी कम्पनियां संपदा पर खुलकर ख़र्च करती हैं। "वे अधिक कीमत अदा करते हैं, ताकि सौदे में शामिल कम्पनियां इसके लिए

राजनीतिक मंजूरी ले सकें", उन्होंने कहा, और यह भी कि उनके पास विशाल निवेश निधि होती है, जिसे वे ख़र्च करना चाहते हैं। उद्योग जगत के कुछ विश्लेषक मानते हैं कि चीनी ख़रीदारों ने हाल के कुछ सौदों में अधिक भुगतान किया होगा। इसी साल, साइनोकेम ने पायोनियर नौचिरल रिसोर्सेस कं. के साथ टेक्सास में पर्मियन बेसिन ऑयल का सौदा किया, जिसकी कीमत विश्लेषकों के अनुमान से 40: अधिक थी। सीएनओओसी ने नेक्सेन के लिए 61: प्रीमियम का भुगतान किया, और साइनोपेक ने ऑयल–सैंड संचालक डेलाइट एनर्जी के लिए 44: प्रीमियम का भुगतान किया"। ("चाइनीज़ एनर्जी डील्स फोकस ऑन नॉर्थ अमेरिकाः स्टेट ओन्ड फर्म्स सीक सिक्योर सप्लाइज़, एडवांस्ड टेक्नोलॉजी", लेखक रसेल गोल्ड तथा चेस्टर डॉसन, *वॉल स्ट्रीट जर्नल,* अक्टूबर 25, 2013) सरकार की विदेशों में ख़रीद पर केवल अधिक कीमत ही अदा नहीं की जाती है, बल्कि उन चीज़ों को चीन के कुछ विशिष्ट उद्यमों को सब्सिडी पर उपलब्ध कराया जाता है, जो सम्पूर्ण चीनी अर्थव्यवस्था पर दोहरा बोझ है। बीजिंग की यूनिरूल इंस्टीट्यूट के होंग षेंग और नोंग झाओ लिखते हैं, "2001 से 2009 तक एसओई ने संसाधन कर के रूप में 243.7 अरब आरएमबी का कम भुगतान किया। कोयला, प्राकृतिक गैस तथा अन्य संसाधन मिलाकर एसओई ने कुल 497.7 अरब आरएमबी का कम भुगतान किया"। होंग षेंग और नोंग झाओ, *चाइनाज़ स्टेट ओन्ड एंटरप्राइज़ेसः नैचर, परफॉर्मेंस एंड रिफॉर्म* (सिंगापुरः वर्ल्ड साइंटिफिक पब्लिशिंग कम्पनी, 2012) (किंडल संस्करण स्थान 242–43)।

80. (फ्रांसीसी भाषा) http://www.lemonde.fr/afrique/article/2009/03/25/la-politique-africaine-de-nicolas-sarkozy-tarde-a-rompre-avec-une-certaine-opacite_1172354_3212.html पर उपलब्ध।

81. "विश्व में लागू संरक्षणवादी उपायों में से एक तिहाई अपने कस्टम यूनियन भागीदार बेलारूस और कज़ाकिस्तान के साथ रूस ने लागू किए हैं" कहता है ग्लोबल ट्रेड अलर्ट (जीटीए) का एक अध्ययन, जो एक अग्रणी स्वतंत्र व्यापार निगरानी सेवा है। "अध्ययन के अनुसार संरक्षणवादी उपाय लागू करने में रूस विश्व में सबसे आगे है" *मॉस्को टाइम्स,* जनवरी 12, 2014।

82. (फ्रांसीसी भाषा) http://files.libertyfund.org/files/2343/Bastiat_Oeuvres_1561.02.pdf पर उपलब्ध।

83. जीन–बैप्टिस्ट से, *ए ट्रीटाइज़ ऑन पॉलिटिकल इकॉनमी* अनु. सी.आर. प्रिंसेप तथा क्लेमेंट सी. बिडल (फिलाडेल्फियाः लिपिनकॉट, ग्रैम्बो एंड कं., 1885), पुस्तक I, अध्याय XVII] "ऑफ दि इफेक्ट ऑफ गवर्नमेंट रेग्युलेषन्स इंटेंडेड टु इंफ्लुएंस प्रॉडक्शन", http:// oll.libertyfund.org/title/274/38004 पर उपलब्ध। व्यापार संतुलन एक हानिकारक विचार है, इस बात को अर्थशास्त्री सैकड़ों वर्ष पहले ही मान चुके हैं, लेकिन यह अब भी उन लोगों में ख़ासा

लोकप्रिय है, जिन्होंने इस पर पूर्ण विचार नहीं किया है। महान फ्रांसीसी अर्थशास्त्री तुर्गो ने अपने गुरु विंसेंट डी. गुर्ने पर लिखी पुस्तक "इलोज डी गुर्ने" में लिखा है कि व्यापारवादी प्रवृत्तियों का बचाव करना, मतलब यह भूल जाना कि व्यापार दो–तरफा ही हो सकता है, विदेशियों को सामान बेचना, और बदले में कुछ न ख़रीदना हास्यास्पद है"। डब्ल्यू. वॉकर द्वारा संपादित *दि लाइफ एंड राइटिंग्स ऑफ तुर्गो* में "पोट्रेट ऑफ ए मिनिस्टर ऑफ कॉमर्स, इलोज डी गुर्ने" (1895; न्यूयॉर्कः बर्ट फ्रैंकलिन, 1971), पृ. 238।

84. पॉल क्रुगमैन, पॉप *इंटरनेशनलिज़्म* में पॉल क्रुगमैन, "दि इल्युज़न ऑफ कॉन्फ्लिक्ट इन इंटरनेशनल ट्रेड" (कैम्ब्रिज, मैसा.– दि एमआईटी प्रेस, 1998), पृ. 84। इस पुस्तक के अन्य निबंध भी पढ़ने लायक हैं, जिसमें "व्हाट डू अंडर ग्रैजुएट्स नीड टु नो अबाउट ट्रेड", पृ. 116–25 शामिल है।

85. यह असंभव है, जैसा कि मूलभूत लेखा सूत्र "बचत–निवेश = निर्यात–आयात" दर्शाता है; यदि आपके आयात आपके निर्यात से अधिक हैं, तो आपके निवेश आपकी बचत से अधिक होंगे, इस प्रकार आप पूँजी आयात कर रहे हैं; और यदि आपके निर्यात आपके आयात से अधिक हुए, तो आपकी बचत आपके निवेश से अधिक होगी, इस प्रकार आप पूँजी निर्यात कर रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय व्यापार, उसके शांति के साथ संबंधों सहित, पर एक विस्तृत विवेचना के लिए देखें डोनाल्ड जे. बूर्दा, ग्लोबलाइज़ेशन (वेस्टपोर्ट, सीटी.: ग्रीनवुड प्रेस, 2008)।

86. जीन–बैप्टिस्ट से, *ए ट्रीटाइज़ ऑन पॉलिटिकल इकॉनमी*, पुस्तक I, अध्याय XVII, "ऑफ दि इफेक्ट ऑफ गवर्नमेंट रेग्युलेशन्स इंटेंडेड टु इंफ्लुएंस प्रॉडक्शन", http:// oll.libertyfund.org/title/274/38004 पर उपलब्ध।

87. ई.के. ब्रामस्टेड तथा के.जे. मेलहिश द्वारा संपादित *वेस्टर्न लिबरलिज़्मः ए हिस्ट्री इन डॉक्युमेंट्स फ्रॉम लॉक टु क्रोसे* पूर्व–उल्लेखित, में जॉन प्रिंस–स्मिथ, "ऑन दि सिग्निफिकेंस ऑफ फ्रीडम ऑफ ट्रेड इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स" जर्मन अर्थशास्त्रियों की तृतीय सभा को भाषण, कोल्न, 1860, पृ. 357–59, पृ. 357।

88. मोंतेस्क्यू, *दि स्पिरिट ऑफ दि लॉज़*, अनु. एनी एम. कोहलर, बेसिया कैरोलिन मिलर तथा हैरोल्ड सैम्युएल स्टोन (1748; कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989) पुस्तक 20, "ऑन दि लॉज़ इन देयर रिलेशन टु कॉमर्स, कन्सिडर्ड इन इट्स नैचर एंड इट्स डिस्टिंक्शन्स", अध्याय 2, "ऑन दि स्पिरिट ऑफ कॉमर्स", पृ. 338।

89. कार्लोस डब्ल्यू. पोलाचेक तथा कार्लोस सीग्ली, "ट्रेड, अमन एंड डेमोक्रेसीः एन एनालिसिस ऑफ डायाडिक डिस्प्यूट", इंस्टीट्यूट फॉर दि स्टडी ऑफ लेबर (आईज़ेडए) डिस्कशन पेपर 2170 (जून 2006), http://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm\abstract_id¾915360## पर उपलब्ध।

90. देखें एरिक गार्तज़्के, क्वान ली, तथा चार्ल्स बोहमर, "इनवेस्टिंग इन अमनः इकनॉमिक

इंटरडिपेंडेंस एंड इंटनेशनल कॉन्फ्लिक्ट", *इंटरनेशनल ऑर्गनाइज़ेशन*, खंड 55, क्र. 2 (वसंत 2001) पृ. 391–438।

91. देखें डगलस ए. इर्विन, *पेडलिंग प्रोटेक्शनिज़्मः स्मूट–हॉवली एंड दि ग्रेट डिप्रेशन* (प्रिंसटनः प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011)।

92. http://econjwatch.org/articles/economists-against-smoot-hawley पर उपलब्ध।

93. हैरी एस. ट्रूमैन, "एड्रेस ऑन फॉरेन इकनॉमिक पॉलिसी, डिप्रिमर्ड एट बेलोर यूनिवर्सिटी, मार्च 6, 1947", पब्लिक पेपर्स ऑफ दि प्रेसिडेंट्स, हैरी एस. ट्रूमैन 1947–53, http://trumanlibrary.org/publicpapers/index.php?pid=2193-st=&st1= पर उपलब्ध।

94. होमर, दि ओडेसी, अनु. रॉबर्ट फेगल्स (न्यूयॉर्कः पेंग्विन, 1997) पृ. 215।

95. पार्कर टी. मून, *इम्पीरियलिज़्म एंड वर्ल्ड पॉलिटिक्स* (न्यूयॉर्कः दि मैकमिलन कम्पनी, 1926), पृ. 58। राजा लियोपोल्ड द्वारा बेल्जियन कांगो, तथा कथित "फ्री स्टेट", के शोषण का मून द्वारा किया गया वर्णन आँखें खोल देने वाला है, जिसमें स्थानीय लोगों को कल्पना से परे यातनाएं झेलनी पड़ीं, राजा अमीर हो गया और बेल्जियन करदाताओं पर करों का बोझ बढ़ गया। सर रॉजर केसमेंट की 1904 की केसमेंट रिपोर्ट ने कांगो की दुर्दशा को बेल्जियम की जनता के सामने उजागर किया। उनका यह वीरतापूर्ण कार्य हमेशा याद रखा जाना चाहिए। दुख की बात यह है कि कांगो तथा ब्राज़ील में हुए दुष्कृत्यों को उजागर करने के बाद इस जनता के हीरो को ब्रिटिश सरकार ने आइरिश स्वतंत्रता का सक्रिय समर्थन करने के जुर्म में मौत की सज़ा दे दी।

96. देखें टॉम जी. पामर, "मिथ्स ऑफ इंडिविजुआलिज़्म", *कैटो पॉलिसी रिपोर्ट* (सितम्बर/अक्टूबर 1996), http://www.libertarianism.org/publications/essays/myths-individualism पर उपलब्ध।

97. जोहान हेरी में उद्धृत, "दि टू चर्चिल्स", *चर्चिल्स एम्पायरः दि वर्ल्ड दैट मेड हिम एंड दि वर्ल्ड ही मेड* की रिचर्ड टो; द्वारा समीक्षा, *न्यूयॉर्क टाइम्स*, अगस्त 12, 2010।

98. जोश सैनबर्न, "पॉल क्रुगमैनः एन एलियन इन्वेज़न कुड फिक्स दि इकॉनमी", *टाइम* 16 अगस्त 2011।

99. थॉमस जेफरसन एलब्रिज गेरी से मुख़ातिब, जूलियन पी. बॉयड तथा अन्य द्वारा संपा. *दि पेपर्स ऑफ थॉमस जेफरसन*, 13 मई 1797, अब तक 36 खंड (प्रिंसटन, एन.जे., 1950–), खंड 29, पृ. 364।

100. बेंजामिन फ्रैंकलिन जोनाथन शिपली से मुख़ातिब, लेनार्ड डब्ल्यू. लाबारी तथा अन्य द्वारा संपा. *दि पेपर्स ऑफ बेंजामिन फ्रैंकलिन*, 10 जून 1782,

अब तक 40 खंड (न्यू हेवन, कने.: येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1959–2011), खंड 37 पृ. 457।

101. विलियम टी. हचिन्सन तथा अन्य द्वारा संपा. *दि पेपर्स ऑफ जेम्स मेडीसन: कांग्रेशनल सिरीज़*, 17 खंड (शार्लोट्सविल, वर्जी.: यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ वर्जीनिया, 1962–91) में जेम्स मेडीसन, *पॉलिटिकल ऑब्ज़र्वेशन्स*, 20 अप्रैल 1795, खंड 15, पृ. 518

102. बॉयड तथा अन्य द्वारा संपादित *दि पेपर्स ऑफ थॉमस जेफरसन*, में कांग्रेस द्वारा स्वीकृत स्वतंत्रता का घोषणापत्र, 4 जुलाई 1776, खंड 1, पृ. 429–30।

103. बर्नार्ड बेलिन, *दि आइडियोलॉजिकल ओरिजिन्स ऑफ दि अमेरिकन रिवोल्यूशन* (कैम्ब्रिज, मैसा.: हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1967), पृ. 36, 48, 61–65, 84, 112–19; रिचर्ड एच. कोह्न, *ईगल एंड स्वोर्ड: दि फेडरलिस्ट्स एंड दि क्रिएशन ऑफ दि मिलिट्री एस्टेब्लिशमेंट इन अमेरिका*, 1783–1802 (न्यूयॉर्क: दि फ्री प्रेस), 1–13; जोसेफ जे. एलिस, *हिज़ एक्सीलेंसी: जॉर्ज वॉशिंगटन* (न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. नॉफ, 2004) पृ. 68–72।

104. एल.एच. बटरफील्ड तथा अन्य द्वारा संपा. *दि एडम्स फैमिली कॉरस्पॉन्डेंस*, अब तक 9 खंड (कैम्ब्रिज, मैसा.: हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1963–) में जॉन एडम्स एबिगेल एडम्स से मुख़ातिब, 2 सितम्बर 1777, खंड 2, पृ. 336; चार्ल्स रॉयस्टर, *ए रिवोल्यूशनरी पीपुल एट वार: दि कॉन्टिनेन्टल आर्मी एंड अमेरिकन कैरेक्टर, 1775–1783* (चौपल हिल, एन.सी.: यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना प्रेस, 1919), पृ. 116–19, 179–89।

105. जॉन सी. फिट्ज़पैट्रिक द्वारा संपा. *दि राइटिंग्स ऑफ जॉर्ज वॉशिंगटन* 39 खंड (वॉशिंगटन डी.सी.: यूएस शासकीय मुद्रण कार्यालय, 1931–39) में जॉर्ज वॉशिंगटन लेविस निकोला से मुख़ातिब, 22 मई 1782, खंड 24, पृ. 272–73; एलिस, *हिज़ एक्सीलेंसी*, पृ. 138–39।

106. कोह्न, *ईगल एंड स्वोर्ड*, पृ. 17–39; एलिस, *हिज़ एक्सीलेंसी*, पृ. 141–46।

107. गैरी विल्स, *सिनसिनैटस: जॉर्ज वॉशिंगटन एंड दि एन्लाइटनमेंट* (गार्डन सिटी, एन.वाई.: डबलडे, 1984); डब्ल्यू.डब्ल्यू. एबॉट तथा अन्य द्वारा संपा. *दि पेपर्स ऑफ जॉर्ज वॉशिंगटन: कॉन्फेडरेशन सिरीज़* 6 खंड (शार्लोट्सविल, वर्जी.: यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया प्रेस, 1992–95) में जॉर्ज वॉशिंगटन डेविड हम्फ्रे से मुख़ातिब, 25 जुलाई 1785, खंड 3, पृ. 148–49।

108. स्टुअर्ट लाइबिगर, *फाउंडिंग फ्रेंडशिप: जॉर्ज वॉशिंगटन, जेम्स मेडीसन, एंड दि क्रिएशन ऑफ दि अमेरिकन रिपब्लिक* (शार्लोट्सविल, वर्जी.: यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया प्रेस, 1999), पृ. 58–95।

109. जोसेफ जे. *एलिस, फाउंडिंग ब्रदर्स: दि रिवोल्यूशनरी जनरेशन* (न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. नॉफ, 2001), पृ. 120–22, 134–48; जॉर्ज वॉशिंगटन, विदाई भाषण, 19 सितम्बर 1796, फाउंडर्स ऑनलाइन, नेशनल आर्काइव्ज़ (http://founders.archives.gov/documents/Washington/99-01-02-00963] ver. 2013&12&27)।

110. जूलियन पी. बॉयड तथा अन्य द्वारा संपा. *दि पेपर्स ऑफ थॉमस जेफरसन*, अब तक 36 खंड (प्रिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1950–), में थॉमस जेफरसन, प्रथम उद्घाटन भाषण, 4 मार्च 1801, खंड 33, पृ. 150।

111. एलिस, *फाउंडिंग ब्रदर्स*, पृ. 190–93; यूएस संवि. संशो. I, साथ ही देखें जेम्स मॉर्टन स्मिथ, फ्रीडम्स फेटर्स: दि एलिएन एंड सेडीशन लॉज एंड अमेरिकन सिविल लिबर्टीज़ (इथाका, एन.वाई.: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1956)।

112. डेविड एन. मेयर, *दि कॉन्स्टिट्यूशनल थॉट ऑफ थॉमस जेफरसन* (शार्लोट्सविल, वर्जी.: यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया प्रेस, 1994), पृ. 215–18, 244–51; डर्ब्यू आर. मैकॉय, *दि इल्युसिव रिपब्लिक: पॉलिटिकल इकॉनमी इन जेफरसनियन अमेरिका* (इथाका, एन.वाइ.: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1980), पृ. 195–210; मेरिल डी. पीटरसन द्वारा संपा. *थॉमस जेफरसन: राइटिंग्स* (न्यूयॉर्क: लाइब्रेरी ऑफ अमेरिका, 1984) में जेफरसन रॉबर्ट आर. लिविंगस्टन से मुख़ातिब, 18 अप्रैल 1802, पृ. 1105।

113. राल्फ केचम, *जेम्स मेडीसन: ए बायोग्राफी* (न्यूयॉर्क: मैकमिलन, 1971), पृ. 585–86; पिएत्रो एस. निवोला तथा पीटर जे. कैस्टर द्वारा संपा. *व्हाट सो प्राउडली वी हेल्ड: एसेज़ ऑन दि कंटेम्परेरी मीनिंग ऑफ दि वार ऑफ 1812* (वॉशिंगटन डीसी: ब्रूकिंग इंस्टीट्यूशन प्रेस, 2012) में बेंजामिन विट्स तथा रीतिका सिंह, "जेम्स मेडीसन, प्रेसिडेंशियल पॉवर, एंड सिविल लिबर्टीज़ इन दि वार ऑफ 1812", पृ. 97–121।

114. जे. जेफरसन लूनी द्वारा संपा. *दि पेपर्स ऑफ थॉमस जेफरसन: रिटायरमेंट सिरीज़*, अब तक 7 खंड (प्रिंसटन, एन.जे.: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004–) में जेफरसन मेडीसन से मुख़ातिब, 27 अप्रैल 1809, खंड 1 पृ. 169; पीटर एस. ओनफ, जेफरसन्स एम्पायर: *दि लैंग्वेज ऑफ अमेरिकन नेशनहुड* (शार्लोट्सविल, वर्जी.: यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया प्रेस, 2000), पृ 53–79।

115. "प्रकृतिशाह" शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ है "प्रकृति का राज"। इसे मानने वाले विचारकों का विश्वास है कि समाज कुछ समझे जा सकने वाले स्व–नियमों के अनुसार संचालित होता है, न कि राजाओं के नियम से।

116. मैकॉय, *दि इल्युसिव रिपब्लिक*, 86–100; फिलिप एस. फोनर द्वारा संपा. *दि कम्पलीट राइटिंग्स ऑफ थॉमस पेन*, 2 खंड (न्यूयॉर्क: सिटाडेल प्रेस, 1945) में *थॉमस पेन, कॉमन सेन्स*, 1776 1:20; बॉयड तथा अन्य द्वारा संपादित *दि पेपर्स ऑफ थॉमस जेफरसन* में जेफरसन विलियम कारमाइकल से मुख़ातिब, 10:634।

117. रॉबर्ट गेट्स, जनवरी 19, 2014 को प्रेस से मिलिए कार्यक्रम में चर्चा। प्रतिलिपि http://www.nbcnews.com/id/54117257/ns/meet_the_press-transcripts/t/January-dianne-feinstein-mike-rogers-alexis-ohanian-john-wisniewski-rudy-giuliani-robert-gates-newt-gingrich-andrea-mitchellharold-ford-jr-nia-malika-henderson/#. UxdBE1OGfKc पर उपलब्ध।

118. चार्ल्स टिली, *कोअर्शन, कैपिटल एंड यूरोपियन स्टेट्स*, ए.डी. 990–1992 (कैम्ब्रिज, मैसा.: ब्लैकवेल, 1990)।

119. एक व्यापक, किंतु संक्षिप्त चर्चा के लिए देखें, जैक एस. लेवी तथा विलियम आर. थॉम्पसन, *दि आर्क ऑफ वार: ओरिजिन्स, एस्केलेशन, एंड ट्रांसफॉर्मेशन* (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2011)

120. चार्ल्स टिली द्वारा संपा. *दि फॉर्मेशन ऑफ नेशनल स्टेट्स इन वेस्टर्न यूरोप* (प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1975) में चार्ल्स टिली, "रिफ्लेक्शन्स ऑन दि हिस्ट्री ऑफ यूरोपियन स्टेट–मेकिंग", पृ. 42।

121. जैक एस. लेवी, "हिस्टोरिकल ट्रेंड्स इन ग्रेट पॉवर वार, 1495–1975", इंटरनेशनल स्टडीज़ क्वार्टरली 26, क्र. 2 (जून 1982): 278–300।

122. जॉन म्युलर, *रिट्रीट फ्रॉम डूम्सडे: दि ऑबसोलेसेन्स ऑफ मेजर वार* (न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स, 1989), पृ. 240–44।

123. संपूर्ण चर्चा के लिए देखें बेंजामिन एच. फ्रीडमैन, ब्रेंडन रीटनहाउस ग्रीन और जस्टिन लोगन, "डिबेटिंग अमेरिकन एंगेजमेंट: दि फ्यूचर ऑफ यू.एस. ग्रैंड स्ट्रेटेजी", *इंटरनेशनल सेक्युरिटी* 38, क्र. 2 (पतझड़ 2013): 183–92।

124. स्कॉट डी. सगान तथा केनेथ एन. वाल्ट्ज़ की *दि स्प्रेड ऑफ न्यूक्लियर वीपन्स: ए डिबेट* (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू.डब्ल्यू. नॉर्टन, 1995) में केनेथ एन. वाल्ट्ज़, "वाल्ट्ज़ रिस्पॉन्ड्स टु सगान", पृ. 111।

125. कुछ लोग तर्क दे सकते हैं कि इज़राइल द्वारा सीरिया के रिएक्टरों पर हमला इसके विपरीत करता है, लेकिन सीरियाई प्रोग्राम अपने लक्ष्य से दशकों दूर था और इस प्रकार इज़राइली हमला इज़राइल की सुरक्षा की दृष्टि से व्यर्थ ही था।

126. आर्तेमी कालिनोव्स्की, "डिसीज़न–मेकिंग एंड दि सोवियत वार इन अफगानिस्तान: फ्रॉम इंटरवेन्शन टु विदड्रॉवल", *जर्नल ऑफ कोल्ड वार स्टडीज़*, 11, क्र. 4 (पतझड़ 2009): 50।

127. डैरिल जी. प्रेस, *कैलक्युलेटिंग क्रेडिबिलिटी: हाउ लीडर्स असेस मिलिटरी थ्रेट्स* (इथाका, एन.वाइ.: कॉर्निल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007)।

128. चर्चा के लिए देखें एलन जे. कुपरमैन, "ए मॉडेल ह्यूमैनीटेरियन इंटरवेन्शन?

रीएसेसिंग नाटोज़ लीबिया कैम्पेन", *इंटरनेषनल सेक्युरिटी* 38, क्र. 1 (गर्मी 2013): 105–36।

129. हेलन कूपर तथा स्टीवन ली मायर्स, "ओबामा टेक्स हार्ड लाइन विथ लीबिया आफ्टर शिफ्ट बाय क्लिंटन", *न्यूयॉर्क टाइम्स*, मार्च 18, 2011।

130. चर्चा के लिए देखें एलन जे. कुपरमैन, "ए मॉडेल ह्यूमैनीटेरियन इंटरवेन्शन? रीएसेसिंग नाटोज़ लीबिया कैम्पेन"।

131. राजनीति की उपेक्षा करने की पश्चिमी प्रवृत्ति और उससे हो सकने वाली समस्याओं पर एक तीखी नज़र के लिए देखें रिचर्ड के. बैट्स, "दि डिल्यूजन ऑफ इम्पार्शियल इंटरवेन्शन", *फॉरेन अफेयर्स* 73, क्र. 6 (नवं/दिसं 1994): 20–33।

132. राष्ट्रपति ड्वाइट डी. आइज़नहावर, "राष्ट्र के नाम विदाई भाषण", जनवरी 17, 1961। अधिक विस्तार के लिए देखें पीटर ट्रूबोविट्ज़, *डिफाइनिंग दि नेशनल इंटरेस्ट: कॉन्फ्लिक्ट एंड चेंज इन अमेरिकन फॉरेन पॉलिसी* (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1998)।

133. बेंजामिन एच. फ्रीडमैन और जस्टिन लोगन, "व्हाय दि यूएस मिलिट्री बजट इज फूलिश एंड सस्टेनेबल", *ऑर्बिस*, 56 अंक 2 (पतझड़ 2012): 177–91

134. संभ्रांत राजनीति और अति–विस्तार पर देखें जैक स्नाइडर, मिथ्स ऑफ एम्पायर: *डोमेस्टिक पॉलिटिक्स एंड इंटरनेशनल एम्बिशन* (इथाका, एन.वाई.: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991)

135. उदाहरण के लिए, 2003 के स्टेट ऑफ दि यूनियन भाषण में यूएस राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने इराक युद्ध के समर्थन में ईसाई धर्मसिद्धांत के शब्द कहे थे, और उसमें ईसा मसीह के स्थान पर अमेरिकी लोगों को रखा था। देखें एलन कूपरमैन, "ओपनली रिलीज़ियस, टु ए पॉइंट", *वॉशिंगटन पोस्ट*, सितम्बर 16, 2004। अधिक विस्तार के लिए देखें कॉनर क्रूज़ ओ'ब्रायन, *गॉड लैंड: रिफ्लेक्शन्स ऑन रिलीजन एंड नेशनलिज़्म* (कैम्ब्रिज, मैसा.: हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1999)।

136. एसडब्ल्यूएटी दस्तों के इस्तेमाल से संबंधित काफी सारा डेटा प्रोफेसर पीटर क्रास्क ने एकत्र किया था। सबसे सुव्यवस्थित डेटा एकत्रीकरण 2005 तक का था। इस मुद्दे की एक ताज़ी समीक्षा मार्च 22, 2014 के दि इकनॉमिस्ट में "पैरामिलिट्री पोलिस: कॉप्स ऑर सोल्जर्स?" शीर्षक से देखी जा सकती है। http:// www.economist.com/news/united-states/21599349-americas-police-have-become-too-militarised-cops-or-soldiers

137. *प्रीसॉक्रेटिक फलोसॉफर्स: ए क्रिटिकल हिस्ट्री विथ ए सिलेक्शन ऑफ टेक्स्ट्स*, लेखक जी.एस. कर्क, जे.ई. रेवन, तथा एम. स्कोफील्ड (द्वितीय संस्करण: कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1957), पृ. 193। हेराक्लिटस को यह कहते हुए भी बताया गया है, "(ग्रीक भाषा)"। "यह जानना आवश्यक है कि युद्ध

आम होते हैं और अधिकार ही टकराव होते हैं, और सब कुछ टकराव और आवश्यकता की वजह से ही होता है।" (पृ. 193)

138. जोसेफ डी माइस्त्रे, *कन्सिडरेशन्स ऑन फ्रांस*, अनु. रिचर्ड ए. लेब्रन (1797; कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000), पृ. 23।

139. स्टीवन पिंकर, *दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचरः ए हिस्ट्री ऑफ वायलंस एंड ह्यूमैनिटी* (लंदनः पेंग्विन बुक्स, 2011)। पिंकर की पुस्तक गंभीर सामाजिक विज्ञान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो सबूत खोजती है और उसे प्रस्तुत करती है, प्रायोगिक सिद्धांतों को सुझाती है और उन्हें परखती है, और निश्चित सबूत न होने पर अनिश्चितता की स्वीकृति भी देती है।

140. पिंकर इस आपत्ति से निपटते हैं कि बीसवीं शताब्दी में देशों द्वारा आयोजित हिंसा के भयावह, स्तब्धकारी और घिनौने स्तर देखे गए; इन्हें ध्यान में रखते हुए भी, इंसानों द्वारा हिंसा अनुभव करने की संभावना बीसवीं शताब्दी में आमतौर पर कम ही हुई है। देखें *दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचरः ए हिस्ट्री ऑफ वायलंस एंड ह्यूमैनिटी*, पृ. 233–78।

141. *उपरोक्त*, पृ. 769

142. इस निबंध में दोनों शब्द समान अर्थ में उपयोग हुए हैं। यूएस में उदारवाद शब्द जिस अर्थ में इस्तेमाल होता है, उससे ग़लतफहमी टालने के लिए अधिकांश देशों में इच्छास्वतंत्रतावादी को "उदारवाद" या "पारम्परिक उदारवाद" कहते हैं। अर्थशास्त्री जोसेफ स्कमपीटर ने कहा है कि "निजी उद्यम प्रणाली के विरोधियों ने इसके लेबल को चुराकर अनजाने में ही सही, लेकिन इसकी सबसे अच्छी प्रशंसा की है"। जोसेफ स्कमपीटर, *हिस्ट्री ऑफ इकनॉमिक एनालिसिस* (न्यूयॉर्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974), पृ. 394। साथ ही देखें जॉर्ज एच. स्मिथ, *दि सिस्टम ऑफ आज़ादीः यीम्स इन दि हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल लिबरलिज़्म* (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011), खासकर अध्याय 1, "लिबरलिज़्म, ओल्ड एंड न्यू"। उदारवाद शब्द का इतिहास ग्विल्लॉम डी बर्तिएर डी सॉविग्नी की फ्रांसीसी भाषा की "लि लिबरलिज़्म। ओक्स ओरिजिन द्युन माटे", *कॉमेंटयर*, क्र. 7 (पतझड़), पृ. 420–24, पृ. 24 में दिया है, जो http://www.commentaire.fr/pdf/articles/1979-3-007/1979-3-007.pdf पर ऑनलाइन उपलब्ध है।

143. जॉन लॉक, *टू ट्रीटाइज़ेस ऑफ गवर्नमेंट*, संपा. पीटर लास्लेट (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988), II, अध्याय VI, § 57ए पृष्ठ 507

144. एक उपयोगी समीक्षा के लिए देखें दि इंग्लिश लेवलर संपा. एंड्र्यू शार्प (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998)।

145. "प्रकृति ने प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट गुण दिया होता है, जिस पर किसी अन्य

का अधिकार या अतिक्रमण नहीं हो सकता। प्रत्येक इंसान, जैसा वह स्वयं है, उसी रूप में उसका औचित्य है, अन्यथा वह 'वह' नहीं रह सकता; और इस तत्व को कोई किसी से छीन नहीं सकता, और यदि कोई ऐसा करता है, तो उसका यह कार्य प्रकृति के, तथा इंसान की इंसान के प्रति समता और न्याय के ख़िलाफ होगा। इसके बग़ैर न मेरा कुछ, और न तुम्हारा। मेरे अधिकारों और मेरी आज़ादी पर कोई और हक नहीं जता सकता, न मैं किसी और के साथ ऐसा कर सकता हूँ। मैं एक व्यक्ति हूँ, और अपने आनन्द और अधिकारों को सिर्फ अपने तक, अपने औचित्य तक सीमित रख सकता हूँ, इससे आगे नहीं; यदि मैं इससे आगे जाता हूँ, तो मैं किसी अन्य के अधिकारों पर अतिक्रमण करूँगा – जिसका मुझे कतई हक नहीं। प्रकृति ने सभी इंसानों को एक समान औचित्य, अधिकार और आज़ादी के साथ पैदा किया है; और जैसे हम भगवान के द्वारा प्रकृति के हाथों इस दुनिया में आते हैं, सबका एक प्राकृतिक, जन्मजात स्वतंत्रता और औचित्य होता है – मानों यह सभी इंसानों के दिल पर एक अमिट इबारत के रूप में लिखा गया हो –और हम सबको उसी के अनुसार जीना होता है, अपने जन्मसिद्ध अधिकारों का एक समान रूप से आनन्द लेते हुए जिसे भी भगवान ने इस सृष्टि में भेजा है, वह आज़ाद है"। एंड्र्यू शार्प द्व ारा संपा. *दि इंग्लिश लेवलर* में रिचर्ड ओवरटन, "एन एरो अगेन्स्ट ऑल टायरन्ट्स एंड टायरैनी, पृ. 55।

146. मोंतेस्क्यू, *दि स्पिरिट ऑफ दि लॉज़*, अनु. एनी एम. कोहलर, बेसिया कैरोलिन मिलर तथा हैरोल्ड सैम्युएल स्टोन (1748; कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989), पुस्तक 20, अध्याय 1, पृ. 338। संपत्ति तथा आज़ादी पर अन्य स्थानों के अलावा देखें पुस्तक 25, अध्याय 15, पृ. 510–11।

147. एक "बाज़ार व्यवस्था" के रूप में "कैटलैक्सी" (विविधता–पूर्ण अर्थव्यवस्था) की चर्चा के लिए देखें एफ. ए. हायेक, *लॉ, लेजिस्लेशन व आज़ादी, खंड 2, दि मिराज ऑफ सोशल जस्टिस* (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1978) पृ. 108, लिडल एंड स्कॉट की *ए ग्रीक–इंग्लिश डिक्शनरी* को उद्धृत करते हुए।

148. फ्रेडरिक बास्तियात, *इकनॉमिक हारमनीस* में फ्रेडरिक बास्तियात, "टु दि यूथ ऑफ फ्रांस", अनु. डब्ल्यू. हेडन बोयर (इर्विंगटन–ऑन–हडसनः फाउंडेशन फॉर इकनॉमिक एजुकेशन, 1964), पृ. xxiv

149. फ्रेडरिक बास्तियात, *उपरोक्त*, पृ. xxv

150. अर्न्स्ट जुंगर, *दि स्टॉर्म ऑफ स्टील, फ्रॉम दि डायरी ऑफ ए जर्मन स्टॉर्म–ट्रूप ऑफिसर ऑन दि वेस्टर्न फ्रंट* (न्यूयॉर्कः हॉवर्ड फर्टिग, 1969) पृ. 316–17

151. जोसेफ डी माइस्त्रे, *कन्सिडरेशन्स ऑन फ्रांस*, पूर्व–उल्लेखित, पृ. 29।

152. *उपरोक्त*, पृ. 31

153. देखें इसिया बर्लिन की *दि प्रॉपर स्टडी ऑफ मैनकाइंडः एन एंथोलॉजी ऑफ*

एसेज में इसिया बर्लिन, "दि काउन्टर–एन्लाइटनमेंट" (न्यूयॉर्कः फारार, स्ट्रॉस एंड जिरो, 1998), पृ. 243–68।

154. स्टीवन पिंकर, *दि बेटर एंजेल्स ऑफ अवर नैचर*, पृ. 226।

155. लॉरेंस एस. स्टीपलविच द्वारा संपा. *दि यंग हेगेलियन्सः एन एंथोलॉजी* में फ्रेडरिक इंगल्स, "आउटलाइन ऑफ ए क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकनॉमी" (एमहर्स्ट, एन.वाई.ः ह्यूमैनिटी बुक्स, 1999), पृ. 278–302, पृ. 283।

156. जॉन रस्किन की *दि क्राउन ऑफ वाइल्ड ऑप्रिम, मुनेरा, प्रेमेरिस, सीसामे एंड लिलीज़* में जॉन रस्किन का रॉयल मिलिट्री अकादमी, वूलविच में दिया गया भाषण "वार", (न्यूयॉर्कः थॉमस वाई. क्रोवेल एंड कं., एन.डी.) पृ. 66–67। रस्किन ने आगे कहा कि "यह आम विचार कि शांति तथा नागरिक जीवन के सद्गुण इकट्ठे फल–फूल सकते हैं, मुझे निराधार लगता है। शांति तथा नागरिक जीवन के दुर्गुण ज़रूर इकट्ठे फलते फूलते हैं। हम शांति और शिक्षा की बात करते हैं, शांति और विपुलता की, और शांति तथा सभ्यता की बात करते हैं; लेकिन मैंने पाया है कि ये वे शब्द नहीं हैं, जो इतिहास की देवी के होठों पर थेः उसके होठों पर जो शब्द थे, वे थे – शांति और कामुकता, शांति और स्वार्थ, शांति और भ्रष्टाचार, शांति और मृत्यु। संक्षिप्त में, मैंने पाया कि सभी महान राष्ट्रों ने अपने शब्दों की, ताकत की, विचारों की शक्ति युद्ध में ही प्राप्त की है; वे युद्ध के जरिए फले–फूले, और शांति में उनका नुकसान हुआ; युद्ध से उन्हें षिक्षा मिली और शांति से धोखा मिला; युद्ध से प्रशिक्षण मिला और शांति से विश्वासघात; – दूसरे शब्दों में, उन्हें युद्ध ने जीवन दिया और शांति ने मौत दी"। (पृ. 70)

157. वोल्तेयर ने अपने लेटर्स *कन्सर्निंग दि इंग्लिश नेशन* में उनके द्वारा देखे गए एक अधिक (फ्रांस की तुलना में) उदारवादी और व्यापारिक इंग्लैंड का वर्णन किया है, और कहा है कि भले ही *ग्रेट ब्रिटेन* में एपिस्कोपल तथा प्रेस्बिटेरियन पंथों का प्रभुत्व है, फिर भी यहाँ सभी अन्य पंथों का स्वागत किया जाता है और समाज में सभी साथ मिल–जुल कर रहते हैं, लेकिन सभी पंथों के पादरी एक–दूसरे से उतनी ही तीव्र नफरत करते हैं, जितनी कोई जानसेन का अनुयायी एक जेसूट से करता है। *लंदन के रॉयल एक्सचेंज* को देखिए। इस जगह को कई न्यायालयों से अधिक पवित्र माना जाता है। यहाँ मानवता के हित की बातें करने के लिए सभी देशों के प्रतिनिधि एकत्र होते हैं। यहाँ यहूदी, मुस्लिम, ईसाई, सब एक साथ बैठते हैं, मानों वे एक ही समुदाय के हों, और कंगाल लोगों के अलावा किसी को काफिर नहीं कहते। यहाँ प्रेस्बिटेरियन और एनाबैप्टिस्ट साथ मंत्रणा करते हैं और चर्च के पादरी क्वेकर से सलाह लेते हैं। इस शांत और मुक्त सभा की समाप्ति पर कोई सिनेगॉग में जाता है, तो कोई चर्च में। कोई फादर, सन और होली घोस्ट के नाम पर बाप्तिस्मा देने जाता है, तो कोई *हिब्रू* भाषा में मंत्रपाठ करते हुए बच्चे की सुन्नत करने जाता है। कोई अपने इबादतगाह में जाता है और अपने भगवान

का चिन्तन करता है और इस प्रकार सब खुश रहते हैं। वोल्तेयर, *लेटर्स कन्सर्निंग दि इंग्लिश नेशन* (1733; ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994), पत्र VI, "ऑन दि प्रेस्बिटेरियन", पृ. 30।

158. कार्ल मार्क्स तथा फ्रेडरिक इंगल्स, *दि कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो* (1848; लंदन; वर्सो, 2012), पृ. 37।

159. सोफी विल्किन्स लिखित रॉबर्ट म्युसिल, *दि मैन विदाउट क्वालिटीज़*, खंड 1, (न्यूयॉर्कः विंटेज बुक्स, 1995), पृ. 22।

160. कार्ल मार्क्स तथा फ्रेडरिक इंगल्स, *उपरोक्त*, पृ. 34–35।

161. जैसा मार्क्स कहते हैं, "आपका '*व्यक्ति*' से अर्थ है मध्यम–वर्गीय, ज़मीन का मालिक। निःसंदेह, इस व्यक्ति को रास्ते से हटाना ही होगा और इसका वजूद मिटाना ही होगा"। (*कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो*, पृ. 55)। वर्ग–संघर्ष पर मार्क्सवादी सिद्धांत की समीक्षा के लिए देखें टॉम जी. पामर लिखित *रीयलाइज़िंग फ्रीडमः लिबर्टेरियन थ्योरी, हिस्ट्री एंड प्रैक्टिस* में "क्लासिकल लिबरलिज़्म, मार्क्सिज़्म एंड दि थ्योरी ऑफ क्लास कॉन्फ्लिक्ट" (द्वितीय संस्करणः वॉशिंगटन डीसीः कैटो इंस्टीट्यूट, 2014)। वर्ग के शत्रुओं का सफाया कर वर्ग संघर्ष के सपने को साकार करना, और संपत्ति के अधिकार, बाज़ार विनिमय और कीमत निर्धारण प्रणाली को खत्म करने के घातक परिणाम, ये सब एकत्र रूप से बीसवीं शताब्दी में हुई करोड़ों मौतों के लिए ज़िम्मेदार हैं। विचार यह था कि एक नए, वैश्विक वर्ग का, आम जनता का, उदय होगा और वर्ग संघर्ष समाप्त हो जाएगा, लेकिन वास्तव में हुआ यह कि एक नया वर्ग तैयार हुआ, और अधिक दुश्मन भी पैदा हो गए, जिन्हें मध्यम वर्गीय या उनके एजेन्ट का नाम दिया गया और उनकी पहचान करने और मुकाबला करने के लिए आंतरिक और बाहरी दोनों संघर्ष चालू ही रहे।

162. इताप्रेमी फासीवादी विचारक जियोवानी जेन्ताइल के अनुसार, युद्ध के ज़रिए राष्ट्र की एकता के विचार के रूप में फासीवाद का उदय हुआः "राष्ट्र को अंततः रक्तपात के ज़रिए एकत्र लाने के लिए युद्ध (प्रथम विश्वयुद्ध) में उतरना आवश्यक था। ... यह युद्ध ही है, जो राष्ट्र को एकत्र ला सकता है, यह सभी नागरिकों में एक ही विचार, एक ही भावना, एक ही जुनून और एक ही उम्मीद जगाता है, सबकी चिंता एक ही होती है – यह उम्मीद कि सभी व्यक्तियों की ज़िंदगी स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से एक–दूसरे से जुड़ी रहे, लेकिन किसी एक के हित अन्य सभी से सर्वोपरि न हों। राष्ट्र को एकत्र लाने के लिए युद्ध चाहा गया था – इसे एक सच्चे, वास्तविक अर्थ में जीवंत, सक्रिय राष्ट्र बनाना, जो विश्व में अपना महत्व और मूल्य स्थापित कर सके, और अपने ख़ास व्यक्तित्व, स्वरूप, चरित्र के दम पर इतिहास में नाम दर्ज करा सके, ताकि फिर इसे कभी दूसरों का मुंह न ताकना पड़े या अन्य महान देशों की छाया में न जीना पड़े। इसलिए एक सच्चा राष्ट्र उसी प्रकार से बनाना आवश्यक था, जिस प्रकार से सभी पवित्र वास्तविकताएं जन्म लेती हैंः प्रयास

तथा त्याग के ज़रिए"। जियोवानी जेन्ताइल, *ओरिजिन्स एंड डॉक्ट्राइन ऑफ फैसिज़्म*, अनु. ए. जेम्स ग्रेगोर (न्यू ब्रून्सविक, एन.जे.: ट्रांसेक्षन पब्लिशर्स, 2007), पृ. 2।

163. एडोल्फ हिटलर *माइन कैम्फ* ("मेरा संघर्ष"), अनु. राल्फ मैनहाइम (बोस्टन: हॉटन मिफ्लिन, 1943), पृ. 289।

164. डेविड हेल्ड, *इंट्रोडक्शन टु क्रिटिकल थ्योरी: होरकहाइमर टु हेबरमास* (बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1980), पृ. 160 (नीतज़्शे को उद्धृत करते हुए)

165. रॉबर्ट पी. वुल्फ, बैरिंगटन मूर जूनियर तथा हर्बर्ट मार्क्यूज़ की *ए क्रिटिक ऑफ प्योर टॉलरेंस* में हर्बर्ट मार्क्यूज़, "रिप्रेसिव टॉलरेंस" (बोस्टन: बीकॉन प्रेस, 1965)।

166. विद्वानों में उप–विशेषताओं का चलन तेज़ी से बढ़ा है, जो सांस्कृतिक आधिपत्य, भौतिकवाद, वस्तुनिष्ठतावाद आदि के ख़िलाफ संघर्ष को बढ़ावा देने का दावा करते हैं। ऐसे विषयों का अध्ययन फायदे का हो सकता है, क्योंकि मानव इतिहास का एक बड़ा हिस्सा संघर्ष और आधिपत्य से भरा है। सवाल यह है कि क्या संघर्ष कम किया जा सकता है, टाला या सुलझाया जा सकता है, या यह मानव में जन्मजात है या मानव स्वभाव में अंतर्निहित है। उदारवाद, समान हक, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सहनशीलता को नकारने वाली एक विचारधारा का उदाहरण है एक आंदोलन जिसे "भौतिक नारी अधिकारवाद" (अधिकतर आलोचकों द्वारा) कहा जाता है, जिसकी एक प्रमुख विचारक हैं कैथरीन मैकिनॉन, जो अश्लील साहित्य को एक अपराध घोषित करने की मांग करती हैं और चाहती हैं कि ऐसा साहित्य लिखने वाले, बेचने वाले और ख़रीदने वालों पर मुकदमे चलाए जाएं। मैकिनॉन के अनुसार, "कामुकता... एक प्रकार की ताकत है। लिंग, जिस प्रकार समाज उसे देखता है, इसका मूर्त उदाहरण है। स्त्री तथा पुरुष लिंग के आधार पर बँटे हुए हैं, हमने उन्हें समाज के लिए आवश्यक विषमलिंगी कामुकता के आधार पर बाँट दिया है, जिसमें पुरुष लिंग का प्रभुत्व और स्त्री लिंग का दासत्व निहित है"। कैथरीन ए. मैकिनॉन, "फेमिनिज़्म, मार्क्सिज़्म, मेथड, एंड दि स्टेट: एन एजेंडा फॉर थ्योरी", साइन्स, खंड 7, क्र. 3, फेमिनिस्ट थ्योरी (वसंत 1982), पृ. 515–44, पृ. 533। *टुवार्ड अ फेमिनिस्ट थ्योरी ऑफ दि स्टेट* (कैम्ब्रिज, मैसा: हारवर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1989) में वे "लैंगिक निष्पक्षता" और "निजी अधिकार" को यह कह कर नकार देती हैं कि "अस्पष्ट समानता निश्चित ही [emphasis added] वर्तमान स्थिति में निहित असमानताओं को इस हद तक मज़बूत बना देती है कि वह एक असमान सामाजिक व्यवस्था को भी एक समान रूप से प्रदर्शित करने लगती हैं" (पृ. 227) और "उन्हें एक 'व्यक्ति' के रूप में लेने से, मानों उनकी कोई लैंगिक पहचान ही न हो, ये सामूहिक वास्तविकताएं और लैंगिक समूह के ठोस

परस्पर–सम्बन्ध निजी अधिकारों के मुखौटे के पीछे छिपा दिए जाते हैं"। (पृ. 228) स्टीफन शूट और सूजन हर्ले द्वारा संपादित *ऑन ह्यूमन राइट्स: दि ऑक्सफोर्ड एमनेस्टी लेक्चर्स 1993* (न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स, 1993) में शामिल उनका निबंध "क्राइमस ऑफ वार, क्राइम्स ऑफ अमन" सभी स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में समानता लाने के प्रयासों को बलात्कार के समकक्ष ठहराता है, "पुरुष की स्त्री के प्रति आक्रामकता एक तथ्य है, जिसे कहीं भी सबूतों की आवश्यकता नहीं, ठीक वैसे ही जैसे सर्बियन आक्रामकता के लिए सबूत आवश्यक नहीं हैं"। (पृ. 87)

167. रियर–एडमिरल एस.बी. ल्यूस में 1891 में लिखा था कि "युद्ध उन बड़े कारकों में से एक है, जो मानव की प्रगति को प्रभावित करते हैं। भले ही यह एक अभिशाप है, और इसे अच्छा नहीं माना जाता, फिर भी हमें यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मानव परिवार की सरकारों के प्राकृतिक आर्थिक नियम युद्ध से ही संचालित होते हैं। यह राष्ट्रीय विकास को प्रोत्साहित करता है, घरेलू तथा राजनीतिक अर्थव्यवस्था की असाध्य समस्याओं को सुलझाता है और देश का मिजाज़ ठीक करता है"। रियर एडमिरल एस.बी. ल्यूस, यूनाइटेड स्टेट्स नौसेना, "दि बेनिफिट्स ऑफ वार", *दि नॉर्थ अमेरिकन रिव्यू*, खंड 153, क्र. 421, दिसं. 1891।

168. विलियम क्रिस्टल तथा रॉबर्ट कागन, "टुवार्ड ए नियो–रीगनाइट फॉरेन पॉलिसी", *फॉरेन अफेयर्स*, जुलाई/अगस्त 1996, http:// www.foreignaffairs.com/articles/52239/william-kristol-and-robert-kagan/toward-a-neo-reaganite-foreign-policy पर उपलब्ध।

169. सैम्युएल हंटिंगटन ने *दि क्लैश ऑफ सिविलाइज़ेशन्स एंड दि रीमेकिंग ऑफ वर्ल्ड ऑर्डर* (न्यूयॉर्क: साइमन एंड शूस्टर, 1997), पृ. 207, में एक "सभ्यताओं के टकराव" की परिकल्पना की है: "सभ्यताएं अंततः मानवों के क़बीले ही होते हैं। एक उभरती दुनिया में, दो भिन्न सभ्यताओं से उपजे देश और समूह किसी तीसरी सभ्यता के विरुद्ध अपने हितों की रक्षा के लिए या किसी अन्य उद्देश्य से अस्थायी, सामरिक सम्बन्ध और गठबंधन स्थापित कर सकते हैं। परंतु भिन्न सभ्यताओं से आए समूहों के आपसी सम्बन्ध कभी निकट नहीं होते, उनमें ठंडापन और प्रायः अविश्वास देखा जाता है।" (पृ. 207)

170. उदाहरण के लिए देखें, जी.ए. कोहेन, "फ्रीडम, जस्टिस एंड कैपिटलिज़्म", *न्यू लेफ्ट रिव्यू* I/126 (मार्च–अप्रैल 1981), पृ. 3–16।

171. जोहान पी. समरविल द्वारा संपादित फिल्मर, *पैट्रियार्च एंड अदर राइटिंग्स* में सर रॉबर्ट फिल्मर, "ऑब्ज़र्वेशन्स ऑन एरिस्टॉटल्स पॉलिटिक्स" (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991), पृ. 275। जॉन लॉक, जो आधुनिक उदारवादी विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति करने वाले पहले विचारकों में से थे, ने जवाब में कहा कि, "आज़ादी (फिल्मर के बताए अनुसार) का अर्थ यह नहीं है कि *प्रत्येक व्यक्ति*

अपनी मनमर्ज़ी करे (यदि ऐसा होने लगा, तो हर एक के मिजाज़ एक–दूसरे पर हावी होने लगेंगे और कोई भी आज़ाद नहीं रह पाएगा), बल्कि यह है कि वह अपना व्यक्तित्व, अपने कार्य, अपना सामान और अपनी सारी संपत्ति का संचालन उन नियमों के अधीन रह कर करे, जिनके तहत वह रहता है; और उन नियमों के तहत रहते हुए वह किसी अन्य के अधीन न हो और अपनी इच्छानुसार रहे"। जॉन लॉक, *टू ट्रीटाइज़ ऑफ गवर्नमेंट*, संपा. पीटर लास्लेट (कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988), II, अध्याय VI, § 57ए पृ. 306।

172. इस दावे का थोथापन स्पष्ट होता है जब बलात्कार के शिकार के नज़रिए से सोचा जाए, केवल शारीरिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि इस दृष्टि से कि बलात्कार पीड़ित व्यक्ति के पास एक ही शरीर है, और उस शरीर को लेकर उसकी कुछ इच्छा–आकांक्षाएं हैं। क्या उसे अपने शरीर को अपनी मर्ज़ी के अनुसार रखने का हक है, या वह शरीर किसी भी ऐसे व्यक्ति की हवस का शिकार हो सकता है, जो उसकी इच्छा रखता हो? इसके अलावा, बलात्कार की घटनाओं में कमी, बलात्कार की घटनाओं में वृद्धि के समकक्ष नहीं हो सकती, क्योंकि आज़ादी की दृष्टि से, एक बल प्रयोग (बलात्कार रोकने के लिए) दूसरे बल प्रयोग (बलात्कार करने के लिए) के समकक्ष नहीं होता।

173. जान–वर्नर म्युलर, *ए डेंजरस माइंडः कार्ल श्मिट इन पोस्ट–वार यूरोपियन थॉट* (न्यू हेवनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003), पृ. 1। दि कन्सेप्ट ऑफ दि पॉलिटिकल में दो प्रमुख पारम्परिक उदारवादियों, फ्रांज़ ओपेनहाइमर और जोसेफ स्कमपीटर, पर तीखी आलोचना हुई है। (पृ. 76–79)।

174. कार्ल श्मिट, *दि कन्सेप्ट ऑफ दि पॉलिटिकल*, अनु. तथा संपा. जॉर्ज श्वाब (1932; शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2007), पृ. 26।

175. देखें अलेक्सांद्र दुगिन, *दि फोर्थ पॉलिटिकल थ्योरी* (लंदनः आर्कतोस, 2012), जिसमें यहूदी–विरोध को छोड़कर राष्ट्रीय समाजवाद के प्रमुख तत्व अंतर्निहित हैं, (समलिंगी तथा अमेरिकन उसकी जगह लेते हैं), साथ ही यह श्मिट के "विशाल स्थान" के सिद्धांत पर काफी निर्भर रहती है।

176. कार्ल श्मिट, *राजनीतिज्ञ की विचारधारा*, पृ. 28।

177. कार्ल श्मिट, *राजनीतिज्ञ की विचारधारा*, पृ. 35। "एक विभाजनकारी राजनैतिक संस्था के रूप में सरकार के पास असीमित अधिकार होते हैंः युद्ध शुरू करने की संभावना और उसकी वजह से लोगों को सार्वजनिक रूप से मौत के मुंह में भेजना। युद्ध के कानून में ऐसा ही एक प्रावधान है। इसमें एक दोहरी संभावना छिपी हैः खुद के सदस्यों से मरने को तैयार रहने और दुश्मनों को बिना झिझक के मारने के लिये तैयार रहने की मांग करने का अधिकार।" (पृ. 46)

178. स्लावोय झीझेक, "राजनीति के बाद के युग में कार्ल श्मिट," *कार्ल श्मिट की चुनौतियां* में, शैंटल मूफ संस्करण। (लंदनः वर्सो, 1999), पृ. 18–37, पृ. 29।

179. जॉन रॉल्स, *राजनैतिक उदारतावाद* (न्यूयॉर्कः कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1993), पृ. 267।

180. सॉल आंतोन, "दुश्मनः एक प्रेम कथा," लिंग्वा फ्रांका, मई/जून, 2000।

181. जॅन–वेरनर म्युलर में देखें, *एक ख़तरनाक दिमागः युद्धोत्तर यूरोपियन विचारों में कार्ल श्मिट*, पृ. 229–32।

182. माइकल हार्ट और एंतोनियो नेग्री, *एम्पायर* (कैम्ब्रिज, मैसा.: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001), पृ. 45–46। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और पेंटागन पर ओसामा बिन–लादेन के आत्मघाती आतंकियों के हमले की पूर्व कथा के कारण हो सकता है कि यह किताब हमले के कुछ ही समय बाद गुमनामी में खो गई हो। देखें लोरेन एडम्स का लेख, "वैश्विक थ्योरी बदली हुई धुरी पर घूमती हैः 'एम्पायर' द्वंदके लेखक माइकल हार्ट हमलों के बाद," *वॉशिंगटन पोस्ट*, सितम्बर 29, 2001। इस किताब में हार्ट और नेग्री अनुमान लगाते हैं कि "शायद ऐसा है कि पूंजी जैसे–जैसे उत्पादन और नियंत्रण के अपने वैश्विक जाल को बढ़ाएगी, किसी भी एक बिंदु पर होने वाला विद्रोह उतना ही तीव्र होगा। केवल अपनी ताकत को एक बिंदु पर फोकस करके, अपनी ऊर्जा को एक दबी हुई, तनाव भरी स्प्रिंग में भरते हुए, ये छिट–पुट लड़ाईयां सीधे साम्राज्यवाद के उच्चतम प्रदर्शन पर हमला करती हैं।" (पृ. 58) हार्ट और नेग्री को दुख है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार और गैर–सरकारी बहुराष्ट्रीय संस्थानों का विकास हो रहा है, जो उनके विचार से "किसी स्वतंत्र राजनीतिक संस्था के बिखरने" का कारण बन रहे हैं। इस स्वतंत्र राजनीतिक संस्था से उनका मतलब है किसी देश की सरकार, लेकिन इसके द्वारा वे श्मिट के विचारों का विरोध नहीं, बल्कि समर्थन करते हैं, क्योंकि उनके लिये मित्र और शत्रु के बीच लड़ाई तो जारी है, लेकिन ये "एक अंतरराष्ट्रीय स्तर" पर चली गई है (पृ. 307–9)। साथ ही, अपनी क्लिश्ट शैली में, वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को पूरी तरह दबा देने की मांग करते हैं: "वास्तविक क्रांति में *उत्पादन* के स्तर की बात की जाती है। सत्य से हमें स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, बल्कि सत्य के उत्पादन पर नियंत्रण करने से मिलेगी। गतिशीलता और वर्णसंकर उदारवादी नहीं हैं, लेकिन स्थिरता और गतिशीलता के, और शुद्धता और मिलावट के उत्पादन पर नियंत्रण करना उदारवादी है। एम्पायर में दिये सत्य का वास्तविक स्वरूप होगा जनसामूहिक संवैधानिक सभाएं, जो सत्य के उत्पादन के सामाजिक कारखाने होंगे।" (पृ. 156) बेतरतीब और आवेश में रचनाएं लिखने वाले मार्क्सवादी लेखक स्लावोय झीझेक ने श्मिट के विचारों को स्वीकार करते हुए कहा है कि उदारवादी प्रजातंत्र को भी "श्मिटीय" विचारों को अपनाना होगा, जिसमें "हमारे बहुलतावादी और सहिश्णु उदारवादी प्रजातंत्रों को गहराई से श्मिटीय बने रहना होगाः जिसमें वे राजनैतिक *आईनबिल्डंगसक्राफ्ट* कल्पना की गढ़ शक्ति, पर निर्भर बने रहें, जिससे उन्हें दृश्य और अदृश्य दुश्मनों की यथोचित छवियां मिलती रहें। द्वि पक्षीय तर्क मित्र / शत्रु को छोड़ देने के बजाय, शत्रु की परिभाषा बहुलतावादी सहिष्णुता के विरोधी कट्टरपंथी के रूप में कर देने से उसे एक विशेष आभा

प्राप्त हो जाती है।" स्लावोय झीझेक, "क्या हम युद्ध–रत हैं? क्या हमारा कोई दुश्मन है?", *लंदन रिव्यू ऑफ बुक्स*, खंड 24, क्र. 10, मई 23, 2002।

183. माइकल हार्ट और एंतोनियो नेग्री, *एम्पायर*, पृ. 65–66।

184. जॉर्ज ऑरवेल, "अंग्रेज़ी भाषा और राजनीति," नामक निबंध, जॉर्ज ऑरवेल, *ए कलेक्शन ऑफ एसेज* (न्यूयॉर्कः हारकोर्ट, 1981) में, (पृ. 167)।

185. कार्ल श्मिट, "दि ग्रोसरॉम ऑर्डर ऑफ इंटरनेशनल लॉ विद ए बॅन ऑन इंटरवेन्शन फॉर स्पेशियली फॉरेन पॉवर्सः ए कांट्रिब्यूशन टू दि कन्सेप्ट ऑफ राईश इन इंटरनेशनल लॉ (1939–14)," और कार्ल श्मिट, *राइटिंग ऑन वॉर*, टिमोथी नूनान, अनुवाद। (लंदनः पॉलिटी प्रेस, 2011), पृ. 75–124, पृ. 109।

186. श्मिट और स्ट्रॉस के बीच के रिश्ते पर कई पुस्तकों में चर्चा की जा चुकी है, जिनमें से अनेक में स्ट्रॉस के फासीवाद के प्रति प्रेम के बारे में इशारा भर किया गया है। देखें लियो स्ट्रॉस, "नोट्स ऑन कार्ल श्मिट, *दि कन्सेप्ट ऑफ दि पॉलिटिकल,*" कार्ल श्मिट के राजनीतिज्ञ की विचारधारा पर टिप्पणी, पृ. 97–122; हेनरिख मीयर, *कार्ल श्मिट और लियो स्ट्रॉसः अनजाना संवाद* (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2006); और सी. ब्रेडली थॉमसन, यारोन ब्रूक के साथ, नव–परम्परावादः एक विचार की शोक कथा (बोल्डरः पैराडाइम पब्लिशर्स, 2010), विशेषकर चैप्टर 9, "फासीवाद से बतियाना।" साथ ही एक मामला स्ट्रॉस के 19 मई 1933 को कार्ल लोविथ को लिखे पत्र का भी है, जिसे उन्होंने जर्मनी में नेशनल सोशलिस्ट्स की विजय के बाद पेरिस से लिखा था। स्ट्रॉस लिखते हैं कि यह भयानक है कि "सारे जर्मन–यहूदी बुद्धिजीवी सर्वहारा वर्ग के लोग यहां पर हैं" (पेरिस में) और मेरी इच्छा है कि में जर्मनी लौटूं, लेकिन, वे लिखते हैं, जर्मनी में यहूदियों का स्वागत नहीं है। हालांकि, वे यह भी लिखते हैं कि दक्षिणपंथियों के उसूलों में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो जर्मनी, जो कि धुर दक्षिणपंथी हो गया है, उनका स्वागत नहीं करें (लोविथ भी यहूदी थे)ः जर्मन भाषा में यही लिखा है "दक्षिणपंथियों के उसूलों में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो जर्मनी, जो कि धुर दक्षिणपंथी हो गया है, उनका स्वागत नहीं करें" वे लिखते हैं, "इसके विपरीत, केवल दक्षिणपंथी उसूलों से ही – फासीवादी, दबंग, साम्राज्यवादी उसूलों से – हम इस सारे झमेले के विरुद्ध अच्छी तरह लड़ सकते हैं और 'मनुष्य के गंभीर अधिकारों' के लिये होने वाली विचित्र और दुःखद अपीलों को दरकिनार कर सकते हैं।" वे आगे कहते हैं, और यह वास्तव में उदारतावाद की लाश में चाकू गड़ाने जैसा है, "पश्चाताप में क्रॉस के सामने घुटने टेकने का कोई कारण नहीं है (यह जर्मन भाषा का शानदार मुहावरा है, जिसका अनुवाद करना आसान नहीं है, ख़ासकर इसलिये कि इसमें "क्रॉस" का ज़िक्र है, जबकि स्ट्रॉस यहूदी थे, शायद इसीलिये उन्होंने इसका इस्तेमाल किया), और उदारवादी क्रॉस के सामने भी नहीं, जब तक दुनिया में कहीं भी असली रोमन विचारों का चिराग रौशन हो रहा है; और वैसे भी, किसी भी प्रकार के क्रॉस से घेटो कहीं अच्छा है।" मई 19, 1933 का पत्र लियो स्ट्राऊस का कार्ल लोविथ को लिखा हुआ, *गेसाम्मेल्टे श्रीफ्टेन, बैंड 3, होबीसश्ज पोलिटीश विसेनशाफ्ट अंड जागेहोरीगे श्रीफ्टेन* – ब्रीफे, दूसरी संशोधित आवृत्ति, हेनरिख और वीबके मीयर द्वारा संपादित (स्टुटगार्टः फरलाग जे.बी. मेट्ज़लर), पृ. 624–26। स्ट्रॉस के समर्थक, जब वे इस पत्र का अस्तित्व स्वीकार करते हैं, तब, उनके आशय को स्पष्ट करने की पराकाष्ठा करते हैं, लेकिन ज्यादा संभावना इसी बात की है, कि उन्होंने "फासीवादी, दबंग, साम्राज्यवादी उसूलों" का समर्थन किया है तो उनका आषय रोम में मुसोलिनी द्वारा स्थापित फासीवादी सरकार से ही था। मुसोलिनी "नया रोमन साम्राज्य" स्थापित करने की कोशिश में था और उस समय तक वह हिटलर और नेशनल सोशलिस्ट्स का प्रतिद्वंद्वी था, साथी नहीं और उसने (पुनः, उस समय तक) अपनी सरकारी विचारधारा में यहूदी–विरोध को शामिल नहीं किया था।

187. रॉबर्ट केगन और विलियम क्रिस्टोल, "इराक का क्या किया जाए," *दि वीकली स्टैंडर्ड*, जनवरी 21, 2002, http://www.weeklystandard.com/Content/Public/Articles/000/000/000/768pylwj.asp पर उपलब्ध।

188. डेविड ब्रूक्स, "ए रिटर्न टू नेशनल ग्रेटनेसः ए मैनिफेस्टो फॉर ए लॉस्ट क्रीड, " *दि वीकली स्टैंडर्ड*, मार्च 3, 1997।

189. विलियम क्रिस्टोल और रॉबर्ट केगन, "टुवर्ड ए नियो–रीगनाइट फॉरेन पॉलिसी।"

190. लियो स्ट्रॉस, "नोट्स ऑन *दि कन्सेप्ट ऑफ दि पॉलिटिकल,*" कार्ल श्मिट, *दि कन्सेप्ट ऑफ दि पॉलिटिकल* में पुनर्मुद्रित, पृ. 97–122, पृ. 122। श्मिट पर पड़े स्ट्रॉस के प्रभाव का वर्णन हेनरिख मायर ने *कार्ल श्मिट और लियो स्ट्रॉसः अनजाना संवाद* में किया है। जो लोग श्मिट की थर्ड राईश को दी गई सेवाओं को सिर्फ नौकरी बचाने के लिये या अवसरवादिता के कारण लिखा गया, कह कर दरकिनार करते हैं उन्हें श्मिट की छिपाई गई रचनाओं को और पढ़ना चाहिये, जैसे "दर फ्यूहरर शूट्ज़ दास रेख्त" ("नेता कानून की हिफाज़त करते हैं), *डॉइचे जूरिस्टेन–ज़ाइटंग* में प्रकाशित (अगस्त 1, 1934; (http://www.flechsig.biz/DJZ34_CS.pdf पर उपलब्ध), जिसका प्रकाशन हिटलर द्वारा सैकड़ों विरोधियों को मार दिये जाने के बाद हुआ था, और आंखें खोलने वाले (और दिल दहलाने वाले) चैप्टर जो श्मिट के बारे में हैं, यवोन शेराट की, *हिटलर के दार्शनिक* (न्यू हैवनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2013) और इमान्युएल फे, *हाईडेगरः* दर्शनशास्त्र में नाज़ीवाद का पदार्पण, (न्यू हैवनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 2009), साथ ही राफाएल ग्रोस के खुलासे और विश्लेषण *कार्ल श्मिट और यहूदीः "यहूदियों का प्रश्न," यहूदियों की आहुति, और जर्मन कानूनी थ्योरी* (मेडिसनः यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कान्सिन प्रेस, 2007)

191. इमान्युएल फे, *हाईडेगरः दर्शनशास्त्र में नाज़ीवाद का पदार्पण* में की गई चर्चा

देखें, पृ. 158–62।

192. लुडविग वॉन माइसेस, *सर्वशक्तिमान सरकारः पूर्णाधिकारी प्रशासन और संपूर्ण युद्ध का उदय* (1944; इंडियानापोलिसः लिबर्टी फंड, 2011), पृ. 106, http://files.libertyfund.org/files/2399/Mises_OmnipotentGovt1579_LFeBk.pdf पर उपलब्ध।

193. कार्ल श्मिट, *राजनीतिज्ञ की विचारधारा,* पृ. 54।

194. *उपरोक्त,* पृ. 55।

195. *उपरोक्त,* पृ. 71।

196. *उपरोक्त,* पृ. 29।

197. अर्न्स्ट जुंगर, *दि स्टॉर्म ऑफ स्टील, फ्रॉम दि डायरी ऑफ ए जर्मन स्टोर्म–ट्रूपर ऑफिसर ऑन दि वेस्टर्न फ्रंट,* पृ. 319।

198. यह मुहावरा मार्क्सवादी लेखक योहान प्लेंज ने अपनी 1916 की पुस्तक *1789 अंड 1914: दाई सिम्बोलिशेन याहरे इन दर गेशिस्त देस पॉलिटिशेन गेइस्टेस* में प्रसिद्ध किया था, जिसमें उन्होंने घोषणा की थी कि "युद्ध की अनिवार्यता के अंतर्गत समाजवादी विचार जर्मनी के आर्थिक जीवन का हिस्सा बना दिये गए हैं, और यह संगठन एक नई आत्मा के रूप में विकसित हुआ है, और इसलिये मानव जाति के लिये हमारे देश के महत्व ने 1914 के विचार को जन्म दिया है, जर्मन संगठन का विचार, सरकारी समाजवाद की राष्ट्रीय यूनिट।" एफ. ए. हायेक की दि रोड टू सर्फडम (1944; लंदनः रटलेज और केगन पॉल, 1979) में, पृ. 127।

199. *ब्राइफवेशेल, ब्राइफे 1930–1983 अर्न्स्ट जुंगर/कार्ल श्मिट,* हेलमुट काइसेल, आवृत्ति। (स्टुटगार्टः क्लेट–कोट्टा, 2012)

200. जुंगर का 100वां जन्मदिन फ्रांस के समाजवादी राष्ट्रपति फ्रांन्सोइस मितेरेंड द्वारा लिखे पत्र के साथ मनाया गया था, जो खुद युद्ध के दौरान विची–फासीवादी सरकार की नौकरी छोड़ कर समाजवादियों की ओर चले गए थे, जब यह स्पष्ट हो गया था कि युद्ध में कौन जीतने वाला है। यह पत्र यहां देखा जा सकता है http://www.ernst-juenger.org/2012/05/francois-mitterand-to-ernst-junger-on.html

201. अर्न्स्ट जुंगर, *उपरोक्त,* पृ. 317।

202. इसे ऐसे कह कर सुनाया गया, "हमने तुम्हें मृत्युदंड दिया है, क्योंकि हम तुम्हारे भाई को पकड़ नहीं सकते। तुम्हें अपने भाई की सज़ा भुगतनी होगी।" हिल्टन टिम्स की *एरिख मारिया रेमार्कः दि लास्ट रोमांटिक* (न्यूयॉर्कः कैरल एंड ग्राफ, 2003), पृ. 143।

203. जर्मन भाषा पृ. 268।

204. अर्न्स्ट जुंगर, "टोटल मोबिलाइज़ेशन," अनुवाद जोएल गोल्ब और रिचर्ड वोलीन, रिचर्ड वोलीन (संपा.), *दि हाइडेगर कांट्रोवर्सीः ए क्रिटिकल रीडर* (कैम्ब्रिज, मैसा.: एमआईटी प्रेस, 1998), पृ. 119–39, पृ. 127, पृ. 134। बेनितो मुसोलिनी ने इससे पहले उदारवाद के विकल्प के रूप में अनुशासन का विचार रखाः "सत्य, जो उन सभी के लिये अब प्रत्यक्ष है, जिनकी आंखें हठधर्मिता के चलते बंद नहीं हैं, शायद अब यही है कि लोग उदारवाद से परेशान हो गए हैं। उन्हें इसका ज़्यादा ही डोज़ मिल गया है। आज स्वतंत्रता अब वह सादगी–भरी और सख़्त कुंवारी नहीं रह गई है, जिसके लिये पिछली सदी के पहले भाग में अनेक पीढ़ियों ने लड़ाई में अपनी जान दे दी। आज के नौजवानों के लिये, जो निडर, उत्सुक, कठोर हैं और जो नए युग का आरंभ देख रहे हैं, ऐसे अन्य शब्द हैं, जिनमें ज़्यादा आकर्षण है और ये शब्द हैंः व्यवस्था, पद–क्रम, अनुशासन .... तो अब यह ऐलान किया जाए, कि हमेशा के लिये, फासीवाद में कोई आदर्श व्यक्ति नहीं है, इसमें किसी की पूजा नहीं की जाती। यह पहले ही कदम बढ़ा चुका है, और यदि ज़रूरत पड़ी तो फिर मुड़ कर लांघ लेगा, स्वतंत्रता की देवी की सड़ी हुई लाश को।" *बेनितो मुसोलिनी का जीवन,* मार्गेरीता जी. सारफेती द्वारा, प्राक्कथन श्रीमान मुसोलिनी द्वारा, फ्रेडरिक व्हाईट का अनुवाद। (न्यूयॉर्कः फ्रेडरिक ए. स्टोक्स कम्पनी, 1925), पृ. 328–29 (मई 1923 के मुसोलिनी के एक लेख को उद्धृत करते हुए, जो गेरार्चिया पत्रिका में प्रकाशित हुआ था)।

205. जूलिएन हरवियर के *दि डिटेल्स ऑफ टाइमः कन्चर्सेशन विद जुंगर* में (न्यूयॉर्कः मार्सिलो पब्लिशर्स, 1995), पृ. 69।

206. वासिली ग्रोसमैन, *लाइफ एंड फेटः ए नॉवेल* रॉबर्ट चौंडलर का अनुवाद (न्यूयॉर्कः हार्पर एंड रो, 1987), पृ. 230।

207. अर्न्स्ट जुंगर, *ऑन पेन,* डेविड सी. डर्सट् का अनुवाद (1934, न्यूयॉर्कः टेलोस प्रेस पब्लिशिंग, 2008) पृ. 17।

208. विलियम क्रिस्टोल और रॉबर्ट केगन, *पूर्व–उल्लेखित।*

209. चार्ल्स टी. स्प्रेडिंग, *आज़ादी एंड दि ग्रेट लिबर्टेरियन्स* (1913; न्यूयॉर्कः फॉक्स एंड विल्क्स, 1995), पृ. 29।

210. *उपरोक्त,* पृ. 28

211. ई. एल. गॉडकिन, "दि एक्लिप्स ऑफ लिबरलिज़्म", *दि नेशन,* अगस्त 9, 1900।

नोटः इस खंड की अनुक्रमणिका

http://studentsforliberty.org/peace-love-liberty-index पर उपलब्ध है।

आज़ादी को एक नैतिक सुरक्षा चाहिए: आपकी

एटलस नेटवर्क ने मुक्त उपक्रम के लिए एक विश्वव्यापी नैतिक एवं बौद्धिक अभियान शुरू किया है। हम नैतिकता तथा पूंजीवाद, आज़ादी तथा निजी विकल्प पर, साथ ही शांति या युद्ध की ओर ले जाने वाले मुद्दों पर ईमानदार बहस को प्रोत्साहन देते हैं। स्टूडेंट्स फॉर आज़ादी के साथ मिलकर एटलस नेटवर्क आपके लिए ये सौगातें लाए हैं: *दि इकनॉमिक्स ऑफ फ्रीडम, दि मोरालिटी ऑफ कैपिटलिज़्म, आफ्टर द वेलफेयर स्टेट, व्हाय लिबर्टी, और अमन, प्रेम व आज़ादी* (एटलस नेटवर्क के कार्यकारी उपाध्यक्ष टॉम जी. पामर द्वारा संपादित)। एटलस नेटवर्क एक दर्जन से अधिक भाषाओं में पुस्तकें, निबंध प्रतियोगिता, वेबिनार, वेब मंच, तथा फ्रीडम स्कूल्स भी प्रायोजित करते हैं।

- एटलस नेटवर्क में 400 से अधिक स्वतंत्र, मुक्त–बाज़ार विचार मंच और संस्थाएं शामिल हैं जो यूएस तथा 80 से अधिक अन्य देशों में स्थित हैं।
- एटलस नेटवर्क शांति में विश्वास रखने वाली संस्थाओं तथा बुद्धिजीवी उद्यमियों की खोज तथा सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, क्षेत्रीय परिषदें और कई अन्य कार्यक्रम आयोजित करते हैं।
- यदि आप भी शामिल होना चाहते हैं, तो AtlasNetwork.org पर आइए और हमारी विश्वव्यापी डाइरेक्टरी, रिसोर्स लाइब्रेरी तथा अन्य ऑनलाइन साधनों पर नज़र डालिए।

एटलस नेटवर्क

1201 एल स्ट्रीट एनडब्ल्यू, वॉशिंगटन डीसी 20005

(202) 449–8449 • AtlasNetwork.org

@AtlasNetwork Atlas Network

सेंटर फॉर सिविल सोसायटी के बारे में

सेंटर फॉर सिविल सोसायटी लोकनीतियों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देता है। शिक्षा, आजीविका व नीति प्रशिक्षण के क्षेत्र में हमारे द्वारा किये जाने वाले कार्य सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में विकल्प व जवाबदेही को प्रोत्साहित करते हैं। नीतियों को व्यवहार में लाने हेतु हम शोधकार्यों, पायलट प्रोजेक्ट्स व एडवोकेसी की सहायता से पॉलिसी लीडर्स और ओपिनियन लीडर्स को संबद्ध रखते हैं।

हमारी परिकल्पना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत, आर्थिक और राजनैतिक जीवन में विकल्प उपलब्ध कराना व सभी संस्थाओं को जवाबदेह बनाना है।

शोध। पहुंच। हिमायत

सभी के लिए शिक्षा: शिक्षा सुधार पहल

आजीविका के क्षेत्र की बाधाओं को दूर करना: जीविका अभियान

नव विचारों से युक्त नए नेतृत्व का विकास करना: सीसीएस एकेडमी

हिंदीभाषियों के लिए सर्वश्रेष्ठ उदारवादी विचारधारा प्रस्तुत करना: www.azadi.me आजादी.मी

सार्वजनिक शासन में बेगारी, धोखाधड़ी व दुरुपयोग को कम करना: गुड गवर्नेंस

युद्ध के संबंध में 'संशय' जैसी कोई बात नहीं होती। इसमें 'हां अथवा नहीं' का ही विकल्प होता है। यदि आप युद्ध नहीं चाहते हैं तो आपको इसके खिलाफ होना ही पड़ेगा।

इस पुस्तक में शामिल निबंध शांति के संबंध में प्रमाण और तर्क की पेशकश करते हैं। लेखक अमन को महज इसलिए बढ़ावा नहीं देते हैं कि इसका संबंध किसी नैतिक आदर्श से है अथवा यही एक वांछनीय लक्ष्य है। बल्कि वे अमन को इसलिए बढ़ावा देते हैं क्योंकि यही एक उत्कृष्ट व्यावहारिक विकल्प है। प्रायः अमन की बहाली के लिए सक्रिय लोग इसके आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को जाने बगैह ही युद्ध की निंदा करना शुरु कर देते हैं। वे युद्ध के कारणों जैसे 'सभ्यताओं के संघर्ष', 'आर्थिक संघर्ष', 'संरक्षणवाद' से संबंधित भ्रम व एक हाथ से दूसरे हाथ तक पहुंचने का वैश्विक विचारधारा आदि का मंथन किए बगैर इसकी आलोचना करना शुरु कर देते हैं और उसके बाद इसके कारणों पर ध्यान देते हैं।

अमन अव्यवहारिक कल्पना नहीं है, ना ही यह एक ऐसी चीज है जिसके लिए हमें समृद्धि अथवा प्रगति अथवा स्वतंत्रता का बलिदान करना पड़े। दरअसल, अमन, आजादी, समृद्धि और विकास आदि साथ साथ चलने वाली चीजें हैं।

पुस्तक में शामिल निबंध मस्तिष्क को झकझोरते हैं। वे गूढ़ इतिहास, आर्थिक वास्तविकता, अनुभवजन्य मनोविज्ञान, राजनीति विज्ञान आदि के साथ साथ कला और सौंदर्य की कल्पना के तर्कों से सुसज्जित हैं। यदि हृदय को शांति के कार्यों में सलंग्न करना है तो ऐसा दिमाग को सलंग्न करके ही हो सकता है।

- टॉम पॉमर, संपादक

जो लोग अमन के पक्षधर हैं उन्हें ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस बात का यकीन दिलाना होगा कि युद्ध विरले ही उद्दात लक्ष्यों को हासिल करने में समर्थ होते हैं। शुरुआत के लिए यह पुस्तक श्रेष्ठ माध्यम है...

- जेफ्री मिरॉन
डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स,
हावर्ड यूनिवर्सिटी